

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान-प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

ग्रन्थ सम्पादक

जितेन्द्रकुमार जैन, एम ए

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थांक १२२

राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची भाग ३

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान);

मुद्रक : कलमघर प्रिण्टर्स एव जितेन्द्र प्रिण्टर्स, जोधपुर

वि स २०३१

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९६

प्रकाशकीय

प्रतिष्ठान मे सुरक्षित हिन्दी और राजस्थानी की कोई तीन हजार कृतियों का यह सूचीपत्र प्रकाशित किया गया है। इसका संकलन विभाग के वरिष्ठ शोध सहायक श्री ओकारलाल मेनारिया ने किया है। अपने सम्पादकीय कथन मे इन्होंने इस सूचीपत्र की विशेषताओ पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। जिज्ञासु पाठको के लिए परिशिष्ट भाग मे महत्वपूर्ण ग्रन्थो के उद्धरण भी दिए गये हैं। श्री मेनारिया ने बड़े परिश्रम के साथ यह सूचीपत्र तैयार किया है। आगे भी इन सूचीपत्रो को प्राथमिकता देते हुए प्रतिष्ठान की इस विपुल ग्रन्थ-सम्पदा को बाहर लाने का हमारा प्रयत्न जारी रहेगा। शोधार्थी इन सूचीपत्रो से लाभान्वित होंगे—इसमे दो राय नही।

जितेन्द्रकुमार जैन

निदेशक

अनुक्रम

	पृष्ठांक
१. प्रकाशकीय वक्तव्य	—
२. सम्पादकीय निवेदन	१ - ८
३. शुद्धि - पत्र	६ - ११
४. सकेत-तालिका	१२ वा
५. ग्रन्थ-विवरण-तालिका	१ - ४६६
६. परिशिष्ट १ (कतिपय विशिष्ट चिह्नित ग्रन्थों के उद्धरण)	१ - २१६
परिशिष्ट २ (ग्रन्थ-कर्त्तानुक्रमणिका)	२१७ - २४२
८ प्रकाशित हिन्दी-राजस्थानी ग्रन्थों की मूल्य-सूची	२४२ - २४४

नोट.— कृपया परिशिष्ट १ के पत्र सख्या १४७ की पाद टिप्पणी को निम्न प्रकार पढ़ें—
 रुपनगर के राजा जीवराज सोलंकी के साथ ठिकाणा धरियावद की सिसोदणी
 राणी फुसालकैवर के संवत् १७४८ में भाववा सुद १२ को, सती होने पर, उक्त
 भरसिये रूपाम (रूपावाम) के बारठ एजनजी द्वारा रचे गए हैं ।

सम्पादकीय निवेदन

प्रस्तुत सूचीपत्र मे मुख्यालय मे सगृहीत ग्रन्थाङ्क ७८५६ से १२६१२ तक के राजस्थानी-हिन्दी भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थो मे संकलित ३०२० कृतियो के विवरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं । यह सूचीपत्र मुख्यत सूचनात्मक उद्देश्य की ही पूर्ति करता है, क्योकि सभी ग्रन्थो के सूचीपत्र शीघ्र प्रकाशित करने के उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान पद्धति को अपनाया गया तथा विवरणात्मक सूचीपत्र की प्रक्रिया को नही अपनाया जा सका; फिर भी ग्रन्थो के सम्बन्ध मे अधिक से अधिक ज्ञातव्य प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है ।

सूचीपत्र निर्माण का कार्य प्रतिष्ठान के सस्थापक एव सम्मान्य सचालक पद्मश्री मुनि जिनविजयजी के निर्देशन मे सन् १९६५ मे प्रारम्भ किया गया था । उस समय भाषा-ग्रन्थो मे गुटको की बहुलता को देखते हुए जिल्दवार व्यौरो का आकलन किया गया तथा उसी रूप मे मुद्रणार्थ प्रेस को भी दे दिया गया । किन्तु, वाद मे अन्यान्य कारणो से उक्त प्रकाशन-कार्य प्रारम्भ नही हो सका । अन्त मे सभी कृतियो को अकाराद्यनुक्रम से प्रकाशित करने को ही अधिक उपयोगी समझकर वर्तमान प्रारूप के अनुरूप पुन प्रेसकापी बनाई गई तथा मुद्रण प्रारम्भ करवाया गया । यह हर्ष का विषय है कि सूचीपत्र का प्रकाशन-कार्य पूर्ण होकर विद्वानो के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है ।

राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग २ मे ग्रन्थाङ्क १०६८८ तक के हस्तलिखित ग्रन्थो का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है । उक्त सूचीपत्र मे राजस्थानी के अतिरिक्त ब्रजभाषा तथा अन्य भाषा ग्रन्थो को छोड दिया गया था । उन सभी अवशिष्ट ग्रन्थो के विवरण भी प्रस्तुत सूचीपत्र मे पृ० ३७७ से ४९६ में समाहित किये गये हैं ।

संकलित ग्रन्थो मे भाषा की दृष्टि से प्राचीन राजस्थानी (जिसमे अपभ्रंश एवं गुर्जर-भाषा के शब्दो का भी जमकर प्रयोग किया जाता था) तथा ब्रजभाषा के ग्रन्थो की प्रधानता है । प्रतिष्ठान के सग्रह मे ब्रजभाषा-साहित्य का भी अपूर्व सग्रह है । वस्तुतः प्रत्येक भाषा का अपना समय रहा है और इसी कारण समग्र उत्तरी

भाषा में एक सम्य साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रज को अपनाया गया था। वर में उस्तादों के प्रयास ने यह स्थान राजस्थानी भाषा को प्राप्त हुआ तथा इस भाषा में प्रचीन ग्रन्थों के अनेक अनुवाद-कार्य प्रस्तुत किये गये। भाषा की प्रारम्भिक अवस्था में अनुवाद ही उस भाषा को अपना साहित्यिक स्थान बनाने में सहायता देते हैं। यही कारण है कि राजस्थानी के हस्तलिखित ग्रन्थों में रामायण, महाभारत, भागवत, गीता, हिनो-वेन-पंचाङ्ग, रीति-ग्रन्थ, काव्य-ग्रन्थ तथा ज्योतिष और आयुर्वेद के ग्रन्थों के अनुवादों के साथ ही नाय साधुनाथ ज्ञानाग्नि के अक्षयवट-जैसी पुराण साहित्य के अनेक अनुवाद हमें उपलब्ध होते हैं। इन अनुवाद कार्यों ने भाषा का रूप जब स्थिर हो गया तो नमी विषयों की मौलिक कृतियों का प्रणयन भी प्रारम्भ हुआ और मौलिक एवं छाया-ग्रन्थों के रूप में राजस्थानी भाषा के साहित्य की श्रीवृद्धि होती गयी। संकलन में महर्षिदास वाङ्मय, माधोगाय, सांहु देवसी, लालदास, मगदासदास निरंजनी, मधुसूदनदास, चैतनवि, रामोदर, आनन्दगम नाजर जिगोर अलि, आदि अनेक कवि, अनुवादक के रूप में हमारे सामने आते हैं।

संकलन में अनुवाद कार्यों के अतिरिक्त अनेक अल्पज्ञात कवियों के नाम तथा उनकी कृतियाँ भी देखने को मिलेंगी। जैन कवियों के अनेक स्तुति-सम्बन्ध चौड़ी-काव्य तो स्वतात्कारित उपलब्ध हुए हैं। नमी ऐसी कृतियों का उल्लेख आठवें कोष्ठ में कर दिया गया है। कुछ-कुछ संग्रह जो कवि-वंशजों के वंशजों से प्रसिद्ध हो प्राप्त हुए थे, उनमें उन कवियों की स्वलिखित षण्डु-लिखित सुरक्षित हैं। ऐसे कवियों में कवि मोलानाथ तथा अमृतनाम राय का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कवि मोलानाथ ने जाट गुरु तदसिंह के दरबार में रहते हुए अनेक मौलिक एवं अनुवाद-कार्य सम्पन्न किये। इस संकलन में उनकी १८ कृतियों का विवरण संकलित है, जो संवत् १=२० से १=४० तक गयीं गयीं हैं। इसी प्रकार के दूसरे कवि अमृतनाम राय हैं, जिनकी अमृतनाम-मुत्तावली नामक वृहद्काव्य पद-रचना के अतिरिक्त अन्य अनेक अनुवाद एवं मौलिक कृतियों के रूप में १५ कृतियाँ संकलन में उपलब्ध हैं। इनका सम्पादन संवत् १=८० से १=९९ के बीच का है। अनेक कृतियों के अन्त में संवत् १=९९ दिया गया है, जिसे स्वदाशाल नाम लिया गया है, क्योंकि संग्रह प्रकाशनी के वंशजों में ही प्राप्त हुआ है।

सकलन में कुछ अप्रसिद्ध एवं अल्प-ज्ञात कवियों के नाम भी ज्ञात हुए हैं। जिनमें कवि चैन, कवि दौलत, कवि चन्द (जवाहरचन्द), कवि मल्ह (मथुरादास), कवि केसो, कालूराम वोहरा, चम्पालाल दीवान, जीवनलाल नागर, देवकृष्ण दर्जी, नन्दराम पचोली, नीलकण्ठ पचोली, पन्नालाल जोशी, रामलाल जोशी, शम्भुदत्त जोशी, भगतराम पचोली, शोभाराम तिवाडी, सुख सारण आदि प्रमुख हैं।

प्राप्त सग्रह में कुछ-एक गुटके अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं, जैसे ग्रन्थाङ्क १२५८५। इस गुटके में भक्त-कवियों तथा कवियित्रियों के पर्ची-साहित्य का सुन्दर संकलन किया गया है। पर्ची-साहित्यकार के रूप में अनन्तदास का नाम तो प्रसिद्ध ही है। इनके अतिरिक्त सुखसारण नामक एक नये कवि का नाम हमारे सम्मुख आता है, जिन्होंने ७ महिला भक्त-कवियित्रियों की पर्चियों का प्रणयन किया है। इसी प्रकार से दूसरा गुटका ग्रन्थाङ्क ११६४८ का है, जिसमें नाथ एवं सिद्ध-साहित्य का सुन्दर सग्रह किया गया है। साथ ही साथ जनतुरसी की समस्त कृतियों का भी संकलन इस गुटके में उपलब्ध है, इस प्रकार से अनेक गुटको की, विषय की दृष्टि से, लेखन कला की दृष्टि से, लिपि-समय की दीर्घ-परम्परा के कारण तथा बीच-बीच में लिखी गई याददास्तों, टिप्पणियों, स्फुट-नुस्खों आदि की दृष्टि से विशिष्ट उपादेयता है।

गुटको की कृतियों को देखने से गुटके के स्वामी की साहित्यिक अभिरुचियों का स्पष्ट परिचय मिलता है। किसी में मात्र काव्य-ग्रन्थों का सकलन है, तो किसी में संत-साहित्य का और किसी में ज्योतिष, आयुर्वेद, स्तुति, स्तोत्र, आदि विषय हैं। ये गुटके वस्तुतः सग्रहकर्ता की साहित्यिक डायरी के रूप में लिखे जाते थे, अथवा लिखवाये जाते थे। कतिपय गुटको का लेखन काल तो १००-१५० वर्षों तक निरन्तर रहने का भी पता चलता है। इन गुटको में सकलित साहित्य से हमें तत्कालीन साहित्यिक अभिरुचि तथा विद्वानों और रसिकों का ध्यान आकृष्ट करने वाली बहुचर्चित कृतियों एवं विषयों का भी परिचय मिलता है, जो तत्कालीन सामाजिक-इतिहास-लेखन में बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। गुटको की तथा हस्तलिखित-ग्रन्थों के अन्त की पुष्पिकाओं का भी अपना विशिष्ट महत्व है क्योंकि उनमें कहीं-कहीं पूर्व प्रति का उल्लेख, तो कहीं गुरु-परम्परा, लिपि-कर्ता एवं लिपि-स्थान आदि का पूर्ण व्यौरा उपलब्ध होता है।

लिपिकाल की दृष्टि से सकलन में १६ वीं शताब्दी में लिखी गई प्रतियों की संख्या अधिक है। लिपिकाल की दृष्टि से रचनाकाल के समीपतम होती गई प्रतियों का महत्व अपेक्षाकृत अधिक होता है, फिर भी इसे सार्वभौम सिद्धान्त के रूप में नहीं स्वीकारा जा सकता है तथा इसी के आधार पर किसी भी कृति के सम्बन्ध में यह धारणा नहीं बना लेनी चाहिए कि अमुक प्रति रचनाकाल से काफी बाद की होने से महत्वहीन है। क्योंकि हो सकता है, उक्त प्रति की प्रतिलिपि जिस प्रति से की गई है, वह अति प्राचीन प्रति रही हो और उसका पाठ कवि-कृत-पाठ के समीपतम रहा हो। अतः जब तक पाठालोचन की क्लृप्त प्रक्रिया द्वारा प्रत्येक प्रति का वशवृक्ष तैयार कर प्रतियों का परिवार निश्चित नहीं कर लिया जाता, उक्त प्रति के महत्व के सम्बन्ध में निर्णय नहीं दिया जा सकता। अतः सकलन में आई सभी प्रतियों का अपना निजी वैशिष्ट्य है। उपर्युक्त सिद्धान्त की पुष्टि अनेक प्रतियों की पुष्पिकाओं से भी होती है, जिसमें पूर्व प्रति का सम्बन्ध तथा ग्रन्थ-स्वामी आदि का व्यौरा दिया गया है। आशा है, विद्वानों द्वारा सकलित कृतियों की प्रतियों का इसी रूप में अध्ययन किया जायगा।

ग्रन्थाङ्क वाले कोष्ठक में ग्रन्थाङ्क के साथ ही साथ ब्रेकिट में उसी गुटके में उपलब्ध कृति संख्या का संकेत किया गया है। ब्रेकिट के बाद में जो संख्या दी गई है वह समान शीर्षक लघु कृतियों के कर्ता की संख्या की द्योतक है। उदाहरणार्थ - १२२१०(२८)१ अक्षय तृतीया के पद कृष्णदास- का तात्पर्य है कि ग्रन्थाङ्क १२२१० पर २८ वीं कृति के रूप में पद-संग्रह प्रारम्भ किया गया है, जिसमें प्रथम कर्ता का नाम कृष्णदास है। सूचीपत्र में संकलित ग्रन्थों में प्रायः सभी विषयों के ग्रन्थ हैं। प्रत्येक कृति का विषयवार वर्गीकरण नहीं किया गया है क्योंकि अधिकांश कृतियों के नाम से ही विषय स्वयम् स्पष्ट हो जाता है।

आठवें कोष्ठक में लिपिकर्ता, लिपिस्थान, रचनाकाल, रचना-स्थान, ग्रन्थ की दशा तथा अप्राप्त पत्र संख्या का उल्लेख किया गया है। ग्रन्थ के सम्बन्ध में अन्य विशेष ज्ञातव्य, जैसा कि प्रारम्भिक कुछ पत्रों में दिया गया है, स्थानाभाव के कारण छोड़ देना पड़ा है।

राजस्थानी एवं प्राचीन हिन्दी की भाषा कृतियों के साथ ही साथ ग्रन्थों में संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश तथा मराठी भाषा की कृतियाँ भी उपलब्ध हुई हैं, ऐसी कृतियों के बारे में आठवें कोष्ठक में उल्लेख कर दिया गया है।

सभी कृतियों को यद्यपि अकाराद्यनुक्रम से व्यवस्थित कर प्रकाशित किया गया है, फिर भी कुछ कृतियों का कल्पित नामकरण कर उन्हें एक स्थान पर करने का प्रयत्न किया गया है जैसे - कवित्त-संग्रह, गीत-संग्रह, पद-संग्रह, दोहा-संग्रह आदि। कृतियों के तथा कवियों के नाम उसी प्रकार दिए गए हैं जैसे कि ग्रन्थ में उपलब्ध हुए हैं, अतः एक ही कृति की वर्तनी में थोड़ा अन्तर होने के कारण पाठको को वे नाम ऊपर नीचे उपलब्ध होंगे। गुटको में उपलब्ध स्फुट पदों, दोहों आदि को स्फुट-पद-संग्रह, स्फुट-कवित्त-संग्रह, आदि के अन्तर्गत रखा गया है।

प्रस्तुत सकलन में सत-साहित्य तथा जैन-साहित्य की कृतियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। वस्तुतः निर्गुण ब्रह्म के उपासक सतो तथा सगुण ब्रह्म के लीला-मय रूप का भक्त कवियों ने जो गुणगान किया है, वह भूगोल और काल के बन्धन को तोड़कर निर्वाध रूप से समस्त भारत में ज्ञान और भक्ति का प्रसार करने वाला सिद्ध हुआ है। सतो की वाणियों तथा भक्त कवियों की रचनाओं से जिस भक्ति-रस-धारा का अटूट प्रवाह जन-जीवन में हुआ है, उससे समस्त भारतीय जन-मानस एक सूत्र में बंधा-सा नजर आता है। अतः ये महात्मा तथा इनके औपदेशिक ग्रन्थ हमारी सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं।

सतो की वाणियाँ उनके श्रीमुख से उच्चरित होती रही और शिष्य प्रशिष्यों के मस्तिष्क रूपी प्राकृतिक टेप-रिकार्ड में सगृहीत होती रही। कभी-कभी किसी योग्य शिष्य द्वारा उस स्मृति को लिपिवद्ध कर अपने गुरु के प्रति श्रद्धा-प्रसून चढ़ाए गए। सभी सतो की वाणियों के वचनमृतों को किस-किस जिज्ञासु शिष्य द्वारा लिपिवद्ध कर उन्हें व्यवस्थित रूप प्रदान किया गया, यह प्रश्न आज भी प्रचुर अन्वेषण का बना हुआ है। हस्तलिखित ग्रन्थों के आलोडन से रामस्नेही सम्प्रदाय के सतो की वाणियों के सकलनकर्त्ताओं के कुछ उल्लेख हमें उपलब्ध होते हैं। ऐसी वाणियों के आद्यन्त परिशिष्ट १ में दिए गये हैं। इन संकलनकर्त्ताओं में प्रमुख रामजन, नवलराम, कासीराम एवं हरीराम हैं। ये सभी सत भीलवाड़ा अथवा शाहपुरा रामद्वारा से सबधित हैं।

परिशिष्ट १ में सत-वाणी के सकलनकर्त्ताओं के उल्लेखों के साथ ही साथ ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों के आद्यन्त भी दिए गए हैं, जिनमें कवि-परिचय, कवि-वश-परिचय, आश्रयदाता का वशवर्णन तथा रचना में सहायक आधार ग्रन्थों के

उल्लेख उपलब्ध हुए हैं। ऐसे ग्रन्थों में भारत-भाषा-सार-चन्द्रिका, भारत भाषा, अलकारनिधि, अलकार-रत्नाकर, छन्द-सुधाधर, जगत-विनोद, सग्राम-सार, सभा-विनोद, सुन्दर-शृङ्गार, कोकशास्त्र, रामविनोद, आदि ग्रन्थ हैं।

परिशिष्ट १ में कुछ ऐसी कृतियों के उद्धरण भी दिए गए हैं, जिनसे मध्यकालीन ऐतिहासिक घटनाओं पर कुछ प्रकाश पड़ता है। ऐसी ऐतिहासिक कृतियों में महाराजा अभयसिंहजी रा कवित्त, दवावेत महाराजा अजीतसिंहजी री, सभरि युद्ध तथा स्फुट रूप से प्राप्त कवित्त, छन्द आदि हैं। इनके अतिरिक्त सग्रह में उपलब्ध ग्रन्थों में प्राचीनता तथा प्रतिष्ठान में प्राप्त प्राचीन प्रतियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रन्थों के आद्यन्त भी दिये गये हैं।

प्रतिष्ठान में संगृहीत सभी ग्रन्थ प्रायः राजस्थान एवं गुजरात में बिखरी हुई ग्रन्थ-सम्पदा के रूप में क्रय करके एकत्र किये गये हैं। इनमें जैन-साहित्य का, सूर्या की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान है। जैन-साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि जैनाचार्यों ने लोक व्यवहृत भाषा में अपनी कृतियों को प्रस्तुत किया है। संस्कृत के बाद प्राकृत में तथा प्राकृत के बाद अपभ्रंश में और फिर जन-भाषाओं में अपनी औपदेशिक कृतियों का प्रणयन करते रहना ही इनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। प्रतिष्ठान में जैन-साहित्य के रूप में प्रायः सभी गच्छों के ग्रन्थ उपलब्ध हैं। पदों और ढालों को राग-रागणियों तथा देशी तर्जों में बाधा जाता रहा है। जन-मानस को उन्हीं की भाषा और उन्हीं के लोक-संगीत में निबद्ध कर उपदेश देने में जिस मनोवैज्ञानिक सूक्ष्म-बुद्धि का परिचय जैनाचार्यों ने दिया है, वह वस्तुतः उनकी सामाजिक अन्तर्दृष्टि का परिचायक है। केवल एक ग्रन्थ में संगृहीत ढालों की प्रथम पंक्ति तथा देशी तर्ज का उल्लेख करते हुए बानगी रूप में परिशिष्ट १ में विवरण दिया गया है। वैसे-तो सभी सतों की वाणियों के साथ तथा वल्लभकुलीय भक्तों के पद भी राग-रागणियों में निबद्ध हैं, किन्तु ये सभी परम्परागत रूप से निश्चित शास्त्रीय रागों तक ही सीमित हैं। लोक-गीतों की तर्जों का इनमें अभाव है। सभी पदों के साथ-साथ स्थानाभाव के कारण रागों का उल्लेख नहीं किया जा सका है।

परिशिष्ट १ में उपर्युक्त ग्रन्थों के साथ ही साथ कुछ लघु-कृतियों को भी अविकल रूप से प्रकाशित कर दिया गया है। ऐसी लघु-कृतियों में मनोरजनात्मक तथा मनोरम कल्पनाओं से युक्त कृतियों को चुना गया है।

पनघट रो भगडो, प्रत्युत्तरा, तिलशतक, जलवय-राहनशाह-इस्क आदि ऐसी ही कृतियां हैं।

आशा है, परिशिष्ट १ के रूप में जिन ग्रन्थों के आद्यन्त प्रस्तुत किये गये हैं, वे जिज्ञासु शोधार्थियों के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे। यदि इस परिशिष्ट के आधार पर अनुसन्वित्मुओं का ध्यान हस्तलिखित ग्रन्थों के रूप में उपलब्ध प्राचीन वाङ्मय की ओर आकृष्ट हो सका तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा।

परिशिष्ट २ के रूप में संग्रह में उपलब्ध कृतियों के रचनाकारों की नामावली, कर्त्तानुक्रमणिका के रूप में दी गई है, जिससे कि कर्त्ता-विशेष की विभिन्न कृतियों को सकलन में आसानी से ढूँढा जा सके।

जैसा कि प्रारम्भ में ही निवेदन किया जा चुका है कि प्रस्तुत कार्य प्रतिष्ठान के सस्थापक एवं भूतपूर्व सम्मान्य संचालक पद्मश्री मुनि जिनविजयजी द्वारा मुझे सौंपा गया था। उन्हीं के चरणों में बैठकर हस्तलिखित ग्रन्थों का प्रथम दर्शन तथा पठन-पाठन का कार्य मैंने प्रारम्भ किया और जिनके आशीर्वाद से उक्त कार्य सम्पन्न हुआ, उन्हें, तथा प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उप-निदेशक आदरणीय श्री गोपालनारायणजी बहुरा, जिनका मुझे इस कार्य में सतत निर्देशन और प्रोत्साहन ही नहीं मिला, अपितु जिन्होंने सूचीपत्र को आद्यन्त पढ़कर शुद्ध करने का भी अनुग्रह किया, इन दोनों ही महानुभावों के प्रति औपचारिक रूप से धन्यवाद अथवा आभार प्रकट करना मेरे लिए बहुत बड़ी घृष्टता होगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस कार्य को प्रकाशित रूप में देखकर दोनों ही सज्जनों को हार्दिक आत्मीय प्रसन्नता होगी और उनकी यह प्रसन्नता ही मेरे लिए सबसे बड़ा आत्मतोष का विषय होगा।

सूचीपत्र के प्रकाशन को महत्व देते हुए इस अवरोद्ध कार्य को डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, उप-निदेशक ने मुद्रणार्थ प्रेस में दिया, उसके लिये मैं उनका आभारी हूँ।

जैन साहित्यकारों और कृतियों के सम्बन्ध में मेरे सहयोगी विद्वान् श्री विनयसागर का यथास्थल सहयोग प्राप्त हुआ उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। प्रकाशन-अनुभाग के कुशल कार्यकर्त्ता श्री गिरधरवल्लभ दाधीच, प्रतिलिपिकर्त्ता का भी इसके प्रकाशन में निरन्तर सक्रिय सहयोग मिलता रहा, उसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

मुद्रण कार्य यद्यपि “कलमघर प्रेस” में प्रारम्भ करवाया गया था, किन्तु वहाँ यह कार्य पूर्ण नहीं हो सका और शेष कार्य “जितेन्द्र-प्रिण्टर्स” को सौंपा गया। “जितेन्द्र-प्रिण्टर्स” द्वारा इस कार्य को जिस तत्परतापूर्वक सम्पन्न किया गया, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं। प्रूफ-रीडिंग में यद्यपि पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी दृष्टि-दोष के कारण अथवा प्रेस में छपने के दौरान हुई सभी त्रुटियों के लिये मैं पाठकों का, क्षमा-प्रार्थी हूँ।

आशा है, सूचीपत्र में रही कमियों की ओर ध्यान आकर्षित कर विद्वान् पाठक मुझे उपकृत करेंगे, जिससे उनका प्रतीकार अगले सूचीपत्र में किया जा सके क्योंकि सूचीपत्र के चौथे भाग का कार्य भी पूर्ण कर लिया गया है और आशा है वह भी विद्वानों को अगले वर्ष तक अवश्य उपलब्ध हो सकेगा।

निवेदक

ओम्कारलाल नेनारिया

२३ अगस्त, १९७४

वरिष्ठ - शोध - सहायक,

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

शुद्धि-पत्र

(विवरण-तालिका)

क्रमाङ्क	पृ० सं०	कोष्ठक सं०	अशुद्ध	शुद्ध
७	२	५	१६६६	१८८८
४२	६	४	शातिहर्ष	शातिहर्ष शिष्य
१३०	१६	३	आलवण	आलोचना
१५४	१६	४	फरीदजी	फरीद
१७३	२२	२	१२२६३(५)(५)	१२२६३(५)
४४०	५३	३	गसाई	गुसाई
५२२	६२	८	-	अपूर्ण
५२२	६२	४	-	हस कवि
				(रसिक कविराय)
५२३	६२	२	११५८५(८)५५	११५८५(८)
६००	७१	३	वर्णन	वर्णन
६६०	७६	२	११२८३(१)	११२८३(२)
७०३	८४	३	ज्ञात	ज्ञान
७४१	८६	४	कुशलहेम	कुशलहेम
८२२	९६	४	आणद	आणद (आनन्द)
९०३	१०८	३	सवाद	संवाद
९०८	१०९	३	मेहतान	मेहतानी
१०१७	१२२	४	हर्षकुशल	हर्षकुशल
१३७२	१८६	४	भय्या रत्नपाल	भय्या रत्नपालहित
				(देवीदास)
१३७४	१९०	७	५७५४-७५	५७४-५७५
१४४२	२०२	८	र का मूल १७६६	र. का. टीका १७६६

क्रमाङ्क	पृ० स०	कोष्ठक स०	अशुद्ध	शुद्ध
१४५२	२०४	४	लालदास शिष्य द्वारकादास शिष्य प्रपन्नगैसानन्द	प्रपन्न गैसानन्द
१४७६	२०८	४	टी , सतदास	टी०; संतदास
१४८८	२१०	४	जरणादास (चरणदास) (नाथपंथी)	जरणादास (नाथपंथी)
१५१६	२१६	३	भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	भागवत भाषा पद्यानुवाद
१५१६	२१६	७	१-२६	१-२६, १-२४
१५६२	२२६	१	१५६२	* १५६२
१७०६	२४८	७	१-२५	१-७२७
१६५१	२६४	४	मतिसार शिष्य जिनसिंह सूरि	जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि
१६७४	२६८	३	शेषसिंहजी	शेरसिंहजी
२०५२	३१५	७	—	१-६०
२१५४	३३५	३	सुमतिनाथ	सुमतिनाथ
२३०५	३६६	३	हाचद	हरचन्द
२४०२	३८७	७	२६६-३००	२६६ वां
२४०६	३८८	४	कविचन्द	कविचन्द (जवाहरचन्द)
२४२२	३९१	१	* २४२२	* २४२३
२४५०	३९६	३	गुरुचार	गुराचार
२४८६	४०३	४	रसरशि	अज्ञात
२६५६	४३२	२	६०८७ (१) (१) (१) १-७	६०८७ (१) १-७
२७५६	४५१	४	पद्म किंज	पद्मपकज
२६२२	४७६	१	६२२२	२६२२
२६२२	४७६	२	८७५६	७८५६
२६५४	४८५	२, ८	(२)	(२) "रामसहस्रनाम" (आठवें कोष्ठक के साथ)

(परिशिष्ट १)

पृष्ठ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्ध	शुद्ध
४७	१५	जिसमे	जिससे
७६	११	चंद छंद ॥३॥	कुंद कुंद ॥३॥
९६	८	२५०७	१२५०७
११२	फुटनोट ३	मानमा	मानना
११४	७	ग्रहसयुक्ति	युक्तिसग्रह
१३९	६	टाकाकार	टीकाकार
१४७	फुटनोट १	प्रथस्ति-परक	प्रशस्ति-परक
१९५	९	रासक रत्नावली	रसिक-रत्नावली
१९८	११	राधाधिराज	राजाधिराज

संकेत-तालिका

(१)	र० का०	रचना काल
(२)	र० स्था०	रचना स्थान
(३)	टी०	टीकाकार; टीका
(४)	स० क०	सकलन कर्त्ता
(५)	स० का०	सकलन काल
(६)	लि० क०	लिपिकर्त्ता
(७)	लि० स्था०	लिपि स्थान
(८)	गु०	गुटका
(९)	मू०	मूल ग्रन्थ
(१०)	* (फूल)	चिह्नित ग्रन्थ के आद्यन्त परिशिष्ट-१ में दिए गए हैं ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
१	१०६५४(१)	अखर (अक्षर) बत्तीसी	गुरण विजय	१६वीं श.	२४x१६.५	४ था	प्रारम्भ के ३ पत्र अप्राप्त, कृति २६ वे दोहे से प्रारम्भ है। पीछे की ओर मेहता जी फतैचन्दजी के पुत्र का जन्मलग्न वि.स. १८६७ का है। पत्र ५ से ८ तक ५ चित्र बने हुए हैं (१) ऋषभ देवजी (२) पारसनाथजी (३) महावीरजी (४) सतनाथजी (५) नेमीनाथजी। पत्र ९ से २३ के प्रारम्भ में दादूजी का दोहा है व आगे २० तक के पहाड़े हैं। पत्र २४ से ३८ में 'लघु-चाणक्य राजनीति' संस्कृत में है तथा राजस्थानी में टिप्पण दीये गये हैं। गुटका संवत् १८७४, लि. क. रणजीत लि. स्था. पाली अतः में स्फुट पद है।
२	१२३८० (२४)	अग्रदास के पद	अग्रदास	१८वीं श.	२०x१४	२७८-२८६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४	१२४२० (१२)	अदभुत प्रकाम	मोतीराम शिष्य रामदास		१६x१४	३०८-३१२	
१५	१०८७४	अद्वैतानुभव प्रकाश	हरिसिंह सधिक-साधु	२० बी	२८x१५	१-६६	सप्तम प्रकाशान्त
१६	१०६६८	अदोप निरूपण (वृहत् कविवल्लभ गत)	हरिचरणदास		२६x१३ ५	१-२१	अपूर्ण 'व्यजन' विचारशीर्षक देकर अत मे छोड़ दिया है ।
१७	१०६३८ (८)	अध्यात्म प्रकास	मुखदेव मिश्र	१८८५	१६ ५x८ ५	५२४-५६१	र का १७५५ सवत् सत्रह सैवरष, पचपन-अश्वन मास । एकादस बुधिकौ भयी, पूरन यह प्रकास ॥३६॥
१८	१०८४८ (६)	अध्यात्म प्रकाश	मुखदेव मिश्र	१६वीं श	१५.५x८	५८१-६०७	र.का. १७५५
१९	१२२०५ (१०)	अध्यात्म फाग		१७५५	१७x११	८-११	लि क विद्याप्रमोद, लि स्था रूपनगर कीटविद्ध है ।
२०	१२३७७	अध्यात्म रामायण	माधोदास शिष्य दामोदर	१८७०	१०x१६ ५	६३१	
२१	११६३०	भाषा पद्यानुवाद अध्यात्म रामायण	माधोदास शिष्य दामोदर	१६००	३० ५x१५	२३८	र का १६८१
२२	१०६५० (१)	भाषा पद्यानुवाद अन-पाणी री वारता		१६२२	१४ ५x८	१-१०	अत मे 'अन पुराण' शीर्षक है ।
२३	१२२२० (२०)	अनकूट के पद	सूरदास	१६वीं श	१६x१६.५	७६-८१	लि स्था जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि.स. में)	माप से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३३	१२३२० (४४)	अभैरवन्दन स्तवन		गु १८२७	२१ ५x१४.५	५० वा	लि.क. ऊगमदास
३४	१२४२२ (३३)	अभै मात्रा	गोरखनाथ	१८३१	१५x१०.५	२११ वा	लि.स्था डीडवाणा
३५	१२५६१ (६)	अमृतधारा	भगवानदास निरजनी	१८५५	२३ ५x१७	३०८-३३०	लि.क. नंदराम
३६	१०८६७ (६)	अमृतधुनिच्छद		१९वी.श	१८x११	८६-८७	लि.स्था.ककोडग्राम पत्रजीर्ण र.का.(१७२८, र.स्था मऊ में
३७	१०८४६ (७)	अमर बोध	रामदास	१९३१	१७x११	१४-१७	गुटका सजिल्द
३८	१०८६६ (४)	अमरबोध	रामदास	१९१०	७ ५x७ ५	७७-९७	लि.क.साधु छूछमराम ८६ वा पत्ररिक्त
३९	१०९७३ (१)	अमरसेण री चौपई	कुसालचन्द	१९१४	२५ ५x११ ८	१-७	र.का १८६८ र.स्था महापुरा ।
४०	१०९०७ (१)	अयवतीनो चोढालियो	जैमल	१९ वी श	२५ ५x१२	१-३	र.का १८५०, र.स्था नागौर
४१	१२५६८ (२)	अयवती सुकमालरी चउपई	जिनहर्ष	१९वी श	१८ ५x१२ ५	१६-२६	पत्राक १ से १२ अप्राप्त, १३ से १८ "लघुचाराणक्य राजनीति" र.का. १७४१ र.स्था राजनगर लि.स्था.ग्राममाडावास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५२	११५८४ (३२)	अरहनारिषि चण्डालियो	हर्षउदय वाचक शिष्य सोम	१८वीं श.	१६.५x१६	२२४-२२५	र का १७२६ लि क प केशवदास शिष्य हरणउदयगणि
५३	१०६०२ (१)	अरिल (अरिल्ल)	वाजीद	१८०६	१५.५x१२.५	१-५	पत्र बडकने है । लि क भीखनदास
५४	१२५६१ (१६)	अरिल (अरिल्ल)	वाजीद	१८५५	२३.५x१७	३६८-३६९	लि क नदराम लि स्था ककोड ग्राम
५५	१२५५१ (२२)	अरिहत-गुण वर्णन		१७वीं श	१३x११	१४८-१४९	
५६	११२३०३	अवतार चरित्र भाषा सचित्र	नरहरिदास बारहठ	१९१७	३०x२८.५	१-३२८	चित्र स ३३, र का १७३३ लि क वशीधर लि स्था इयारीआ गाव
५७	१०६६२	अश्वमेध भाषा पद्यानुवाद (महाभारतगत)	भगवानदास निरजनी	१९१४	२५x१२.५	१-७६	६६ अध्यायो तक । र का १७५५ लि क बुधराम, लि स्था पीपरा । “ग्रथ समापति यह भयो, मास एक कृत सार ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि म मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६०	१२५७५ (६)	प्रसज्जमाय सज्जमाय	गुणसागर का शिष्य	१६वीं श	१३ ५x१४	१३-१५	पत्राक १०१ भुटित
६१	१२५७० (४२) १	अष्टप्रकारी पूजा	देवचन्द्र शिष्य	१८६६	१६x११ ५	१०१-१०७	र का १७४३
६२	१२३७० (२)	अष्टप्रकारी पूजा	ज्ञानमागर	१६वीं श	१६x११ ५	६-११	गुण युग अचल इट्ट
६३	१२५६५ (२)	अष्टप्रकारी पूजा		१६३७	१६x१२	८-६	लि क दीपसागर, लि स्था फलोदी
६४	१२३७० (१७) ५	अष्टमीस्तुति		१६वीं श	१६x११ ५	१४५-१४६	
६५	१२४२२ (३) ६	अष्टमुद्रा	गोरखनाथ	१८३१	१५x१० ५	२१५-२१६	लि क ऊगमदास, लि स्था. डीडवाणा
६६	१२५६४ (२)	अष्टावक्र भाषा		१६वीं श	१४ ५x१० ५	१५-५०	अत मे स्फुट श्लोक व सवैया है।
६७	१०६४६ (१)	अष्टाक्षरनिरूपण भाषा टीका सह	टी० विट्ठलेश्वर	१६वीं श	१४ ५x७ ५	१-१६	
६८	१२५४८ (३)	अहिल्या-सत	नरहर	१८६०	१६x१२.५	३४-३७	
६९	१२२१० (२८) १	अक्षयतृतीया के पद	कृष्णदास	१६वीं श.	१८x१३ ५	१६६-१७०	
७०	१२२१० (२८) २	अक्षयतृतीया के पद	चन्नभुज	१६वीं श	१८x१३ ५	१६६-७०	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८१	१२२१० (२७)५	आचार्यजी की बधाई के पद	मानिकचन्द्र	१९वीं श.	१३x१३.५	१६६-१६७	
८२	१२२१० (२७)६	आचार्यजी की बधाई के पद	विष्णुदास	१९वीं श.	१८x१३.५	१६७वा	
८३	१२२१० (२७)७	आचार्यजी की बधाई के पद	सगुनदास	१९वीं श.	१८x१३.५	१६८-१६९	
८४	१२४१२ (१)	आचार्यजी की वार्त्ता (वल्लभकुली)		१९वीं श.	२१x१६.५	१-१५	प्रारम्भ के पत्र अग्रप्राप्त
८५	१२४१२ (४)	आचार्यजी की सेवको की वार्त्ता (वल्लभकुली)		१९वीं श.	२१x१६.५	१-१४७	अतः मे सभी सेवको की सूची दी हुई है। इसमें १६ सेवको की बातें हैं। लि.स्था. डीडवारा र.का १६८४
८६	१२२१८ (५७)	आणदसधि	श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष वाचक	१७६६	२५x१०	६६-८०	र.का १६८४
८७	१२१८०	आणद सधि	श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष वाचक	१९३३	२५x११.५	१-१०	र.का १६८४ लि.क. सवाईसागर शिष्य विजयसागर लि.स्था. पोहकरण
८८	११०२७	आत्मप्रकाश (वैद्यक)	आत्माराम शिष्य दोलतराम	१९७०	१८x९	१-१२५	पत्र १-८६ तक पुराना कागज है व बाद में नया कागज है। साथ में एक खरडे पर 'निघण्ट' भैषज्य-

गजस्थान प्राच्यविद्या प्रालिखित (जाधपुर मंत्रालय)						
क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (सेमी. मे.)	पत्र सख्या
						भाषा भी है। विषयनामानु- क्रमणिका सहित। लि.क. रामचतुर् शिष्य दीर्घराम, लि.स्था जोधपुर।
८६	११०८१	आत्मप्रकाश (वैद्यक)	आत्माराम शिष्य दोलतराम	१६०१	१७x१२	३७४
८७	१२०६२	आत्मप्रकाश (वैद्यक)	आत्माराम शिष्य दोलतराम	१६०३	३२x१४	१-१६६
८८	१२२०६	आत्मप्रतिबोध		१८वीं श.	२५x१८	७०-७१
८९	१२२१८ (५५)	आत्मसंज्ञाय	हर्षकुमार	१८वीं श.	२६५x१२	६७-६८
९०	१२३७२ (३)	आत्मा अचल अष्टक (सुन्दराष्टक)	सुन्दरदास	१९वीं श.	२४x१६	८०-८७
९१	१२५६२ (६) ४	आत्मा अचल अष्टक	सुन्दरदास	१९वीं श.	१४x१०	१५६-१६१
९२	१२५७५ (७)	आत्मशिक्षा सञ्ज्ञाय	पार्श्वचंद	१९वीं श.	१३५x१४	१५-१७
						प्रारम्भ के दो पत्र अप्राप्त। प्रारम्भ का पत्र जलमस्त लि.क. राजमल मोहतो लि.स्था नागौर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञानव्य
६६	१०२१८ (८२)	आतम सञ्भाय	सहजसुंदर	१८वीं श	२६ ५x१०	१३०वा	
६७	१२३२० (२७)	आतम सञ्भाय		१८वीं श	२१ ५x१४ ५	३३वा	
६८	१२४५१ (१८)	आदिजिन आलोयगा स्तवन	समयसुन्दर	१७वीं श	१३x११	१३१-१३४	
६९	११५८५ (८)२१	आदि जिनस्तवन		१६०३	१६ ५x११ ५	१५४वा	
१००	१२०६८ (११)	आदिजिनस्तवन	समयसुन्दर	१८८८	२३ ५x५१	५३-५४	लि क जती वीर वैतान लि स्था कलकत्ता
१०१	१२२१८ (५०)	आदिजिनस्तवन	धर्मसुन्दरगणि	१८वीं श	२६ ५x१२	६५-६६	
१०२	१२५७५ (११)	आदिजिनस्तवन		१६वीं श	१३ ५x१४	२६वा	
१०३	११५८४ (२७)	आदिनाथस्तवन	सहजसुंदर	१८वीं श	१६ ५x१६	२१३-२१४	लि क प तेजसी
१०४	११५८५ (८)१५	आदिनाथस्तवन	हर्षचंद	१६०३	१६ ५x११ ५	१४८वा	लि क लीखमीचंद कोचर लि स्था वालाहेडा
१०५	११५८५ (८)२६	आदिनाथ स्तवन	जसविजय	१६०३	१६ ५x११ ५	१६४ वा	
१०६	१२२१४ (५)	आदिवोध	ध्यानदास	१६वीं श	२१ ५x१३	६६-७१	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०७	१२२१८ (५८)	आर्द्रकुमार सज्जाय	मानसागर शिष्य	१८वीं श.	२६.५x१०	८०-८१	लि.क.वीरवैताल लि.स्था.कलकत्ता
१०८	१२०६८ (१)	आनन्दघन चौबीसी	जीतसागर आनन्दघन	१८८८	२३.५x१५	१-१०	
१०९	१२३७० (७)	आनन्दघन चौबीसी	आनन्दघन	१९वीं श.	१६x११.५	५६-७२	
११०	१०७९१	आनन्दघन चौबीसी सटवार्थ	आनन्दघन, टन्वा-ज्ञानविमल	१९०३	२७.५x१३	१-४१	लि.क.हमीरविजय लि.स्था.हरिदुर्ग
१११	१२३६७ (५)	आनदरीसवि रो गीत		१९वीं श.	२५.५x१६.५	७६वा	
११२	१२५७५ (१६)	आलोयणागीत	मतिशेखर वाचक	१९वीं श.	१३.५x१४	५६-५७	
११३	१२२१८ (१०६)	आलोयणा छत्तीमी	समयसुंदर	१८वीं श.	२६.५x१०	१२०-१२१	लि.क.हमीरविजय लि.स्था.हरिदुर्ग
११४	१०६०० (९)	आरती	सेवगराम	२०वीं श.	१२x८.५	७७-७९	
११५	११५८५ (८)४९	आरती		१९वीं श.	१९.५x११.५	१८८वा	
११६	१२२१८ (२०)	आरती	मीराँ	१८वीं श.	२६.५x१०	३५ वा	लि.क.हमीरविजय लि.स्था.हरिदुर्ग
११७	१२२२० (२०)	आरती	नामदेव	१९वीं श.	९.५x६.५	३९-४०	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	गन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
११८	१२५७४ (२)४	आरती	रामचरण	२०वीं श.	१७x१० ५	८१ वा	लि.क. बक्षीराम
११९	१२५७४ (७)१	आरती	सतदास	२०वीं श.	१७x१० ५	१६७ वा	
१२०	१२५७४ (७)२	आरती	रामचरण	२०वीं श.	१७x१० ५	१६८, १७० १७१वे	
१२१	१२५७४ (७)३	आरती	रामजन	२०वीं श.	१७x१०.५	१६८वा	
१२२	१२५७४ (७)४	आरती	डुलहराम	२०वीं श.	१७x१० ५	१६८वा	
१२३	१२५७४ (७)५	आरती	चन्द्रदास	२०वीं श.	१७x१० ५	१६९वा	
१२४	१२५७४ (७)६	आरती	नारायणदास	२०वीं श.	१७x१० ५	१६९वा	
१२५	१२५७४ (७)७	आरती	हरदास	२०वीं श.	१७x१० ५	१६९वा	
१२६	१२५७४ (७)८	आरती	कबीरदास	२०वीं श.	१७x१० ५	१७०, १७१, १७२ वे	
१२७	१२५७४ (७)९	आरती	नामदेव	२०वीं श.	१७x१० ५	१७० वा	
१२८	१२६१२	आरती		१८३६	२५ x १५	४४ वा	लि.क. सिधवी हिमतराम लि.स्था. दिल्ली में यमुनातीरे

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि. म. से)	माप (से.मी. से)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०६	१२३२० (४०)	आलोचना मञ्जरी		१८वीं श	२१.५ x १४.५	४८ वा	
१३०	१२२१८ (६०)	आलोकना मञ्जरी	ज्ञानउदोत शिष्य जिनहर्ष	१८वीं श	२६.५ x १०	८२-८३	
१३१	१२४४६ (३)	आपादभूत चउदालियो	ऋषि रायचंद	१८वीं श	२५.५ x ११	५-७	र का १८२६, र स्था. पाली र का १६३८
१३२	१२२१८ (११३)	आपादभूत धमाल	कनकसोम	१८वीं श	२६.५ x १०	१२४-१२६	
१३३	१२२०८ (३)	आहार-अगाहार विचार		१८वीं श	२५.५ x १८	६६ वा	
१३४	११३१४ (२)	इकलाकमहसनीन (हिन्दुगी जवान से)			१७.५ x १४	२७-१४६, १-३६	अनेक किस्सो का संग्रह है। अपूर्ण। जलाभिषिक्त होने से पत्र चिपके हुए हैं।
१३५	१२०७३	इतिहाससार समुच्चय	लालदास पुत्र उधौदाम	१८८७	३०.५ x १५.५	१-४३	लि. क. जैतराम, लि. स्था. मूडवा (नगौर)
१३६	१२५२५	इतिहाससार समुच्चय	लालदास पुत्र उधौदाम	१८८७	३३.५ x १६	१-१६	लि. क. के नाम-स्थान पर स्याई फेरी हुई है। आद्य- अन्तिम पत्र शोभन।
१३७	१२३५५	इतिहाससार समुच्चय भाषा	मुकददाम निरजनी	१८०३	३१.५ x १५.५	१-७२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३८	१२२०६	इनजुलपुरान वेदशास्त्र	हकीम फरामिसुत	१६३३	२१५x१६५	१-१०८	चमड़े की जिल्दबन्धी । यूनानी दवाइयो के नुस्के व रोग निदान । लि. क. पुजारी रामप्रसाद लि. स्था रूपनगर
१३९	१२५८१ (११)	इला-पुत्र सज्जाय	लब्धिविजय	१६वी श	१६x१०५	७५-७६	
१४०	१२२१० (१७)१	इद्र को पद	कृष्णदास	१६वी श	१८x१३५	६५ वा	
१४१	१२२१० (१७)२	इद्र को पद	परमानन्द	१६वी श	१८x१३५	६५-६७	
१४२	१२२१० (१७)३	इद्र को पद	चन्नभुज	१६वी श	१८x१३५	६६ वा	
१४३	१२२१० (१७)४	इद्र को पद	गोविंद	१६वी श.	१८x१३.५	६६वा	
१४४	१२२१० (१७)५	इद्र को पद	सूरदास	१६वी श	१८x१३५	६७वा	
१४५	१२२१० (१७)६	इद्र को पद	कुभनदास	१६वी.श	१८x१३५	६८ वा	
१४६	१२२२० (२१)	इद्रकोप के पद	कृष्णदास	१६वी श	१६५x१६	८१ वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिंगिकाल (वि स मे)	माप (मं मी से)	पत्रमख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४७	१२२०५ (१२)	इद्रजाल		१७५५	१७x११	१२-१३	लि क विद्याप्रमोद, लि स्था रूपनगर
१४८	१०८४५ (३)	इम्रनधारा (अमृतधारा)	भगवानदास निरजनी	१८८६	१५५x१०५	७६२-८२०	ग्रन्थ १४ प्रभावो मे विभक्त है। र का १७२८, र स्था क्षेत्रवाम लि क जेरामनारायण, लि स्था पोकरण लि क खेमचन्द्र
१४९	१२३२० (४८)	उत्पत्ति सञ्भाव्य	श्रीसार शिष्य रत्नहर्षवाचक	१८१९	२१५x१४५	७-१०	लि स्था वगडी नगर
१५०	११५७७	उत्तम चरित सानुवाद	मू चारुचन्द्र शिष्य भक्तिनाभ टी०चारित्र्यमाणरगण	१८४९	२६x११	१-३६	
१५१	१२५८५ (७)	(१) उदंगिरिजी किस्तुरा वाई री परची	सुखसागर शिष्य दरियाव	१९२७	१९५x१५	२४४-२५३	बीकानेर के आगासर गाव की। लि क आरतराम शिष्य सुलभराम, लि स्था वदनोर
१५२	१२००२	उपदेशबत्तीसी (बालचन्द-बत्तीसी)	बालचद शिष्य गगदास	१९वी श	२५५x१२	१-३	र का १६८५, र स्था अहमदाबाद

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५३	१०६८३	उपदेशी ढाल संग्रह	अनेक कर्तृक	१६३७	२५x१२	१-१३१	विभिन्न जैन कवियों के पद व ढाले संगृहीत हैं। विवरणात्मक सूची परिशिष्ट में देखें।
१५४	१०८४६ (१५)	उपदेस दिढावणि	फरीदजी	१६३१	१७x१०	८७-८६	
१५५	१०६३७ (२)	उपदेस बावनी	किसनदाम बाचक	१६२२	१४ ५x७ ५	१-४०	र का १७०८ लि क रामलाल, लि स्था वदनोर-रामद्वारा श्री ये सग राज लोक गज सिरताज गुरु, तिनकी क्रिपा जू कबताई पाई पावनी । समत सतरैसत आठै विजैदसमी कौ, ग्रथ की समापति भई है मनभावनी ॥ साधवी सुग्यान मा की जाई श्री रतनबाई, तज्यौ देह ताते ऐह रची परिचावनी ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकान (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्रमख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५६	११००८ (२)	उपमा-संग्रह	हीराचंद कानजी	२०वीं श	२६x१३	१४-२२	मते कीन मत लीन तत्त्व ही पै रुचि दीनी, वाचक किसन कीनी उपदेस बावनी ॥ २ का १६२२ प्रति समाकालीन प्रतीत होती है। पत्र-१५-१६ पर उपमाओं के वर्गीकरण की सारणी है।
१५७	१२०६८ (८)	उल्लासकम्		१८८८	२३५x१५	४८-४६	लि क जती वीर बैताल, लि स्था कलकत्ता १४ कवित्त है।
१५८	१०८४२ (१)	ऊमादे भट्टियाणीरा कवित्त	आशा वारठ	१६००	२४५x७५	१-२	
१५९	११४७७ (१)	ऊषाहरण	परमानन्द भट्ट		२३५x१७	१-५१	
१६०	१२६१२ (१६)	ऋषभकुमार गीत		१६वीं श.	२५x१५	५७-५८	लि क सिधवी हिम्मतराम लि स्था जैपुर
१६१	१२३२० (१६)	ऋषभगीत		१८वीं श	२१५x१४५	२५वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (मे मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२	१२३७० (६)अ	ऋषभगीत	जसविजय वाचकशिष्य नयविजय	१६वी.श	१६x११x	६८वा	१८वा पत्र अग्राप्त । र.का. १८४०, र.स्था. पीपाड लि.स्था. गगगराणा
१६३	१२४४०	ऋषभ-चरित्र	ऋषि रायचन्द	१८४५	२६x११x	१-१६	
१६४	१२३६७ (३)	ऋषभजिन-गीत	विनीतविमल	१६वी श	२५x११x	५६७वा	
१६५	१२३७० (६) ३	ऋषभजिन-स्तवन	क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म	१६वी श	१६x११x	५१-५४	र.का. १८६८, र.स्था मडोवर
१६६	१२३७० (१७) १	(१) ऋषभजिन-स्तुति (२) द्वितीया स्तुति		१६वी श.	१६x११x	१४०-१४१	
१६७	१२५५१ (१)	ऋषभदेव धवल		गु० १६३२ -१६८०	१३x११	५८-७७	पत्र १ से ५७ तक अग्राप्त । कीटविद्ध । पत्र चिपके हुए ।
१६८	११५८५ (८) १७	ऋषभदेव-पञ्चस्तवन		गु० १६०२	१६.५x११x	१४६वा	लि.क. लिखमीचद कोचर लि.स्था. बालाहेड़ा
१६९	१२३२० (४१)	ऋषभदेव-स्तवन		गु० १७६७	२१.५x१४.५	४६वा	
१७०	११५८५ (८) ३७	ऋषभदेव-स्तवन	देवचन्द्र	गु० १६०२	१६.५x११.५	१७१वा	लि.क. लिखमीचद लि.स्था बालाहेड़ा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकान (वि म मे)	माप (मे मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७१	१२२०५ (२६)२	ऋषभनाथ स्तवन	जिनराजसूरि	गु०१७५०	१७x१२	१०८-१०९	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
१७२	१२५७७ १२२६३	एकतात्रोव एक सिलोकी(श्लोकी)भागवत	सतदास	१६वी श	२१x१५ ५	७८-७९	लि क विठ्ठलदाम,
१७३	१२२६३ (५)	श्रीकिमन-लीला भापा-टीका		१६वी श	२२ ५x१६	१०-१४	लि स्था जोधपुर
१७४	१२२२५ (५)	एक सिलोकी भागवत		१६वी श	२४ ५x१६ ५	१७१-२७४	
१७५	१२२२५ (४)	श्री किमन लीला भापा एक सिलोकी रामायण		१६वी श	२४ ५x१६ ५	१६६-१७०	
१७६	१२२६३ (४)	भापा-टीका एक सिलोकी रामायण		१६वी श	२२ ५x१६	६-१०	लि क विठ्ठनदास, लि स्था जोधपुर
१७७	११६४८ (१)	भापा-टीका एक सिलोकी रामायण		१६वी श	२७x१६ ५	१-४	जीर्ण-शीर्ण
१७८	१२०१६ (१)	एकादशी कथा माहात्म्य- भाषा	नागगदास	१६०४	३१x१४	१-३२	
१७९	१२४७६	एकादशी कथा माहात्म्य- भाषा	व्यानदास	१८१६	२६ ५x१४	३०	जीर्ण-शीर्ण एव जलाभिपिक्त ।
१८०	१२४८३	एकादशी कथा माहात्म्य- भाषा	व्यानदास	१८६६	३१x१४ ५	१-४५	लि क मुखराम, लि स्था नागपुर । लि क वैष्णव पोकरदास

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८१	११५७४	एकादशी महात्म्य (वृह्माण्ड पुराणगत)		१८६२	२८.५x१५	१-२१	७ वा पत्र खण्डित । पत्र जलाभिपिक्त । लि. क.नरसिंघदास सुन्दरदास लि. स्था. नागोर ।
१८२	१२५६९ (१)	एकादशी-व्रत-कथा-माहात्म्य		१९वीं श	१६.५x११	१-११	प्रारम्भ के पत्र अप्राप्त । पत्रांक १०, ११, १२ पर गो० तुलसीदास कृत तथा अन्य स्फुट कवित्त
१८३	१२३८० (२)	एकादसीलीला (कृष्ण-उद्धव सवाद)		१८वीं श	२०x१४	१०६-१०९	
१८४	१०९३८ (२)	एकादस (स्कन्ध भागवत) भाषा	चतुरदास शिष्य सतदास	१८८५	१६.५x८.५	३-४६०	र.का. १६९२ जेठ शुक्ला ९ मंगलवार ।
१८५	१०९३१ (१)	एकादस (स्कन्ध भागवत) भाषा	चतुरदास शिष्य सतदास	१९वीं श	१४x१०.५	१-३०७	चौपाई २३९४, दुहा ४४ र.का. १६९२
१८६	१२२१८ (१४६)	एकादसी स्तवन	जिनलब्धिसूरि	१८वीं श	२६.५x१२	१६१ वा	
१८७	१०८६२ (५) ३०	ओखद आँख्या दूखे जीके देवाकी		१८९८	१७x१४	३५ वा	लि. स्था. जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सेमी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८८	१०८६२ (५) २४	योगद नजला की		१८६८	१७x१४		गुटकान्तर्गत- लि.स्था जोधपुर
१८९	१०८६२ (५) १५	ओखद दान बंधवा की		१८६८	१७x१४	२४-२५	गुटकान्तर्गत- लि.स्था जोधपुर
१९०	१२०६६ (६)	अक प्रश्न विचार		१६६६	१५x१४	११० वा	
१९१	१०८८०	अजना-चरित्र		१९वीं श	२५x११	५१८	
१९२	१२३०४	अजना रास सचित्र		१९वीं श	२४x११	१-३१	चित्र स ४६। पत्र स २, १२, १३, १६ व २८ वे अप्राप्त।
१९३	१२४२१ (१५)	अजना वाङ्मय (वाक्य)		१९वीं श	१७x१२	२४३वा	
१९४	१०८०२	अजनासती की रास		१९३६	२७x१२	१-१२	लि.क. रामकृष्ण महेशदास का शिष्य, लि.स्था जगरामनगर
१९५	१२१४७	अजनासुदरी रास (हनुमत्चरित)	भुवनकीर्ति शिष्य ज्ञाननदी	१९वीं श	२५x१३	५१-३८	र.का १७०६, महाराणा जगतसिंहजी के राज्यकाल में र.स्था उदयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निष्पत्ति (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६६	१२२१८ (१४५)	अतरीक पार्श्वनाथ-स्तवन	सुमतिहस	१७६६	२६५x६५	१५६-१६१	कर्त्ता खरतरगच्छीय
१६७	१२३७० (४२) १२	अतरीक पार्श्वनाथ स्तवन	रगहीर	१६वीं श.	१६x११५	१२६-१३०	र का. १८५५
१६८	१२२०५ (६)	अतरीक पार्श्वनाथ स्तवन (२) कापडहेडा पार्श्वनाथ- स्तवन आदि	कीर्तिवर्द्धन	१७५५	१७x११	१-४	लि क विद्याप्रमोद
१६९	१२२०५ (१६) ५	अतरीक पार्श्वनाथ स्तवन	सदाराम	१७५५	१७x११	४८वा	लि क विद्याप्रमोद
२००	१२३११ (४)	कवका-बत्तीसो	सुदामा	१६४०	१७५x८५	११६-१२८	लि स्था. रूपनगर
२०१	१०८६२ (१)	कवका-वारखडी	सुदामा	१८६८	१७x१४	१-१०	लि क साधु गगाराम
२०२	१२४२२ (१२)	कगेरी पावजी को पद	कगेरीपाव	गु १८३१	१५x१०५	२४६-२५०	लि स्था कोटा-रामद्वारा
२०३	१२३७० (३५)	कपाट वावनी	रतनचन्द	१६ वीं श	१६x११५	३३-४४	गुटका सजिल्द ।
२०४	११६४८ (६)	कबीरदास-जन्मबोध पत्रिका की रमेणी	कबीरदास	१८५३	२७x१६.५	३४७-३५२	लि स्था जोधपुर
२०५	१२४२६ (७)	कबीरदास-जन्मबोधपत्रिका की रमेणी	कबीरदास	२० वीं श	१६५x१३	१४-४३	र का १८६०, र स्था पीपाड (जोधपुर) लि क गोपालदास लि स्था कोलिया

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकान (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र मख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०६	१२४२२ (२२)	कबीरजी अरु रैदासजी को मवाद		गु १८३१	१५x१० ५	४४३-४४८	लि क ऊगमदास
२०७	१२४२१ (६)	कबीरजी का खेता	कबीरदास	गु १८६३	१७x१२	११६-१२७	लि क बालदास
२०८	१२२२६ (६)	कबीरजी की परचई	अनन्तदास	१६वीं श	१४x१२ ५	३७-५६	लि स्था जोधपुर
२०९	११५८३ (१०)	कबीरजी की परचई	अनन्तदास	१६६३	१८x१५	६६-११५	लि क वीरमदास निरजनी
२१०	११०६२ (२)	कबीरजी की परचई	अनन्तदास	१८३६	१८x१० ५	६७-१४६	लि स्था कैरू (जोधपुर)
२११	१२४२२ (१६)	कबीरजी की परचई	अनन्तदास	गु १८३१	१५x१० ५	४१२-४२६	लि क उधवदास
२१२	१२४२० (१६)	कबीरजी की परची	अनन्तदास	गु १६३२	१६x१४	४०८-४३०	लि क सेवादास शिष्य आत्माराम
२१३	१२५८५ (२)	कबीरजी की परची	अनन्तदास	१६२७	१६x१५	११६-१५०	लि स्था गुलु दा
२१४	१२३८० (३)	कबीरजी की रसेणी	कबीरदास	गु. १७२४	२०x१४	११० वा	लि क ऊगमदास
२१५	१२३७४ (२)	कबीरजी की वाणी	कबीरदास	१६वीं श	११x१६ ५	१८७-१६५	लि स्था डीडवाना
							लि क जमनादास
							लि. स्था रतनगढ़- भरथिया की धर्मशाला
							लि क आरतराम
							लि स्था वदनोर
							अपूर्ण । आगे के पत्र रिक्त हैं।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१६	१०८६८ (६)	कवीरजी की साखी	कवीरदास	१६२६	१३x८ ५	६५-१७७	अ ग ११, साखी २६३
२१७	११६८६ (३)	कवीरजी की साखी	कवीरदास	१६०६	२३ ५x१६	७-६	स १८६६ वाली प्रति से प्रतिलिपिकृत । लि क वसतीराम पूरविया ब्राह्मण लि स्था. जोधपुर लि क जमनादास लि स्था रतनगढ-भरथिया की धर्मशाला
२१८	१२४२० (१८)	कवीरजी की साखी	कवीरदास	गु १६३२	१६x१४	३८१-४०७	
२१९	१२५६१ (२७)	कवीरजी की स्फुट वाणी	कवीरदास	२०वीं श	१५ ५x१०	१७४-१८३	
२२०	११५८३ (२१)	कवीरजी के पद	कवीरदास	१६६३	१८x१५	१६६-१७१	लि क अमरदास
२२१	१२५६१ (२)	कवीरजी को कृत (वाणी सग्रह)	कवीरदास	गु १८५५	२३ ५x१७	१२२-१४७	अंग ४६, साखी ८४५ लि क नदराम लि स्था ककोड ग्राम लि स्था नारनोल
२२२	१२३६६ (२)	कवीरजी को कृत (वाणी सग्रह)	कवीरदास	गु १७८६	२४x१७ ५	१६६-१८६	
२२३	११०८८ (१)	कवीरदासजी की वाणी	कवीरदास	१६वीं श	१५ ५x१३	१२७३	प्रारम्भ के १७ पत्रों में गुरुवावली या 'दया' लिखित है ।

क्रमांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	निष्पत्ति (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र-संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२४	कवीरदासजी की वाणी	कवीरदास	१८५३	२७x१६ ५	७८-१६६	लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया
२२५	कवीरदासजी की वाणी	कवीरदास	१८०६	१५ ५x१२ ५	२४-३३	
२२६	कवीरदासजी की साखियाँ (प्रगवद्ध)	कवीरदास	१६वी.श.	१४ ५x१० ५	३०-७२	लि. क. साधुराम नागर लि. स्था. उज्जैन
२२७	कवीरदासजी की साखियाँ (अप्रगवद्ध)	कवीरदास	१७२०	१६.५x१४ ५	१-१८०	प्रथम पत्र नुदित । जल ग्रस्त एव स्याही फैली हुई है । कवीरदासजी की वाणी के प्राप्त गुटकों में से प्राचीनतम गुटका है ।
२२८	कवीर साहब का स्फुट अंग	कवीरदास	१६२७	८ ५x७	६८६-७०३	लि. क. केवलराम लि. स्था. रावजी का बाग, जयपुर
२२९	कवीर साहब को कृत	कवीरदास	१८३१	१५x१० ५	१-११०	गुटके की सिलाई टूट कर पत्र पृथक हो गये हैं व किनारे खण्डित है ।
२३०	कवीर साहिबजी की स्फुट वाणी एवं पद संग्रह	कवीरदास	१६वी.श.	१४x१२.५	४७४-५६७	लि. क. उगमदास लि. स्था. डीडवाना लि. क. वीरमदास निरजनी लि. स्था. कैरू (जोधपुर)

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निकाल (वि. सं. मे)	माप (से. मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३१	११५८४ (२६)	कर्मल वधकवित्त	पं० नैरासी	१८वी.श.	१६५x१६	२१२वा	लि. क. गोपालदास
२३२	११६४८ (७२)	कमालजी का पद	कमाल	१८५३	२७x१६५	३२७-३२८	लि. स्था. कोलिया
२३३	११०५८	कयवन्ना नी चौपई	जयरग जैतसी शिष्य पुण्य कलश	१७८१	२५५x१७	१-२१	र. का. १७२१ र. स्था. बीकानेर
२३४	११५८५ (८) ३६	करणी-स्तुति	१६वी.श.	१६वी.श.	१६५x११५	१७०वा	लि. क. उदयकुशल गरिण लि. स्था. डूंगला
२३५	११५८४ (४)	करम उदिम (कर्म-उद्यम) सवाद रास	हेमराज ऋषि शिष्य मुनि संग्राम	१७००	१६५x१६	२५-२८	र. का. १६७७ र. स्था. गढ वैराठ-वधनौर लि. क. चैला नरसिध लि. स्था. चीतामा ग्राम
२३६	१२५८५ (११)	करमावाई री परची	मुखसारण	१६२७	१६५x१५	२६२-२६८	लि. क. आरतराम लि. स्था. बदनौर
२३७	१२५८५ (१०)	करमेतीवाई री परची	मुखसारण	१६२७	१६५x१५	२८२-२८२	नगर खडेलो देस ठूँडाड (जयपुर) पुरोहित जिनको परिवार । लि. क. आरतराम लि. स्था. बदनौर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाता (वि. म. मे)	माप मे.मी. मे)	पत्र मस्या	विशेष ज्ञातव्य
२३८	१०८६६ (१६)	करुणा छत्तीसी	पूरणदास शिष्य दयालदास	१६२७	८ ५x७	५५८-५७१	लि. क. केवताराम लि. स्था. रावजी का बाग, जयपुर
२३९	१२३७१ (११)	करुणा छत्तीसी	माधोराम	१८३६	१८ ५x१६	५३२१-३२६	अन्त में 'जीभडी' पर कवित्त है।
२४०	१२५६१ (३६)	करुणा-वावनी	मलूकदास	२०वीं श.	१५ ५x१०	२२६-२३६	लि. क. भीखनदास गौड लि. स्था. नागपुर (नागौर)
२४१	१०८६७ (३)	करुणा सागर	दयालदास	२०वीं श.	१२x११	११६-१५१	
२४२	१०६०० (३)	करुणा सागर	दयालदास	२०वीं श.	१२x८ ५	४-२५	बीच के पत्र जले हुए हैं, अक्षर खण्डित है।
२४३	१२४२० (२१)	करुणा सागर	दयालदास	गु. १६३४	१६ ५x१४	४३८-४४८	लि. क. साधु उदोतराम लि. स्था. वीदासर-रामद्वारा
२४४	१२२१८ (६१)	कर्म ग्रन्थ स्तवन		१७६२	२६ ५x१०	१०६-११२	लि. क. गुणरूप विजय लि. स्था. ईडवा पत्तन
२४५	१२२१८ (११८)	कर्म छत्तीसी	राजसमुद्र (जिनराज सूरी)	१८वीं श.	२६ ५x१०	१३१-१३२	
२४६	१०८४३ (६)	कर्म प्रकृति विधान	बनारसीदास	१६वीं श.	२५ ५x२०	२८-३६	लि. क. मुनि मगराज लि. स्था. रतनपुरी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता यादि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४७	१२१८५ (४)	कर्म वत्तीसी		१८६७	२१x११५	६-८	लि. क. रगसागर लि. स्था. जैतारण
२४८	१०८४६ (१२)	कर्म विपाक गीता		१६३१	१७x१११	११-१४	गुटका सजिल्द
२४९	१०८६१ (४)	कर्म विपाक गीता		२०वीं श.	१६x१२	७७-८१	लि. क. मनोरथराम गुटका सजिल्द
२५०	११५८५ (८) २३	कर्म सज्जाय		१६वीं श.	१६x११५	१५५वा	अपूर्ण
२५१	१२५६१ (७)	कलजुग का कवित्त		२०वीं श.	१५x११०	१६-१८	
२५२	१२२२६ (७) ४	कलजुगी मित्र का कवित्त	कवि व्यास	गु. १८७६	१४x१२५	४३-४४	
२५३	१०८४३ (२)	कल्याणमंदिर-भाषा	बनारसीदास	१८६५	२५x२२०	१-३०	अपूर्ण । सुवाच्य लिपि । महाराज बलवतसिंहजी के समय में लिपिकृत । लि. क. मुनि गराज लि. स्था. रतनपुरी
२५४	१२२१८ (५) 7	कल्याणमंदिर-भाषा	बनारसीदास	गु. १७५५- ६७	२६x११०	२७-२६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निकाल (पि स मे)	माप (मे मी मे)	पत्र सख्या	विवरण ज्ञातव्य
२५५	१२३५४	रुचिनावली	गोस्वामी तुलसीदास	१६१६	३१ ५x१४ ५	१-३६	लि क. वैष्णव लालदास लि स्था वीकानेर, दगोची श्री-गंगाजी की ।
२५६	१२३५७	रुचिनावली	गोस्वामी तुलसीदास	१६१७	३१ ५x१४ ५	२-२६	प्रथम पत्र ग्रन्थात् । लि क उर्ध्वदास
२५७	१२२१७ (४)११	कवित्त-गंगाजी का	कवि गग	१६वीं श	२१ ५x१२	८१-८२	
२५८	१२२१७ (४)२	कवित्त-गंगाजू (जी) के	रामकृष्ण	१६वीं श	२१ ५x१२	७२-७३	
२५९	११५८४ (२१)	कवित्त-डूंगरसी निवाज का		१८वीं	१६ ५x१६	१३७वा	
२६०	१२३७१ (१४) ३	कवित्त-नवग्रहा रो	कल्याण	१८३६	१८ ५x१६.५	१५वा	लि क भीखनदास लि स्था नागौर
२६१	१२३७१ (१४) ५	कवित्त-भवानीजी रो	कल्याण	१८३६	१८ ५x१६ ५	१५वा	लि क भीखनदास लि स्था नागौर
२६२	११५८४ (२८)	कवित्त-मदिरा का		१८वीं	१६ ५x१६	२१६वा	
२६३	१२२१७ (४) १०	कवित्त-महादेवजी रा	कवि गग	१६वीं श	२१ ५x१२	१८वा	
२६४	१२३७१ (१४) २	कवित्त-महादेवजी रो	जगदीश	१८३६	१८ ५x१६.५	१५वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५	१२३७१ (१४)६	कवित्त-वर्षा ऋतुगे	कल्याण	१८३६	१८५x१६५	१५वा	लि क भीखनदास
२६६	१२३७१ (१४)४	कवित्त-शनिश्चरजीरो	कल्याण	१८३६	१८५x१६५	१५वा	लि. स्था नागोर
२६७	११०८५ (११) -	कवित्त-व्रजाधीश का	जगन्नाथ	१९वीं श	१६५x१३५	६६-७१	लि. क. भीखनदाम
२६८	१०८६६ (६१)६	कवित्त सवैयादि	जगन्नाथ	१९२७	८५x७		लि. स्था नागोर
२६९	१०६०७ (७)	कानड कठियारा नी चौपई	मानसागर	१९वीं श	२५५x१२	१३-७१	लि क. केवलराम
२७०	१२२१८ (६५)	कापरहेडा पार्श्वनाथ सज्भाय	ग्यानउदोत	गु १७५५से १७६७	२६५x१०	८७-८८	लि स्था रावजी का बाग, जयपुर
२७१	१२२०५ (१)	कापरहेडा-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनहर्ष	गु १७४८से १७५५	१७x११	१ला	अपूर्णे।
२७२	१२२०५ (१६) ६	कापरहेडा पार्श्वनाथ-स्तवन	कीर्तिवर्द्धन शिष्य	गु १७४८से १७५५	१७x११	४८-५०	पत्र २ पर सस्कृत-प्राकृत मे स्तुति है।
२७३	१२२०५ (३०)	कापरहेडा-पार्श्वनाथ-स्तवन	दयारत्न	गु १७४८से १७५५	१७x११	११३वा	लि क विद्याप्रमोद
२७४	१२२१८ (६८)	कापरहेडा-पार्श्वनाथ स्तवन	सुमतिहर्ष	गु १७५५से १७६७	२६५x१०	८६-९०	लि स्था रूपनगर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निष्काल (वि म से)	माप (ल मी से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७५	१२५८६ (३)	कामी-नर को अग्र	कवीरदास	१६वीं श	१२x६५	३३४१	कवीरवाणी के अन्तर्गत । लि क विहारीदास
२७६	१२५४१	कायावेली अर्थ मजुत	दाहदयाल	१६वीं श	२८x१३५	१-१०	
२७७	१२५२६	कायामूल	कवीरदास	२०वीं श	१६५x१३	७-८	
२७८	(१०)	काया सज्जाय	रत्नतिवक सेवक	१८७४	२४x१६५	११०वा	लि क रणजीत
२७९	१०६५४ (११)	कार्तिक पूनम रो बत्वारण (व्याख्यान)		१६७५	२७x१४	२३-२६	लि म्था पाली
२८०	१२१६६ (२)	कार्तिक महात्म (माहात्म्य) (भाषापद्यानुवाद)	भगवानदास निरजनी	१६वीं श	२५x१४५	१-६८	लि क. प केशरीसागर लि म्था फलीदी र का १७४३ लि क माध लछीराम
२८१	१०६४३ (१)	पद्मपुराणगत कार्तिक माहात्म्य		१८८४	१८x१४	१-७१	
२८२	११५५१	कार्तिक माहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)	भगवानदास निरजनी	१८६१	३०x१८	१-८६	र. का १७४३ लि म्था नागोर-बखतसागर लि. क वरकत निरजनी
२८३	१०६०६ (१)	कालज्ञान (वैद्यक)	नक्षमीवल्लभ गणि	१७८८	१५५x१०	१-१०	लि म्था तिलियासर (वीकानेर)
२८४	१२३६६	कालज्ञान स्वरोदय		गु १७८६	२४x१७५	१६०वा	लि म्था नारनोल
२८५	१२५६६	किष्किन्धाकाण्ड (रामचरितमानस गत)	गो० तुलसीदास	१६वीं श	३०x१५५	११वा	पत्रों के कारण खण्डित ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निर्माण (वि. सं. मे)	माप (म मी मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातग्र
२८६	१२३२० (४६)	किसनजीगो विवाहलो		१८२३	२१५११४५	११-१६	
२८७	११०७३	कीर्तिधर मुनि-कथा	चोथमत गिराय नयमल		२३५११२	१-२	२ म्वा गोजल
२८८	१०८६६ (५२)	कुण्डनिया	मगराम	२०वीं श	१४१११५	४५-५३	मुटका ग्रन्थो हे ।
२८९	११६४८ (५०)	कुण्डलिया (अग्रनन्द)		१८५३	२७११६५	६२-७८	लि क गोपालदान
२९०	१०६३६ (७०)	कुण्डनियादि	मग्रामसिंह	१६३४	१२२५४८५	३७५-४१४	नि म्वा कोनिया मंगामसिंहजी के पदा हा मुन्दर मङ्गलन हे ।
२९१	१२०६६ (४)	कुतुबमत		१६६२	१५५११४	५५-६०	लि क. चोत्तराम लि म्वा. जोधपुर
२९२	१२२०५ (२०)	कुशल गुरू-गीत (जिनकुशल)	कीर्तिवर्द्धन गिराय	गु १७४८मे	१७१११	५१वा	लि. क. विद्यापमोद
२९३	१२५५१ (३०)	कुशलसूरिगीत (जिनकुशल)	दयारत्न नखमीचन्द	१७५५ १६८०	१३१११	१७१वा	लि म्वा रूपनगर लि क. समयकीर्ति
२९४	१२५६७ (२)	कुसलसिंघ चापावतरो सिलोको	वखतो साह	१८३०	२१५१५५	६-२०	आडवा के ठाकुर राडोड कुशलसिंह के साहमिक कार्यो का वर्णन । वखतसिंह को गद्दी पर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप मे मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५	१२५६८ (८)	कुसलसिंघजी राठौडरो सिलोको	बबतौ साह	१८४४	१८ ५x१२ ५	८-१२	विठाने मे इन का पूरा हाथ था।
२६६	१२३८० (२०)	कृष्ण-उद्धव-सवाद			२०x१४	२२६-२२६	लि क चेला केसरचन्द लि स्था कटालिया ग्राम
२६७	१२३२१	कृष्णचन्द्र चन्द्रिका (भागवतदशमस्कन्ध-भाषा)	विष्णुदास	१८००	१६ ५x१३ ५	१-६६	लि क नृसिंहदास
२६८	११४४१	कृष्णचरित (रामगीतावलीगत)	तुलसीदास	१८६७	३० ५x१५ ५	१-८५ १-१३	लि स्था फतेपुर लि क लूणकर्ण
२६९	११६६७ (४)	कृष्ण चरित्र (नेमजी का सर्वया)		२०वी श		२५-२६	
३००	१२४४८ (१)	कृष्ण-बावनी	वाचक किसन	१६०६	२८x१३	१-६	र क १७६० त्रिजया दशमी
३०१	१२४११ (६)	कृष्णचन्द्रस्य विविध नामानि		१६वी श	२१x१४	११५वा	पुष्टि मार्गीय मतानुसार श्री कृष्ण-५४ नामाली
३०२	१२३८० (१४)	कृष्ण-रुकमनी-विवाह			२०x११	१६०-१६६	ग्रपूर्ण। पत्र १६७ मे १६६ तक अप्राप्त। पत्र २०० से २०७ तक रिक्त।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (म मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३०३	११०८६ (४)	कुण्ण-रुक्मिणीरी वेली सटीक	पृथ्वीराज राठौड	१८१६	२१.५x१५	६८-१५२	पत्र १५३ से १५६ तक मे स्फुट ५ कृतिया अष्टकादि संस्कृत मे है। लि क गुलावगिरि र का १६४४
३०४	११५८४ (१६)	कुण्ण-रुक्मिणीरी वेली	पृथ्वीराज राठौड	१८वी श	१६.५x१६	५६-७७	
३०५	१२०६६ (१)	कुण्ण-रुक्मिणीरी वेली	पृथ्वीराज राठौड	१६६६	१५.५x१४	१६-३१	पत्र स १ से १५ व २१वा अप्राप्त। १२० वे छन्द से प्रारम्भ। पत्र स ३२-३३ पर आयुर्वेदिक नुस्के है। अपूर्ण। ८३ छन्दो तक ही है।
३०६	१२२१५ (४)	कुण्ण-रुक्मिणीरी वेली (सबालाव बोध)	पृथ्वीराज राठौड	१६वी श	२२x१६	३८-७३	
३०७	११०६०	कुण्ण-रुक्मिणीरी वेली (सबालाव बोध)	पृथ्वीराज राठौड	१७६६	२८x१२	१-३०	पत्र चिपके हुए है एव बीच मे कुछ अक्ष फट गया है। र का १६३८ (वरसि अचल गुण अग ससि) लि स्था. सत्यपुर (सोजत) लि.क कल्याणचन्द्र सूरि सजिल्द गुटका लि स्था जोधपुर लि.क. साधु भीखनदास
३०८	१०८३६ (७)	केरडावाली चोथ माताजीरी कथा	केहरि	१६०६	३२x१७.५	४०-४३	
३०९	१०६०२ (१०)	केहरिजीरी साखी	केहरि	१८०६	१५.५x१२.५	५४-६३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सस्या	विशेष ज्ञातव्य
३१०	१२४१४	कोक चोपई भाषा	नर्बदाचार्य	१६वीं श	२३ x १६.५	२-६३	अपूर्ण। प्रथम पत्र अप्राप्त। पत्र १ से १७ तक खण्डित। बीच-बीच में सम्कृत के श्लोक भी हैं।
३११	१२१५३	कोक-शास्त्र	नर्बदाचार्य	१६वीं श	२५ x ११.५	१-८४	ग्रन्थकार ने पुष्पिका में अपनी गुरु-परम्परा के अन्तर्गत अपने को तपा- गच्छीय कमल कलश-शाखा में सम्बन्धित बताया है। र का १६५६ ग स्था बुरहान- पुर-अमीरगढ़, मोर दल्लशाह के समय में।
३१२	१०६५५ (३)	कोकसार	आनन्द कवि	१६०५	१७ x २३.५	१-२१	लि. क. ठकरलाल लि. क. उदैचन्द
३१३	११०८० (२)	कोकसार	आनन्द कवि	२०वीं श	२२ x १४.५	४१-७३	लि. म्था चौपसनी (जोधपुर)
३१४	११०६०	कोकसार	आनन्द कवि	१६वीं श	१४ x ११.१	२-६६	कीट विद् एव जलाभिषिक्त। पत्रांक १, ३, ४ अप्राप्त।
३१५	११३१३ (२)	कोकसार	आनन्द कवि	१७६६	१५ x १४	१-२४	लि. क. निहानचन्द लि. म्था. जिहानावाद

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निर्णयकाल (वि.स. में)	माप (से.मी.में)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
३१६	१२४४६ (५)	कोणकरी चौपई		१६वीं श	२५x११	१४-२०	लि.क. विहारीलाल लि.स्था. रायकोट
३१७	१२३२० (२४)	क्षमा छत्तीसी	समयमुन्दर	गु १७६२ में १८७	२१x१४x१४	३०-३१	
३१८	१०६०७ (५)	खदक मुनि चउढालियो	जैमल	१६वीं श	२५x१२	८-११	र.का १८७१
३१९	११०१३ (१६)	खीमडारा दूहा	खीमडा	१८१८	२३x१५	१३१-१३२	पत्राक १३६ पर म्याड फैली हुई है। लि.क. ऋषि सुजाण लि.स्था. चाणोद (जोधपुर)
३२०	११६४८ (२६)	खेमदासजी की चितावणी	खेमदाम	१८५३	२७x१६x५	५७३-५७४	लि.क. गोपालदास लि.स्था. कोलिया
३२१	११५८३ (४)	खेमदासजी की चितावनी	खेमदास	१६६३	१८x१५	६-११	लि.क. लिखमीदास
३२२	१२३६८	१ खोडिया क्षेत्रपाल स्तुति २ औषध ३ काला भैरव-मन्त्र-तन्त्र ४ स्फुट मन्त्रोक्त औषध- नस्के		गु १६४३से १६६४	२१x११x५	१-१६६	तान्त्रिक विद्या व विभिन्न गुप्त रोगों के नुस्कों की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण है। बीच के पत्रों में कालरात्रिपद्धति है। लि.क. लक्ष्मीचन्द, चनगमल लुंका लि.स्था. पाली, पारा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३३१	११०१३ (४७)	गणेशजी का छंद	कवि हेम	१६वीं श.	२३x१५	३२३-३२४	लि.क ऋषिसुजाण
३३२	१२५४७ (१)	गणेशजीरा पचरत्न		२०वीं श	१६ ५x१२	१-२	
३३३	१०६०३ (१)	गरभ चितावणी	रामदाम	१६वीं श	१३x८	१-१३	गुटका अपूर्ण है ।
३३४	१२५७१ (४)३	गरभ चितावणी	रामदास	१६वीं. श	१० ५x८	२०२-२२६	
३३५	१२५६१ (४०)	गरभ चितावणी	नरिया (नारायण)	२०वीं श	१५ ५x१०	२५८-२६४	गुटके के अन्तिम पत्रो मे तुरसीदास के दो पद है ।
३३६	११०१३ (१८)	गहगट रा दूहा		१८१८	२३x१५	१३२वा	लि क. ऋषि सुजाण लि स्था चारणोद (जोधपुर)
३३७	१२२२० (१८)	गाइ खिलाइवे के पद (गऊ को भोजन देने सम्बन्धी)	चत्रभुज, छीत स्वामी	१६वीं श	१६x१६ ५	७६वा	
३३८	१२२१७ (५)	गाइ नाहर-सवाद		१६वीं श	२१ ५x१२	११०-१११	
३३९	१२२१७ (४)१६	गाथा दूहा-लक्षण		१६वीं श	२१ ५x१२	१००वा	
३४०	१२३७० (६)२	गिरनार मडन-नेमिजिन स्तवन	साधु क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म	१६वीं श	१६x११.५	५०-५१	र का १७६६
३४१	१५८५	गीत-अभैसिंहजीरो		१६वीं. श	१६ ५x१३ ५	६३वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.मे)	माप (स.मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३५१	१०८६२ (१०)	गीत (जागोजी अलवेली नार)		१६वीं श	१७x१४	११वा	लि. स्था जोधपुर
३५२	१२२१८ (१३)	गीत—जिनचंद सूरिरो		गु १७५५से १७६७	२६५x१०	३३वा	
३५३	१०८६२ (२६)	गीत—ढोला का		१६वीं श	१७x१४	२६वा	लि. स्था जोधपुर
३५४	१०८६७ (३)	गीत—त्रिगुटबध	कवि मुरार	१६वीं. श	१८x११	७०-७२	गुटका सजिल्द
३५५	१०८६२ (१४)	गीत (प्यारी थारा नैना मे बतावै जाहूडा)		१६वीं श	१७x१४	१४वा	लि. स्था. जोधपुर
३५६	१०८६२ (३)	गीत (प्यारी रा लुभाया लोभी पावणा)		१६वीं श	१७x१४	१७वा	लि. स्था. जोधपुर
३५७	१२५७० (१३)	गीत—भरथरीजी को	मलूकदास	२०वीं श.	६५x६५	७-१६	६ वा पत्र अप्राप्त ।
३५८	१०८६२ (१५)	गीत (म्हाने प्यारी लागे छै माराज आपरी गुलाली अखियाँ)		१६वीं श	१७x१४	१५वा	लि. स्था जोधपुर
३५९	१२५७० (१२)	गीत-सपखरो		२०वीं श	६५x६५	५-७	
३६०	१२५६१ (३६)१	गीत-सपखरो	मलियादास	२०वीं. श	२५५x१०	२५६-२५७	र का. १६५५

क्र.सं.	संख्या	ग्रन्थ - नाम	कर्ता या रि जानक्य	तिथि (दि.मा.व.)	माप (अ.मी. से.)	पत्रसंख्या	निर्णय जातक
३६१	११०८५ (४)	गीत-मणोरम	उदयराज	१६वीं. सा.	१५.५x१३.५	६२१	कलम-मुद्राणा के: मिलन पत्र पर
३६२	११०१३ (७)१	गीत-मणोरम (भी कलमजीरो)		१६वीं. सा.	२३x१५	८३-८४	लि. क. कृषि मुजारा लि. स्था. नारायण (जोधपुर)
३६३	१२५७० (१६)	गीत-मणोरम	तुलसी	२०वीं. सा.	६.५x६.५	१२८५	पत्रांक ६५ वा रिक्त है।
३६४	११०८५ (६)	गीत-मणोरम	आलाउद्दीन	१६वीं. सा.	१६.५x१३.५	६४५	६० गमतीदानजी ने प्रासिगो नुधो कहे लि. क. गिडिगो हरसुख न पत्रांक फतो लि. स्था. जोधपुर
३६५	१०८४२ (१४)	गीत-मणोरम (हनेती भगडो हुनो जिण भाव रो)	प्रासिगो नुधो	१६वीं. सा.	२४.५x१६.५	६५-६६	लि. स्था. जोधपुर
३६६	१०८६२ (७)	गीत-मणोरम रहो सरसाग	रसिक विहारी	१६वीं. सा.	१७x१४	६५	लि. स्था. जोधपुर
३६७	१२५५३ (१०)	गीत-मणोरम मधुवन भाषा	भगवतदास	१८६७	१४.५x१३.५	१३३-१६७	रामानुजानाग के भाग पर भगवतदास की मधुवन-भाषा लि. क. आहारा श्रीनर लि. स्था. भागनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि सं में)	माप (से मी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३६८	१२५७४ (१७)	गीता की भाषा टीका		२०वीं श	१७x१० ५	३१८-३३५	अपूर्ण, पाचवे अध्याय तक।
३६९	११५६६	गीतामहानम (माहात्म्य) की कथा		१८६३	३१x१८ ५	१-२३	लि क. रणछोडदास लि स्था ठठौरा गाव
३७०	१०६३९	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)		१९वीं श	१५ ५x११	११-७५	पत्र १-१० अप्राप्त। चतुर्थ अध्याय से अष्टादश अध्याय तक।
३७१	१२४११ (७)	गीतामाहात्म्य-भाषा टीका (पद्मपुराणगत)	आनन्दराम नाजर	१९वीं श.	२१x९४	११७-११८	अपूर्ण। आगे के पत्र रिक्त। अन्तिम १८ पत्रों में संस्कृत में स्वरोदय है।
३७२	१२४७८	गीतामाहात्म्य-भाषा (आनन्द विलास)	आनन्दराम नाजर	२०वीं श	३०x१५	१-४४	पत्र स० ९, ४२वे अप्राप्त। र का १७६१
३७३	१२५५३ (१)	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)	आनन्दराम नाजर	१८९७	१४ ५x१३ ५	९-८१	(धरनी रस नीरधी मयक) पत्र १-८ अप्राप्त। ९वा पत्र खण्डित। पत्र गुटके से पृथक् हो गये हैं। र का. १७५४ (वेद वान मुनि विध वर्षे) लि क. ब्राह्मण श्रीधर लि स्था. भागनगर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	रुर्त्ता	निषिक्तान (दि ग मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञानव्य
३७४	१२५२६	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)		१८५७	३५.१६५	१-११	ग्रन्थ में जगजीवणदास व कवीर की साखी है।
३७५	१२२६३ (२)	गीता-माहलम (माहात्म्य) भाषा टीका सचित्र (पद्मपुराणगत)		१६वीं श	२२.५११६	८४-१५७	चित्र स०-५७ लिपि एवं चित्रकार- विठ्ठलदास
३७६	११५५४	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)	जसवन्तसिंह पुत्र गजसिंह	१८२०	२६.५१३५	१-२६	लि. स्था जोधपुर लि. क वलरामदास लि. स्था नागौर-वालकदास
३७७	११५५५	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)	जसवन्तसिंह पुत्र गजसिंह	१८२०	२६.५१३२	२-२३	जी का अस्थल प्रथम पत्र अप्राप्त। लि. क नरसिंहदास
३७८	१०६३६	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)		१६वीं श	१५.५१११	११-७५	लि. स्था नागौर चतुर्थ से अठारवें अध्याय पर्यन्त। पत्राक १ से १० अप्राप्त।
३७९	१२००८	गीतामाहात्म्य-भाषा (पद्मपुराणगत)		१६वीं श	३१.१४५	१-३२	पत्राक १७-२० खण्डित।
३८०	१२२२५ (२)	गीतामाहात्म्य-भाषा टीका सचित्र		१६वीं श	२४.५११६५	८७-१६०	चित्र स०-४६ पद्मपुराणगत।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.म. में)	माप (मं.मी. में)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
३८१	१२३७२ (६)	गीतासार		१६वीं श.	२४x१६x	१०३-१०८	लि.क. चरणदास
३८२	१०६३६ (५७)	गीतासार		१६३४	१०x१८x	५६३-६६	लि.क. चोलनराम लि.स्था. जोधपुर
३८३	१२६१२ (१७)	गुण-अक्षर-माला		१८१६	२५x१५x	५८-६१	लि.क. सिध्दी हिममतराम
३८४	११५८३ (१८)	गुण-अजयनामो	वाजीद	१६६३	१८x१५x	१५७-१६०	लि.स्था. जयपुर लि.क. अमरदास
३८५	१२३७८ (१४)	गुणउत्पत्तिनामो	वाजीद	१८वीं. श.	२२x१५x	१०६-१११	लि.क. रामचन्द्र दादपयो लि.स्था. फतेपुर
३८६	१२३६६	गुणकरड गुणावलीरी चौपई	ऋषिदीप	१८६३	२५x१६x	४-६१	पत्र १ से ३ अप्राप्त । र.ना १७५७ दसहरा दिने लि.क. निवमीचन्द गुजराती लि.स्था. भावी (जोधपुर)
३८७	१०८८१	गुणकरड गुणावली चतुष्पदी	जिनहंप जिह्य आन्ति हंप	१६वीं श.	२५x१२	१-२०	र.का १७५१ अन्तिम चार पत्र कीटविद्ध प्रतिलिपिकार के नाम पर
३८८	१२००१	गुणठाणा २८ द्वार		१८६६	२४x११२	१-७	रग पोता हुआ है । लि.क. भोलनदास गोंड लि.स्था. अहिपुर, नागौर
३८९	१२३७१ (४)	गुणप्रास्ताविक दूहा		१८३५	१८.५x१६x	१४६-२५०	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकान (वि स मे)	माप (स मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३६०	१२३७१ (३)	गुण प्रास्ताविक (लधमल शतक)	लधमल	१८३५	१८५१६५	१४२-१४५	२ का १७३० लि क भीखनदास गोड लि स्था अहिपुर, नागौर लि क रणजीत लि स्था पाली उद्धव द्वारा कृष्ण को सन्देश लि क सीताराम सागर
३६१	१०६५४ (१०)	गुण-वत्तीसी सज्जाय	रघुपति पाठक	१८७४	२४४१६५	१०८-११०	
३६२	११२८३ (५)	गुण-भवर-गीता	मोहनदास	१७८६	१६४१४५	५६-७२	
३६३	१२२१४ (४)	गुणमाया-सवाद	ध्यानदास	१६वीं श	२१५४१३	६५-६६	
३६४	१२२१७ (१८)	गुण-रूप-सवाद आदि	समन	१६वीं श.	२१५४१२	६४-६६	
३६५	११०८७ (७)	गुण-हरिरम	ईसरदाम वारहठ	१७६३	२१५४१५५	१२२-१२८	अपूर्ण। गुटके में आगे के पत्र नहीं। पत्र विखरे हुए हैं। लि क खुसालचन्द
३६६	१२३७६ (१)	गुण-हरिरस	ईसरदास वारहठ	गु १८६६	२०५४१४५	१-१४	
३६७	१८१५३ (५)	गुनहित उपदेश		गु १६६३	१८४१५	११-३४	लि क लिखमीदास

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपि/पान (पृ. सं.)	माप (से.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञानव्य
३६८	१२०६७ (५)१	गुरु रचना प्रकाश	निधिमन गिरि	२०वीं श	२३.५x१७	१-५	मभी राशियों का फल
३६९	११०१३ (८)	गुराचार		१६वीं श	२३x१५	८४-८५	वृहस्पति से बताया गया है। लि. क. नृमि गुजराग
४००	१२२२६ (१६)	गुरु-उपदेश महिमा जोग ग्रन्थ	रामचरण	१६वीं श	१४x१२.५	६०८-६१४	नि. स्था. चारोन्दि (जोधपुर)
४०१	१२२०५ (३२)	गुरु-चैला-सवाद		(गु.) १७४८-१७४९ १७५५	१७x११	११६-११७	लि. क. चोरमदाम लि. स्था. कंरू (जोधपुर)
४०२	१२५६२ (६)	गुरुदया आदि ६ अष्टक-संग्रह	सुन्दरदास	२०वीं श	१४x१०.५	१४६-१७०	पत्र ११५ में दाह द्यने का नुस्का।
४०३	१२३७८ (३)	गुरुदेव की अग	सुन्दरदाम	१८वीं श	२२x१५.५	२६-२७	लि. क. विद्याप्रमोद लि. स्था. रुपनगर
४०४	१२५६१ (३१)	गुरुदेव की अग आदि	रामदास	२०वीं श	१५.५x१०	१६६अ२०७	अन्त में संस्कृत के सुभाषित एलोक हैं।
४०५	१२५६२ (६)२	गुरु पद	पूरणदास	२०वीं श	१४x१०.५	१६६अ२०७ १८०-१८३	लि. क. रामचन्द दाहूपथी लि. स्था. फतेपुर अपूर्ण। आगे के पत्र रिक्त।

क्रम-सं.	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निर्माण (वि.स. मे.)	माप (मे.मी. मे.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
४०६	१०६०२ (१२)	गुरु-परचावली		१८०६	१५.५x१२.५	८०-८२	पत्र चिपके हुए व बड़कने है।
४०७	१०६११ (४)	गुरु-पारख की अंग	द्याल (दयाल) वाल	२०वी. श.	१५.५x१०	३१-३४	
४०८	१०६३८ (३)	गुरुमहिमा	रामचरण	१८८५	१६.५x८.५	४६०-४६५	
४०९	१०७९७ (६)	गुरुमहिमा		२०वी श	१२x११	२१६-२३७	आगे के दो पत्रों में भड़ुली के दोहे हैं।
४१०	१०८६६ (१०)	गुरुमहिमा	सेवगराम	१९१०	७.५x६.५	३६६-४२७	गुटका सजिल्द। लि. क. रामसजन शिष्य सेवगराम
४११	१०८६५ (४)	गुरुमहिमा	परसोत्तम	२०वी श	१२.५x८	११-१६	लि. क. साधु रामस्वरूप लि. स्था. सूरसागर- रामद्वारा, जोधपुर
४१२	१०९५२ (१)	गुरुमहिमा पद यादि	रामचरण शिष्य कृपाराम	१९०५	७.५x६	१-१२४	गुटके के पत्र कही-कही पृथक् हो गये हैं। लि. क. रामनरान
४१३	११०६२ (४)	गुरुमहिमा	रामचरण	१९३६	१८x१०.३	१७१-१७६	लि. स्था. देवगढ़-रामद्वारा लि. क. सेवादास
४१४	१२४२६ (२)	गुरुमहिमा	प्ररगदास	२०वी श	१६.५x१३	१-४०	लि. स्था. बुलुन्दा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिगान (वि स मे)	माप (मं.मी.मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
४१५	१२४२६ (६)	गुरुमहिमा	धीरमदास शिष्य दोलतराम रामदास	२०वीं श	१६.५x१३	१-१३	१३वें पत्र पर हरजस के रूप में ७ पद भी हैं।
४१६	१२५७१ (४२)	गुरुमहिमा	तुलसीदास	१६वीं. श.	१०.५x८	१४७-१६२	
४१७	१२५७७ (३)	गुरुमहिमा	जनसिम्भूराम शिष्य दयालदास	१६वीं. श	१४.५x१०.५	७०-७५	लि.क. साधुराम नागर लि.स्था उज्जैन
४१८	१२५७८	गुरुमहिमा आदि ११ कृतिया	जनसिम्भूराम शिष्य दयालदास	१६वीं. श	१४x१०	१-१४६	संपूर्ण कृतिया शम्भुराम की हैं। कर्त रामदास की परम्परा में आता हैं।
४१९	१२५६१ (३०)	गुरुमहिमा	जन तुरसी	२०वीं श	१५.५x१०	१६०-१६६	
४२०	१२५६१ (१३)	गुरुमहिमा	रामदास	२०वीं. श	१५.५x१०	७०-८०	
४२१	१२५६१ (२६)	गुरुवदन-सार	जन तुरसी	२०वीं श	१५.५x१०	१८७-१९०	
४२२	१०६०० (१४)	गुरु-शिष्य-संवाद	परसराम	२०वीं श.	१२x८.५	६६-६६	
४२३	११६२६ (१०)७	गुरु-सम्प्रदाय	सुन्दरदास	१६वीं. श.	३२x१५	८-११	
४२४	१२५६१ (१४)	गुरु-सम्प्रदाय	सुन्दरदास	गु १८५५	२३.५x१७	३६६-३६७	लि.क. नन्दराम लि.स्था. ककोड ग्राम

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निष्काल (वि. म. मे)	माप (से. मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञानव्य
४२५	१०५५१ (४)	गुप्तसूक्ति	अनन्तहम गिण्य कुलतिलक	१७वीं श	१३x११	६२वा	
४२६	१०५७२ (३)	गुप्तस्तोत्र	रामानन्द	१६वीं श	१० ५x८ ५	६-१०	
४२७	१०५७२ (६)	गुप्तस्तोत्र-मन्त्र	द्याल (दयाल) दास	१६वीं श	१० ५x८ ५	११३-११६	
४२८	११०१३ (१२)२	गुर्जर भाषा आदि के कविन्-सवये		१६वीं श	२३x१५	११६-१२०	लि. क. ऋषि मुजारा लि. स्था. चागोद (जोधपुर) पत्राक १-१२ अप्राप्त । अपूर्ण । पत्र जलाभिविक्त ।
४२९	११३१४ (१)	गुनेवकावली		१६वीं श	१७ ५x१७	१३-२६	
४३०	१२२१० (२१)१	गुसाई जी की वधाई	मानिकचन्द	१६वीं श	१८x१३.५	१०२वा	
४३१	१२२१० (२१)२	गुसाई जी की वधाई	द्योत स्वामी	१६वीं श	१८x१३ ५	१०३वा	
४३२	१२२१० (२१)३	गुसाई जी की वधाई	गोविन्द स्वामी	१६वीं श	१८x१३ ५	१०३वा	
४३३	१२२१० (२१)४	गुसाई जी की वधाई	चतुर्भुज	१६वीं श	१८x१३ ५	१०४वा	
४३४	१२२१० (२१)५	गुसाई जी की वधाई	कृष्णदास	१६वीं श	१८x१३ ५	१०४वा	
४३५	१२२२० (२५)१	गुसाई जी के जन्मोत्सव के पद	केसोदास	१६वीं श	१६x१६.५	८३वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
४३६	१२२२० (२५)२	गुसाई जी के जन्मोत्सव के पद	जन भगवान	१६वीं श.	१६x१६.५	८३वा	
४३७	१२२२० (२५)३	गुसाई जी के जन्मोत्सव के पद	गोविन्द प्रभु	१६वीं श.	१६x१६.५	८३वा	
४३८	१२२२० (२५)४	गुसाई जी के जन्मोत्सव के पद	चत्रभुज	१६वीं श.	१६x१६.५	८४वा	
४३९	१२४१२ (३)	गुसाई जी के सेवक नन्ददास की वार्ता		१६वीं श.	२१x१६.५	१-६	अष्टछाप से सम्बन्धित । अपूर्ण ।
४४०	१२२२६ (१८)	गुसाई तुरसीदासजी के स्फुट पद	जनतुरमी	१६वीं श.	१४x१२.५	५६७-६०७	लि. क. वीरमदास निरजनी लि. स्था. कैरू (जोधपुर)
४४१	१२३७१ (१४)७	गुसाई जी ने कागद लिखण री पैठ		१८३६	१८ ५x१६ ५	१६वा	लि. क. भीखनदास लि. स्था. नागौर
४४२	१२४११ (३)	गुसाई जी रै सेवकारी वार्ता		१६वीं श.	२१x१४	८४-९८	
४४३	११६२६ (१०)२२	गूढार्थ	मुन्दरदास	१६वीं श.	३२x१५	२६-३०	
४४४	१२२२६ (१४)	गूढार्थ	केशवदास आदि	१६वीं श.	१४x१२.५	५७वा	लि. क. वीरमदास निरजनी लि. स्था. कैरू (जोधपुर)
४४५	११०१३ (४)	गूढा-हियालियां		१८२५	२३x१५	७६-८०	प्रथम दो पत्रों में शब्दार्थ है। लि. क. ऋषि मुजारा लि. स्था. चारणोद (जोधपुर)

राजस्थान प्रान्तीय प्रविद्या प्रविद्या (जोधपुर-मगह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

५५

क्र.सं.	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	निष्काल (वि.सं. मे)	माप (म.मी. मे)	पत्रमख्या	विशेष ज्ञातव्य
४४६	गोत्राचार (गोत्राचार)	गोत्राचार	१६वीं श.	२६५x१६५	२२५-२२८	इस से पूर्व की कृति सचित्र लि. क. जोरा पुष्करणा है हीरालाल, पुस्तक प्रकाश वाले, जोधपुर
४४७	गोपालदासजीरा कवित्त	गोपालदाम	१६वीं श.	२४५x१६५	२-४	अपूर्ण। ११ कवित्त है। कामदारी जिल्द।
४४८	गोपाष्टमी के पद	परमानन्द	१६वीं श.	१६x१६५	८२वा	
४४९	गोपाष्टमी के पद	परमानन्द	१६वीं श.	१८x१३५	६६-१००	
४५०	गोपियारी बारखडी	सन्तदाम	गु १६१२	२१x१५५	२१-२८	लि. क. वैष्णव मोतीराम लि. स्था. जोधपुर
४५१	गोपीचन्द		२०वीं श.	८ x ५	३७१-३७२	लि. क. वालकराम लि. स्था. जोधपुर
४५२	गोपीचन्द-भरतरी	कानड कन्नोजिया शिष्य माधोदास	१६६६	१७x१३	३-१७४	लि. क. मगलदास लि. स्था. कुचेरा-रामद्वारा
४५३	गोपीचन्द		२०वीं श.	१६x१२	२-६, २७ २६	गुटका सजिल्द।
४५४	गोपीचन्द		२०वीं श.	१४x११५	६७वा	गुटका अपूर्ण है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निर्णय (वि. ग. मे.)	माप (म.मी.मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
४५५	१०६३६ (१८)	गोपीचन्द का गीत	महीपत	१६३४	१२५४८५	८२-८३	लि. क. चोकसराम लि. स्था. जोधपुर
४५६	१०६३६ (६२)	गोपीचन्द का गीत		१६३४	१२५४८५	२८८-३१४	लि. क. चोकसराम
४५७	११०६२ (६)	गोपीचन्द का गीत		१६३६	१८४१०५	१८७-१८६	लि. स्था. जोधपुर लि. क. सेवादाम गिण्य आत्मराम
४५८	१२५७४ (५)	गोपीचन्द का पद		२०वीं श.	१७४१०५	१५६-१६४	लि. स्था. बुलु दा
४५९	१२५६२ (४)	गोपीचन्द की कथा		२०वीं श.	१४४१०५	११०-१२७	
४६०	१०८४७ (२७)	गोपीचन्द की कथा (पद्यात्मक)		२०वीं श.	१७४८	६४३-६५७	लि. स्था. महामन्दिर, जोधपुर
४६१	१०८५१ (२)	गोपीचन्द की कथा		१८६६	१५५४१०	५०-५७	लि. क. खण्डूराम शिष्य परसराम
४६२	१०६३३ (६)	गोपीचन्द की चौपड़		१६४०	१३५४८५	६६६-६६३	लि. म्था. कोटा लि. क. विलासीराम
४६३	१०६४२ (२)	गोपीचन्द की चौपड़		१६५२	१३४६	१७३-२११	लि. स्था. शाहपुर (मेवाड़) लि. क. वालकराम लि. स्था. महामन्दिर, जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (मै.मी. में)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
४६४	१०६४२ (११)१४	गोपीचन्द की चौपई		१६५२	१३x६	३१३-३१४, ३७२-३७५	
४६५	१०६४४ (६)१३	गोपीचन्द की चौपई		२०वीं श.	८ x ५	२७५-२६५	लि. क. बालकराम लि. स्था. जोधपुर
४६६	१२५७४ (४)	गोपीचन्दजी को बैराग बोध	दास कवि	२०वीं श.	१७x१० ५	१४०-१५६	लि. क. बक्षीराम
४६७	११६४८ (७)५१	गोपीचन्दजी की महिमा के पद		१८५३	२७x१६ ५	३४३-३४४	लि. क. गोपालदास
४६८	१२२२६ (२६)१४	गोपीचन्दजी की महिमा के पद		१८७७	१४x१२ ५	६६६-६७१	लि. स्था. कोलिया
४६९	१२५६१ (१६)	गोपीचन्दजी रो लोय		२०वीं श.	१५ ५x१०	८८-९४	लि. क. बीरमदास निरजनी लि. लथा कैरु (जोधपुर)
४७०	११६४८ (१२)४	गोपीचन्द की सबदी	गोपीचन्द	१८५३	२७x१६ ५	३६०वा	लि. क. गोपालदास
४७१	१२२२६ (२३)	गोपीचन्दजी की सबदी		१९वीं श.	१४x१२ ५	६३८-६४०	लि. स्था. कोलिया लि. क. बीरमदास निरजनी
४७२	१०८६६ (१३)	गोविन्दजी का भूलगा	गुरु गोविन्द	१९२७	८ ५x७	५४२-५४६	लि. स्था. कैरु (जोधपुर) कृति पंजाबी में है। लि. क. केवलराम लि. स्था. रावजी का बाग, जयपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिमान (वि स मे)	माप (ने मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
४७३	१२२२६ (२१)२	गोरख-गणेश गोन्डी आदि	गोरखनाथ	१६वीं श.	१४x१२ ५	६२१-६३४	लि क. वीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
४७४	१०८६८ (४)	गोरख छन्द	किमनदाम	१६२६	१३x८ ५	८०-८६	
४७५	१२३८० (१६)	गोरख ज्ञानतिलक	गोरखनाथ	गु० १७२४	२०x१४	२१६-२१८	
४७६	११०८५ (७)	गोरखनाथजी का छपै		१६वीं श.	१६ ५x१३ ५	६६-६७	
४७७	१०८६६ (५)२४	गोरखनाथ का पद	गोरखनाथ	२०वीं श.	१६x११ ५	६६वा	गुटका अपूर्ण है।
४७८	१२५६१ (६)५	गोरखनाथजी का वरत		२०वीं श.	१५ ५x१०	४३-४४	
४७९	११६४८ (२६)	गोरखनाथजी का वरत		१८५३	२७x१६ ५	५७६वा	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
४८०	१२४२२ (३)	गोरखनाथजी की फुटकर वाणी (गोरखबोध)	गोरखनाथ	गु० १८३१	१५x१० ५	१६३-२४२	लि क ऊगमदास
४८१	११६४८ (१२)१	गोरखनाथजी की सत्रदी	गोरखनाथ	१८५३	२७x१६ ५	३८२-३८८	लि स्था डोडवाना
४८२	११६४८ (११)	गोरखनाथजी को कृत	गोरखनाथ	१८५३	१७x१६ ५	३५३-३८२	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
४८३	१२५६७ (६)	गोरखनाथजी को सिलोको	पीपल चारण	गु० १८३०	२१x१५ ५	५६वा	लि क चेला केमरचद लि स्था कटालिया ग्राम

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निकान (वि.स. मे.)	माप (ल.मी. मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
४८४	११५८३ (७)	गोरखबोध	गोरखनाथ	१६६३	१८x१५	५०-६३	लि.क. ऊधवदास
४८५	१२२०४ (४)	गोरखनाथजीरो स्वरोदय	गोरखनाथ	गु० १८५८- १८६३	१७x१५ ५	४०-४२	लि.क. फतेचन्द
४८६	१०८४७ (२६)	गोरल (मीरा) व ननदवाई ऊदा का सम्वाद	मीराबाई	२०वीं श	१७x८	६६०-६६१	लि.स्था अवन्तिका
४८७	११५८५ (१)	गोरा-बादल की कथा	जटमल नाहर पुत्र धरमन्नी	१८७६	१६ ५x११ ५	१०-२४	लि.स्था महामन्दिर, जोधपुर। प्रारम्भ के ६ पत्र अप्रान्त। र.का १६६५
४८८	१२५८० (४)	गोरा-बादल की वार्ता	जटमल नाहर पुत्र धरमन्नी	१८६६	१५x१० ५	८५-११४	लि.क. भानीदास महात्मा लि.स्था रिंगी
४८९	१२२१० (१४)६	गोवर्द्धन पूजा के पद	छीतस्वामी	१९वीं श	१८x१३ ५	६०वा	र.का १६८६
४९०	१२२१० (१४)८	गोवर्द्धन पूजा के पद	कुभनदास	१९वीं श	१८x१३ ५	८६-८७	लि.क. वैष्णव भगतराम
४९१	१२२१० (१४)७	गोवर्द्धन पूजा के पद	लालदास	१९वीं श	१८x१३ ५	८६वा	लि.स्था रामगढ

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
४६२	१२२१० (१४)६	गोवर्द्धन पूजा के पद	चतुर्-भुज	१६वीं श	१८x१३.५	८५-८६, ८६	
४६३	१२२१० (१४)५	गोवर्द्धन पूजा के पद	हरिदास	१६वीं श.	१८x१३.५	८५वा	
४६४	१२२१० (१४)४	गोवर्द्धन पूजा के पद	परमानन्द	१६वीं श	१८x१३.५	८४, ८७, ६१-६२	
४६५	१२२१० (१४)३	गोवर्द्धन पूजा के पद	विट्ठल	१६वीं श.	१८x१३.५	८१वा	
४६६	१२२१० (१४)२	गोवर्द्धन पूजा के पद	सूरदास	१६वीं श	१८x१३.५	७२-८१	
४६७	१२२१० (१४)१	गोवर्द्धन पूजा के पद	सूरदास	१६वीं. श	१८x१३.५	६६-७२, ८१, ८२-८४, ८७-८६	
४६८	१२२२० (१६)	गोवर्द्धन पूजा के पद	सूरदास, चत्रभुज	१६वीं श	१६x१६.५	७६वा	
४६९	११५८४ (१६)	गौडी पार्श्वनाथ लघु-स्तवन	जिनराज सूरि	१८वीं श	१६.५x१६	५०वा	
५००	१२२१८ (४६)	गौडी पार्श्वनाथ स्तवन	जिनराज सूरि	गु० १७५५- १७६७	२६.५x१०	६५वा	
५०१	१२२०५ (२६)१	गौडी पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनराज सूरि	गु० १७४८- १७५५	१७x११	१०८वा	लि क. विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (अं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५१०	१०६५४ (६)	गौतमरासो	विनयप्रभ उपाध्याय	१८७४	२४x१६.५	८१-८७	र.का. १४१२ लि.क. रणजीत लि.स्था. पाली
५११	१२३२० (३६)	गौतम सज्झाय	समयमुन्दर	१८वीं श	२१५x१४५	४७ वा	
५१२	१२२१८ (११४)	गौतम स्वामी नो रास	विनयप्रभ उपाध्याय	१८वीं. श	२६५x१०	१२६-१२६	
५१३	११५८५ (८)४३	गौतम स्वामी-स्तवन		१६वीं श	१६५x११५	१७७-१७८	
५१४	१२३७० (४२) ७	गौतम स्वामी-स्तवन	समयमुन्दर	१६वीं श	१६५x११५	१२४-१२५	
५१५	१२३७० (२८)	गौतम स्वामी-स्तवन	ऋषि रायचन्द	१६वीं श	१६५x११५	२५२-२५५	
५१६	१२५६१ (७)	ग्रन्थ चौअक्षरी आदि जोग ग्रन्थ	जन तुरसी	२०वीं श	१५५x१०	४५-५१	
५१७	११६४८ (१०)	ग्रन्थवत्सीसी	कवीरदास	१८५३	२७x१६५	३५२ वा	लि.क. गोपालदास लि.स्था. कोलिया
५१८	११६२६ (१०) १०	ग्रन्थ वावनी	सुन्दरदास	१६वीं. श	३२x१५	१२-१५	

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिकाल (वि.स. मे)	भा.प. (मं.मी. मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
५२५	११५८१	चंदचरित-चौपई	मोहनविजय गणि	१८३६	२४५x११	१-८१	अन्त मे गुरुवावली है । गुण वसु सजम वर्ष । र. का. १७८३ र. स्था राजनगर लि. क दीपसागर लि. स्था कटालिया ग्राम सर्व ढाले १०८ लि. क कीरत लि. स्था नागोर
५२६	१२०८६	चंदचरित-चौपई	मोहनविजय गणि	१८८१	२५५x१२५	१-८०	
५२७	१२१४२	चंदचरित-चौपई	मोहनविजय गणि	१९वी. श.	२२५x११	१-७५	
५२८	१२३२६	चंदचरित-चौपई	मोहनविजय गणि	१९वी. श.	२७x१२५	१-८४	पुष्पिका अपूर्ण । र. का. १७८३ [गुण वसु सजम वर्ष]
५२९	१२२१८ (१३६)	चंदनमलयागिरि-चौपई	सुमतिहस	१७६४	२६५x१०	१४७-१५५	र. स्था राजनगर र. का. १७११ र. स्था बुरहानपुर लि. क अमीचन्द लि. स्था. वडलू
५३०	१२२०५	चंद्रगुप्त राजा सोलह स्वज्जारी-सञ्ज्ञाय		१८वी. श.	१७x११	१४६-१४८	पत्र खण्डित, लिपि भ्रष्ट, गुटका कीटाविद्ध ।

क्र.सं.	विवरण	दिनांक	पृष्ठ सं.
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10

क्र.सं.	विवरण	दिनांक	पृष्ठ सं.	विवरण
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10

अनि प्राप्त में है। अन्त में
 'घोर मृति' है। पृष्ठ भाग
 पर 'पात्र-पद्मना' गम्भिर
 है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (ल.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५३६	१२२१८ (६८)	चतुरन्तर-सज्जाय	दर्पकुशल	गु० १७५५-१७६७	२६ ५ x १०	११८ वा	
५४०	१२२०२	चतुर्मासिक-व्याख्यान		१६०१	२४ ५ x १२	१-२१	लि.क. प० मुखसागर नि.स्था पोकरण
५४१	१०७५६	चम्पक सेठ-चरित्र	चौथमल	१६६२	२६ x ११ ५	१-१२	र.का १८६१ र.स्था सादडी-मारनाड लि.क. जेठमल लि.स्था नागोर
५४२	१०६७४	चम्पक सेठनी चौपई	समयमुन्दर शिष्य सकलचन्द	१६४०	२० x ११	१-११	र.का १६६५ र.स्था जालोर
५४३	११६४८ (१२) ३	चरपटजी की सबदो	चरपटनाथ	गु० १८५३	२७ x १६ ५	३८६-३९०	लि.क. माध गोपालदास लि.स्था कोलिया
५४४	१२५५६ (५)	चार-जुगा को ब्योरो		गु० १८५६	२२.४ x १६	११०-११२	अत.मे स्फुट पद है।
५४५	१२५८१ (१४)	चार-जुगा को व्योरो		१७ वीं श.	१६ x १० ५	६०-६३	
५४६	११५८४ (३८)	चितामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन	सिद्धसूरि	१८वीं. श.	१६ ५ x १६	२३४वा	अपूर्ण। पत्र खण्डित।
५४७	१२५६८ (७)	चितामणि-पार्श्वनाथ-स्तवन	समयमुन्दर शिष्य सकलचन्द	१६ वीं श.		७वा	पत्र ८ वें तक स्फुट दोहे है।

क्र.सं.	वर्ग	नाम	वर्ग - नाम	कार्य	निष्पत्ति (वि.ग.सं.)	माप (न.मी.से.)	परिमाण्य	विशेष आशङ्क्य
५४८	१६६६०	चिन्तामणि-पाण्डवनाथ-स्तवन	चिन्तामणि-पाण्डवनाथ-स्तवन	गुणलभित शिष्य राममिह	गुं १७६० ८४७	२१५५१४५	१६३५	लका गच्छीय ।
५४९	११५८५	चिन्तामणि पाण्डवनाथ-स्तवन	चिन्तामणि पाण्डवनाथ-स्तवन	जिनचंद्र मूरि	२०वीं श	१६५५११५	१६८३५	
५५०	११५८५	चिन्तामणि पाण्डवनाथ-स्तवन	चिन्तामणि पाण्डवनाथ-स्तवन	जिनचंद्र मूरि	१६वीं श	१६५५११५	१६३५-१६८३	
५५१	१२२१८	चिन्तामणि-पाण्डवनाथ-स्तवन	चिन्तामणि-पाण्डवनाथ-स्तवन	ममयसुन्दर शिष्य मकलचन्द्र	गुं १७५५ १७६७	२३५४१०	१६७५	
५५२	१२५७५	चिन्तामणि पाण्डवनाथ-स्तवन	चिन्तामणि पाण्डवनाथ-स्तवन	राजममुद्र (जिनराज सूरि)	१७वीं श	१३५४१४	६१-६२	
५५३	१२३७०	चिन्तामणि-पाण्डवनाथ-स्तवन	चिन्तामणि-पाण्डवनाथ-स्तवन	जिननाभ मूरि	१६वीं श	१६४११५	१२८३५	
५५४	११८२१	चिन्तामणि-भाषा (सामुद्रिक शास्त्र)	चिन्तामणि-भाषा (सामुद्रिक शास्त्र)	जोहार (उपनाम) नागेनात्मज	६वीं ग	१६४११	१-३२	
५५५	११६२५	चिन्तामणि-भाषा (सामुद्रिक शास्त्र)	चिन्तामणि-भाषा (सामुद्रिक शास्त्र)	धोरजगम	२०वीं श	२३५४१६	१-७१	र का १८१७ (श्रुति चंद्र गज चंद्र वरप अग्रवद्ध । लि क साधु गगाराम लि म्था कोटा-रामद्वारा
५५६	१२३११	चिन्तामणि महाराज के कुटुंबिया, कवित्त आदि	चिन्तामणि महाराज के कुटुंबिया, कवित्त आदि	चेतन	गुं १६४०	१७५४८५	१२६-३०२	
५५७	१२५७०	चिन्तामणि को अग	चिन्तामणि को अग	सुन्दरदाम	१६वीं श	६५४६५	२२-२५	

क्रमसं.	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५५८	११०६२ (३)	चितावणी को अंग	रामचरण	गु० १८३६	१८५१०५	१४६-१७०	'सवव छत्तीसो' लि.क. सेवादास लि.स्था. वलुदा दुलहराम के भी दो पद हैं।
५५९	१२५८८ (२)	चितावणी को अंग	रामचरण	१९वीं श.	१२५५८	१६-३७	
५६०	१०६३८ (५)	चितावणी को अंग	रामचरण	गु० १८८४	१६.५५८५	४८१-५०२	
५६१	१२५८४ (२)	चितावणी को अंग	जीवणदास	गु० १७२०	१६.५५१४५	१-७	
५६२	१२४२१ (४)	चितावणी को अंग	हरखाराम	१९वीं श.	१७५१२	१०२-११४	लि.क. साधु गगाराम लि.स्था. कोटा-रामद्वारा
५६३	१२३११ (३)	चितावणी को अंग	रामवल्लभ	गु० १९४०	१७.५५८.५	१०२-११६	
५६४	१२५६१ (२०)	चितावणी को अंग	रामदास	२०वीं श.	१५.५५१०	१०६-११६	
५६५	१०६२४ (१७)	चितावणी को अंग	कबीरदास	१८४४	२३५१२५	५८७५८६	
५६६	१०६०० (१०)	चितावणी को कवित्त	सेवगराम	२०वीं श.	१२५८५	७८-७९	पत्र ११३वे पर 'नवकार- अनुपूर्ति' है। लि.क. गुरारूपविजय।
५६७	१२२१८ (६२)	चित्तभ्रम-संज्ञाय	कवियण	१७६२	२६.५५१०	११४वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सं.मी. में)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
५६८	११०१३ (४६)	चित्तोड की गजल	कवि खेनल	१६वीं श.	२३x१५	३२५-३२७	अतः कलश-पद व शिक्षा रूप में ११ दोहे हैं। र. का. १७४८
५६९	१२३२० (१५)	चित्रसंभूत-सज्जाय	मनहर राय ?	गु. १७६२- १८४७	२१ ५x१४ ५	२५वा	(सत्रन्(स)तनरे में अडतालाक)
५७०	१०६८१	चित्रसेण-पद्मावती-चतुष्पदी	रामविजय उपाध्याय शिष्य दयामिह	२०वीं श.	२५ ५x१२	१-१७	खरतर-गच्छीय। र. का. १८५४
५७१	१०८४२ (५)	चुगलमुख चपेटिका	वाँकीदास कविराज	गु. १८६५	२४ ५x१६ ५	७२-७३	र. स्था. बीकानेर लि. क. खिडियो हरसुख, बरणसूर-फत्तो
५७२	१२५६५ (७)	चेतन और कर्मों के भगडे की अरजी		२०वीं श.	१६x१२	५६x५८	लि. स्था. जोधपुर, ठाकुरा भेरुदानजीरी हवेली
५७३	१०६०७ (६)	चेलणारो चौढालियो	ऋषि रायचन्द	१६वीं श.	२५ ५x१२	११-१३	र. का. १८३७
५७४	१२२१८ (६१)	चेलण-सज्जाय	समयसुन्दर शिष्य सकलचन्द	गु. १७५५- १७६७	२६ ५x१०	८३वाँ	र. स्था. रीयाँ गाँव
५७५	१२५५१ (१५)	चैत्यपरिपाटी-स्तोत्र		१७वीं श.	१३x११	१०६-१११	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (ल.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
५७६	१२३७० (३३)१	चैत्यवदन	वृद्धिकुशल नो शिष्य	१६वी. श.	१६x११ ५	१८-२०	अन्त में १६६३ की जन्म- पत्रिका लिखी ।
५७७	१२२१८ (८७)	चैत्यवदन	सिद्धिनिजय	१७६७	२६.५x१०	१०६वा	
५७८	१२५७५ (२०)	चैत्यवदन-चौवोसी		१७वी. श.	१३ ५x१४	६४-६७	
५७९	१२५६५ (१२)	चैत्यवदन-विधि		२०वी श	१६x१२	७६-७८	
५८०	१२१६६ (५)	चैत्री पूनमरी तथा		१६७५	२७x१४	३२-३४	तपागच्छीय ।
५८१	११५८४ (१७)	चोथमाताजीरो छंद	कवि कान्ह	१७१५	१६ ५x१६	५१-५६	लि.क. प० केशरीसागर लि.स्था फलोदी पत्र सं. ५७ पर तान्त्रिक ग्रन्थ है ।
५८२	११०१३ (५)	चोथमातारी वार्त्ता	केसरीमिह नामलदामोत	१६वी श.	२३x१५	८१-८२	लि.क थिरपाल लि.स्था लाविया पद्यात्मक
५८३	१२५६८ (६)	चोथमातारे व्रतरी कथा		१६वी श.	१८ ५x१२.५	१-६	कामदारी लिपि में । अन्त में आनन्दधन कृत 'पार्श्वनाथ' स्तुति आदि है ।
५८४	१०६४४ (६)२२	चौक, लावणी के पद	सूरदास	२०वी श.	८x५	३४६-३७०	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	तिथिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. में)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
५८५	१२२०८ (१)	चौदह गुण ठाणा-वर्णन		१७७४	२५x१८ ५	१-६६	लेखनशैली-द्विपाठ लि.क. मुनि आसकरणा
५८६	१२५५७ (१)	चौबुधोरी वारता		१८७८	२०x१५ ५	१-१०	अन्त में सुभाषित पद तथा 'दिशाशूल-ज्ञान' है। लि.क. प० वखतचन्द
५८७	१०६३३ (५)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	गु० १६४०	१३ ५x२८ ५	६६५-७००	लि.स्था अजमेर
५८८	१०६२४ (३१)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	१६३०	२३x१२ ५	६३६वा	लि.क. विलासीराम
५८९	१२५६१ (१५)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	२०वीं ज	१५ ५x१०	८४-८८	लि.स्था शाहपुरा
५९०	१०८४७ (६)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	गु० १६६६	१ ७x८	७३२-७३५	लि.स्था जोधपुर
५९१	१०८४६ (२४)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	गु० १६३१- १६३४	१७x११	१८२-१८४	लि.क. ब्रह्मराम
५९२	१०६०३ (३)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	१६वीं ज	१३x८	२१-२६	
५९३	१२३११ (७)	चौरासी-बोल	जगन्नाथ शिष्य जनतुरसी	गु० १६८०	१७ ५x२८ ५	४६४-६७१	लि.क. साधु गंगाराम
५९४	१२४११ (२)	चौरासी-बैष्णवों की वार्त्ता (आचार्यजीरा सेवकाजी)	जनतुरसी	१६वीं. ज	२१x१४	१-८४	लि.स्था. कोटा-रामद्वारा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (स.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५६५	१२५४६ (१)	चौरामी वंशणवो की वार्त्ता		१७३४	१७५३	७-६१	प्रथम पत्र अप्राप्त । पत्र २०वा जला हुआ । पत्र ६१-७५ मे कृति म० २-६ मे संस्कृत के 'ग्रन्थक' है । लि.क. सुखदेव लि.स्था रामपुरा (रावश्री मोहकमसिहजी विजय राज्य) लि.स्था जोधपुर
५६६	१०८३६ (८)	चौवीस-एकादशी-कथा		१६०६	३२५१७५	४४-८०	
५६७	११०८६ (६)	चौवीस-एकादशी-कथा		१८१७	२१.५५१५	१६०-१७६	अन्त मे एक सवेया भी है । लि.क. गुलाब गिरी 'अपूर्ण' ।
५६८	१२५६६ (५)	चौवीस-एकादशी कथा- माहात्म्य		गु० १८२२	१६५५११	१-७	
५६९	१२५५६ (१)	चौवीस-एकादशी व्रत-कथा		१८५६	२२५५१६	११-०१	प्रथम पत्र पर तुलसीदास कृत पद है । लि.क. भगत लछमरादास पत्र ३३ मे ३४ पर स्फुट दोहा, मवैया है ।
६००	१२५६८ (२२)	चौवीस-जिन-वर्णन	खेम	१६वी. श.	१८.५५१२.५	३१-३३	
६०१	१२७१८ (७६)	चौवीस-जिन-स्तवन	अमातीश्वर	गु० १७५५- १७६७	२६५५१०	६६वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	वर्त्ता	विवरण (वि स मे)	माप (म मी से)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
६०२	१०५६५ (१५)	चावीम-जिन-स्तवन	आनन्दविजय	१७वी. ज	१३.५५११	५५-५६	न ता १५६२
६०३	१०६०५ (१६)२	चावीम-जिन-स्तवन	नीतिवर्द्धन जिग्य	गु० १७४८ १७५८	१७५११	६८-४१	लि रु विद्याप्रमोद लि मथा म्पनगर
६०४	१०२१८ (१०३)	चावीम-जिन-स्तवन	जयसागर	गु० १७५५ १७६७	२६५११०	११६वा	
६०५	१०५६८ (१७)	चावीम-जिन-स्तवन		१६वी ज	१८५५१२५	६७वा	
६०६	११५८५ (८)१०	चावीम-जिन-स्तवन		२०वी ज	१६५५११५	१४७वा	
६०७	१०२१८ (१२०)	चावीम-जिन-स्तवन		गु० १७५५ १७६७	२६५५१०	१३३-१३४	
६०८	११५८५ (८)४६	चावीस-तीर्थङ्कर-लच्छन	आनन्दविजय	२०वी ज	१६५१११५	१८३-१८६	
६०९	१०७४३	चावीस-देव-वदन-विधि	पद्मविजय	१६०७	२५५११२५	१-२०	लि क उत्तमचन्द लि स्था अवनतिका नगरे- भटेवारा उपासरा मध्ये नीर्थङ्करो व गुरुग्रो के नाम ।
६१०	१२२१८ (१३१)	चावीमनाम		गु० १७५५ १७६७	२६५५१०	१३८वा	
६११	१०३७० (१०)	चावीनी	जिनराजमूरि	१६वी ज	१६५११५	६६-११४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निकाल (वि.स.मे)	माप (ल.मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६१२	१२३७० (८)	चौबीसी	देवचन्द	१६वीं शा	१६x११५	७२-६८	लि.क. जति वीरवैताल
६१३	१२०६८ (४)	चौबीसी	देवचन्द	गु० १८८८	२३५x१५५	२१-३२	लि.स्था. कलकत्ता
६१४	१०७४२	चौबीसी	आनन्दधन	१८४४	२६x११५	३५	पत्र स. ५ अ तक टब्बा दिया है। अन्त के ३ पद प्रभाती राग के हैं। लि.क. महिषामार लि.स्था. सोजत
६१५	१२०६८ (५)	चौबीसी	हरखचन्द	गु० १८८८	२३५x१५५	३२-३७	लि.क. जति वीरवैताल
६१६	१२०६८ (३)	चौबीसी	जिनराजसूरि	गु० १८८८	२३५x१५५	१६-२१	लि.स्था. कलकत्ता
६१७	१२०६८ (२)	चौबीसी	जसविजय	गु० १८८८	२३५x१५५	१०-१६	लि.क. वीर वैताल लि.स्था. कलकत्ता
६१८	१२२१८ (५४)	चौबीसी परिवार-सज्जाय		गु० १७५५- १७६७	२६५x१०	६७वा	लि.क. जति वीर वैताल लि.स्था. कलकत्ता
६१९	१२२१८ (१५१)	(१) चौसठ योगिनीरा सात वरदान (२) पार्श्वनाथ-गीत	(२) जसवद्धन	गु० १७५५- १७६७	२६५x१०	१६४वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	रत्न	विवरण (वि. म. से.)	माप (न. मी. से.)	पत्र संख्या	विषय ज्ञातव्य
६००	१०५६१ (३७)	छंद-भाग	मल्लकदाग	२०वीं श.	१५ ५x१०	१२३६-०५३	लि. क. मग(ल)दास लि. स्था. कुचेरा-रामद्वारा र. का. १७६५ (शर. नव मुनि गशि) र. स्था. डीडवागा
६०१	१०५८६ (१)	छंद-भुजगी	रामनरगा	१६६६	१७x१३	१-३	
६०२	१०८८२ (२१)	छंद-रत्नावली	हरि रामदास निरजनी	१६०१	२४ ५x१६.५	१२३-१४२	
६०३	१०६७८	छंदमार-पोडशकर्म-टीका	म. सुरति मिश्र टी. उन्द्रभानु पुत्र भवानीराम	२०वीं श.	२८ ५x१४	१-८	
६०४	१२३५६	छंदमार-पोडम कर्म-टीका	म. सुरति मिश्र टी. उन्द्रभानु पुत्र भवानीराम पुण्डरगा	१६१५	३० ५x१५.५	१-६	लि. क. उदैराम लि. स्था. फलोदी
६०५	१२५५१ (२४)	छंद-सूरजरी		१७वीं श.	१३x११	१५०-१५२	रागवद्ध ।
६०६	१२३८० (६)	छंदी के पद (राम-जन्म के)		गुं १७२४	२०x१४	१२६-१२७	
६०७	११४३५	छायायन्त्र आदि बनाने की विधि		१६वीं. श.	४६x१६.८	३-३६	प्रथम दो पत्र अप्राप्त । कृति वहीनुमा पत्रों में लिखी गई है एव किसी फारसी ग्रन्थ का अनुवाद है । कृति का अन्तिम भाग अपूर्ण है । पत्र कीट विद्ध एव खण्डित हैं ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निर्णयकाल (वि.स. मे)	माप (मे.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६२८	११०१३ (४२)	छिनाल-पच्चीसी		१६वीं श	३२×१५	३१२-३१३	२५ पद्य ।
६२९	१२३७० (१७)९	छिन्नु (९६) जिनवर-स्तवन	जिनचन्द्र सूरि	१६वीं श	१६×११५	१५६-१६०	र का १७४३ अन्त में साधुकीर्ति का एक स्फुट पद है ।
६३०	११०७५	छीहल-वातनी	छीहल कवि (नातिगवणी-अग्रवाल)	१७वीं श	१८×१०५	१-१०	र का १५८४ पत्र वडकने है ।
६३१	१२४४२	जवूचरित्र	ऋषि चोथमल	१६०१		१-३०	र का १८६२ लि क छगना लि स्था किशनगढ
६३२	१२५७० (६)	जवूसर की कथा		१६वीं श	९५×६५	११-२१	
६३३	१०८६१ (५)	जवूसर की कथा		१६वीं श	१६×१२	८१-८७	पत्र ८७-८८ पर छाल वाल के पद है ।
६३४	१०८४९ (२८)	जवूसर को प्रसंग		गु० १६३१- १६३४	१७×११	२१४-२१८	लि क. छूछमराम
६३५	१२४२१ (१२)	जवूसर को प्रसंग		१६वीं श.	१७×१२	१८९-१९३	
६३६	१२२१८ (१००)	जवू-स्वामी-सज्जाय	हर्षकुशल	गु० १७५५- १७६७	२६५×१०	११८वा	
६३७	१२३२०	जवू-स्वामी-सज्जाय	हर्षकुशल	गु० १७९२- १८४७	२१५×१४५	२७वा	

राजस्थान प्रांतीय प्रतियोगिता (जोधपुर-मण्ड) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निर्दिष्ट (वि म मे)	माप (म मी मे)	पत्र मन्थ्या	विशेष ज्ञान
६३८	जगदी	वाजीद	१८वीं ग	२२x१५ ५	१११-११२	
६३९	जगजीपगदागजी की वाणी	जगजीवगदाग	गुं १८५३	२७x१६ ५	५५३-५६०	राग न, पद ५६ लि क साथ गोपालदास लि स्था कोलिया र का १८६७
६४०	जगतसिंहजी महाराजगो सिलोको		१६वीं श	१८ ५x१२ ५	१७वा	र का १८६७
६४१	जगतसिंहजी राठोडरो सिलोको		१६वीं श	१८ ५x१२ ५	२८-२९	
६४२	जगदम्बा-छन्द	मारग	१७००	१६ ५x१६	२३-२५	लि क चेला नरसिंघ लि स्था. चितामा ग्राम
६४३	जगदीश्वरी छन्द	गोविन्द विप्र	१७००	१६ ५x१६	१५-२३	लि क चेला नरसिंघ लि स्था चितामा ग्राम
६४४	जगदेव-परमाररी वात		१८१८	२३x१५	८६-११४	पत्र म १२-१४ अप्रान्त लि क सुजाण
६४५	जडभरथ-चरित	जनगोपाल	गुं १६६३	१८x१५	६३-७८	लि स्था चारोद लि क उद्धवदास
६४६	जडभरथ-चरित	जनगोपाल	गुं १८५३	२७x१६ ५	५७१-५७३	लि क साथ गोपालदास लि स्था कोलिया

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
६४७	१२२२१ (२)	जडभरथ-चरित	जनगोपाल	१६वीं श	१५x१०	५४-६१	पत्र स ५८ से ६० तथा अन्य पत्र अप्राप्त । गुटका नुटित, जीर्ण तथा अस्तव्यस्त है । रामचरणजी की वाणी, जन तुरसी की वाणी, सन्त दासजी की वाणी, अनाथ- दास का सर्वगसार, अनन्त दास कृत-नामदेव, सेऊसमन आदि की परचिया तथा अन्य स्फुट पद सग्रह और सत साहित्य का सग्रह है ।
६४८	१०६०० (४)	जनमलीला	दयालदास (छालवाल)	२०वीं श	१२x८५	२५-४५	पत्र स २ से ६२ तक अप्राप्त । गुटका बिलरा हुआ है ।
६४९	११०८७ (१)	जन्म-अष्टमीरी कथा	शिष्य रामदास	गु० १७६३	२१५x१५५	१ला	लि.क. मुहता सोभागचद । लि.स्था जोधपुर ।
६५०	१२५५३ (६)	जन्म-कर्म-लीला	माधवदास	१८६७	१४५x१३५	११८-१२२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६५१	१२२०५ (२१)	जयतिहुअणस्तोत्र	अभयदेव मूरि	गु० १७४८-१७५१ १७५८	गु० १७-११	५७-६१	अपभ्रंश मे । अन्तिम पत्र के पृष्ठ भाग पर आधाशीवी का मन्त्र है । लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर लि.स्था. कलकत्ता र.का. १८४२
६५२	१२०६८ (६)	जयतिहुअणस्तोत्र	अभयदेव मूरि	गु० १८८८	२३ ५२१५ ५	४६-५१	र.स्था. नागौर द्वि.पाठ । सात ढाल ।
६५३	११६६४	जयवन्तीरो मन-ढालियो	ऋषि रायचन्द शिष्य जयमल	१६वीं श.	२५४११५	१-४	र.का. १८४२
६५४	१०६०७ (२)	जयवन्तीरो मन-ढालियो	ऋषि रायचन्द शिष्य जयमल	१६वीं श.	२५५११२	३-५	र.स्था. नागौर
६५५	११०६२ (७)	जलधरजी की सबदी		गु० १८३६	१८५१० ५	१८६-१६१	लि.क. सेवादास लि.स्था. वगुंदा
६५६	११६४८ (१२) ५	जलधरो पावजी की सबदी		गु० १८५३	२७५१६ ५	३६१वा	लि.क. साध गोपालदास लि.स्था. कोलिया
६५७	११०१३ (१०)	जलाल-गहाणीरा दुहा		गु० १८१८	२३११५	११४-११७	लि.क. मुजारा
६५८	११६३५ (१)	जलाल-गहाणीरी बात सचित्र		१६वीं श.	२६५१६५	१-५३	चित्र सं. ६५ । अपूर्ण । पत्र सं. २४, ४४, ५४-५५वे अप्राप्त ।
							गुटका पुस्तकाकार जिल्दबद्ध ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	मर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सं.मी. से)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
६५६	११०१३ (१७)	जवानीरा दूहा		गु० १८१८	२३x१५	१३२वा	दोहा १५ लि क मुजाए
६५६०	११२८३ (१)	जसवन्तसिंहजी के दोहे	कालू	१७८४	१६x१४.५	५३-५४	कामदारी लिपि ति.क. करममी
६५६१	११६८३	जादवरस	चोथमल	१६वीं श	२४.५x१०.५	१-५१	प्रति रचनाकालीन प्रतीति होती है। र का. १८७८ लि क सरूपचन्द (ग्रन्थकार का पौत्र) लि स्था जोधपुर
६५७	११२५०	जानकी-मंगल	तुलसीदास	२०वीं श	३०.५x१५.५	१-७	
६५३	१२३८० (२७.५)	जानराई-लीला (कृष्ण लीला)	माधोदास	गु० १७२४	२०x१४	३२७-३३७	पत्र ३३८, ३३९वे अग्रप्राप्त।
६५४	१२३७० (४२.१०)	जिनकुशल सूरि गीत	कनकक्रीति	१६वीं श	१६x११.५	१२७वा	
६५५	१२२१८ (१२७)	जिनकुशल सूरि-गीत	जिनहर्ष	गु० १७५५- १७६७	२६.५x१०	१३७वा	
६५६	१२२१८ (१६)	जिनकुशल सूरि-स्तुति	हर्षकुशल	गु० १७५५- १७६७	२६.५x१०	३५वा	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-सग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

८०

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.म. मे)	माप (सं.मी. मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
६६७	१२५५१ (५)	जिनचन्द्र सूरि गीत	श्रीसुन्दर	१७वीं श	१३x११	६२-६४	पत्र ६५वे पर प्राकृत मे 'चतुर्विंशति जिन स्तुति' है।
६६८	१२५५१ (३२)	जिनचन्द्र मूर्ति-गीत	समयसुन्दर	१६८०	१३x११	१७३वा	लि.क. समयकीर्ति
६६९	१२२१८ (८५)	जिनदत्त सूरि-गीत		१७५१	२६५x१०	१०४वा	लि.क. अमीचन्द्र
६७०	१२५५१ (७)	जिनदत्त सूरि-गीत	वीरविजय शिष्य तेजसार	१७वीं श	१३x११	६५-६६	
६७१	१२३७० (४२)१६	जिनपद-सग्रह		१६वीं श	१६x११५	१३८-१४१	
६७२	११५८५ (८)२४	जिन-प्रतिमा-स्तवन	जिनलामसूरि	२०वीं श	१६५x११५	१५६वा	
६७३	१२३७० (१६)	जिनरक्षित-जिनपाल चौपई		१६वीं श	१६x११५	१६५-१६६	
६७४	१०७३६	जिन-विचार(त्रोवीम)		१६०८	२५.५x१२	१-२	लि.क. सवाई सागर लि.स्था श्रीसुभटपुर
६७५	११५८५ (८)५२	जिन-स्तवन		२०वीं श	१६.५x११.५	१६३वा	
६७६	१२५७५ (२७)	जिन-स्तवन	प्रेमसागर	१७वीं श	१३५x१४	७८वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६७७	१२२१८ (७३)	जीवउत्पत्ति-सज्भाय	श्रीसार	गु० १७५५- १७६७	२६.५५१०	६१-६४	
६७८	१२२०५ (४२४)	जीव-काया-गीत	कीर्तिवर्द्धन	गु० १७४८- १७५८	१७५११	१४१-१४२	लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर
६७९	१२२०५ (३६)	जीव-काया-वचन विचार-गीत	ज्ञानसमुद्र	गु० १७४८- १७५८	१७५११	१२१वा	लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर
६८०	१२२१८ (६३)	जीव-भेद-सज्भाय		गु० १७५५- १७६७	२६.५५१०	११५वा	
६८१	१०६०६ (१)	जीवरास		१६२८	२३.५५१०५	१-१५	लि.क. मुनि हीरसागर
६८२	१०६०७ (४)	जुगमधर स्तवन	ऋषि रायचन्द शिष्य जैमल	१६वीं श.	२५.५५१२	७-८	र.का. १८२१ र.स्था. डीडवाना
६८३	१२५६२ (८)	जुग-ब्रह्माण्ड प्रमाण सवैयो		१६वीं श.	१४.५१०५	१७६वा	
६८४	१२३०६	जैमनीय अश्वमेध यज्ञरो कथा सचित्र		१६३४	३४.५५२०५	१-६२	चित्र स० ५ रजिस्टरनुमा जिल्दबद्ध। जिल्द कीटविद्ध।
६८५	११६८६ (१)	जैमनीय अश्वमेधरो कथा		१६०६	२३.५५१६	१-६८	यह प्रति रजपूत फत्ताजी की स० १८६६ वाली प्रति से लिपिकृत है जो जोधपुर में लिखी गई थी। लि.क. वसन्तीराम पुर्विया ब्राह्मण

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विस मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६८६	१०८३६ (६)	जैमनीय अश्वमेधरी कथा		१६०६	३२x१७x	८१-११०	कामदारी लिपि मे । लि स्था जोधपुर
६८७	१२३६०	जैमनीय अश्वमेधरी भाषा	केवलदास	१८७५	२६x१५	२-५६	प्रथम पत्र अप्रान्त । र का १७११ लि क ज्ञानदास लि स्था बिमाहू
६८८	११५८३ (३)	जोग पद	जन हरिदाम	गु० १६६३	१८x१५	४-५	
६८९	१२१५६ (२)	जोग पावडी		१६वीं श.	२५x११x	२-५	
६९०	१२४३५	जोग मुद्यानिधि	लछीराम पुत्र कल्याण	१६वीं श	२६x१३	१-१६	दोहा ८२, चौपाई १८६
६९१	१०८४६ (२३)	जोगसिद्धान्त	सुन्दरदास	गु० १६३१-१७x११ १६३४	१७x११	१७८-१८२	लि क द्यूधमराम
६९२	१०६७१	ज्योतिषसार (लघुजातक के अनुसार)	कृपाराम	१८१६	२४x१५	२८	पत्र जलग्रस्त । लि क जती खेमचन्द लि स्था सोजत
६९३	१०६०२ (१५)	ज्ञानगज		१८०६	१५x१२x	८५-८६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
६६४	११६२६ (३)	ज्ञानभूलगा-श्रष्टक	सुन्दरदास	१८६४	३२२१५	६-१०	लि.क. रामदास मारु लि.स्था. नराणो-वरकला की बगीची
६६५	१२२२६ (२१)१	ज्ञानदीप प्रबोध (दत्तात्रेय गोरख-सवाद)	गोरखनाथ	१६वीं या	१४५१२५	६१५-६२१	लि.क. वीरमदास निरजनी लि.स्था. कैरू (जोधपुर)
६६६	१०७८३	ज्ञानपचमी देववदन-विधि		२०वी. श.	२४५१३	१-२५	
६६७	१२१६६ (१)	ज्ञानपचमीरो वज्राण (व्याख्या)		१६७५	२७५१४	२०-२३	पत्र १-१६ अग्राप्त । लि.क. प० केशरीसागर लि.स्था. फलोदी
६६८	१२२०५ (४३)	ज्ञानपचमी-स्तवन	समयसुन्दर	गु० १७४८- १७५८	१७५११	१४४-१४६	लि.क. विद्याप्रमोद लि.स्था. रूपनगर
६६९	१०८४३ (४)	ज्ञान-पचमीसी	वनारसीदास	गु० १८६५	२५.५५२०	४-५	लि.क. मुनि गगराज लि.स्था. रतनपुरी, महाराज वलवन्तसिंहजी के समय मे
७००	११५८३ (२)	ज्ञान-प्रकास जोगग्रन्थ	सूरदास	१६६३	१८५१५	३-४	
७०१	१२४२१ (७)	ज्ञान-वत्तीसी	कवीरदास	गु० १८६३	१७५१२	१२७-१२९	लि.क. बालदास लि.स्था. जोधपुर
७०२	१०६२४ (१८)	ज्ञान-वत्तीसी	कवीरदास	१८४४	२३५१२	५८६-५९१	अन्त मे सृष्टि पुराण का विवरण है ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
७०३	१०८६७ (७)	ज्ञात-वत्तीमी	कवीरदास	२०वीं श.	१२x११	२४०-२४६	र का १७०१
७०४	१२४२८ (८)	ज्ञान वारहखडी		२०वीं श.	२१x१५.५	२७-२६	
७०५	१२३७२ (६)	ज्ञानबोध		१६वीं श.	२४x१६ ५	६६-१००	
७०६	११६४६	ज्ञानमजरी	मनोहरदास निरजनी	२०वीं श.	२०x१२	१-२६	
७०७	१०६२४ (२०)	ज्ञानमाला		१८४४	२३x१२ ५	५६२वा	
७०८	१२५६१ (२३)	ज्ञानलीला	रामानन्द	२०वीं श.	१५.५x१०	१२६-१२७	कृति सं० २ से १६ संस्कृत मे है। लि.क. वखतचन्द लि.स्था. ब्रजमेर
७०९	१२५५७ (१७)	ज्ञानलीला	रामानन्द	गु० १८७८	२०x१५ ५	४-६	
७१०	१०६०३ (४)	ज्ञानलीला	रामानन्द	१६वीं श.	१३x८	२६-२८	
७११	१०८६५ (२)	ज्ञानलीला	रामानन्द	१६४६	१२ ५x८	१-५	लि.क. साधु रामस्वरूप
७१२	१०८४६ (४)	ज्ञानलीला	रामानन्द	गु० १६३१	१७x११	६-६	लि.क. छद्मराम

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
७१३	१२५७१ (३)	ज्ञानलीला	रामानन्द	१६वीं श.	१०.५x८	१४-१८	लि.क. रामदयाल मारु लि.स्था नराणो-वरकता की दगीची
७१४	१२२१४ (८)२	ज्ञानसप्तभोमिका	मनोहरदास निरजनी	१६वीं श.	२१.५x१३	८६वा	
७१५	११६२६ (६)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	गु० १८६४	३२x१५	१-२२	
७१६	१२५६१ (३)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१६वीं श.	२३.५x१७	१४७-१६३	
७१७	१२५५६ (२)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	गु० १८५६	२२.५x१६	१०१-१०५	
७१८	१२४८०	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१६वीं श.	२६.५x१४.५	१-१७	पत्र जोरुण-शीर्ण। र.का. १७१० हस कृति से पूर्व के पत्र १-३ अत्राप्त व पत्र ४- ११ तक 'अवधूत गीता' दत्तात्रेय कृत संस्कृत में है। लि.क. छुछमराम
७१९	१२३७२ (१)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१६वीं श.	२४x१६.५	१-१६	
७२०	१०८४६ (२२)	ज्ञानसमुद्र (द्वितीय उत्तरास)	सुन्दरदास	गु० १६३१- १६३४	१७x११	१७०-१७८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निषिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
७२१	१०६६६	ज्ञानसमुद्र (गुरु-विषय-सम्बाद)	मुन्दरदास	१६वीं श	२५x१२	१-२६	पत्र प्राचीन है व कोण खण्डित है। र का १७१० अपूर्णा।
७२२	१२५७० (१६)	ज्ञानसमुद्र	मुन्दरदास	१६वीं श	६.५x६ ५	६६-१२२	पत्र चित्रके हुए एवं खण्डित।
७२३	१०८६७ (१)	ज्ञान सार	हेमदास	२०वीं श	१२x११	१-१००	अपूर्णा।
७२४	१२०६७ (५)	ज्ञान स्वरोदय	चरणदास	१६२६	२३ ५x१७	१-६	अपूर्णा।
७२५	१२५६२ (१)	ज्ञान स्वरोदय	चरणदास	१६५७	२८ ५x२०	१७-२५	लि क वोराचन्दलाल लि स्था. जोधपुर (जोधपुर) पत्र स. १-१६ अत्राप्त।
७२६	१०८४७ (२८)	भगडो-पनघट को	गु० १६६६	१७x८	६५७-६६०		लि क. सुखरामदास लि. स्था. गाव जुम्ह लि स्था जोधपुर
७२७	१०८६७ (५)	भूलगा	हेमदास	२०वीं श	१२x११	२०८-२१६	भूलगा ३०

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	प्राप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७२८	१२२२१ (३)	देकसार जोग-ग्रन्थ	जन तुरसी	१६वीं वा	१५५१०	६०-६४	पत्र अत्यन्त जीर्ण श्रुति एवं तथ्यस्त । इस गुटके में निम्न कृतियां हैं— (१) प्रह्लाद चरित— जनगोपाल (४) सेऊसमन की परची— अनन्तदास (५) सर्वगसार-नवलराम (६) रामचरणजी की वाणी- रामचरण (७) फुटकर राम-पद संग्रह (८) जनतुरसी की वाणी- जन तुरसी १७५-१७६ पर फुटकर दोहे हैं । १७६-१८० पर "जन रामा" के दोहे हैं । २८ प्रश्नोत्तर दिये हैं । इस से बड़ी कथा संग्रह में उप-लब्ध नहीं है ।
७२९	१२५६२ (७)	डोकरीरी कथा		२०वीं. वा	१४४१० ५	१७६-१७८	
७३०	१०६३१ (२)	डोकरीरी कथा			१४४१० ५	३०७-३१६	

प्रमाण	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निष्कानन (वि म मे)	माप (से मी मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
७३१	१०६०२ (३)	डोकरीरी कथा		१८०६	१५५×१०५	१४-१६	लि क साधु भीखनदाम
७३२	१०८४७ (७)	डोकरीरी कथा		गु० १६६६	१७२८	७३६-७५०	इस कृति मे २५ प्रश्नोत्तर है।
७३३	१२२२० (२८)१-३	डोल के पद	कुम्भनदाम परमानन्द रामदास	१६वीं श	१६×१६ ५	६६, ६७, ६६, ६६-६७,	
७३४	१२२१८ ४)	ढढणाऊपि-सजभाय	हर्षमंगल सूरि	गु० १७५५	२६ ५×१०	३२वा	अन्त मे फुटकर श्रु गारिक छद्म हैं।
७३५	१२२१८ (२४)(३५)	ढाल "कइये मिलस्यंजी मुनिवर एहवा"	जिनलविध सूरि	गु० १७५५	२६ ५×१०	३३वा	
७३६	१२३७० (२३)७	ढाल-कपटी मिनखरी	विजयदेव सूरि	१७६७		४८वा	
७३७	१२२१८ (५६)	ढाल-"चतु बिहारीरे आतम माहुरा"	भुवनकीर्ति	गु० १७५५- १७६७	२६ ५×१०	६८वा	
७३८	१२३७० (२४)१-३	ढाल-धन्नाजीरी " आवकरी " समकितरी ढाल-संग्रह	रत्नचन्द	१६वीं श	१६×११ ५	२२७-२२८ २२८-२२९ २२९-२३१ २५६-२६२ २६३-२७०	अन्त मे 'केशकल्प' का नुस्खा है। (१) २.स्था अकवरावाद (२) २ का १८६८ स्था पाली २ का १८५२ (१०)
७३९	१०६४२ (६-१०)		रूपदास चोथमल		१३×६		

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग-३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
७४०	१०६४४ (६)१८-२०	हाल-समूह—	अज्ञात सेवाराज रूपदास कृशलहेम, अपि दुर्गादास शिष्य पुन्यकलश	२०वीं श.०	८२५	३२४-३२५, ३३७-३४२ ३२८-३३० ३३०-३३६ २३१, २३१-२३३	र.का. (२) १८५० अजमेर लि.क. बहुकापड़ी लि.स्था जयपुर अपूर्ण। १२३वे दोहे से ३४४ तक। र.का. 'सवत् सोलें तेरो तरें' १६१३ र.स्था जेसलमेर लि.क. रामकिशन चित्र स० ५८। अन्त में अकबर से गऊ की फरियाद के सम्बन्ध में दोहा है। आगे के पत्र रिक्त हैं। लि.क. हैमसागर लि.स्था पाली
७४१	१२३७० (२४)४-५	हाल समूह— 'प्रीथवी एकक एन्डकडेंजी' 'दोन्यारी मीठी वाणीरे'		१६वीं श.०	१६२११५	२३१-२३३	
७४२	११६७७	होला-मरवणरी वात		१८६०	१८५२१४५	१६-१६३	
७४३	१०६०१ (१)	होला-मारवणरी दूहा	कुशललाम वाचक	१६वीं श.०	१५५४१२५	१०-२८	
७४४	१२३७६ (४)	होला-माहरी चौपई	कुशललाम वाचक	१८६६	२०५२१४५	३२-८१	
७४५	१०७०२ (२)	होला-माहरी चौपई सचित्र	कुशललाम वाचक	१८५८	२५५४१७	३०-६२	

राजन्याम पञ्चविधया परिगणान (जीधपुर-मन्त्र) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थार्थ	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निकाता (वि.म.मं.)	भाषा (सं.गी.मं.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
५४६	१२२८८	होगा-मान-री चौपट तविद्य	मुशलनाथ वाचक	१६३१	१६५२१५	१-५३	चित्र संख्या २३ । र का १६०७ जेसलमेर लि क प्यारचन्द लि.स्था ग्राम पावटी
५४७	११०१३ (३५)	तन्वावरी नोसाणी	कवि कानो	१८२२	२३२१५	२४६वा	लि क मुजाण लि.स्था चम्पावती नयरे
५४८	१०६२४ (२३)	तर्क चिन्तावणी	सुन्दरदास	१६वी श०	२३२१२५	५६३-५६५	
५४९	१२३७३ (२१)	तर्क चिन्तावणी	सुन्दरदास	१६०६	२२२११५ ५	२१५-२१७	नि क बिहारीदास वैष्णव लि.स्था पाली
५५०	१२३७५ (३)	तर्क चिन्तावणी	सुन्दरदास	१६वी श०	११२१६ ५	४८०-४६०	
५५१	१२३७८ (२१)	तर्क चिन्तावणी	सुन्दरदास	१८वी श०	२२२११५ ५	१३८-१३८	
५५२	१२५७० (६)	तर्क चिन्तावणी	सुन्दरदास	१६वी श०	६५२६ ५	३१-३६	
५५३	१०६०२ (७)	तिलोत्तचन्दजी की परची	ग्रन्तदास	१८०६	१५५२१२ ५	४० ४४	लि क साधु भीखनदास
५५४	११६४८ (३)	तिलोकचन्दजी की परची	ग्रन्तदास	१८५३	२७२१६ ५	४था	अपूर्ण । लि क गोपालदास लि.स्था कोलिया

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (ले.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७५५	१२५५६ (३)	तिलोकचन्दजी की परची	अनन्तदास	गु० १८५६	२२ ५x१६	१०५-१०७	लि.क. भगत लछमणदास
७५६	१२५८५ (४)	तिलोकचन्दजी की परची	अनन्तदास	१६२७	१६ ५x१५	१८३-१६०	गुटके मे परची साहित्य का दुर्लभ सम्रट् है। लि.क. आरतराम; वदनोर लि.क. लिखमीचन्द कोचर लि.स्था. वालाहिडा
७५७	११५८५ (८)११	तीनो चोवीसो के नाम		१६०३	१६ ५x११ ५	१४२-१४४	
७५८	१२२१८ (६६)	तीर्थ-यात्रा सजभाय	समयसुन्दर	गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	८६वा	
७५९	११०६३	तीलोक सुन्दरीनो वखाणा		१६८५	२५x१२ ५	१-८	११ डाले है। लि.क. कैसूला लि.स्था. नीवरेवारी
७६०	११५८४ (३३)	तुरकी भाषा शकुनावली		१८वीं श०	१६.५x१६	२३०-२३२	कुलग, फकती, टोटख, लक, अक, तोता, वतख, हुद, बुलबुल दुर्हिज, कवूतर, मात्तरक, वऊस, बाज, खुरस, आदि नामो के पक्षियो की बोली के आधार पर शकुन विचार दिया गया है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७६१	११६४८ (१५)	तुरसीदासजी की कृत	जन तुरसी	१८५३	२७×१६ ५	३६८-४३०	साखी ४२००, राग २६ प्रकरण-२०० जन तुनसी की कृतियों का दुर्लभ सग्रह है । लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
७६२	१२४२२ (१५)	तुरसी-बाणी	जन तुरसी	१९वी श०	१५×१० ५	३५४-३६५	लि क मनोरथदास
७६३	१०८४६ (२७)	तुरसी-बाणी	जन तुरसी	गु० १६३१	१७×११	१६०-२१४	
७६४	१२५४४	त्रिधापद वेदान्त निर्णय	आत्माराम	२०वी श०	२१ ५×११	१-२१	
७६५	१०८४३ (७)	त्रिषष्ठिशलाका पुरुष नाम	बनारसीदास	१८६५	२५.५×२०	२५-२७	लि क मुनि गगराज लि स्था रत्नपुरी
७६६	११६४८ (५४)	दत्तात्रेयजी की आरती	दत्तात्रेय	१८५३	२७×१६ ५	३४५वा	लि क गोपालदास लि स्था कोलिया
७६७	११५३७	दत्तात्रेय चो-पदे सग्रह		२०वी श०	१६×११.५	१-४८७	मराठी भाषा मे । महानुभाव सप्रदाय कृति-सग्रह । पत्र स० १०१ से ११० तक अप्राप्त । अपूर्णा। २४६वा पत्र अप्राप्त।
७६८	१२४२२ (६)	दत्तात्रेयजी की सबदी	दत्तात्रेय	१९वी श०	१५×१० ५	२४३-२४५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी.मे.)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
७६६	१२२२२६ (१०)	दत्तात्रेय स्तोत्र	शकराचार्य	१६वी श०	१४x१२ ५	५६ वा	लि. क. वीरमदास निरजनी लि. रथा. कैरू (जोधपुर)
७७०	१२२२१८ (१४२)	दपति गीत	हर्षकीर्ति सूरि शिष्य चन्द्रकीर्ति सूरि	१८वी श०	२६ ५x१०	१५७-१५८	
७७१	१०६२४ (२०)	दया बोध	गोरखनाथ	१६वी श०	२३x१२ ५	५६१-५६२	
७७२	१२२२१४ (२)	दया बोध	गोरखनाथ	१६वी श०	२१ ५x१३	३८-३९	
७७३	१२२२१८ (३३)	दयारात्रि सञ्भाव	पण्डित लालविजय शिष्य शुभविजय	गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	४७-४८	
७७४	१२२४२० (१०)	दयालदासजी का छुटकर सवद	दयालदास	गु० १६३२	१६x१४	१६२-२६१	लि. क. रामसजन शिष्य सेवगाराम लि. क. बिहारीदास 'पोथी चम्पाबाई की'
७७५	१२५७१ (५)	दयालदासजी की वाणी	दयालदास	१६वी श०	१०.५x८	२३४-३१८	
७७६	१०८६६ (६)	दयागदासजी की वाणी	दयालदास (छालवाल)	१६१०	७ ५x६.५	१०८-१५५	
७७७	१२५८६ (५)	दरिद्रदासजी की वाणी	जन दरिद्रा	१६वी श०	१२x६ ५	६०-८२	
७७८	१२२२१८ (८३)	दश श्रवतार पार्श्वनाथ स्तवन	मतिविशाल	गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	१०३-१०४	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७७६	१२२१० (१०)१-७	दशहरा के पद—	नन्ददास सुरदास रसिकदास परमानन्द गोविन्द स्वामी रामदास स्यामदास, रसिकदास कृष्णदाम परमानन्द चञ्चुज नन्ददास मुनि श्रीसार	१६वीं श०	१८x१३ ५	५२-५३ ५३-५४ ५४-५५ ५५, ५६ ५५ ५६ ७५, ७५ ७५-७६ ७६ ७६ ७६	राग-मारु, सारग, गुटके मे पदो का दुर्लभ संग्रह है ।
७८०	१२२२० (१२)१-६	दशहरा के पद—	स्यामदास, रसिकदास कृष्णदाम परमानन्द चञ्चुज नन्ददास मुनि श्रीसार	१६वीं श०	१६x१६ ५	७५, ७५ ७५-७६ ७६ ७६ ७६ ३२वा	
७८१	१२३२० (२५)	दस श्रावक सज्भाय	मुनि श्रीसार	१८वीं श०	२१ ५x१४ ५	३२वा	
७८२	१२३२० (५)	दसारणाभद्र चौ-ढालियो	कुणालसिंह शिष्य रामसिंह	१८वीं श०	२१ ५x१४ ५	१८-१९	
७८३	११६८६ (२)	दस्तूर अमल		१६०६	२३ ५x१६	१-७	
७८४	१२५४८ (१)	दाढाला एकलिंगिढरी चात		१६वीं श०	१६x१२ ५	१-१५	कर्त्ता लु कानाचछी आर्षारत्ना पठनार्थ रजपूत फलाजी की १८६६ की प्रति की नकल । लि क वस्तीराम पुरविद्या लि क माणिकचन्द लि स्या सोजल

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
७८५	१२२०५ (३३)	दादा गुरु गीत	जिनरग सूरि	गु० १७४८- १७५८	१७×११	११६वा	पत्र सं० ११८-११९ पर रक्तपीत आदि का नुस्खा है।
७८६	१२३७० (३)	दादाजीरो श्रष्टप्रकारी पूजा	देवचन्द्र	१९वीं श०	१६×११ ५	१५-२०	राग देवगाधार, विलावल, पूरवी
७८७	१२२१० (६) १-३	दान के कीर्तन	कुभनदास, परमानन्ददास, गोविन्द भवामी	१९वीं श०	१८×१३ ५	३९वा ३९-४० ४०-४१	
७८८	१२२२० (=)	दान के पद	परमानन्द	१९वीं श०	१९×१६ ५	६९वा	
७८९	१०८४१ (३)	दानलीला	नन्दराम पचोली	१९००	२८×१९ ५	१-६	लि क. मुरलीधर पुरोहित लि रथा, जोधपुर लि रथा जोधपुर
७९०	१०८६२ (२)	दानलीला	कृष्णदास	गु० १८९८	१७×१४	११-१६	
७९१	१०८६२ (५) १७	दानलीला	कृष्णदास	गु० १८९८	१७×१४	१६-१९	
७९२	१०८६७ (९)	दानलीला	कृष्णदास	१९वीं श०	१८×११	९३-९७	
७९३	१२४२८	दानलीला	कृष्णदास पयहारी	गु० १९१२	२१×१५ ५	१९-२१	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
७६४	१२५५७ (१८)	दानलीला	कृष्णदास	गु० १८७३	२०.२१५ x ५	७-११	लिक पण्डित वखतचन्द लिस्था अजमेर
७६५	१०६५४ (५)	दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो	समयसुन्दर प्रिथ्व समलचन्द	१८७४	२४.१६ x ५	७५-८१	र का १६६२ सागानेर लि क. रणजीत लिस्था पाली (मारवाड)
७६६	१२३७० (२५)	दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो	समयसुन्दर वाचक	१६वीं श०	१६.४११ x ५	२३७-२४६	र का १६६२ रस्था सागानेर
७६७	१२३७० (१२)	दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो	समयसुन्दर वाचक	१६वीं श०	१६.२११ x ५	११८-१३१	र का १६६२ रस्था सागानेर
७६८	१२५६८	दान-शील-तप भावनारो चो-ढालियो	समयसुन्दर वाचक	१६वीं श०	१८.५.२१२ x ५	८२-८७	
७६९	१२२१८ (१११)	दान-शील-तप भावना सजभाय	समयसुन्दर वाचक	१८वीं श०	२६.५.४१०	१२२वा	
८००	१२२१८ (८०)	दान-शील-तप भावना सवाद	समयसुन्दर वाचक	गु० १७५५-१७६७	२६.५.४१०	६६-१०३	
८०१	१२५७६ (१)	दादुदयालजी की जनम लीला	जन गोपाल	१६वीं श०	१६.२८	१७-७१	पत्र जीर्ण एव वडकने हैं ।
८०२	१२४१६	दादुदयालजी के पद	दादुदयाल	१८४४	३०.४१५ x ५	१-४७	राग रे०, पद ४०६ प्रथम पत्र खण्डित ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिविकाल (वि स मे)	माप (ले मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८०४	१२३७५ (६)	दाहूदयालजी की परची	जन गोपाल	१६वीं श०	१६x११ ५	८२२-६०६	
८०५	११६२७	दाहूदयालजी की चारणी	दाहूदयाल	१८५२		१-६१	रागा १७, पद ४४४ पत्र ११-१७ ऋतित लि.क. चन्द्रभुज पुत्र गुलाबचन्द सटिप्पण ।
८०६	१२३६२	दाहूदयालजी के सबद	दाहूदयाल	२०वीं श०	२६x१४.५	१-४६	
८०७	१२३६६ (१)	दाहूदयालजी के सबद एवं चारणी समूह	दाहूदयाल	१७८६	२४x१७ ५	१-८५ ८५-१६५	रागा २८, पद ४४४, साखी २५२ लि स्या नारनोल साखी २५६०, रागा २७, पद ४४३ रागा २६, पद ४४२
८०८	१२३७४ (१)	दाहूदयालजी के सबद एवं चारणी समूह	दाहूदयाल	१६वीं श०	२१ ५x१६ ५	१-१०६ १०६-१८५	
८०९	१२३७५ (१)	दाहूदयालजी के सबद एवं चारणी समूह	दाहूदयाल	१६वीं श०	११x१६ ५	१-२४४ २४४-४७५	
८१०	१२३७८ (२)	दाहूदयालजी की साखी	दाहूदयाल	१८वीं श०	२२x१५ ५	१-२५	
८११	१२३८० (१)	दाहूदयालजी की साखी	दाहूदयाल	गु० १७२४	२०x१४	३१-१०६	गुटका क्षतिग्रस्त । पत्र स० २२२ पर भी दाहू- दयाली के कुछ श्रवा है । पत्र स० १-३० अप्राप्त ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८१२	१२४१५	दाहूदयालजी की साखी अग वद्ध	दाहूदयाल	१६वीं श०	३०×१५	१-६५	अग ३७, साखी २४११
८१३	१२५६१ (१)	दाहूदयालजी की साखी एन पद	दाहूदयाल	१६वीं श०	२३ ५×१७	१-१२२	राग २६, पद ४४३, साखी २५५८, अग ३७ पत्र जीर्ण व बढकने है।
८१४	१२५७३	दाहूदयालजी की साखी	दाहूदयाल	१६वीं श०	१५ ५×१० ५	१-२८६	
८१५	१०८६२ (६)४	दिस,सुर को पालना (दिशा-स्वर का पालन)		गु० १८६५	१७×१४	३६-४०	लि.स्था जोधपुर
८१६	१२६१२ (१०)	दीतवारजी की कथा		१८१७	२५×१५	२६-४३	लि.क. हिमतराम सिंघवी लि.स्था दिल्ली, जमुना ती. लि.क. साधु भीखनदास
८१७	१०६०२ (२)	दीनरा रेखता	दीन दरवेण	१८०६	१५ ५×१२ ५	६-१४	
८१८	१२२१० (१५)१-३	दीपमालिका के पद	चन्नभुज कु.भनदास, परमानन्द	१६वीं श०	१८×१३ ५	६१, ६२-६३	राग-हमीर, कान्हरो।
८१९	१२२२० (१६)	दीपमालिका के पद	सुरदास कु.भनदास	१६वीं श०	१६×१६ ५	६१, ६२ ७७ ७८	पत्र ७७ पर धनतेरस का पद है।
८२०	१०८३६ (२)	दीपमालारी कथा		१६०६	३२×७ ५	६-११	लि.स्था. जोधपुर
८२१	१२१६६ (८)(११)	दीवाली पर्व व्याख्यान		१६७५	२७×१४	४१-४३, ५२-६४	लि.क. प० केशरी सागर लि.स्था फलोदी

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८२२	१२२१८ (२६)	दीवाली भास	आणंद शिष्य	गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	३७-३८	र का १७६३ लूणसर
८२३	११३५३ (२)	दुर्गा की आरती	पार्श्वचन्द	१६वीं श०	११ ५x६ ५	८२-८५	गु० की अन्य कृतिया सस्कृत मे है।
८२४	१२०१२ (१)	दूहैरामजी की वाणी और पद संग्रह	दूहैराम शिष्य रामचरण	२०वीं श०	१४ ५x११	१-५६७ १-८६	राग ४६, पद २०५। र का १८५७ बैसाख सुदि ३ शनिवार
८२५	१०६२५ (८)	दृष्टांतसागर टीका सजुगति	टी० रामजन शिष्य म० रामचरण	१६३३	२२ ५x१६ ५	१०१-१४८	गुटका रामचरण के साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। लि क श्री च्चनणाजीरी चेली लि स्था. बीलाडा
८२६	१२५४२	देवकी चौपई	क्षमाकल्याण	१६०६	२४x१२	१-८	
८२७	१२३७० (३५)	देवकीनी ढाल		१६वीं श०	१६x११ ५	२२-३२	
८२८	१२०६८ (६)	देवचन्दजी की बीमी	देवचन्द	१८८८	२३ ५x१५ ५	३८-४५	लि.क. जति वीरवैताल लि स्था. कलकत्ता
८२९	१२४२२ (५)	देवलनाथजी की सबदी	देवलनाथ		१५x१० ५	२४३वा	
८३०	१०६७३ (२)	देवसेनरी चौपई	कुसालचन्द	१६१४	२५ ५x१२	७-१०	र का १८६८ सोजत, ६ ढालें लि क लाछमा लि.स्था बिलाडा

राष्ट्रवाचन प्राचीनका प्रविधान (ओषधुरन्तमह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निष्पन्न (वि.स.मे.)	भाग (पे.मी.मे.)	पृथ मर्या	विशेष ज्ञातव्य
८३१	११०१८ (२)	देवसोदयगण एकदशी कथा-भाषा	१६०४	२६२१३ ५	१-३२	ब्रह्माण्ड पुराणगत पद्यानुवाद । पञ्च जलाभिषिक्त । रचनाकालीन प्रति । सकलन काल १८३७ संस्था भीलाड़े (भीलवाडा) लि.क.सुजाण लि.स्था.चम्पावती नयरे लि.स्था.चाणोद
८८३३	१०६८८ (७)	देवादासजी की वाणो	१८४०	२३२१२ ५	३४२-५०४	
८३३	११०१३ (३६)	दोपावली पञ्च (चारह लग्न भाव)	१८२२	२३२१५	२४६-२५२	
८३३	११०१३ (३८)	दोहा-गोलादि समग्र	१८२५	२३२१५	२८३-२८६	
८३५	१०६४४ (१६)	दोहा-गुहाग्रं	२०वीं शं०	८४५	३०४-३१७	
८३६	१०८४५ (७)(१-६)	दोहा-पद आदि समग्र	गु० १८८६	१५ ५४१० ५	८५७-८५६	
८३७	"	"	"	"	८५८वा	
८३८	"	"	"	"	८५९-८६०	
८३९	"	"	"	"	८५९वा	
८४०	"	"	"	"	८६०वा	
८४१	"	"	"	"	८६१वा	
८४२	"	"	"	"	८६०-८६२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिकाल (वि स मे)	माप (से मी.से)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
८४०	१०८४५ (७६)	दोहा-पद आदि समूह	मीरा	गु० १८८६	१५ ५.१० ५	८६०-८६२	
८४१	१०८४५ (७)१०-१३	दोहा-पद आदि समूह	रसिकनाथ	गु० १८८६	१५ ५.१० ५	८६०वा	
८४२	"	"	"	"	"	८६१वा	
८४३	"	"	"	"	"	८६१वा	
८४४	"	"	"	"	"	८६२वा	
८४५	११०१३ (६)	दोहा-पोथीरा		१८२५	२३.१५	८३वा	कुल १३ दोहे हैं। लि.क ऋषि मुजाण लि स्था चाणोद नगरे
८४६	११०१३ (२८)	दोहा-रिपुजीतरा	शिव कवि	१८१८	२३.१५	१५७-१६०	कुल १०३ दोहे हैं।
८४७	११०८५ (१०)	दोहा लाखाफूलाणीरा		१८वीं श्रा०	१६ ५.१३ ५	६८वा	
८४८	११०१३ (२०)	दोहा-वर्षारा		१८१८	२३.१५	१३३वा	१३ दोहे हैं। अन्त में एक संवेद्या तथा कवित्त भी है। लि क मुजाण लि स्था चाणोद

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.मे)	माप (से.मी.मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
८४८	११०१३ (४०)	दोहा-संग्रह	प्रोतिसवी	१८१६	२३x१५	३०८-३११	कुल १३१ दोहे हैं।
८४०	१०८६७ (४)	दोहा-संग्रह	जन तुरसी	१६वीं श०	१८x११	७३-८५	१६३ दोहे हैं।
८४१	११०१३ (२३)	दोहा-संग्रह	केसोराइ	१६वीं श०	२३x१५	१३७-१४१	कुल १०५ दोहे हैं। एक सवैये में "केसोराइ" नाम मिलता है। सभवतः दोहे भी इन्ही के हो।
८४२	११०१३ (४६)	दोहा-संग्रह	उदेराज, समन, सजन, जमाल आदि	१८१८	२३x१५	३२१-३२३	८६ दोहे हैं।
८४३	१२३७१ (५)(६)	दोहा-संग्रह (शृंगार) " (गूढार्थ)		१८३५	१८x१६x५	२५०-२५४ २५५-२६०	लि.क.सुजाण १०३ दोहे हैं। १०६ दोहे हैं। लि.क.भीखनदास गौड
८४४	११०१३ (४५)	दोहा संग्रह "रसिकरजन"		१८१६	२३x१५	३१५-३१७	लि.म्या.नागोर कुल ७६ दोहे हैं।
८४५	११०१३ (१६)	दोहा सूर्यवारा		१८१८	२३x१५	१३३वा	१० दोहे हैं।
८४६	११०१३ (२१)	दोहा सोरठ-वीभारा		१८१८	२३x१५	१३४-१३६	लि.क.सुजाण लि.स्था.चाणोद ७४ दोहे हैं। लि.क.सुजाण लि.स्था.चाणोद

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जाधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
८५७	१२२०८ (५)	द्रव्यगुण पर्याय रास	यशोविजय शिष्य नयविजय	१७७४	२५x१८ ५	७२-६३	कर्त्तिनपागच्छी लि. क. मुनि आसकराण अन्त मे चार दोहे है।
८५८	११०१३ (४१)	द्वादशमास वर्णन		१८१६	२३x१५	३११-३१२	
८५९	१०६२४ (१३)	द्विज कन्या-सवाद		१८४४	२३x१२ ५	५३७-५४५	
८६०	१२२१० (१२)	धनतेरस के पद	द्वारकेश	१९वीं श.०	१८x१३ ५	६७वा	राग देवगधार
८६१	१२२०५ (६५)	धनदत्त सज्भाष	लविध विजय	गु० १७४८-१७५१ १७५८	१४x११	१४७वा	
८६२	१०६०२ (८)	धनाजी की परची	अनन्तदास	१८०६	१५ ५x१२ ५	४४-५२	लि. क. साधु भीखनदास
८६३	१०६४१ (६)	धनाजी की परची	अनन्तदास	१९३७	१७x१० ५	१३६-१४३	लि.स्था. श्री पारी (पाली)
८६४	१२५७० (२)	धनाजी की परची	अनन्तदास	१९वीं श.०	९ ५x६ ५	१६-३४	
८६५	१२५३६	धनाजी की परची	अनन्तदास	१९वीं श.०	२०x१०	१-६	
८६६	१२५६१ (२)	धनाजी की परची	अनन्तदास	२०वीं श.०	१५ ५x१०	२०-२७	

राजस्थान ग्रन्थविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८६७	१२३७० (४३)	धन्नाश्रणगार चौपई		१८७७	१६x११ ५	१४४-१५२	१५२-१५४ पर नव बाडि सजभाय है।
८६८	१२२१८ (४६)	धन्नाश्रणगार सजभाय		गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	६३वा	
८६९	१२३२० (३२)	धन्नाश्रणगार सजभाय	श्री देव	१८वीं श०	२१ ५x१४ ५	३७-३८	लि स्या आल्हाणपुर
८७०	१२५८१ (१२)	धन्नाश्रणगार सजभाय	समयसुन्दर	१९वीं श०	१६x१० ५	७६-७७	
८७१	१२२१८ (६)	धन्नाश्रणगार सजभाय	सिधो	गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	२९वा	
८७२	१०९५४ (४)	धन्ना शालिमद्रनी चौपई	जिनराज शिष्य	१८७४	२४x१६ ५	३९-७५	र.का १६७८
८७३	१२२१० (२३) १-५	धमारी के पद	जिनसिंह सूरि मानिकचन्द, चन्द्रभुज, गोविन्द स्वामी, माधोदास, सूरदास		१८x१३ ५	११३-११४ ११४, ११६, १३८, १४१, १४७, १४८, ११६-११८, १२५-१२६, १३०-१३१, १३९-१४१,	लि क रणजीत लि स्या पाली (मारवाड)

क्रमांक	अन्वार्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	विषय (विषय, मे)	भाग (मे. मे. मे)	पृष्ठ संख्या	विवरण आक्षेप
८७३	१०६४८ (६)	धमाल	रामचरण झादि	१८३५	१६५५७	६६-६८	लि.क. साधु रामविलास
८७४	१०८६७ (७)	धमाल	गुनसीदास	१०१५६८-१५८	१८१११	८८-९३	
८७५	१२२०५ ४२)५	धर्म-कर्म गीत	कीर्तिवर्द्धन	१०१५६८-१५८	१५५११	१४३था	
८७६	१२४१८	धर्मदत्त धनवती चरित	कुमलहर विषय रामनिह	१८०६	०५५४११	१-२४	र.का. १७८ नगीनी (नगीन) वज्रलसिह राजमे लि.क. जीधरहरस शिष्य हीरहरस शिष्य कल्याणहरस लि.स्व. विक्रम महानगर र.का. १८६५ जीधारा (जीधपुर) लि.क. मनोरथदान
८७७	१२३७० (२६,६)	धर्मोक्ति सज्जाय	रत्नचन्द्र	१६वीं श०	१६४११५	२३४-२३५	
८७८	१०८६६ (२०)	धर्म-नवादा भाषा (महाभारत नत पद्यानुवाद)	जन गोपाल	गु० १६३१	१७४११	१५५-१६१	
८७९	१२४७०	धर्म-सनाद भाषा	जनगोपाल	१६३६	२७५४१२.५	१-१८	"महाभारत" के धर्म पर्व की भाषा "तेरे दिन मे तीन मे करि चोपट जोड़" लि.क. गुलाबदास लि.स्व. सुजानगद

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८८०	१२१६० (५)	ध्यान छत्तीसी	वनारसीदास	१८६७	२१.११ ५	८-१०	लि क रगमागर लि स्था जैतारण
८८१	१२३७८ (१३) २४	ध्यानलीला	सुन्दरदास	१८वीं श०	२२.१५ ५	१०७-१०८	
८८२	११६४८ (२१)	ध्यानदासजी का सवद	ध्यानदास	१८५३	२७.१६ ५	४६१-५६३	सत साहित्य का दुर्लभ संग्रह लि क गोपालदास लि स्था कोलिया गुटका सतो के वाणी संग्रह की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। पत्र गलित एवं चिपके हुए
८८३	१०६२४	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	गु० १८४४- १६३०	२३.१२ ५	५४५-५५७	
८८४	१०६३७ (७)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१८०६	१०.४२० ५	१-२३	
८८५	१०६४० (१४)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१८८३	१५.५.१० ५	६८४-५१३	पत्र स० ५१४-५१६ पर कर्म विपाक गीता संस्कृत में है। लि क जैतराम लि स्था फलोदी २१० छन्द है।
८८६	११०८६ (२)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१८१७	२१.५.१५	१-१३	
८८७	११०८६ (६)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१६वीं श०	१८.५.१५ ५	६०-६६	गु० के प्रारम्भ की पांच कृतियां संस्कृत में हैं।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८८८	११५८६ (२)	ध्रुव चरित्र सचित्र	जनगोपाल	१८३३	१५.५x११	११४-१३३	चित्र सं० १ लि क मथेन मसाराम लि स्था नागोर
८८९	११६४७	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१७८६	२१x६५	१ १३	किनारे क्षति ग्रस्त लि क नरसिंहदास वैष्णव चित्र सं० ३५
८९०	१२२२६ (८)	ध्रुव चरित्र सचित्र	जनगोपाल	१८७७	१४x१२५	१-३६	चित्रकार-महेशदास लि क वीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
८९१	१२३७५ (८)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१९वी श०	१६x११५	७६५-८२२	
८९२	१२४२२ (१७)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	गु० १८३१	१५x१०५	३८२-३८६	
८९३	१२५५३ (७)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	गु० १८६७	१४५x१३.५	१२२-१२६	
८९४	१२५६१ (११)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१९वी श०	२३५x१७	३५५-३६२	
८९५	१२५६६ (३)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१८२२	१६५x११	१-२३	लि क रूपराम लि मथा खंडापा
८९६	१२५७२ (१०)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	१९वी श०	१०५x८५	२१८-२८०	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
८८७	१२५७४ (११)	ध्रुव चरित्र	जनगोपाल	२०वीं श०	१७४१० ५	२२७-२५६	ग्रन्त में अग्रदासजी का एक पद है। लि क वीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर) श्री उत्तमजी ने कई शब्दों के भी पर्याय लिखे हैं। लि क गोदे ऋषि लि स्था. द्रुणाला
८८८	१२२२६ (५)	ध्रु धलीमलजी की सबदी	ध्रु धल	१८७६	१४४१२ ५	३०-३१	
८८९	१०७६२	नन्दि सूत्र-भाषा	ऋषि उत्तमजी	१७१२	२६४११ ५	१-१०	
९००	१२४२६	नन्दोत्सव व्याख्या		२०वीं श०	३२ ५४२०	१-३०	
९०१	१२२०५ (३४)	निन्दा सज्भाग	समयमुन्दर वाचक	गु० १७४८-१७४९	१७४११	१२०वा	र.का १८०५ लि.क भीमनदास लि स्था नागोर
९०२	१२३७१ (१३)	नखसिख वर्णन	प्रोहित धनश्याम	१८३६	१८०५४१६ ५	१-१०	
९०३	१२२१८ (१५०)	नण्णद-भोजार्ह सबाद	मुनि टीकम	१८वीं श०	२६ ५४१०	१६४वा	

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.में)	माप (से.मी.में)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
६०४	१२२१८ (५)३	नराद-भोजाई सज्जाय	आनन्दवर्द्धन	गु० १७५५- १७६७	२६.५.४०	२६वा	र.का १६१६ शाके १४८१ लि.क. साधु बालकराम लि.स्था महामन्दिर जोधपुर
६०५	१०६४२ (१)	नरसीजीरो मायरो	रतना खाती	१६५२	१३.४६	१-१७३	र.का १६१६ लि.क. बालकराम अपूर्णा
६०६	१०६४४ (४)	नरसीजीरो मायरो	रतना खाती	२०वीं श०	८.५	४४-२१६	र.का १६१६ लि.क. बालकराम
६०७	१२४२५ (२)	नरमीजीरो मायरो	रतना खाती	२०वीं श०	२६.५.४७	६०-६५	अपूर्णा
६०८	१२५७७ (११)१०	नरसी मेहताना हुडी		१६वीं श०	२१.४५५	१५०-१५७	लि.क. साधुराम नागर लि.स्था कलकत्ता
६०९	१२५८६ (६)	नरसी मेहतानो हुडी		१६वीं श०	१२.२.६५	८२-८८	लि.क. बिहारीदास, प्रेमदयाल की परम्परा मे
६१०	१२२१८ (५)४	नलदमयन्ती सज्जाम	उदयनन्दन	गु० १७५५- १७६७	२६.५.४०	२७वा	जेन स्तुति स्तोत्रो का सुन्दर संग्रह इस गुटके मे है ।
६११	१२२१८ (१३२)	नवकार रास	अज्ञात	१८वीं श०	२६.५.४०	१४१-१४२	
६१२	१२२१८ (६८)	नवकार स्तवन	गुणसूरि	गु० १७५५- १७६७	२६.५.४०	११८वा	

क्रमांक	अन्वयार्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
६१३	११५७८	नवतत्त्व विचार		१८५७	२४.५x१०.५	१-१५	लिपि सूक्ष्म एवं सुवार्द्ध लि.क. जेठमल शिष्य रोडोदास
६१४	१२३७० (५); १२५६५ (६)	नवपद कलश पूजा नवपदनी पूजा	यशोविजय वाचक ज्ञानविमल	१९वीं श.० २०वीं श.०	१६x११.५ १६x१२	३५-४९ ४५-५६	
६१६	१०७९७ (२)	नवपद-महिमा		१९वीं श.०	२७x१२	१-१०	
६१७	१०३२० (४६)	नवमी स्तवन	सेवक	१८१९	२१.५x१४.५	५१वा	प्रारम्भ मे 'ग्रन्थ राज वर्णावा री विधि' है। आर्या सखपा पठनार्थ लि.क. खुसाला शिष्या आर्या रत्ना लि.स्था. अहिपुर लि.क. नन्दराम
६१८	१२२१७ (४)	नवरत्न छाप बद्ध		१९वीं श.०	२१.५x१२	८५-८६	
६१९	१२१९१	नववाडि सज्जाम	जिनहर्ष	२०वीं श.०	२५.५x१२.५	१-५	र.का. १७२६
६२०	१२२०५ (४२)२	नववाडि सज्जाम	कीर्तिवर्द्धन	पु. १७४८- १७५८	१७x११	१३२-१४०	
६२१	१२२१८ (१०१)	नववाडि सज्जाम	अजितदेव सूरि	पु. १७५५- १७६७	२६.५x१०	११८-११९	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निकाल (वि स मे)	भाग (से मे मे)	पत्र संख्या	विषय शास्त्र
६२२	१२३२० (१)	नववाडि सजभाय	जिनहर्ष	१८वीं पृ०	२१ ५४१६ ५	१०-१८	आर्या रत्नार्जो पठनार्थ पत्र स० १-६ अप्राप्त ।
६२३	१२२२० (११)	नवविलास	रसिकदास	१६वीं पृ०	१६४१६ ५	७२-७५	
६२४	११०८० (३)	नसीहत नामा (हकीम जुगमान)		१६वीं पृ०	२२४१४ ८	७३-७६	१०७ छन्द लि स्या पाली प्रारम्भ के ६० पत्र दीमक प्रस्त
६२५	११०६० (२)	नमोहत नामा (हकीम लुकमान)		१६वीं पृ०	१८ ५२११	६६-७८	मपूरुं । शीर्षक मे १२५ शिवाशो का उत्तैय है जिनमे से ३५ दी गई है ।
६२६	११६४३	नसीहत नामा (हकीम लुकमान)		२०वीं पृ०	२४ ५४३	१-६	
६२७	१२५५३ (८)	नमोहत नामा (हकीम लुकमान)		गु० १८६७	१८५४१३ ५	१२६-१२६	
६२८	१२२१८ (४३)	नाकोडापार्श्वनाथ-स्तवन	समयमुन्दर वाचक	गु० १७५५- १७६७	२६ ५२१०	६१वा	
६२९	१२३७० (४२)८	नाकोडापार्श्वनाथ-स्तवन	समयमुन्दर वाचक	१८६८	१६४११ ५	१२६वा	पत्र स० १०७-१०८ पर नवकार स्तवन है । लि क सूरजमल लि स्या जोधपुर

क्रमानु-	ग्रन्थाङ्क.	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (ले.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६२०	११५८५ (५)	नागजी-नागवतीरी बात		१८५२	१६ ५x११ ५	४७-७७	वीच के पत्र खण्डित लि क पण्डित केसरविजय लि स्था वीकपुर, बीकानेर
६३१	११०८६ (८)	नागदमरा	सायाजी भूला	१६वी श०	१८ ५x१६ ५	७५-८७	
६३२	१२२१५ (३)	नागदमरा	सायाजी भूला	१६वी श०	२२x१६	२६-३७	
६३३	१२४२८ (४)	नागलीला के पद	सूरदास	गु० १६१२	२१x१५ ५	१७-१६	१५-१६ पर दखिलीला के पद है ।
६३४	१२४६३	नाडी परीक्षा आदि फुटकर रोगनिदान व नुस्खे		१६वी श०	२६ ५x१३ ५	१-१३	
६३५	१२५८१ (१६)	नाडी परीक्षा तथा फुटकर रोगो के नुस्खे		१६वी श०	१६x१० ५	६६ १२१	६६वें पत्र पर जवूसर की कथा का प्रारम्भ मात्र है ।
६३६	११५८३ (१२)	नामदेव की परचर्द्द	अनन्तदान	गु० १६६३	१८x१५	११८-१२१	र का १६४५ पत्र खण्डित । पत्र १२१ पर शिवस्तुति भी है ।
६३७	१२४२१ (६)	नामदेवजी की परची	अनन्तदान	१६वी श०	१७x१२	१५०-१६६	
६३८	१२४२२ (२०)	नामदेवजी की परची	अनन्तदास	गु० १८३१	१५x१० ५	४२६-४२६	

राजन्यायन प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग-३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६३६	१२४२६ (५)	नामदेवजी का पद	नामदेव	२०वीं श०	१६ ५x१३	५६-६४	राग-वद्ध
६४०	१२५८५ (५)	नामदेवजीरी परची	अनन्तदास	१६२७	१६ ५x१५	१६०-२२४	लि. क. आरतराम लि. स्था. बदनोर
६४१	१२४२२ (१३)	नामदेवजी की फुटकर बाणी	नामदेव	गु० १८३१	१५x१० ५	२५०-२६४	साखी १०, पद-५१, राग ११
६४२	११६४८ (१६)	नामदेवजी की साखी एव प्रद संग्रह	नामदेव	१८५३	२७x१६ ५	४३०-४४२	राग १७ पद १६५ लि. क. गोपालदास लि. स्था. कोलिया
६४३	१२३५६	नाम प्रकाश	हरिरामदास निरजनी शिष्य बालकदास	१८६२	३१ ५x१६	१-१०	र. का १८२५शर कर वसु शाशि र. स्था. डोडवाणा
६४८	१०६३८	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	१८८५	१६ ५x८ ५	४६५-४७८	लि. क. साधु सम्पतराम लि. स्था. अजमेर
६४५	१०८४६ (३)	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	१६५०	१५ ५x६ ५	१-२१	गुटका सजिलद लि. क. रामविलास
६४६	१२३७३ (२७)	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरणदास	१६०६	२२x१५ ५	२३५-२४८	लि. स्था. रतनपुरी २४६-२६६ तक सस्कृत की तीन कृतिया है। अन्तिम कृति अपूर्ण।

राजस्थान प्रान्तीयविद्या प्रसिद्धान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

प्रमाण क्र.	ग्रन्थाक्षर	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.म. मे)	भाषा (से.मी. मे)	पन्ना संख्या	विशेष ज्ञातव्य
६८७	१२४२० (१६)	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	जु० १६३२	१६.५४	३५२-३६०	लि.क. साधुराम लि.स्था. उज्जैन प्रारम्भ मे दूल्हैराम के दो पद है।
६८८	१२५७७ (७)	नाम-पताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	१६वीं श०	२१.१५ ५	८७-६७	
६८९	१२५८८	नाम-प्रताप जोग-ग्रन्थ	रामचरण	१६वीं श०	१२.५.८	२-१५	
६९०	१०८६६ (४)	नाम-महिमा जोग-ग्रन्थ	श्यामराम	२०वीं श०	१६.५११ ५	१-१५	
६९१	१२२२६ (१२)	नाम-महिमा जोग-ग्रन्थ		१६वीं श०	१४ १२ ५	६०-६३	लि.क. साधु चोकसराम लि.स्था. जोधपुर, मिना का बाग, चाँदपोल गुटके के पत्र बडवने हैं। लि.क. गोपालदास लि.स्था. कोलिया
६९२	१०६३६ (६८)	नाममाला	श्यामराम	१६३४	१२.५.८ ५	३६६-३७१	
६९३	११६४८ (२४)	नाममाला आदि		१८५३	२७.१६ ५	५६६-५७१	
६९४	१२२१४ (७)	नाममाला	जन हरिदास	१६वीं श०	२१.५.१३	७३-७४	
६९५	१२२१५ (१)	नाममाला	नन्ददास	२०वीं श०	२२.११.५.५	५-२३	अपूर्णा-आद्यन्त अत्रात्त

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निष्काल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६५६	१०८४६ (१८)	नाम माहात्म्य	दाहूदयाल	गु० १६३१	१७x११	१३७-१३६	पत्र १४०-१४२ मे रामदास के स्फुट पद है । लि क मनोरथदास र का १८३७
६५७	१०६५६	नाम विसदावली	किसोरश्रलि	२०वीं श्रा०	३२x१६	१-२७	कृति सस्कृत मे है ।
६५८	१२२२६ (२७)	नारद गीता		१८८२	१४x१२ ५	६७२-६७५	चौवीस श्रवतार वर्णन ।
६५९	१२२५३ (३)	नारायण लीला	माधोदास	गु० १८६७	१४ ५x१३ ५	६६-११२	पत्र स० १८१-१८५ पर फुटकर पद एव नुस्खे हैं । पत्र स० १८६-१८६ विष्णुसहस्र नाम आदि स्तवन सस्कृत मे है । लि क हरिदास
६६०	१२३८० (१०)	नारायण लीला	माधोदास	गु० १७२४	२०x१६	१४२-१८०	नारी के लिए वर्जित कार्यो का रोचक वर्णन । लि क. साधु भीखनदास
६६१	१०६०२ (१६)	नारी की सम्झी	कवि गद	१८०६	१५ ५x१२ ५	८६-८६	

१. स्वयं प्राचीनवादी प्रतिष्ठान (ओपपुर-समूह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	भाषा (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
८६२	१२८८३ (१)	नासिकेतु पुराण	मागार	१७८४	१६१४४५	१-५३	र.का. १७७३ पत्र सं० १-११ अप्राप्त । लि.क. करमसी लि.क. केसरचन्द गुरुभार्ति विजैचंद लि.स्था. कटालिया ग्राम चित्रों के लिए रिक्त स्थान छोड़े हुए हैं । प्रलोकयुक्त । लि.स्था. जोधपुर लि.स्था. जोधपुर
८६३	१२५६७ (४)	नासिकेतु दातावोध		१८३०	२१५१५५	२८-४८	
८६४	१०८३६ (५)	नासिकेतु कथा		१६०६	३०५७५	१३-११	
८६५	१०८६१ (६)	नासिकेतु कथा		गु० १८६८	१६५१२	८८-६६	
८६६	१०६०२ (१६)	नासिकेतु कथा		१८०६	१५५५१२५	६४-१११	पत्र रंगीन बॉर्डर युक्त । अन्त में एक कवित्त है । गुटके के अन्त में संस्कृत में 'ज्ञान गीता' है । लि.क. भीखनदास
८६७	१०६४७ (२)	नासिकेतु कथा		२०वीं श०	१४५५७५	२८-६१	
८६८	११५८६ (१)	नासिकेतु कथा सचित्र	विष्णुदास	१८३३	१५५५११	१-११३	चित्र सं० २८, लि.क. मथेन मसारास लि.स्था. श्रीनागपुर (नागौर)

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	त्रिपिण्डाल (वि स मे)	माप (से.मी. में)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
६६६	११५६१	नासिकेतुरी कथा मन्त्रिध		१८७७	२० ५४१०	१-१६	विषय स० ४६ श्रुतारह् अद्याय पर्यन्त लि.क. मयेन० मसाराम निस्था. दीकानेर
६७०	१२२१५ (१)	नासिकेतुरी कथा		१६वीं श०	२२४१६	१-२१	अपूर्ण । र.का १७३४
६७१	१०६२४ (२८)	नासिकेतु व्याख्यान	दयालदास	१६वीं श०	२३४१२ ५	६०५-६३४	प्रथम पत्र अप्राप्त लि.क. श्रमैराम दवे
६७२	१२५५८	नित्य सेवा विधि और उत्सव विधि		गु० १८५४	२१ ५४१६	२ ३३	लि.क. साधुराम नागर
६७३	१२५७७ (८)४	निर्वाण सार	प्रेमदयान	१६वीं श०	२१४१५ ५	१२५-१२७	लि.स्था. उज्जैन
६७४	११५८३ (१३)	नीति के पद	रायचन्द	गु० १६६३	१८४१५	१२१-१२२	पत्र स० १२३-१२५ पर संस्कृत में कर्मविपाक गीता है ।
६७५	१२५६१ (१२)	नीति-मजरी भाषा		२०वीं श०	१५ ५४१०	६२-७०	५४ छंद है ।
६७६	१०६५६ (२)	नीति शतक भाषा टीका	मू० भर्तृहरि टीका-इन्द्रजीत	२०वीं श०	३२४१६	१-१३	टीका "विवेक दीपिका"
६७७	११०१३ (२४)	नीसाणी	गरीबदास	१६वीं श०	२३४१५	१४४वा	कुल २ छन्द

राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कला	निष्कात (वि स मे)	माप (ल. मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६७८	११०८५ (८)	नीमाणी	गरीबदान	१८वीं श०	१६ ५.५३ ५	६८वा	२५ छन्द है। पञ्जाबी पुट है। लि क सुजाणा
६७९	११०१३ (६८)	नीसाणी-भवानी की	मान कवि	१८५८	२३×१५	३२४-३२५	लि क मनोरथनाम
६८०	१०८८६ (१८)	नृसिंह भवतार-चरित्र (प्रधानार चरित्र गत)	नरहरिदास बारहट	ग ६० ३१	१७×११	८५ ८७	प्रपूर्णा लि स्था जोधपुर
६८१	१०८३६ (३)	नृसिंह चतुर्दशी की कथा		१८०६	३२×७ ५	११-१२	लि क खुसालचन्द
६८२	११०८७ (५)	नृसिंह चतुर्दशी की कथा		१७६३	२१ ५×१५ ५	११८-१२०	राग-कान्हरी
६८३	१६०१० (२६६)१-१३	नृसिंह चतुर्दशी के पद	परमानन्द सूरज प्रभु सूरदास	१६वीं श०	१८×१३ ५	१७२, १७३ १७३वा १७४वा	
६८४	१२२२० (३३)	नृसिंह जयन्ति के पद	परमानन्द, सूरदास	१६वीं श०	१६×१६ ५	१०२वा	
६८५	११५८४ (८)	नृसिंहावलार-छन्द	कवि कान्ह	ग० १७०२	१६ ५×१६	३४-३६	
६८६	११५८५ (८)	नेमजो का पद, स्तुति आदि	हर्षचन्द	ग० १८५२	१६ ५×११ ५	१३५वा	लि स्था वीकानेर
६८७	११६६७ (८३)	नेमजो की डाल	श्रुषि चौधमल विनयचन्द	२०वीं श०	२५ ५×१२	७३वा २४-२५	लि स्था नवाशहर र का १८७५

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
६८८	१२२१८ (१४४ १४८)	नेमिनाथ गो.।	ब्रजनाथ, ऋद्धिहर्ष	१८वीं श०	२६ ५.५०	१५६वा १६२वा	लि स्या जोधपुर
६८९	१०८४७ (८)४	नेमिनाथरी जान	खुसालचन्द	गु० १६६६	१७.५८	७५६-७६१	लि स्या जोधपुर
६९०	१२३२० (५२)	नेमिनाथजीरो वारैमासो	कुसलसिंह णिढ्य रामसिंह	१८वीं श०	२१ ५.४४ ५	३७-३८	समकालीन प्रति । र का. १७६८
६९१	१२३२० (८)	नेमिनाथजीरो स्तवन	लालचन्द	१६०३	१६ ५.११ ५	१३७वा	लि स्या दिल्ली
६९२	११५८५ (८)५	नेमिनाथजीरो स्तवन	जिनचन्द	१६०३	१६ ५.११ ५	१३८-१३९	लि क लिखमीचन्द कोचर
६९३	११५८५ (८)६	नेमिनाथजीरो स्तवन	कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न	१७५०	१७.११	४४-४७	लि क विद्याप्रमोद पुत्र कर्याणसिंह
६९४	१२२०५ (१६ ४)	नेमिनाथजीरो स्तवन					लि स्या रूपनगर
६९५	१२२१८ (७)	नेमिनाथजीरो स्तवन		गु० १७५५- १७६७	२६ ५.४१०	३०वा	

क्र.सं.	अन्तर्गत	प्र.प्र. - नाम	कर्ता	निष्पन्न (वि.म.ग.)	माप (ल.मी.मं.)	पत्र संख्या	विवरण
६६६	१२५०५ १-६१/२०	नेमि-नाजमती मन्थन	(१) गाननन्द (२) टोट्टर जिद्य नेमिनाज	१६वीं पृ०	१३५५१८	३८-७६ ६७-१०२	(२) र.का. १६७६ पत्र सं० ७०-७३ पर देन ताभगा है।
६६७	१२५०५ ११५८५	नेमिनाजमती नानन	जिनद्वय	२०वीं पृ०	१६४१२	१५८-१२०	
६६८	१२५०५ ११५८५	नेमि-नाजमती गीत	फट्टिद्वय	पृ० १८५२	१६५५१५	१५६-१६० १७२वा	लि.स्था. दीकानेर
६६९	१२५०५ ११५८५	नेमि-नाजमती गीत	भुवनकोति	पृ० १७५५- १७६७	२६५५१०	६६गा	
६७०	१२५०५ ११५८५	नेमि-नाजमती गीत	विजयदेव मूरि	१६वीं पृ०	२५५५१६५	६७-७६	
६७१	१२५०५ ११५८५	नेमि-राजमती गीत, य	रगविजय	१८वीं पृ०	२१५५१४५	१५-१६	प्रार्थी रत्ना पठनाथ
६७२	१२५०५ ११५८५	नेमि-राजुल पद	लेम	१८वीं पृ०	२१५५१४५	३६वा	
६७३	१२५०५ ११५८५	नेमि-राजुल वानामना	चोथमल	२०वीं पृ०	२६५१३	१-५	र.का. १८५२
६७४	१२५०५ ११५८५	नेमि-राजुल सज्जाय	ऋषिद्वय	१६वीं पृ०	१६५११५	२३५-२३६	गुटके मे २३६ के बाद भूल से पं० सं० २५०-२६१ सी द्विमे गए हैं।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्रसंख्या	विशेष ज्ञातव्य
१००५	१२५७५ (१४)	नेमिष्वर समोसरणा स्तवन	सोमसुन्दर सूरि	१६वीं श०	१३ ५x१४	५३-५५	
१००६	११६२६ (४)	पचइ द्विप चरित्र	सुन्दरदास	गु० १८६४	३२x१५	१-११	
१००७	१२४२१- (१४)१-५	पच-इन्द्रो, मीन, पतंग, मुग एव गज चरित्र	सुन्दरदास	गु० १८६३	१७x१२	२१४-२१६ २१६-२२६ २२६-२३८ २२८-२३१ २३१-२३५ १०१-१०६	अपूर्ण पत्र सं० १०७-११२ अप्राप्त
१००८	१२३७२ (८)	पच-उपनिषद्	चरनदास शिष्य सुखदेव	१६वीं श०	२४x१६ ५	१०१-१०६	
१००९	१२३७० (१५)	पचतीर्थरो स्तवन	मुनि लावण्यसमय	१६वीं श०	१६x११ ५	१३६-१३८	
१०१०	१२३७० (२७)	पचतीर्थरो स्तवन	मुनि लावण्यसमय	१६वीं श०	१६x११ ५	२६०-२६१	पत्र सं० २५५-२६१ पर संस्कृत में ऋषिमडल स्त्रोत है।
१०११	१२३७० (४२)१५	पचपरमेष्ठी नमस्कार मन्त्र		१६वीं श०	१६x११ ५	१३७-१३८	पत्र सं० १४१-१४३ पर वारहजत आदरणा की याददायत है।
१०१२	१२२२८ (५)७८	पचपरमेष्ठी मन्त्र (नवकार स्तवन)	जिनवल्लभ सूरि	१८वीं श०	२६ ५x१०	६७-६८	अपत्र श मे

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

श्रमासू	ग्रन्थासू.	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (स.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०१३	१२३२० (१४)	पञ्चपरमेष्ठी सज्जामय		१८वीं श०	२१ ५×१४ ५	२३-२५	
१०१४	१२५५१ (१७)	पञ्चपरमेष्ठी स्तोत्र	हीरानन्द	१७वीं श०	१३×११	१२०-१२३	
१०१५	१२५६१ (१३)१-३	पञ्चप्रभाव, गुरु सम्प्रदाय एव सहजानन्द	सुन्दरदास	१६वीं श०	२३ ५×१७	३६६ ३६६-३६७ ३६७-३६८	
१०१६	१२२१८ (२)	पञ्चमगति वेलि	मुनि हर्षकीर्ति	१७६०	२६ ५×१०	१८-२०	र. का. १६८३
१०१७	१२२०५ (१८)	पञ्चमी तप-गर्भित नेमि- जिनवर स्तवन	हर्षकुशल भारिण शिष्य जिनचन्द सूरि	१८वीं श०	१७×११	२२-२८	र. का. १६७३ मेडता
१०१८	१२२१८ (५)५७	पञ्चमी स्तवन	समयसुन्दर	१७५५	२६.५×१०	६३-६४	
१०१९	१२२१८ (५)१४०	पञ्चमी स्तवन (ज्ञानपञ्चमी)	हर्षकुशल	१७६४	२६ ५×१०	१५५-१५६	र. का. १६७३
१०२०	१२३२० (४५)	पञ्चमी स्तवन	रगकलश	गु० १७६७	२१ ५×१४ ५	५०-५१	लि. क. श्रुसाला शिष्या रत्ना व अनोपजी लि. म्था नागोर
१०२१	१२३७० (१७)३	पञ्चमी स्तुति		१६वीं श०	१६×११ ५	१४२-१४३	

राजस्थान प्रान्थविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (मे.मी.मे.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०२२	१२५७५ (१८)	पद्मिन्दिय वेलि	कवि धोल	१६वीं श०	१३ ५ x १४	६०-६३	र.का. १५८५
१०२३	१२५७०	पद्मवाहे जग्यरी कथा		२०वीं श०	६ ५ x ६ ५	१३५-१३८	
१०२४	१२२२८ (५) ६२	पथीडा सज्जाय	सुमनिहस	१८वीं श०	२६ ५ x १०	८३-८४	
१०२५	१०६५६ (७)	पचाख्यान भाषा		२०वीं श०	३२ x १६	२७७-२८३	“गुवालेरी भाषा म.”
१०२६	११०१३ (१)	पचाख्यान भाषा	देवीचन्द	१८२२	२३ x १५	६-६७	कथा दोहा बद्ध लि.क. ऋषि सुजाण पत्र स० १-५, ७-८ श्रद्धात लि.क. हेमसागर शिष्य देवेन्द्र सागर इसी गुटके में वृद्धवाणक्य राजनीति शास्त्र सद्वार्थ संस्कृत में है । जलाभिषिक्त लि.क. अविचल विजयगणी लि.स्था जालोर महादुर्यो
१०२७	११०७७	पचाख्यान भाषा		१८५६	२४ x १६	११-२६	
१०२८	११०७४	पचागुली जप-विधि		१८८१	२४ x १० ५	१-३	

राजस्थान प्रान्थविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०२९	१२२१९ (२)	पक्षि शकुनावनी स-पृच्छा		गु० १७५२	२४x१० ५	३७-३९	तीन पत्रों पर रंगीन चित्र तथा पेंसिल के खाके भी बने हुए हैं।
१०३०	१२५६५ (१७)७	पञ्चवाडो	डू गारसो	२०वीं श०	१६x१२	१२१-१२२	१२२-१२३ पर सुजानमल और चंद कृत स्फुट छंद हैं।
१०३१	१२१७७	पञ्चवीस (पच्चीस) बोल		१९६८	२७x१२ ५	१-३	लि. क. तोलाराम
१०३२	१२५२८	पञ्चदंडरीबात विक्रमादित्यरी		१९वीं श०	१९ ५x१३ ५	१-३१	लि. स्था सरदारशहर
१०३३	१२६१२ (१)	पट्टी पहाड़े		१८१९	२५x१५	१-१०	पत्र सं० २, २३-२८ अप्राप्त कीटविद्ध
१०३४	१२२१९ (३)	पत्तनोत्पत्ति समूह		गु० १७५२	२४x१० ५	५३-५४	लि. क. सुजानसिंह राज्ये

र स्था वीकानेर
गुटका अस्त-व्यस्त ढग से
लिखा गया है।
पहाड़ों के ऊपर व नीचे
शुभावित दिए हैं।
संस्कृत में
संवत् ८०२ वनराज के
समय से १३६३ तक की हिन्दू
राज्य-वशावली है।
कुमारपाल के समय की
प्रमुख घटनाओं का भी
उल्लेख है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या
१०३५	१०८४७ (२) १	पद-सग्रह	रामचरणदास	१९९९	१७५८	५८२-५८७, ५९०, ५९२, ५९६, ६०२, ६३४, ६३६, ६३७, ६६६, ६६७, ६८५, ७४२, ७४५-७५०
१०३६	१०८४७ (२, २)	पद-सग्रह	कवीरदास	१९९९	१७५८	५८२, ५८३, ५९४, ६०६, ६०८, ६११, ६२९, ६३०, ६३२, ६३६, ६३९, ६४०-६४२, ६६२-६६३, ६६६, ६७०, ६७३, ६७६, ६८४, ६८७, ६९१, ७४४, ७५३, ७५५, ७५७, ७५८, ७५९
१०३७	१०८४७ (२) ३	पद-सग्रह	काजीमहमद	१९९९	१७५८	५८२-५८३, ५९५
१०३८	१०८४७ (२) ४	पद-सग्रह	भगवानदास	१९९९	१७५८	५८५, ५८६, ५८८, ६०२, ७४४
१०३९	१०८४७ (२) ५-८	पद-सग्रह	नरसी, मन्सुखदास बख्तावर मीरा	१९९९	१७५८	५९१, ६२५, ६०८ ६०८, ६०९, ६१०, ६०९, ६१२, ६१९, ६२०, ६२४, ६२९, ६३१, ६३२, ६३८, ६६५, ६६८, ६८१, ६८३, ६८७, ६८९-६९१, ७५१, ७५३, ७५४ ६१२, ६३१, ६३२, ६८२, ६८९
१०४०	१०८४७ (२) ९	पद-सग्रह	तुलसीदास	१९९९	१७५८	
१०४१	१०८४७ (२) १०-११	पद-सग्रह	जनतुरसी, सूरदास	१९९९	१७५८	६१८, ६१९, ६६८, ६१३, ६३७, ६३८, ६६७, ६६८, ६७३, ६७४, ६८१, ६८८, ७५२, ७५५, ७५७

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मे मे)	पत्र सङ्ख्या
१०४२	१०८४७ (२) १२-१५	पद-संग्रह	नानूदास सुन्दरदास भरथरी, परमानन्द	गु० १९९९	१७x८	६१३, ६१४, ६१७, ६१४ ६१५, ६१७
१०४३	१०८४७ (२) १६-२१	पद-संग्रह	पेमदास, बखना हस्तीराम, श्यामसखी जनमुरली, नितानन्द	गु० १९९९	१७x८	६२९, ६३०, ६७१ ६३०, ६३१ ६३२, ६३३, ६३४
१०४४	१०८४७ (२, २२-२६)	पद-संग्रह	नागरीदाम, नन्ददास अग्रदास, रसिकनाथ हरिदास	गु० १९९९	१७x८	६३३, ६३८ ६३८, ६३८ ६४२ वा
१०४५	१०८४७ (२) ४१-४६	पद-संग्रह	जैतराम, गरीबदास दादूदयाल, हुसैनफकीर भवानीदास, आसाराम	गु० १९९९	१७x८	६८०, ६८१ ६८६, ६८७ ६८८, ६९२
१०४६	१०८४७ (२) ३५-३८	पद-संग्रह	बालसखी, चिमनी	गु० १९९९	१७x८	६६५, ६६९-६७०
१०४७	१०८४७ (८) १-२	पद-संग्रह	रामसखी, नेमराज छीतमदास, माधोदास	गु० १९९९	१७x८	६७२, ६७५ ७५१, ७५६

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र सख्या
१०४७	१०८४६ (१६)	पद-संग्रह	मीरा, सुखराम बुधानन्द	गु० १६३१	१७×११	१३१, १३२ १३२ वा
१०४८	१७-१६ १०८४६ (२१) १ १०	पद-संग्रह	रामदास, मेवादास द्यालबाला, प्ररण नेमनाथ, कबीरदास नामदेव, काजीममद वंराणी, तुरछीदास	गु० १६३१	१७×११	१६१, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८ १६४, १६५ १६५, १६७ १६७, १६८ १६८, १६९
१०४९	१०८४६ (२६) १ ७	पद-संग्रह	दीनफकीर, सूरदास कबीरदास, आत्माराम सखदेव, मुन्दरदाम दीनदरवेश	गु० १६३१	१७×११	२१८, २१९ २२०, २१९ २२१, २२२ २२२ वा
१०५०	१०८४६ (१६) १-१०	पद-संग्रह	रामदास, हरिराम कबीर, बखतभारती हरिदास, सूरदास अग्रदास, परसराम रिणछोड, सेवकराम	गु० १६३१	१७×११	८६-९०, ९३, ९१, ९४ ९५, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२३, ९६-९७, ९७, ९८, ९९, ९९, १००, १०१-११०, ११५-११६ ११८, १११, ११४, १२७, १२८, १२९

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.मे.)	माप (से.मी.मे.)	पत्र सख्या
१०५२	१०८४६ (११) ११-२२	पद-संग्रह	नरसी, कीर्तो, राधो- दास, माधोदास, मोरा वनारसी, अज्ञात अखैराम, कविगण हरिराम, छालबाल रामदास	गु० १६३१	१७x११	८, ८, ८ ८, ८, ६ ६, ६-१२ १०, ११ वा १३-१६, १७, १८, १९ १७, १८
१०५१	१०८४६ (११) १-१०	पद-संग्रह	कबीरदास, नामदेव सुन्दरदास, सूरदास जनतुरसी, हरिदास कान्हडदास, पीपा जगजीवन, खेम	गु० १६३१	१७x११	२, ५, ४, १६ ४, ५, ५, १६ ५, १०, १२, ६ ६, ६, ७ ७, ७
१०५३	१०८४६ (१६) ११-१४	पद-संग्रह	नरसी, छालबाल रामसखी, बखना	गु० १६३१	१७x११	११६, १२०, १२० १२०, १२१
१०५४	१०८५१ (५) १-२	पद संग्रह	बडसी, सतदास	१७६२	१५ ५x१०	१८३, १८५
१०५५	१०८५१ (३)	पद संग्रह	रामानन्द, तुलछी, हरिदास, मुखदेव	१८ वीं श०	१५ ५x१०	११०-१११, ११३-११४, १८७-१८८ १२१, १२१-१२२

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. न. मे.)	माप (से. मी. मे.)	पत्र सख्या
१०५६	१०८६१ (४) १-७	पद-समग्रह	हुसैनफकीर, सूरदास कवीर, गगाराम तुलसी	१६ वीं श. ०	१६x१२	३० वा, ४५-५०, ६७, ६८, ६६, ६७ ६८, ६९, ७५ ७५-७६ पर काखु कृत मरसिया है।
१०५७	१०८६२ (३) १, ३-५,	पद-समग्रह	चन्द्रमखी, अज्ञात कवीर, धरमदास	गु० १८६८	१७x१४	१७, १९, २४-२५, २७, १८ १८, २२, २३, १८-१९, २४
१०५८	१०८६२ (३) ६-१०	पद-समग्रह (रागबद्ध)	अज्ञात, तुलसीदास हसतराम, अज्ञात	गु० १८६८	१७x१४	१९, २०, २४, २०, २२ २०-२१, २७, २१
१०५९	१०८६२ (३) ११-१६	पद-समग्रह (रागबद्ध)	मोरावाडी, अज्ञात विसनदास, सूरदास बखनावर, परसोतम	गु० १८६८	१७x१४	२२, २५-२६, २३ २४, २५, २८-३० २६, २८-२९
१०६०	१०८६२ (५) १-६	पद-समग्रह (रागबद्ध)	वलवत, ब्रजनिधि बखतावर अज्ञात सूरदास, चन्द्रदास	गु० १८६८	१७x१४	१ ला १, ७, ९, ७, ८ ८, १२, ९, १०
१०६१	१०८६२ (५) ९, ११-१२	पद-समग्रह (रागबद्ध)	अज्ञात, सुन्दरदास तुलसी	गु० १८६८	१७x१४	१०, ११ १२ वा

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
१०६२	१०८६२ (५) १६, १८, २०, २२,	पद-संग्रह (रागवद्ध)	परसोत्तम, मीराबाई कवीरदास, प्रेमसखी	गु० १८६८	१७x१४	१६, २०, २५, २६, २७, २८, २९, ३० २१-२४, २६, २७
१०६३	१०८६२ (५) २५, २७-२९	पद-संग्रह (रागवद्ध)	रूपमती, जननुरसी जन-हरिदास, सूरजकवर	गु० १८६८	१७x१४	२८, ३० ३१, ३१, ३३, ३४
१०६४	१०८६४ (१) ६-१२	पद-संग्रह (होली-राग वद्ध)	चक्रदास, धरमदास सूरदास, कवीर तुलसीदास, जनहरिदास अज्ञात	गु० १८६७	१० ५x७	३-६३६, ४३-६४ ४४-४६, ४६ ४८, ५०-५२, ६२-६३ ६८-५०, ५२-५६ ६४-६५
१०६५	१०८६४ (५)	पद-संग्रह	नामदेव	१८६७	१० ५x१७	१२५-१२६
१०६६	१०८६७ (१-२)	पद-संग्रह (रागवद्ध)	दयालदास, मोतीराम	१९ वी श०	१८x११	५१-५६, ५६-७०
१०६८	१०८६७ (८)	पद-संग्रह	सूरदास	१९ वी श०	१८x११	६२ वा

राजस्थान प्रान्थविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-सग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग-३

प्रमाण	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
१०७४	१०८६६ (५) १ १०	पद-सग्रह	परसराम, वगताराम रामदास, मीरा नरसी, घालवाल सुखराम, सुरतराम हसतराम	२०वीं श०	१४x११ ५	१५, १६, ६७, ५४-५५ ५५, ५५-५६, ६०-६१, ८५-८७ ८६, ६०, ६५ ५६-५७, ६२-६३, ५७, ७५-७६ ५८-५९, ५९ ६०
१०७५	१०६३२ (२)	पद-सग्रह	रामचरणदास	गु० १६२८	१७x१३ ५	३४३ ३७८
१०७६	१०६३३ (२) १	पद-सग्रह	रामचरणदास	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६०२-६०५, ६०८ ६१०, ६२०-६२१, ६२२-६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६३० १ ६३१, ६३२, ६३५, ६३६, ६३८- ६३९, ६४०-६४१, ६४४, ६४ ५, ६४७, ६६८, ६६३-६६४
१०७७	१०६३३ (२) २-६	पद-सग्रह	रामजन कबीर	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६०५, ६११, ६१२, ६१७, ६१८, ६४२ ६०६, ६०७, ६३२-३३३, ६३६-६३७, ६४६, ३४८, ६५५ ६०७
१०७८	१०६३३ (४)	पद-सग्रह	मुक्तिराम	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६६३, ६६५

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-सग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सङ्ख्या
१०७६	१०६३३ (२) ५-७	पद-सग्रह	मीराबाई भगवानदास	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६१२, ६४१, ६४२-६४३, ६४५-६४६ ६४६-६५०, ६५१-६५२, ६५३, ६५४, ६६० ६१५-६१६, ६१७, ६२०-६२१, ६२५- ६२६, ३२८-६३०, ६६५ ६१८-६२०
१०८०	१०६३३ (२) ८-१५	पद सग्रह	हुलैराम मनसुखदास, वगतावर रूपदास, परमानन्द तुरसी, पेम दाह, श्यामसखी	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६३३, ६३४-६३५ ६३७-६३८, ६३९ ६४०, ७६५२, ६४६ ६५०-६५१, ६५३
१०८१	१०६३३ (२) १६-२१	पद-सग्रह	रामससखी मुरली नागरीदास बखनो पदम, सूरदास	गु० १६४०	१३ ५x८ ५	६५६, ६५४-६५५ ६५६, ६५७ ६५८ ६६०, ६६१-६६२, ६६३
१०८२	१०६३६ (१) १	पद सग्रह	रामचरणदास	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	१-४, ६-९, १५-१७, २१, २६, ३०-३५, ३६-३९, ४३, ४४, ४५, ४७, ४८, ५२, ५३, ५७-६१, ६३, ८५-८६, १०५, १११, ११४, ११५, १३७-१३८, १३९-१४१, १६४, २३०-२३१, २५०-२५१, २६१- २६२, ३७१-३७२ पर कविता है। ४१६-४१९

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-मंग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्र.मां.	ग्रन्थाङ्क.	ग्रन्थ - नाग	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे.)	माप (से. मी. मे.)	पत्र संख्या
१०८३	१०६३६ (१) २	पद-संग्रह	रामजन	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	४, ११-१२, १६-२१, २८, ३५, ३६-३८, ४५, ४६, ५४, ६४, २५१-२५२
१०८४	१०६३६ (१) ३	पद-संग्रह	कवीरदास	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	५, २२, २३, ३२, ५१, ६४, ६५, ७०, ८७, ९२, ११२, ११५, ११६, १२०, १२१, १३१, १३३, १३५, १३६, १५२-१५५, १५६, १६०, १६२-१६३, १६५-१६६, १७७, १८७-१८९, १९३, २०१, २०४, २०८-२११, २१५-२१६, २३२-२३३, २३५-२३६, २४३-२४४, २५५-२५६, २६७-२७१, २८३, २८६, ३७२-३७३
१०८५	१०६३६ (१) ४-५	पद-संग्रह	काजीमहमद भगवानदास	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	६, ३३, ३४, ७९-८० १०-११, १८, ३१-३२, ४०, ४१, ४९- ५०, ५४, ५५, ७७-७९
१०८६	१०६३६ (१) ६	पद-संग्रह	मीराबाई	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	१५, ६२, ६७, ७१-७३, ७५, ७६, ८०-८१, ८६-८७, ९०, ९१, ९२, ९४, ९६, ९७- १०४, १०५, १०६-११०, ११२-११३, ११६, ११७-११८, १२८, १२९, १३०, १३२, १४३, १४५, १४६, १४७-१५०, १५५, १७१-१७३, १७५-१७७, १७८, १८२, १८६, २०५-२०७, २०९, २३१- २३२, २३४-२३५, २३६-२३८, २४१- २४२, २४६-२५८, २६६-२६७, २७३, २७४-२७५, २७९

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकात (वि स मे)	माप (से. मी से)	पत्र संख्या
१०८७	१०६३६ (१) ७-६	पद-संग्रह	नरसी दुलहैराम, नामदेव	गु० १६३४	१२ ५.८.५	२३, २४-२५, १०६, १५८, १६२, २१३, २७७-२७८ ३१, ४२, १३६, १८०, २८५, ३४ वा ५०-५१, ६७, ७४, १०४, १४१-१४२ १५१, १८१, १८२-१८४, १८५, १६८- २००, २०२, २३३ २३४, ३३६-२४०, २४२, २४५, २७३, २८२ ५६, ७४, ७५, १३०, १३३, १३४, १५०- १५१, ६५ वा ६५-६६, ६७, ६९, १६६, ७०-७१ ७६, ८३-८४, २०३, ७७ वा ८१-८२, ८२-८३ पर गोपीचन्द्र का गीत है । ८४, ८८-८९, ९०, १८६, १९७, २१२- २१३, २६२-२६३, २८७-२८८, ८८ ९३, ९५-९७, १२२-१२६, १४६, २५४ ११७, ११९ १२२, १६४, १६५-१६६, २५२, २५३, १२७, १२७-१२८, १३१ १३२, १३२, १५६, १६४, १८३-१८४
१०८८	१०६३६ (१) ११-१८	पद-संग्रह	तुलसीदास, मनसुखदास वखलावर, रूपदास नानू, सुन्दरदास अज्ञात	गु० १६३४	१२ ५.८.५	
१०९०	१०६३६ (१) १६-३०	पद-संग्रह	जनतुरसी परमानन्द जनहरिदास, दादू प्रेम, कान्हड बखनो, ब्रजनन्द हंसतराम, श्यामसखी हुसैन, मुरली	गु० १६३४	२१ ५.४.४	

प्रमाण	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या
१०६१	१०६३६ (१)३१-४१	पद-संग्रह	नित्यानन्द, रामसरण नागरीदास, नन्ददास देदास, अग्रदास निरभेराम, सूरजकवर रूपा, गंगादास गुलाबजन	गु०१६३४	१२ ५x८ ५	१३४, २११ २१२, १३५ १३५-१३६, १४२ १४४, १४४-१४५ १५६-१५७, २६०-२६१, २७१-२७२, १५६ १५८-१५९, १६०-१६१ १६४-१६५
१ ६२	१०६३६ (१)४२-४२	पद-संग्रह	पूरनदास, किसोर पदम, पोहीकर बालसखी, चिमनोविरह जंतराम, रामसखी सिवरी, अज्ञात सेवाराम	गु०१६३४	१२ ५x८ ५	१६६-१६७, १६७ १७० १७४-१७५ १७६, २७५ १७८ २३०, २४६, ३७३ ३७४ १८१, १८६-१९० १९१, २४७-२५०, १९६ वा २१२, २१३-२१५ (लावणी) २१७-२१८ र का. १८६ रामपुरागढ़ मे
१०६३	१०६३६ (१)५८-६१	पद-संग्रह	खेम, गंगाधर लावो, तानसेन	गु०१६३४	१२ ५x८ ५	२७४, २७६-२८१ २८१-२८२, २८३
१०६४	१०६३६ (४)	पद-संग्रह	रज्जव	गु०१६३४	१४x८	७०७-७४८

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से मी मे)	पत्र संख्या
१०६५	१०६४० (७)१-१०	पद-संग्रह	सेवादास कवीर	गु० १८८३	१५ ५.१० ५	५१७, ५२२, ५२३ ५१७, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३६ ५५०, ५५१, ५७२, ५८०-५८१, ५८२, ५८४, ५८६ ५९८, ५३५, ५६५ ५९८-५९९ ५४३, ५४४-५४५, ५५६- ५६३ ५९६-५९९, ५९३, ५७२, ५७३, ५९४ ५९४-५९५, ५४३, ५५२ ५५३, ५७६, ५७८, ५७९, ५८६ ५८६, ५३०, ५३६-५४२, ५६४, ५३२
१०६६	१०६४० (७)११-२४	पद-संग्रह	सनेहीराम, अग्रदास सेवादास, तुरसी चन्द्रदास, नवलराम चन्द, कविगद मालमदास, किसनदास भुरारदास, मङ्गण विसनदास	गु० १८८३	१५ ५.११० ५	५३४, ५३५-५३५-५३६ पर पत्तिका है ५४४, ५४५ ५४६, ५४६-५४७ ५४७, ५४७-५५० ५५० ; ५५१ ५५१, ५५६-५५८ ५५८

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-मगह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्र.सं.	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे.)	माप (सें.मी. मे.)	पत्र सख्या
१०६७	१०६४० (७) २५-३५	गिरधरकविराय केसोदास, नरसी खेम, रैदास वखना, जनहरिदास मीरा, काजीमहमद सूरदास, मुन्दरविरहन	गु० १८८३	१५ ५x१०.५	५५८, ५५९ ५६३, ५६५, ५७३ ५६६, ५६७ ५६७, ५६८-५६९, ५८३ ५६९, ५७०, ५७१, ५८२, ५६९, ५७० ५७०, ५८४, ५८५, ५७३
१०६८	१०६४० (७) ३६-४१	जगजीवन, नापो नानाग	गु० १८८३	१५ ५x१०.५	५८१, ५८३ ५८३
१०६९	१०६४१ (३) १-१३	जीवनदास, कवीर अग्रदास, दाहू वखतावर, बिजानद नरसिंह, जनहरिदास मीरा, रसिकनाथ रैदास, गैवीराम सूरदास	गु० १९३७	१७x१०.५	६६, ६६, १०० १००, १००, १०३ १०१, १०१ १०१, १०१ १०२, १०३, १०४, १०२ १०३; १०४ १०४वा
११००	१०६४१ (७) १-२	रामजन, कवीर	गु० १९३७	१७x१०.५	१४३, १४४

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निष्पत्तकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सङ्ख्या
११०१	१०६४२ (११)१-२	पद-संग्रह	पोद्देकर कवीरदास	२०वीं श०	१३५६	२७१-२७३ २७३-२७५, ३०१, ३३७, ३३८, ३६०, ३६२-३६५, ३६८ ३७०-३७१, ३८०-३८१
११०२	१०६४२ (११)३	पद-संग्रह	सूरदास	२०वीं श०	१३५६	२७५-२७६, २८१-२८२, २८६-२८७ २८८, ३०८-३१०, ३४७, ३४९-३५० २७६ २७८, २८५-२८६, ३००, ३०२- ३०३, ३३९, ३४१-३४५, ३५०-३५६, ३५८ ३५९ २८३-२८५, २८२-२८४ २८४-२८५, २८५-२८७
११०३	१०६४२ (११)४-८	पद-संग्रह	मीराबाई	२०वीं श०	१३५६	२८६, ३१६-३१७, ३३६, ३०४-३०५ ३०५-३०८, ३११ ३११-३१३, ३१३-३१४, ३७२-३७५ ३१५-३१६, ३१९-३२०, ३३३-३३५, ३६९-३७० ३२०-३२१, ३२९-३३२, ३६१-३६२ ३२१-३२४, ३२४-३२५ ३२५-३२७
११०४	१०६४२ (११)९-२०	पद-संग्रह	तुलसीदास, लिङ्गमण्णदास सेवादास, नाभादास तुरसी, नामदेव खेम, रामसखा अज्ञात, अज्ञात नैनुदास, रामचरण नरसी सीतलपुरी, कान्हदास जनमाधो	२०वीं श०	१३५६	

क्रमांक	ग्रन्थानु	पत्र - नाम	कर्ता	निष्पिपात (वि स मे)	माप (मं. मी. मे)	पत्र सख्या
११०५	१०६४२ (११) २१ ३४	पद-समग्र	दुलहराम, रूपदास मनसुखदास, बखतावर काजीममद, नददास निरयानद, बखना रैदास, मुरली दादू, कालू अज्ञात, किशोर अलि	२०वी श०	१३४६	३२७-३२८, ३३५-३३६ ३३८, ३३९, ३४०, ३८१-३८२ ३४१, ३४८ ३४९, ३५०-३५२ ३५७, ३६१, ३६५-३६७ ३७१-३७२, ३७६-३७९ ३८२-३८५ रेखता, ३८५-३९०
११०६	१०६४४ (६) १-१२	पद-मगध	पोहीकर सूरदास	२०वी श०	८२५	२४१-२४३ २४३-२४४, २४८-२४९, २५२-२५७, २६२-२६३, २७२-२७४, २८६-२८७, २९८-३०१ बारामासी २४४-२४७, २५१-२५२, २६४, २६६ २६७ ३१७-३१९ २४९-२५१, २५७-२५८ २५९, २६०-२६२ २६३-२६४, ३७५, २६५, ३२२-३२३, ३२६-३२७ २६८, २६९-२७१ २७४ ३७३-३७४, ३७६-३७८ ३७९-३८१, ३८२ ३८३-३८४
११०७	१०६४४ (६) २५-२९	पद-समग्र	तुलछीदास, लिछमणादास सेवादास, नाभादास जनतुरसी, कवीर नामदेव, खेम रामसखी, ननूदास, रामचरण सीतलपुरी, कान्हदास माधोदास	२०वी श०	८२५	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग-३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
११०८	१०६४५ (३)१-६	पद-संग्रह	रामजन, रैदास जनहरिदास, नरसी दादू, कानडदास बखना	२०वीं श०	१४.५x७.५	३३२-३३३, ३३३, ३६४-४०० ३३४, ३३५ ३३५-३३६, ३३६-३३७ ३३७-३३८
११०९	१०६४५ (३)११-१६	पद-संग्रह	पोहीकर, खेम कबीर, मोरार तुरसी, रामसखी ज्ञानसखी, तुलछीदास रासकनाथ	२०वीं श०	१६५x७.५	३६०-३६७, ३६७ ६६८-३६९, ४००, ४०१ ४०२, ४०२ ४०२, ४०३-४०५ ४०५
१११०	११०६१ (३) १-५	पद-संग्रह	नरसी, रामगिरि मानदास, चन्द्रसखी	२०वीं श०	१६x१२	१२५-१२६, १२६-१३० १३० वा, १३१-१३२
११११	१११७८ (१०) १-२, ७-६	पद-संग्रह	सुरदास, किसोरजन तुलसीदास, भगवानदास	गु० १७५१- १७६२	१५.५x१२	७८-७९, ८४ ६५, ७९-८० ८७-८८, ८९-१००
१११२	११५८३ (१)	पद-संग्रह	जनहरिदास	गु० १६६३	१८x१५	१-३
१११३	११५८३ (११)	पद-संग्रह	बाजीद	गु० १६६३	१८x१५	११६-११८

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.मे.)	माप (सें.मी.मे.)	पत्र सख्या
१११४	११५८४ (२६)	पद-संग्रह	आनन्दधन, सूरदास नैरासी	१८ वीं श	१६.५.१६	२१७, २१७ २१६-२२३
१११५	११६४८ (७) १-१०	पद-संग्रह	सोभा, सुखानन्द धना, सैना मुरारि, मूलकदास जगी, बनारसी काह्लजी	गु० १८.५.३	२७.१६.५	३२७, ३२८ रागवद्ध- ३२८, ३२८ ३२८, ३२८-३२९ ३२९, ३२९ ३२९-३३०
१११६	११६४८ (७) ११-२१	पद-संग्रह	व्यासभगत, पुराणदास नरिया, नददास चक्रदास, माधोदास धरमसी, बालमीक नाप, मुकदभारती छोतमदास	गु० १८.५.३	२७.१६.५	३३० वा ३३१ वा ३३२ वा ३३२-३३३ ३३४ वा
१११७	११६४८ (७) २२-३०	पद-संग्रह	गैव, मछिन्द्रनाथ, नैनोदास, छाजू नानिक, सूरदास अगद, भावनजी डू गारसी	गु० १८.५.३	२७.१६.५	३३४-३३५, ३३५-३३६ ३३६ वा ३३७ वा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. सं.)	माप (ले.मी. से.)	पत्र संख्या
१११७	११६४८ (७) ३१-३७	पद-संग्रह	बोह्यदास, सीहजी, भयानतिलोक मतसुन्दर, सोमजी काजीमेहमद	गु० १८५३	२७२१६.५	३३७ वा ३३७-३३८, ३३८-३३९ ३३८-३३९
१११८	११६४८ (७) ३८-५०	पद-संग्रह	सेखवहावदी, विद्याधर हरदास, परमानन्द अग्रदास, तुलसीदास वैष्णोदास, कान्हदास दिवाकर, दास, रुचदास जनगोपाल, अज्ञात	गु० १८५३	२७४१६.५	३३९ वा ३४० वा ३४०-३४१, ३४१ ३४१ वा
१११९	१२२१४ (३)	पद-संग्रह	सेवादास तुलसी कबीरदास जनहरिदास	१९वीं पा०	२१५४१३	३९-४९, ५०-५४ ४९, ९२, ९३, ९४ ४९, ५५-५७, ९४, ९६ ४९, ९०-९२, ९४
११२०	१२२२६ (२४) १-५	पद-संग्रह	अज्ञात, नामदेव रैदास, पीपा रामानन्द	गु० १८७७	१४४१२.५	६४०-६४३ ; ६४३-६४७ ६४७ ; ६४८-६४९ ६४९

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थानु.	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या
११२१	१२२२६ (२६)१-१२	पद-संग्रह	जगजीवन, वाजीद नैनोदास, काजीमहमद जनहरिदास परमानन्द, वेणीदास कानहदास, नामदेव शाहहुसेन, दाम कालू	१८७७	१४×१२ ५	६५२-६५५, ६५५-६५७ ६५७-६५९, ६५९-६६२ ६६२-६६३ ६६३ का ६६३-६६४, ६६४ ६६४-६६५, ६६५-६६७ ६६७-६६९ ६६९-६७१ पर गोपीचन्द का पद है। ६७२-६७५ पर संस्कृत में नारदगीता है
११२२	१२३११ (११)१-७	पद-संग्रह	सतदास, रामचरण रामवल्लभ, सुखराम हसराम, मारा कवीरदास	गु० १९९४०	१७ ५/८ ५	४७१-४७२, ४७३-४८२ ४८२-४८९; ४८९-४९० ४९०-४९१, ४९१-४९२, ४९५-४९६ ४९२-४९५
११२३	१२३७८ (१३)१-१०	पद-संग्रह	जैमल, दाहू, माधोदास जनतुरसी, छीपो नामदेव केवलराम, रजजव वखना कवीर	१८ वीं श०	२२×१५ ५	९१, ९१, ९१ १०६ ९२, ९३, १०१, ९२ ९२, ९४, ९५, ९६ ९२ का ९२, ९९ ९२, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या
११२४	१२३७८ १३ ११-२०	पद-समूह	दाहु, रैदास सूरदास	१८वीं श०	२२×१५.५	६२, ६८, ६३, ६५, ६६ ६४, ६५, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०८ ६७ वा ६६ वा १०१, १०१, १०४ १०१, १०२, १०३, १०४, १०६
११२५	१२३७८ (१३) २१-२३	पद-समूह	वाजीद, केसोदास लघुदामो	१८वीं श०	२२×१५.५	१०३, १०७ १०८
११२६	१२३७८ (१६) १-२	पद-समूह	गरीबदास, काजीमहमद	१८वीं श०	२२×१५.५	११२, १३५, ११२ वा
११२७	१२३७८ (१६) १५	पद-समूह	विष्णुदास, जनतुरमी सूरदास, परमानन्द कबीरदास	१८वीं श०	२२×१५.५	१३६ वा
११२८	१२३७८ (२३) १-४	पद-समूह	खीवा, गरीबदास बालकराम, सूरदास	१८वीं श०	२२×१५.५	१४१ वा अत में संस्कृत के सुभाषित हैं
११२९	१२३८० (२१) १-४	पद-समूह	हरिदास कविगंग, शेख, अज्ञात	गु० १७२४	२०×१४	२२६ २३०, २३०-२३३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
११३०	१२४२० (२)१-२	पद-संग्रह	मीरा, भावनादास	गु० १६३४	१६x१४	३४-३५
१३१	१२४२० (७)	पद-संग्रह	जैमलदास	२०वीं श०	१६x१४	६-२१
११३२	१२४२१ (१)१-४	पद-संग्रह	जनदरिया, रामदास नामदेव कवीरदास	१८६३	१७x१२	२-४, ५ ६, ६, ११, ४२, ४३, ६५, ६८-६९ ६, ६, १५, १७-१८, १९-२०, २१, २७, २९, ३१, ३४, ३८, ४३, ४५, ४७-४९, ५१, ५२, ५४, ५८, ५९, ६४-६५, ६७, ७०
११३३	१२४२१ (१)९-१७	पद-संग्रह	नापा, रैदास परमानन्द, षडसी जनतुरसी, सूर दास माधोदास, खेम नैनोदास	गु० १८६३	१७x१२	१०, ५२, ६५, ११, २७, ३६, ४१, ६६, ६८ ११, ५४, ६९, १४ १५, २३, १५, ४०, ७१-७२ १६, ३४, ५०-५१ १७ वा ; १८ वा
११३४	१२४२१ (१)१८-२५	पद-संग्रह	मीरा, श्रीरग जगजीवन, टीला पीपा, बलना कान्हा, केवलदास	गु० १८६३	१७x१२	१९, २३, ३३, २० २१, ६४ ; २३-२४, ६८ २७, ३१, ३६, ६९, २८, ४१, ६२-६३, ७१ ३१, ३२

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रसिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र सख्या
११३५	१२४२१ (१) २६-३७	पद-संग्रह	चैना, राधो; बनवारी नानादास, गरीबदास खीवा परसराम, धना, सतदास जगनाथ, विद्यादास रामदास	गु० १८६३	१७x१२	३३, ३५ ३६, ३७, ४४, ६७ ३८ वा ४२ वा ४३ वा ४६ वा
११३६	१२४२१ (१) ३८-५१	पद-संग्रह	हरदास, दादू जनबालमीक, बेणीदास जनभगता, जनहरिदास जनमाणिक नाभा, पनहीदास शिष्य सतदास, रामचरण लालदास, जनश्रगद नानिक, गोविन्ददास	गु० १८६३	१७x१२	५०, ६६, ५१, ५६ ५२ वा ५३ वा ५५, ५७ वा ५७-५८, ५९ वा ६६, ६८ वा ७०, ७३ वा
११३७	१२४२१ (१८) १-३	पद-संग्रह	ब्रह्मदास तुलसीदास कवीरदाम	गु० १८६३	१७x१२	२५१-२५२ २५२, २५६-६०, २६३-२६४, २६६, २७८ २८५-२८६ २५२-२५३, २६१, २६५, २६७-२६८, २७०, २७१, २७६, २८१, २८६-२८७

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जायपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से. मी. मे)	पन्ना संख्या
११३७	१२४२१ (१८)४-१०	पद-संग्रह	नरसी, गोविन्द पीपा सादाराण, धीर, मख सूरदास,	गु० १८६३	१७x१२	२५३, २५४ वा २५५ वा २५६, २५७-२५८ २५८ वा
११३८	१२४२१ (१८)११-२१	पद-संग्रह	सुखिया, बगतावर माधोदास, रामजन मीराबाई रूपदास, दाद माणक, खेम बखना, अज्ञात रामचरण	गु० १८६३	१७x१२	२६०-१६१, २६१, २८१ २६३, २६५ २६६, २६६, २७४, २७६, २८०, २८३ २६८, २६६, २८३ २७०-२७१, २७२ २७२-२७३, २७३-२७४ २७५-२७६, २८४-२८५
११३९	१२४२१ (१८)	पद-संग्रह	ललनासखी, कानडदास सहजराण अप्रासखी, जनतुरसी	गु० १८६३	१७x१२	२७६-२७८, २७९ २८०-२८१ २८२ वा
११४०	१२४२१ (२१)५-८	पद-संग्रह	किशनदास, रज्जब जनगोपाल सुन्दरबिहरहन	गु० १८६३	१७x१२	७, ७-८, १४, २६, ३६, ४५, ५३ ८, २२-२३, २६, ३०, ३२, ३७, ३९, ४० ४५-४७, ६३-६४ ६-१०, १२, १३-१४, २४, २५-२६, २८- २९, ३५, ६०-६२, ७०-७१

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निर्गमकाल (वि.स.मे.)	माप (से.मे.से.)	पत्र संख्या
११४१	१२४२२ (७-११)	पद-संग्रह	सधानाथ, सती भरथरी, हणवत हालीपाव	गु० १८६३	१५×१० ५	२४७ वा २४७ २४८ : २४८-२४९ २४९ वा
११४२	१२४२६ (५)	पद-संग्रह	रैदास	२०वीं श०	१६ ५×१३	६४-७३ वै-रागबद्ध
११४३	१२५४८ (४)	पद-संग्रह	सूरदास	गु० १८६०	१६×१२ ५	३७-४० वै-पत्र ४१-४३ पर चौकी बद्ध कविता है ।
११४४	१२५५० (१) १-१०	पद-संग्रह	रसिकनाथ, गोविंदप्रभु छीतस्वामी, चत्रभुज नददास, सूरदास कु भनदास, विठ्ठल कुण्ठादास, परमानन्द	१९वीं श०	१६.५×१३	१-२, २-३ ४-५ ; ५-६ ६ ७ ; ८ वा ८-९, १० ११-१२, १२-१३
११४५	१२५६१ (१७) १४	पद-संग्रह	दादू, कबीर, रज्जब बाजीद	१९वीं श०	२३ ५×१७	३६६, ३७०-३७१ ३७१-३७२
११४६	१२५७० (४) १-३	पद-संग्रह	रज्जब, कबीर, तुलसी	२०वीं श०	६ ५×६.५	३६, ३७ वा
११४७	१२५७० (५) १-६	पद संग्रह	तुलसी, मल्लूकदास कबीर, चरनदास जनतुरसी, सूरदास परसराम, बालकृष्ण किसोरअलि	१९वीं श०	६ ५×६ ५	२, २-३ गुटका पत्र सं० १-३७ तथा ३-५, ५ वा-१४० से अंत तक एक ५-६, ६ वा-ही द्वारा लिखा गया है । ६-७ ; ८ वा- ९ वा

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (से. मी. से)	पत्र सख्या
११४८	१२५७२ (१)	पद-संग्रह	जैमलदास	१९वीं श०	१०.५x८.५	२-५ वें
११४९	१२५७७ (८) १-२	पद-संग्रह	पेमदयाल सतोकदास	१९वीं श०	१४.५x१०	९७-१०३, १०५, १०७-११६ १०३-१०५, १०६-१०७
११५०	१२५७७ (९) १-२	पद-संग्रह	कवीरदास, आत्माराम स्रजात	१९वीं श०	१४.५x१०	१२७ वा १२७-१२९
११५१	१२५७७ (११) १-६	पद-संग्रह	बालकदास, पेमदयाल सतोकदास, नददास वाजीद, मछंदरनाथ कवीर	१९वीं श०	१४.५x१०	१३०-१३५ बारहमास, १३५-१३७ १३७-१३८, १३९-१४४; १३८ १४५-१४६, १४७ १४८-१४९, १५०, १६०, १६६, १६८, १७४, १८१-१८३-१८४ १४९, १४९-१५० सवैये
११५२	१२५७७ (११) ११-२२	पद-संग्रह	पीपा, सुन्दरदास रदास, मोरा घाटमदास मीणा जनधनजी, परसराम सुखदेव, अज्ञात रामचरण, नरसी बगतावर, सूरदास रामसखी	१९वीं श०	१४.५x१०	१५८, १५८, १७२, १७५-१७८, १८२ १५९, वा १६०, १६१ १६५, १६९ १६९-१७०, १७५, १८४, १७१ १७२-१७३, १७३, १७९-१८१ १८३ वा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पन्नासंख्या
११५३	१२५८१ (३) १-११	पद-समूह	सूरदास, मीरा भानन्दधन, मुन्दरविरह वल्लभो, कवीर भ्रज्जात, नापो, मुकद परमानन्द, हरिदास	१६ वीं श.	१६x१० ५	२८, २९, २८ २९, २९-३१, ३३ ३२, ३३, ३८-३९ ३४, ३५ ३५-३६, ३६-३७
११५४	१२५८१ (६) १ ५	पद-समूह	कवीरदास, हरिदास बुधानन्द, गंगादास रूपदास शिष्य हरिदास	१६ वीं श.	१६x१० ५	४२, ४३, ४५, ४२-४३, ४४-४५ ४३, ४५ ४६ वा
११५५	१२५८१ (१५) १-२	पद-समूह	विष्णुदास, शिवदत्त	१६ वीं श.	१६x१० ५	६३-६४; ६४-६५ पर स्फुट कवित्त है। ६५-६६ ६
११५६	१२५८६ (१) १-५	पद-समूह	कवीरदास, मीरा भ्रमरदास, दुलहराम जननुरसी	१६ वीं श.	१२x६ ५	१-२, २ ४, ६, ८-९ ३-३४ ६ ठा
११५७	१२५८८ (२) १-४	पद-समूह	सतदास रामचरण	१६ वीं श.	१२.५x८	३७-३९ वें ४०-४२, ४४, ४६-४७, ४९, ५१, ५३-५५, ५८-५९, ६१-६४, ६५-६६, ७१-७२ ४२, ४७, ५१, ५६, ६५, ७०, ७३, ७७ ४३, ६०-६१, ६७-६८, ७३

[illegible]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	भाषा (से.मी. मे)	पृष्ठसंख्या
११६१	१२५८६ १४,१-६	पद-संग्रह	कवीरदास सूरदास चन्द्रसखी, तुलछीदास जनमुरली, जनमाल	१६६६	१७२१३	१७५, १७६, १७८, १८०-१८१, १८५, १८६-१८७ १७७, १८०, १८३-१८४ १७७, १७८ १८८, १८९, १८५-१८६
११६२	१२५६० (१)१-७	पद-संग्रह	जनहरिदास सूरदास जनतुरसी कवीरदास	१८४०	१६४१२	१-१०, २३, २८, ३० १, १७, १८-१९, २४-२६, ३१-३२ १२-१३, १६-२०, २१-२२, २३-२४, २७, ४३ १३ १४, १६-१७, २०, २१, २६, २८, ३२, ३४, ४३ १४, १८ १४-१५, १५ १६, १८, १९ २६, २७, ३३ २७-२८, ३० ३१ वा ३२, ३३, ३५, ३६, ३४ ३५ वा ३६ वा
११६३	१२५६० (१)८-२०	पद-संग्रह	बुधानन्द सुन्दरदास, नैनोदास वनारसी, तुलसीदास केसवदास, नाणो बखनो, जगजीवन परमानन्द, मुकुन्द मोरा, परमराम गवीराम कार्जिमैमद शानन्दवन	गु० १८४०	१६२१२	

राजस्थान प्रान्थविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

१५४

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिगान (वि स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या
११६४	१२५६० (१)२१-२८	पद-संग्रह	नागरीदास, भूतनाथ नरसी माधोदास अभयराज, दादू कानड, हरिवंश	१८४०	१६४१२	४० वा ४१, ४२, ४१ ४२, ४२-४३ ४३, ४४
११६५	१२५६१ (१)७-८	पद-संग्रह	सुखदेव, दासकवि	२०वी श०	१५५४१०	१८-१९, १९-२०
११६६	१२५६१ (३)१-११	पद-संग्रह	तुलसीदास, कबीर बगतावर, ललितमखी सूरदास, मोरा सुरतराम, धरमदास सुखराम हसतराम, गग	२० वीश०	१५५४१०	८६-८७, ८७६७, १००-१०१ ८८, ८८-८९ ८९, ९४, ९६, ८९-९०, ९८-९९ ९०-९१, ९१-९२ ९२, ९६ ९३ वा
११६७	१२५६१ (६)१-४	पद-संग्रह	हरिराम, रामदास छालवाल, सेवादास	२०वी श०	१५५४१०	३९, ३९-४१ ४१-४२, ४२-४३
११६८	१२५६१ (१४)१-२	पद-संग्रह	मलूकदास, दीनदरवेश	२०वी श०	१५५४१०	८०, ८२-८४, ९७
११६९	१२५६१ (१९)१-२	पद-संग्रह	मलूकदास, बखना	२०वी श०	१५५४१०	९९-१००, १०० वा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.मे)	माप (स.मी.मे)	पत्र सङ्ख्या
११६६	१२५६१ (१६)३-११	पद-संग्रह	रामसखी, कवीर हरिराम, परसराम रामदास, भावनादास गुप्ताराम, जनमुरली नागरीदास	२०वीं श्रा०	१५ ५×१०	१०१, १०२, १०३ १०२; १०२, १०३ १०३-१०४, १०४-१०५ १०५ वा
११७०	१२५६१ (२८)	पद-संग्रह	बगतराम	२०वीं श्रा०	१५ ५×१०	१८४-१८७
११७१	१२५६१ (३४)१-८	पद-संग्रह	अखैमल, रामचरण सेवगाराम, कवीर सीतलसखी, सुखाराम छालबाल, भीष्मदास	२०वीं श्रा०	१५ ५×१०	२१५ लावणी; २१६, २१७ २१७ वा २१८ वधावा, २१८-२१९ २१९, २१९-२२१ पक्ववाडा
११७२	१२५६२ (१)१-१०	पद-संग्रह	दासकृति, परसराम दाद, बामजी ? सुखमण्णदास मीराबाई	१९वीं श्रा०	१४×१० ५	१; २-३ ३ रा १ ला २, ११-१३, १४, १५-१६, १८-२३, २६, २७, ३०, ३२, ३४ ४०, ४२ ३-५, ५, १०, ११, ३६-३७, ४१ ४३ ५, १७, २४, २६, ३०-३१, ३८, ४१, ४२ ६-७

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग-३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (सें.मी. मे.)	पत्र सख्या
११७३	१२५६२ (१)११-२०	पद-संग्रह	तुलसीदास, बुधानन्द जनहरिया, दादू हरिदास, रामसखी साईदास, पूरणदास बाईराना, सूरदास	१६वीं श०	१४x१०.५	७-८, १६-१७, ३२-३३-४१, ८-९ १०, १३, २८, १०-११ १४; १७ १८, १८, २४-२५, ४४ २३; २४, ४३
११७४	१२५६२ (१)२१-३१	पद-संग्रह	रसिकराम, अखेमल रामदास, नरसी जैमलदास, पेम कृपासखी, परसराम रूपदास, बगतभारती ललितसखी, नागरीदास	१६वीं श०	१४x१०.५	२५, २६, २६-२७ २८, ३७-३८, ५१, ३१-३२ ३४, ३५, ३४ ३५, ३५, ३६, ३६ ३७; ३८-३९, ४८-४९ ४०; ४३-४४
११७५	१२५६२ (१)३३-३७	पद-संग्रह	दासगोपाल, धरमदास सीतलसखी नामदेव श्रीभट	१६वीं श०	१४x१०.५	४५-४७ वारामासो, ४७-४८ ४८, ५० वा ५२ वा
११७६	१२५६२ (३)१२-१७	पद-संग्रह	रामदास, मुरलीराम जनहरिया, सेजराम पोहोकर, जैतराम	१६वीं श०	१४x१०.५	६४, ६५ ६७-६८, ६९-१०० १०१-१०६; १०६-१०९

राजस्थान ग्रन्थविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिकित (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या
११७७	१२५६२ (५)५-६	पद-समूह	सूरदास रूपदास, कबीरदास जूणादास, जनभावत	१६वीं श०	१४.१०.५	१३० वा १३१ १३२-१३३, १३३-१३४
११७८	१२५६२ (५)१०-१६	पद-समूह	मीरा, नागरीदास नरसी ब्रजानन्द, रत्नमखी ललितसखी, बगनावर	१६वीं श०	१४x१० ५	१३५-१३७, १३७-१३८ १३८ वा १३९ वा १४०, १४१, १४०-१४१, १४१-१४२
११७९	१२२२० (३२)१-२	पद-समूह (अक्षय तृतिया के)	चन्नभुज, परमानन्द	१६वीं श०	१६x१६ ५	१००, १०१-१०२
११८०	१२२२० (३१)२-१	पद-समूह (आचायजीके जन्म-उत्सव के)	तिलोक, कृष्णदास	१६वीं श०	१६x१६ ५	१००, १००-१०१
११८१	१०८६६ (६)१-८	पद-समूह एवं साखी	बनारसी, माधोदास तुरसी, रामचरण हरिराम, मुन्दरदास कल्याण, अज्ञात	मु० १६२७	८ ५x७	२४२-२४३, २४३-२४५ २४५-२४६, ७७८-७८०; २४६ वा २४६-२४७, २४७-२४९ २४९-२५०, २५०-२५३
११८२	१०८६६ (६)६-१४	पद-समूह एवं साखी	जनरामा, रजब परसराम, सेवादास कबीर, किशनदास	मु० १६२७	८ ५x७	४५६, ४५६-४५७ ४५७-४६२-४६४, ४५८ ४६४-४६८, ४६८-४७१

राजस्थान भाषाविद्या प्रसिद्धान (जायपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्र.मांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - भाग	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या
११८३	१२२१० (१)१-१०	पद-समूह (कृष्ण जन्म के)	गोविन्दस्वामी सूरदास चन्नभुजदास, विट्ठलदास कु भनदास, कृष्णदास जगन्नाथ, नददास परमानन्द माधव	१६वीं श०	१८x१३.५	१०.२२ सभो पद राग नख है । ११.१४-१५, १६-१७, १८, २१, २२-२३ ११, १२ वा १२; १३ १३, १३-१४, २१ १७-१८, १९-२०, २१, २२, २४-२५ २३-२४
११८४	१२२२० (६)	पद-समूह (छठी के)	लखिराम	१६वीं श०	१६x१६.५	६७-६८
११८५	१२२२० (३)१-५	पद-समूह (जन्म के)	सूरदास, परमानन्द माधोदास, चन्नभुज गदाधर	१६वीं श०	१६x१६.५	६१, ६२, ६३, ६१, ६३-६४, ६५ ६१ वा; ६२ वा ६४ वा
११८६	१२२११ (३)	पद-समूह (जन्माष्टमी के)	सूरदास	२०वीं श०	१७x१३	२०-२३ राग-देवगधार
११८७	१२२०५ (५३)१-५	पद-समूह (जैन)	रूपचन्द्र, जिनलाम आनन्दधन, दोलत फलेचन्द्र	१८वीं श०	१७x११	१४३, १४५, १४३ १४३-१४४, १४५, १४६ १४५ वा

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (से. मी. मे)	पत्र संख्या
११८८	१२२२२० (५)	पद-संग्रह (ढाढी के)	सुरदास	१६वीं श०	१६x१६ ५	६७ वा
११८९	१२२२१० (२)	पद-संग्रह (ढाढी के)	सुरदास	१६वीं श०	१८x१३.५	२५, २६ वा-राग धनाश्री
११९०	१२२२१० (२३) १६-१७	पद-संग्रह (धमारि के)	कृष्णदास, मुरारि	१६वीं श०	१८x१३ ५	१३८-१३९, १४७ राग-गोरी, ब्रह्मानो
११९१	१२२२१० (२३) ११-१४	पद-संग्रह (धमारि के)	कु भनदास, गदाधर लच्छीराम, रसिकदास	१६वीं श०	१८x१३ ५	१२८, १३९, १२१, १२२, १३१-१३२ १३३ १३४-१३५, १४८-१४९ : १३७ वा
११९२	१२२२१० (२३) १-५	पद-संग्रह (धमारि के)	मानिकचन्द चन्नभुज गोविन्दस्वामी	१६वीं श०	१८x१३ ५	११३-११४ ११४-११६, १३८, १४१, १४७-१४८ ११६-११८, १२५-१२६, १३०-१३१, १३९-१४१, १४३-१४४, १४६ ११८-११९
११९३	१२२२१० (२३) ६-९	पद-संग्रह (धमारि के)	माधोदास सुरदास परमानन्द नदादास छोतस्वामी गजात	१६वीं श०	१८x१३ ५	१२१, १२४, १२६-१२७, १२९ १२२, १३३-१३४ १२३ वा १२२-१२३, १२७, १३२, १३५, १३६, १४२, १४३, १४४-१४६, १४९

क्रमांक	व्याप्ति	पत्र - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या
११८४	४०८०० (२७)१-१०	पद-मग्न (धमारि के)	मानिकचंद, चंद्रभुज गोविन्दस्वामी, जनमाधो जनहरिरया, परमानंद गदाधर, नंददास छोतस्वामी	१६ वी श०	१६x१६.५	८६, ८६-८७ ८७-८८, ८४, ८८-८९ ८९-९०, ९०-९१ ९३ वा ९४-९६
११८५	४२२२० (३६)-१३	पद-मग्न (ध्यान यात्रा के)	परमानंद, सूरदास, विठ्ठलप्रभु	१६ वी श०	१६x१६.५	१०३ वा
११८६	४२२२० (३८)-११	पद-मग्न (नित्य के)	विष्णुदास, जनभगवान कुल्लादास, गोविन्दप्रभु वल्लभ, ग्रामकरन	१६ वी श०	१६x१६.५	१२१, १२२ १२२, १२३-१२४ १२४ वा
११८७	४२२२० (३८)-१५	पद-मग्न (नित्य के)	परमानंद, छोतस्वामी नन्ददास, चंद्रभुज सूरदास	१६ वी श०	१६x१६.५	११८, ११९, १२१, १२२, १२३, १२४, ११८ वा ११८-११९, ११९-१२०, १२१ १२०, १२२
११८८	४२०१० (३)१-६	पद-मग्न (पलना के)	कुल्लादास, चंद्रभुजदास विठ्ठल, परमानंद सूरदास, गोविन्दस्वामी	१६ वी श०	१८x१३.५	२६, २७, २८ २७, २८, २९ २९, ३०
११८९	४२२२० (४) १-५	पद-मग्न (पलना के)	गोविन्दप्रभु, कुल्लादास रसिकदास, विठ्ठल, आसकरन	१६ वी श०	१६x१६.५	६५, ६६, ६५ वा ६६ वा

क्रमांक	ग्रन्थक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से.मी.से.)	पत्र सख्या
१२००	१२२१० (२०)१-२	पद-संग्रह (प्रबोधनी के)	परमानन्द, रसिकदास	१६ वीं श०	१८x१३.५	१००-१०१, १०१-१०२
१२०१	१२२२० (२४)१-२	पद-संग्रह (प्रबोधनी के)	रसिकदास, सूरदास	१६ वीं श०	१६x१६.५	८२, ८३ वा
१२०२	१२२२१० (२५)१-३	पद-संग्रह (कुलमडनी के)	परमानन्द चन्नभुज कु भनदास	१६ वीं श०	१८x१३.५	१५३, १५५, १५६ राग-सारंग १५३-१५४, १५५ १५४-१५५
१२०३	१२२२० (२६)१-३	पद-संग्रह (कुलमडनी के)	गोविन्दप्रभु, सूरदास, चन्नभुज	१६ वीं श०	१६x१६.५	६८ वाँ
१२०४	१०८६४ (२)१-८	पद-संग्रह (वधावारा)	मीरा कवीर	गु० १८६७	१०.५x१७	६६, ६७ १२४-१२५ ६७-७१, ७४-७६, ७८-८०, ८२, ८३, १२२-१२४ ७१-७२, ७२-७४ ८१; ८३-८४ ८५-८६
१२०५	१०६४४ (६) १४	पद-संग्रह (वधावारा)	दादू, पदमालिनी प्रज्ञाल, दीनदयाल सतदास, मुखराम	२० वीं श०	८x५	२६७-२६८, ३७८
१२०६	१०८४७ (२)३०-३२	पद-संग्रह (वधावारा)	तुरसी नूरुल्लाह, सूरजकवर रूपी	गु० १६६६	१७x८	६६३; ६६४, ६६४

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमाग्र	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सें मी मे)	पत्र संख्या
१२०७	१२२१० (२२)१-६	पद-संग्रह (वसंत के)	कु भनदास, चन्नभुजदास परमानन्द, सूरदास लघुगोपाल, कल्याण	१६वीं श०	१८×१३ ५	१०५-१०८, १०८-१०९ १०९-११०, ११३, ११०-१११ ११२, ११२ वा
१२०८	१२२२० (२६)१-३	पद-संग्रह (वसंत के)	चन्नभुज, परमानन्द सूरदास	१६ वीं श०	१६×१६ ५	८४, ८५ वें ८५ वा
१२०९	१२३११ (११)८-१०	पद-संग्रह (बाराभासो, लावणी)	परमानन्द, अज्ञात लवलीनराम	गु० १६ ४०	१७ ५×८ ५	५१६-५२० ५२१-५५०
१२१०	१२२१० (४) १-५	पद संग्रह (बाललीला के)	परमानन्द, सूरदास चन्नभुजदास, आसकरणा ऋषिकेश	१६ वीं श०	१८×१३ ५	३१-३२, ३३-३४, ३५, ३२, ३४ ३२-३३; ३४ वां ३५ वा
१२११	१०६४४ (६) २३-२४	पद-संग्रह (भरथरी, गोपीचन्द)		२० वीं श०	८×५	३७०, ३७१; ३७१-३७२
१२१२	१२२१० (१८)	पद संग्रह (भाईदूज के)	आसकरन	१६ वीं श०	१८×१३ ५	६८-६९ राग-साराग
१२१३	१२२२० (२२)१-२	पद-संग्रह (भाईदूज के)	आसकरन, रामदास	१६ वीं श०	१६×१६ ५	८१, ८२
१२१४	१२२१० (३२) १-७	पद-संग्रह (मलार राग के)	चन्नभुज, गोविन्दप्रभु कु भनदास, सूरदास परमानन्द, रसिकदास विट्ठल	१६ वीं श०	१८×१३ ५	१७८, १७८ १७९, १८०, १७९, १८०, १८१ १७९; १८० १८१

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या
१२१५	१२२२० (३२)१६	पद-संग्रह (मलार-राग के)	परमानन्द, कृष्णदास विठ्ठल, सूरदास कु भनदास, रामदास	१६ बी ग०	१६x१६ ५	१०५; १०५, १०७-१०८ १०५; १०५-१०६, १०७, १०८, १०९ १०६, १०८, १०९, १०६
१२१६	१२२२० (३६)७-११	पद संग्रह (मलार-राग के)	गोविन्दप्रभु जनभगवान, छीतस्वामी चन्नभुज, नददास	१६ बी श०	१६x१६.५	१०७, १०८, १०९ १०७ वा १०९ वा
१२१७	१२२१० (३१)१-३	पद-संग्रह (रथ-यात्रा के)	कृष्णदास, परमानन्द गोविन्द	१६ बी श०	१८x१३ ५	१७६, १७६, १७७-१७८ १७७ वा राग-बिलावल, मलार
१२१८	१२२२० (३५)१-३	पद-संग्रह (रथ-यात्रा के)	गोविन्दप्रभु, कृष्णदास सूरदास	१६ बी श०	१६x१६ ५	१०४ वा
१२१९	१२२१० (५)१-८	पद संग्रह (राधाष्टमी के)	रसिकदास, नददास परमानन्द, कृष्णदास दासगोपाल कु भनदास, आसकरन, सूरदास	१६ बी ग०	१८x१३ ५	३५, ३६, ३७, ३६ वा ३६, ३८; ३७ वा ३८ वा ३८ वा राग-देवगधार, बिलावल पुरवी ३८
१२२०	१२२२० (७)१-४	पद-संग्रह (राधाष्टमी के)	परमानन्द, कृष्णदास रसिकराय, विठ्ठल	१६ बी ग०	१६x१६ ५	६८ वा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे.)	माप (सें. मी. मे.)	पत्र सख्या
१२२१	१२२२० (२६)१-४	पद-संग्रह (रामानवमी के)	तुलसीदास परमानन्द सूरदास नददास	१६वीं श०	१८x१३ ५	१५६, १५७, १५८ राग-विलावल, सारंग १५७, १५८, १६०-१६१ १५८, १६० १५८-१५९
१२२२	१२२२० (३०)१-२	पद संग्रह (रामानवमी के)	परमानन्द, कल्याणदास	१६वीं श०	१८x१६.५	९९ वा
१२२३	१२२१० (९)	पद-संग्रह (रास के)	रसिकदास	१६वीं श०	१८x१३ ५	४७-५२ राग-मालू, मालवगौड, विलावल, टोडी, मालव
१२२४	१२२२० (१३)१-३	पद-संग्रह (रास के)	कृष्णदास, परमानन्द कुभनदास	१६वीं श०	१८x१६ ५	७६ वा ७७ वा
१२२५	१२२१० (११)१-७	पद-संग्रह (रास कीर्तन के)	ब्रजभुजदास कृष्णदास परमानन्द, सूरदास, कुभनदास नददास, गोविन्दस्वामी	१६वीं श०	१८x१३ ५	५६-५७ ५७-५८, ५९, ६१-६३-६४-६६ ५८-५९, ६०, ६३-६४, ६६-६७ ५९ ; ६०-६१, ६३ ६२, ६६ : ६४
१२२६	१२२२० (१५)१-२	पद-संग्रह (रूप-चौदस के)	विष्णुदास, विट्ठल	१६वीं श०	१८x१६ ५	७७ वा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिप्याल (वि स मे)	माप (से मी. मे)	पृथ सख्या
१२२७	१२२२० (२) १-४	पद संग्रह (वर्ष उत्सव के)	सूरदास, चम्पभुज, परमानन्द विट्ठल	१६ वी श०	१६x१६.५	५६-५८, ५९, ६० ५८-५९, ५९-६०
१२२८	१२२१० (७)	पद-संग्रह (वामनजी की- वधार्ह के)	परमानन्ददास	१६ वी श०	१८ १३ ५	४१-४३ : राग-विलावल, सारंग, देवगधार, धनाश्री
१२२९	१२२२० (६) १-२	पद-संग्रह (वामनदादशी के)	सूरदास, परमानन्द	१६ वी श०	१६x१६ ५	७० वा
१२३०	१२२२० (१०)	पद-संग्रह (साभि के)	द्वारिकेश	१६ वी श०	१६x१६ ५	७०-७२ वा
१२३१	११६४८ (१३)	पद-संग्रह (सिद्ध एव नाथ)	हणुवत, हालीपाव, कणोरोपाव, भरथरी, रुघनाथ,	गु० १८५२	२७x१६ ५	२६६, ३६७ पत्र सा० ३६७-३६८ पर प्रेमकृत सिद्ध वदना है ।
१२३२	१२२१० (३०) १-३	पद-संग्रह (स्नान यात्रा के)	वल्लभ, परमानन्द, सूरदास	१६ वी श०	१८x१३ ५	१७४, १७५ ~ राग-विलावल, सारंग १७५ वा

राजस्थान प्रान्थविद्या प्रतिष्ठान (जायपुर-सग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थार्थ	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (स.मी मे)	पत्र सख्या
१२३३	१२२१० (१६)१-५	पद-सग्रह (हटरी के)	विठ्ठल, गोविन्दप्रभु सूरदास, नन्ददास रसिकदास	१६ वी श०	१८x१३ ५	६३; ६४, ६४, वा राग कान्हरो ६४ वा
१२३४	१२२२० (१७)१-२	पद-सग्रह (हटरी के)	परमानन्द, गोविन्दप्रभु	१६ वी श०	१६ १६ ५	७८ वा
१२३५	१२५०४	पद-सग्रह (हरि कीर्तन)	वल्लभ, कृष्णदास, चन्नभुजदास, श्रीभट	गु० १६०३	२३x१६ ५	१-३
१२३६	११००३ (३)	पद-सग्रह (हरिजस)	रामदास	१६ वी श०	२६ ५x१४ ५	३३-३६
१२३७	११००७	पद-सग्रह (हरिजस)	रामदास	१६ वी श०	२६.५x१४.५	१-३
१२३८	१२५७२ (१३)	पद-सग्रह (हरिजस)	परसराम	१६ वी श०	१० ५x८.५	३६४-३७८
१२३९	१२४२६ (३)	पद सग्रह (हरिजस)	पूरणदास	२० वी श०	१६ ५x१३	४०-५६

राजस्थान प्राञ्चावद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	भाषा (से.मी. मे.)	पत्र सख्या
१०४०	१२४२६ (६)	पद-संग्रह (हरिजस)	गुपतराम	२० वी श०	१६ ५×१३	१-६
१२४१	१२५४८ (२)	पद-संग्रह (हरिजस)	चतुर्भुजदास	गु० १८६०	१६×१२ ५	१५-३४ ; ५१ से १०८ दोहे अप्राप्त
१२४२	१२५७१ (२)	पद-संग्रह (हरिजस)	जैमलदास	१६ वी श०	१०.५×८	१८-५३ २६ वा पत्र अप्राप्त
४३	१२६७२ (६)	पद-संग्रह (हरिजस)	रामदास	१६ वी श०	१० ५×८.५	१६६-१६८ , १६६, २०३-२०८, २१२ २१३, २१४-२१७ १६८-१६६, २००-२०३, २०६-२११, २१३-२१४
१२४४	१०८४६ (५)	पद-संग्रह (हरिजस)	जैमलदास	गु० १६३१	१७१	६-१२
१२४५	१०८५१ (१) १-२	पद-संग्रह (हरिजस)	रामानन्द, सेवगराम	१६ वी श०	१५ ५×१०	१-३ ३-६, राग-बसंत, मोरठ, पुरज, मारु, बिलावल, कानडी
१२४६	१०८५१ (१) ३	पद-संग्रह (हरिजस)	मीराबाई	१६ वी श०	१५.५×१०	६-१४, ४४-४६, ४८, ५७, ५६, ६२. ६५, ८१, ८२, ८४, ८६ राग-सोरठ, पुरज, बसंत

क्रमसू.	ग्रन्थसू.	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या
१२४७	१०८५१ (३) १६-२०	पद्म-संग्रह (हरिजस)	मीराबाई, बाजीद बखना, पीपा जानमुन्दर	१८ वीं श०	१५ ५x१०	८६, ६५, ६६, १००-१०३, १०७-१०८, १११-११३, ११६-१२०, १०२, १८३ १०३, ११८, ११९, १०४, १६४ १०४-१०५, १६४-१६५
१२४८	१०८५१ (३) ११-१५	पद्म-संग्रह (हरिजस)	नामदेव, जगजीवन नरसी, राघवदास माधवदास	१८ वीं श०	१५ ५x१०	८२, ८३, ८४ ८५-८६, १८४, ६८, १६५ ६६, १८४
१२४९	१०८५१ (३) ६-१०	पद्म-संग्रह (हरिजस)	सूरदास, रामदास हरिराम, छालबाल काजीमहमद	१८ वीं श०	१५ ५x१०	७२-७५, १६०-१६३, १६७; ७५, ७६, १५३-१८५ ६६, ६७, ७७-७८ ८० वा

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.मे.)	माप (से.मी.मे.)	पत्र संख्या
१२५०	१०८५१ (३)१-५	पद-संग्रह (हरिजस)	तुलसी, प्रेमदास सुन्दरदास, रज्जब जनहरिदास	१८ वीं श०	१५.५x१०	५६, ६५, १०५, १०६, ६०, ६०, ६१, ११७, १८२, ६०, ८७ ६६, ६७ राग-पिछुरी, धनाश्री, देवगंधार
१२५१	१०८५१ (१)४	पद-संग्रह (हरिजस)	कबीरदास	१९ वीं श०	१५.५x१०	१४, १५, ५६, ६५, ७०, ७१, ७२, ८६, ८५, ११६, ११७, १२३-१५३, १८६, १९६, १९७
१२५२	१०८५१ (१)५-६	पद-संग्रह (हरिजस)	जैमलदास, हरिरामदास	१७९२	१५.५x१०	१-३, ३-७, ६६, ६७ गुटके के पत्र १८५ तक प्राचीन हैं। आगे-पीछे नवीन पत्र लगाकर गुटके की सिलाई कर दी गई है। ८-१५, ३६-३८, १२०-१२१; १५-३२ ३२-३६, ३६, ४०, ६८, ६९, ७६ राग-सोरठ, कानडी, सारंग, वसंत ४०-४४, ६६-६८, १०६-११०, ११४-११६, १९८, २०० ४७, ४९ राग-होरी, मलहार, सोरठ
१२५३	१०८५१ (१)७-९	पद-संग्रह (हरिजस)	रामदास, बालबाल परसराम	१८ वीं श०	१५.५x१०	
१२५४	१०८५१ (१)१०-१२	पद-संग्रह (हरिजस)	सेवगराम सुन्दरविरहन, ईसरदास	१८ वीं श०	१५.५x१०	
१२५५	१०६००(१)	पद-संग्रह (हरिजस)	जैमलदास	२० वीं श०	१२x८.५	१-२ पत्र स २-४ पर बालबाल कृत 'ब्रह्म- स्तुति' है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सें. मी. से)	पत्र संख्या
१२५६	१०८६५ (३)१-२	पद-संग्रह (हरिजस)	जैमलदास, परसोतम	२० वीं श्रा०	१२.५x८	६-८, १०-११ पत्र स ६ अग्रिम
१२५७	१०८६६(१)	पद-संग्रह (हरिजस)	जैमलदास	१६१०	७.५x६.५	१-११
१२५८	१०८६६(७)	पद-संग्रह (हरिजस)	परसराम	१६१०	७.५x६.५	१०८-११५
१२५९	१२२१० (३३)१-११	पद-संग्रह (हिडोरा के)	कृष्णदास, चन्नभुज कुं भनदास, विठ्ठल गोविन्दप्रभु, बलभ सूरदास, परमानन्द नन्ददास, रसिकदास धोषी	१६ वीं श्रा०	१८x१३.५	१८१-१८४, १६४, १८५, १८२ १८६, १८१-१८२, १८३; १८६, १८६ १८७-१८८, १८३, १८५, १८० १८१-१८२, १८३ १८४, १८५ १८५ वा गुटका अपूर्ण है। पदों का दुर्लभ संग्रह है। राग—धनाश्री, मलार, कान्हरी, मालव, नट, केदारो
१२६०	१२२१० (२४)१-७	पद-संग्रह (हिडोरा के)	परमानन्द, विष्णुदास सूरदास, कृष्णदास चन्नभुजदास, रामदास नन्ददास	१६ वीं श्रा०	१८x१३.५	१४६, १५१, १५२, १५० १५०, १५१ १५१, १५२ १५३ राग—देवगधार, जंतश्री, कल्याण, सारंग

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी - हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग-३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या
१२६१	१२२२० (३७)८-११	पद-समूह (हिंदोरा के)	कु भनदास, विठ्ठल मोहनप्रभु, आसकरन	१६ वीं श०	१६.४१६.५	११२, ११३-११४ ; ११२ ११३ वा गुटके में पदों का समूह ३८ शीर्षको से किया गया है। गुटका अपूर्ण।
१२६२	१२२२० (३७)१-७	पद-समूह (हिंदोरा के)	कृष्णदास, कल्याण नारायणदास, गोविंदप्रभु परमानन्द रसिकदास, सुरदास	१६ वीं श०	१६.४१६.५	१०६-११०, ११४, १११ १११, ११२, ११६, १११, ११४, ११५-११६ १११-११२, ११५ ११२ वा
१२६३	१२३११ (११)११-१६	पद-समूह (होरी)	मोरा कबीरदास सुरदास	१६४०	१७.५.४८.५	५५०-५५१, ५५३-५५४, ५५६-५५८, ५६१-५६२, ५७४, ५७५ ५५१-५५२, ५५४-५५५, ५६५-५६६ ५५२-५५३, ५५८-५६१, ५६२-५६३, ५७५, ५७६, ५७७ ५६३-५६४, ५६७, ५७०-५७३ ५६८, ५८०, ५६६ ५७३-५७४ ; ५८२ पत्र सं० ५८२-५८४ तक गुटके की कृतियों का ब्योरा है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या
२६४	१२२१७ (४)२१-२६	पद-संग्रह (होली)	माधोदास, सूरदास कृष्णदास, आसकरन कासीराम	१९ वी श०	२१ ५x१२	१०७ ; १०७-१०८ १०८ वा १०९ वा पत्र स ९० पर सेनारा दूहा, छत्तीस पौणि (जाति) तथा पुरुष दशा को टीप है ।
२६५	१२४२६ (१)१-८	पद-संग्रह (होली, बसंत के)	जनहराराम, कबीर द्यालबाल, कासीराम जनरामा, आत्माराम छोतमदास, सूरदास	२० वी श०	१६ ५x१३	१-३ , ३,४,६,११ ४,५,६-७ , ५ ८ , ९ १० ; १२
१२६६	१०८६४ (१)१-५	पद-संग्रह (होली-रागबद्ध)	जनदरिधा, सुखराम प्रेमदास, नित्यानंद नगदास	गु० १८९७	१०.५x१७	१-६ ; ६-१०,५६-६२ ११-३४,३९-४३ ; ३४ ३४-३५

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप से. मी. में	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२६७	१०६०६ (२)	पद्मावतीरास	समयसुन्दर	१६२८	२३.५x१०.५	१५-१८	लि. क. मुनि हीर सागर
१२६८	१०६२८ (२)	पन्ना-वीरमदेरी बात	किशोरसिंह	१८८६	२२x१७	१-३६	लि. क. बाल हरलाल लि. स्था. हरिद्वर्ग
१२६९	१२३०८	पन्ना-वीरमदेरी बात सचित्र	कवर शेरसिंह	१९ वी श०	२१x१४	८ पत्र कुल	चि. स. ८१ मरम्मत किए हुए । बात अपूर्ण
१२७०	१०८६६ (११)	परचै-प्राण जोगग्रन्थ	द्यालबाल (दयालदास)	गु० १६२७	८ ५x७	५२२-५३७	
१२७१	१०७३२	परदेसी राजारी चौपई	अज्ञात	१६४०	२४x११ ५	१-१६	लि. क. नथेजीराम लि. स्था. रियाी
१२७२	१०६७२	परदेसी राजारी चौपई	अज्ञात	१८८०	२३.५x१०.५	१-१५	लि. क. मानजी लि. स्था. मेड़ता

क्रमांक	ग्रन्थारूप	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (से.मी मे)	पृथ सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२७३	१२३७३	परदेसी राजारो चौपई	अज्ञात	१८५७	२५.५x११.५	१-१६	लि क उमेद लि स्या नगर सरवाड
१२७४	१०८०६	परदेसी राजारो सधी	अज्ञात	१८६६	२५.५x११.५	१-१४	लि क सत्तुडी लि स्या वधेरा
१२७५	१२१५६(१)	परमसुख वत्तीसी	अज्ञात	१९वी श०	२५.५x११.५	१-२	
१२७६	१०८०६	परमात्मप्रकाश-भाषा (ढालवद्ध)	मू० योगेन्द्रदेव सुरि टी० धर्ममन्दिर गरिण शिष्य दयाकुशल	१९वी श०	२५.५x१३	१-२६	र कै १७४२ जेसलमेर लि क. प क्षमासागर लि स्या सोजतदुगं
१२७७	१२५६४	परमार्थशिक्षा		गु० १८८६	१४.५x१०.५	६-१५	प्रारम्भ के ८ पत्र अन्नाप्त
१२७८	१०८५० (३)	परसरामजी को कृत	परसराम शिष्य रामदास	१८६६	१७x१०.५	५४-११६	लि क खण्डूराम लि. स्या. कोटा

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२७६	१०८६६ (६)	परसरामजी के छुटकर सबद	परसराम	गु० १६१०	७.५x६.५	३१६-३६६	लि. क. केवलराम लि. रघा. सवाई जयपुर रावजी का बाग पत्र स. ३५२ पर सेवगराम के पद है।
१२८०	१०८६८ (२)	परसरामजी के छुटकर सबद	परसराम	१६२७	८.५x७	२८-३६	
१२८१	१२४२० (१४)	परसरामजी के छुटकर सबद	परसराम	२० वीं श०	१६x१४	३४२-३५२	
१२८२	१२२०४ (१)	पवनविजय स्वरोदय	मोहनदास कायस्थ	१८५८	१७x१५.५	१-२६	लि. क. फतेहचन्द लि. रघा. श्रवन्तिका नगरे
१२८३	१०६०२ (१७)	पशुव (पशुओ) की रास		गु० १८०६	१५.५x१२.५	८६-९०	पशु जीवन पर श्राध्यात्मिक विचार।
१२८४	१२३२० (२२)	पाच पाण्डव सजभाय		१८ वीं श०	२१.४x१४.५	२७-२८	
१२८५	११०८२ (२)	पाच सहेलियारी बात		गु० १८४३	१८x१०.५	२३-२७	

क्र.सं.	पुस्तक	रचयिता - नाम	कला	लिपिपद्धति (वि.सं. मे)	भाषा (से. सी. मे)	पृष्ठ संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६८६	१२३७० (४२)५-६	पार्थिव प्रसिद्ध मया पृथ प्रसिद्ध मया सूत्र	सधराज	१८ वीं श०	१६२११५	१११-१२२, १२२-१२६	प्रागुक्त एवं अथर्व वेद
१६८७	११०१३ (२७)	पार्थिवरा दीक्षा-सोपान	सधराज	१८ वीं श०	२३२१५	१४८-१५६	र का १७७८ महाराजा जसवंतसिंह जी के समय में कुल दाहे ३०२ लि क अपि हरचन्द आर्या रत्नाजी पठनार्थ
१६८८	१२३२० (३०)	पारसो (पटोहा वीर को)	गुनि रत्नचन्द	१७६२	२१५५१४	३५-३७	
१६८९	१२३७० (२१)	पार्थिवनाथ-गीत	गुनि रत्नचन्द	१९ वीं श०	१६२११५	२०७-२०८	
१६९०	१२२१८ (५) ६७	पार्थिवनाथ-गीत	हर्षकुशल	१८ वीं श०	२६५२१०	८६ वा	
१६९१	१२२१८ (५) १०२	पार्थिवनाथ-गीत	जिनहर्षसूरी	१८ वीं श०	२६५२१०	११६ वा	
१६९२	१२२१८ (५) १५१	पार्थिवनाथ-गीत	जसवंत	१८ वीं श०	२६५२१०	१६४ वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लিপिकाव (वि स से)	माप (से मी से)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१२६३	१२१६० (१)	पार्श्वनाथजीरो छन्द	अज्ञात	गु० १८६७	२१x११.५	१-२	लि. क. रंगसागर लि. रथा. जैतारण
१२६४	१२३७० (३०)	पार्श्वनाथजीरी नीसाणी	जिनहृष	१६ वी श०	१६x११.५	२-७	गुटके में २६१ के बाद चार पन्नों को छोड़कर पुनः- पन्नांक १ से प्रारम्भ
१२६५	१२२१८ (५) १२५	पार्श्वनाथजीरी नीसाणी	जिनहर्ष	१८ वी श०	२६ ५x१०	१२५-१३७	
१२६६	१२३२० (२३)	पार्श्वनाथजीरी नीसाणी	जिनहर्ष	१८ वी श०	२१.५x१४.५	२८-३०	
१२६७	१२५३५ (१७) १	पार्श्वनाथजीरी लावणी	जिनराज	२० वी श०	१६x१२	११४-११६	पत्र स. ११६, ११७ पर सेवाराप तथा चद्रकिशत के स्फुट पद हैं ।
१२६८	१२२१८ (५) ४८	पार्श्वनाथजीरो वारामासो	जिनहर्ष	१७५५	२६ ५x१०	६४-६५	
१२६९	१२३७० (१७) ८	पार्श्वजिन भयहरस्तोत्र		१६ वी श०	१६x११.५	१४८-१४९	पत्र स. १४९-१५५ पर संस्कृत में 'ऋषिमडलस्तोत्र' है ।

क्र.सं.	प्रमाण	क्रम-सं.	वर्ण	निष्कान (वि.सं. में)	माप (से.मी. में)	पत्र-संख्या	विशेष-ज्ञातव्य
१५००	१२३७० (१७)७	पार्श्वनाथ नन्दर स्तोत्र	जिनपद्मसूरि	१६ वीं पृ०	१६×११.५	१४७-१४८	'अप्यथ श' मे । शुटके मे प्राचीन स्तुति नवन मगद है ।
१५०१	१२२०५ (१७)	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१८ वीं पृ०	१७×११	२१ वा	
१५०२	१२३७० (४२)१३	पार्श्वनाथ स्तवन	सदानन्द पाठक	१६ वीं पृ०	१६×११.५	१३०-१३१	पत्र स १३२-१३६ पर रूपचन्द आदि कृत स्फुट पद है ।
१५०३	१२३७० (१७)४	पार्श्वनाथ स्तवन	जिनभक्तिमुरी	१६ वीं पृ०	१६×११.५	१६३-१४४	पत्र स १४४-१४५ पर सस्कृत मे 'मौनिकादशी स्तुति' है ।
१५०४	१२३७६ (३)	पार्श्वनाथ स्तवन	वनारसीदान	२० वीं पृ०	१६×११.५	१-३०	पत्र स २४ तक ६ पंक्ति बाद मे १२ पंक्ति प्रतिपन्न ।
१५०५	११५८४ (३५)	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१८ वीं पृ०	१६×११.५	२६४ वा	पत्र खण्डित
१५०६	११५८५ (८)३४	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१६ वीं पृ०	१६×११.५	१६८-१६९	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निर्णिकाल (वि स मे)	माप (सें.मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३०७	११५८५ (८)४२	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१६ बी श०	१६ ५x११ ५	१७६ वा	१७६ पर आनन्दधन का पद है ।
१३०८	११५८५ (८)४७-४८	पार्श्वनाथ स्तवन एव पद	वृद्धिकुशल, रूपचन्द्र	गु० १८४६	१६ ५x११ ५	१८७ वा	
१३०९	१२२०५ (१६)	पार्श्वनाथ स्तवन	मतिविशाल	१८ बी श०	१७x११	२० वा	
१३१०	१२२०५ (५०)	पार्श्वनाथ स्तवन	पासचद	१८ बी श०	१७x११	१३१-१३२	
१३११	१२२१८ (६)	पार्श्वनाथ स्तवन	रत्नहर्ष	१८ बी श०	२६ ५x१०	१७-१८	गुटका १७५५ से १७६७ तक विभिन्न स्थानों पर लिखा गया है । प्रमुख रूप से जैन स्तुतिस्तोत्र एवं सज्जाय सगृहीत है । प्रारम्भ के १६ पत्र अप्राप्त
१३१२	१२२१८ (५)	पार्श्वनाथ स्तवन	जगरूप	१८ बी श०	२६.५x१०	३४ वा	

क्रमांक	अध्याय	ग्रन्थ - नाम	काला	विषयवस्तु (वि. नं. मे.)	भाग (सं. प्रो. मे.)	पत्र गणना	विशेष ज्ञातव्य
१३१३	१३२१८ (१७) २६-३५	पार्श्वनाथ स्तवन	भानोदय, रत्नराज	१८ वीं श०	२६ ५५१०	६१ वा	'वामारानी' पार्श्वनाथजी की माता का नाम था। पत्र १०१-१०२ पर 'सीमधर जिन स्तुति' 'प्राकृत' में है।
१३१४	१३२१८ (२०) ११०	पार्श्वनाथ स्तवन (वामारानी पार्श्वनाथ)	जिनचर	१८ वीं श०	२६ ५५१०	१२२ वा	
१३१५	१३२५५१ (१०)	पार्श्वनाथ स्तवन	अज्ञात	१६ वीं श०	१३३११	१०१ वा	
१३१६	१३२५५१ (१६)	पार्श्वनाथ स्तवन	दानविनय	१७ वीं श०	१३३११	१३४-१३५	र. का. १६६३ पत्र ७२-७३ पर 'देव-लक्ष्मणी' टीप है।
१३१७	१३२५७५ (१६, २१)	पार्श्वनाथ स्तवन (रामपुरा)	गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर होत्रहर्ष	१६ वीं श०	१३३५१४	६४	
१३१८	१३२५७५ (२६, ३१)	पार्श्वनाथ स्तवन	मुनिमनोहर शिष्य होत्रहर्ष गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर	१६ वीं श०	१३३५१४	८७-९० ९३-९४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. से)	माप (से.मी. से.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३१६	१२५७५ (२३, ३५)	पार्श्वनाथ स्तवन (मगसी पार्श्वनाथ)	अज्ञात, गुणसागरसूरि शिष्य पद्मसागर	१६ बी.आ.	१३ ५x१४	७४-७५ १०३ वा	पत्र स १०४ पर रायचन्द कृत स्फुट पद है।
१३२०	११२८३ (५)	पाषाकेवली	अज्ञात	गु० १७८६	१६x१४ ५	७३-८२	अपूर्ण, कीटविद्ध
१३२१	११६४०	पाषाकेवली	अनारि	१८ बी.आ.	२६ ५x१३.५	१-२	स्फुट दो प्राचीन पत्र मात्र
१३२२	१०६२४ (२६)	पिसणश्रृंगार	सेवादास	१६ बी.आ.	२३x१२ ५	६३४-६३६	५१ से ७६ तक के दोहे अप्राप्त है।
१३२३	१०६४८ (५)	पिसणश्रृंगार	सेवादास	गु० १६३५	१४ ५x७	६८-११६	
१३२४	१०६३८ (६)	पिसणश्रृंगार	सेवादास	गु० १८८५	१६ ५x८.५	५६१-५७०	दोहा १०१, सोरठा १६

क्र.सं.	प्रमाण	प्र.सं. - नाम	कला	निर्माण (वि.सं. में)	माप (से.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष आशय
१२२५	१००६१	गो.ग.।। प्रमाण (जैन)		५६ की ला०	६६.५५११	१-७	करपरादी की कथाएं ।
१२२६	११५८२ (२३)	गो.ग.जी की परची	प्रमत्तदास	१६६३	१८२१५	१६५-२३६	लि क जगजीवन ईसरदास पाठनाथ
१२२७	१२३८० (२८)	गो.ग.जी की परची	प्रमत्तदास	गु० १७२४	२०५१४	३४०-४१७	अपूर्णा
१२२८	१२५८५ (१)	गो.ग.जी की परची	प्रमत्तदास	१६२७	१६५५१५	१-११६	गुटके में परचीसाहित्य की हड्डी से दुर्लभ समृद्ध है । लि क. शारतराम शिष्य सुलभराम लि रथा बदनीर
१२२९	११६४८ (१८)	गो.ग.जी की वाणी	गो.ग.	गु० १८५३	२७२१६५	५४६-५५२	राम ६, पद २१
१२३०	१२२०८ (२)	गु.ग.ल वल-अन्न नंद		१७७४	२५४१८५	६६-६८	लि क. मुनि आसकरण

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप से मी मे	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३३१	१०७५८	पुन्यविलास-रास	जिनहर्ष खिल्य शान्तिहर्षगणेश	१८३०	२६ ५×१२.५	१-५६	पत्राक ३ से २२, २७, व ३१ से ३६ तक अप्राप्त । लि. क प. जैतसी गणेश लि. स्था. डोंगियावास (जोधपुर महाराज श्री विजयसिंह-राज्ये)
१३३२	११०१३ (३२)	पुरुषाधमछन्द		गु० १८२२	२३×१५	२०१ वा	
१३३३	१२४११ (४)	पुरुषोत्तम सिद्धान्त		१६ बी षा०	२१×१४	६६-११०	
१३३४	१२४२२ (४)	पृथ्वीनाथजीरी सबदी	पृथ्वीनाथ	गु० १८३१	१५×१०.५	२४२-२४३	
१३३५	११०१३ (२३)२	पेटरा कवित्त		गु० १८२२	२३×१५	१४१-१४३	३४ कवित्त है ।
१३३६	१२१६६(३)	पोषदमसी व्याख्यान		गु० १६७५	२७×१४	२७-२६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सेंमी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३४२	१०८७८	प्रत्येकबुद्धि चतुष्पदिका	समयसुन्दर वाचक	१८६७	२४ ५x१२ ५	१-२८	य. का १६६५ लि. क. सवाईमागार लि. रथा बीकानेर
१३४३	११५८२	प्रबोधचन्द्रोदयनाटक-भाषा	कवि मलह अपरनाम मथुरादाम शिष्य खेमचन्द्र	१७१७	१६ ५x१५	१-३८	पत्र सख्या १-३ अग्राम
१३४४	१०८४०	प्रवीणसागर	प्रवीणाराय	१६ वी श०	३५x२०	१२-१४१	अपूर्ण। अष्टम लहर से ७२ वी लहर तक। सजिद। सिलार्ह टूटी हुई है।
१३४५	११५८४ (३१)	प्रथमचन्द्रवि चउठालियो	श्रुषि उदयगणि	१७२८	१६ ५x१७	२२४-२२५	
१३४६	१२५६१ (१८)	प्रथनोत्तर	रामदास	२० वी श०	१५ ५x१०	६७-६६	पत्र स ६५ पर 'आठ मुख' पत्र स ६६ पर 'स्थूल शास्त्र परिचय' है।
१३४७	१२५६१ (३३)	प्रथनोत्तर	हरिदेव	२० वी श०	१५ ५x१०	२१२-२१५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि स मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३४८	१०६५६ (५)	प्रश्नोत्तर ज्ञानरत्नमाला भाषाप्रश्न-प्रकशिका	सू शकाराचार्य रामदासभट्ट शिष्य तुलसीदास	२० वी श०	३२४१६	१-१५	पद्यानुवाद र रथा मलारना "मथुरा मडल माहि"
१३४९	१०६३८ (७)	प्रश्नोत्तरमाला		गु० १८८५	१६ ५४८ ५	५०२-५२३	
१३५०	१०८४९ (२५, २६)	प्रश्नोत्तरमाला		गु० १९३१	१७४११	१८४-१८९	
१३५१	१०९०० (६)	प्रश्नोत्तरी	जनहरिराम	२० वी श०	१२४८५	४९-५१	
१३५२	१२५८१ (४)	प्रश्नोत्तरी		१९ वी श०	१६४१० ५	३९-४१	पत्र स. ४१ पर स्फुट संवेद्या है।
१३५३	१०८४८ (८)	प्रश्नोत्तरीभाषा	बालकराम	१९ वी श०	१५.५४८	६८२-७१५	र का १८२१ भीतवाडा
१३५४	१०९२४ (८)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	गु० १८४०	२३४१२ ५	५०४-५१२	

राजस्थान प्रान्थविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर - समूह) राजस्थानो-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (सें.मी. मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३५५	१०६४० (३)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	गु० १८८३	१५ ५×१०.५	४१६-४४५	
१३५६	१०६४५ (४)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	१६ बी.श.०	१४ ५×७ ५	४०५ ४५४	
१३५७	१०६४८ (३)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	गु० १६३५	१४ ५×७	३०-६६	
१३५८	११५८३ (६)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	गु० १६६३	१८×१५	७८-६६	
१३५९	१२३२६ (४)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	२० बी.श.०	२३×६.५	३६२-३७३	
१३६०	१२३८० (२३)	प्रज्ञादचरित्र	अग्रदास	गु० १७२४	२०×१४	२६७-२७८	
१३६१	१२४२० (१७)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	२० बी.श.०	१६×१४	३६०-३८०	

राजस्थान प्राग्वहविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	भाप (सें मी मे)	दश सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३६२	१२४२२ (१८)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	गु० १८३१	१५x१० ५	३६६-४१२	लि क रुपराम लि स्था. खैडापा
१३६३	१२५६१ (१२)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	१६ वीं श०	२३ ५x१७	३६२-३६६	
१३६४	१२५६६ (४)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	१८२२	१६ ५x११	२३-४६	
१३६५	१२५७४ (१०)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	२० वीं श०	१६ ५x१० ५	१६५-२२७	
१३६६	१२६७२ (११)	प्रज्ञादचरित्र	जनगोपाल	१६ वीं श०	१०.५x८.५	२८१-३४६	
१३६७	१२२२६	प्रज्ञादचरित्र सचित्र	जनगोपाल	१६४१	३३.५x१७ ५	१ १३	विजय स — ६ पूर्व प्रति की चोरी हो जाने से ललितराम द्वारा पिता की आज्ञा से जोधपुर में बीघता से लिखी गई प्रति ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर - सम्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३६८	१२५५१ (३१)	प्राभातिक गीत	जयमल	१७ वीं श०	१३x११	१७१-१७२	
१३६९	१२२१८ (५)२५	प्राणलपात गीत		१८ वीं श०	२६.५x१०	३७ वीं	
१३७०	१२०६९ (५)	प्रियोरान चहुआण रासउ-रसान	चन्दवरदाई	१६६७	१५.५x१४	६१-१०७	धारणोज वाली बहुचर्चित प्रति, भगवानदासजी पठनार्थ पत्र स. १०६ पर सस्कृत से रतुति है। पत्र स. १११ पर स्फुट नुरखे हैं।
१३७१	११०१३ (४४)	प्रेमपत्रो		गु०१८१९	२३x१५	३१४-३१५	पत्नी द्वारा २१ दोहे एव पति द्वारा २५ दोहे कहे गए हैं।
१३७२	१२२१७ (१)	प्रेमरत्नाकर	भट्टया रत्नपाल	१९ वीं श०	२१.५x१२	१-१३	प्रथम पत्र खण्डित तृतीय से पंचम तरंग पर्यन्त

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३७३	१०८६१ (१)	प्रेम-स्तुति	हरिरामदास	१६ वीं श०	१६x१२	१-२	
१३७४	११६४८ (२७)	फरीदजी के पद	फरीद	गु० १८५३	२७x१६ ५	५७५४-७५	गुटके में सगुण, निर्गुण सत्तो की वाणी के ३४,००० श्लोक है। पञ्च जीर्ण हैं।
१३७५	१२२०५ (१३)	फलवद्धी-गार्ध्वनाथ स्तवन	जिनरगसूरि	१८ वीं श०	१७x११	१६ वा	
१३७६	२२२०५ (३१, ३५)	फलवद्धी-गार्ध्वनाथ स्तवन	जिनहर्षसूरि	१८ वीं श०	१७x११	११३-११४	पञ्च स १२० पर नामदेव का पद एव (जैन) देववदनरी विविध है।
१३७७	११६३५ (२)	फूलजी ने फूलमतीरी बात	अज्ञात	१६ वीं श०	२६ ५x१६ ५	५६-६४	प्रारम्भ में गणपति का चित्र है। ग्रन्थ चित्रों के लिए स्थान छोड़ दिया गया है। लि. क पुरोहित फतेकराण लि. स्था. जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३७८	१०६५५ (१)	फूलजी ने फूलमतीरी बात	अज्ञात	गु० १६०५	२३ ५x१७.५	१-१०	अपूर्ण
१३७९	१०७०१ (२)	फूलजी ने फूलमतीरी बात सचित्र	"	गु० १८६२	१६.५x१९२	७३-१५२	पत्र स. ७० से ७२ तक अप्राप्त । अपूर्ण । चित्र स. — ३६ लि. स्था. मेड़ता
१३८०	१२२२७ (१-२)	फूलजी ने फूलवतीरी बात सचित्र	"	१६ वी श०	१८ ५x१३	८-५१	चित्र स - १८; पत्र मरम्मत किए हुए हैं । दो प्रतियों को एक साथ सी दिया गया है । दूसरी प्रति महाजनी लिपि में सवत् १६५५ की है । पत्र स १-७ अप्राप्त, बीच के दो पत्र खण्डित
१३८१	१२३७१ (१८)	फूलजी ने फूलवतीरी बात	"	१८५२	१८ ५x१६ ५	६२-६४	गुटका १८३५ से १८३६ तक भीखनदास द्वारा नागौर में लिखा गया; अतिम कृति जोधपुर में लिपिकृत है । अगले पाच पत्रों पर स्फुट नुरखे हैं ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से मी मे)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३८२	१२५८५ (६)	फूलीवाहीरी परची	सुखसारण	गु० १६२७	१६ ५ x १५	२६६ २८२	महाराजा जसवतसिंहजी के समय की जाटकुलीय भक्त महिला
१३८३	१२२२८ (५) ५६	वभणवाही सजभाय	कमलकलया	१८ बी ष०	२६ ५ x १०	८१-८२	सन् १७०० में परवतसिंह जी के पुत्र तूणकरा के समय से प्रारम्भ । महाराजा मानसिंह जी के समय इसके पिता नदासिध को 'लाख-पसाव' से अलङ्कृत किया गया था ।
१३८४	१०६३५ (३)	बड़े रारी वसावलीरी याददास्त		१६ बी ष०	२१ ५ x १७.५	१-७	
१३८५	१२६१२ (८)	बडो-कमलौ	गुलाबमद	गु० १८१७- १८३६	२५ x १५	२४ ०७	
१३८६	११६४८ (२२)	वाजीनजी की दारोगी	वाजीनद	गु० १८५३	२७ x १६ ५	५६३-५६४	उपदेशात्मक पद्य

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.मे)	माप (से.मी.मे)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३८७	१२५६२ (४)	वारह्मवना	जगदीश स्वामी	१८८६	१४.५x१०.५	६१ वा	लि. क. लिखमण
१३८८	१२५५१ (१६)	वारह्मवना सधि	जयसोम शिष्य प्रमोद माणिक्य	१७ वीं श.०	१३x११	११२-११६	र. का. १६४६ बीकानेर
१३८९	११८६६	वारह्मस व्रत-स्तान-विधि			२२x११	२-३४	अपूर्ण; पद्मपुराण एव स्कन्ध-पुराणगत
१३९०	१२५७७ (११)१, (१६, १८)	वारह्मसी	बालकदास हृदयराम शिष्य माधोदास तुलसीदास	१९ वीं श.०	१४.५x१०	१३०-१३५ १६१-१६५	
१३९१	११५८५ (४)	वारह्मसी		१९०४	१९.५x११.५	३५-३८	गु० कोचर परिवार का है। लि. क. लिखमीचन्द कोचर लि. स्था. वाला हेड़ी, सवाईजपुर

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पन्ना संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३६२	१२२०८ (६)	वारह्मण बारह-प्रतिचार		गु० १८वीं भा०	२५.५८ ५	११४-११८	महाजनो लिपि
१३६३	११०६१ (२)	वारमासारा दूहा			१६ ५.५२	१०३-१२५	पन्ना १२२-१२३ पर राधाकृष्ण-भक्ति परक दोहे हैं।
१३६४	११०८६	वारमासो	ब्रह्मदास शिष्य रामदास	१८१८	२१ ५.५१५	२ २१	प्रभते पञ्चो पर भोगा के पद, 'चलकली प्रफुल्ल विचार' एवं 'हनुमानाष्टक' है।
१३६५	११५८५ (८) ५०	वारमासो		१८८७	१६.५.११६.५	१८६ १६२	
१३६६	१०८४७ (४)	वासणचरित्र	परमराम	गु० १६६६	१७.४८	५०३-५२६	
१३६७	१०६०२ (६)	बालगचरित्र	परसराम	गु० १८०६	१५ ५.५१२.५	३३-४०	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पृष्ठ संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३६८	१०६२४ (३०)	बालराजचरित्र	परसराम	२० वीं श०	२३x१२.५	६३६ ६३८	गुटका १८४० से १६३० तक लिखा गया है।
१३६९	११००३ (१)	बालराजचरित्र	परसराम	१६ वीं श०	२६ ५x१४ ५	१-३	कोट-विद्ध पृष्ठ स ३-४ पर सोलह स्वप्न विचार है।
१४००	१०६५०	बालपद्धति		१६२२	१४.५x८	११-८६	नाथ सम्प्रदाय की तांत्रिक विधि लि. स्था. जोधपुर
१४०१	१२२१८ (५) १२४	बाबीस श्रमिष वत्तीसी	अज्ञात	१८ वीं श०	२६ ५x१०	१३५ वा	
१४०२	१२१४८	बासठियो बालावबोध		१६१६	२६x१२.५	१-१४	'जोव के ६२ मार्गण करे ते कहै छै।' लि. क. गणपतविजय लि. स्था. सुभटपुरनगरे (जोधपुर)

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४०३	१२२०८ (५) ५२	बाहुवली-गीत	आणंद मुनि	१८ वीं श०	२६ ५x१०	६६ वां	पत्र स. ४८-५१ अप्राप्त ७१५ दोहे हैं। पत्र स. ७२ पर गोरखनाथ के कवित्त हैं। अतिम पत्रो पर कवीरदासजी की साखी आदि है।
१४०४	१२२१८ (५) ३६	बाहुवली सञ्ज्ञाय	समयसुन्दर	१७५५	२६ ५x१०	५७ वां	
१४०५	११३१३ (५)	विहारी सतसई	विहारीदास	गु० १८०२	१५x१४	१-५२	
१४०६	१२२०७ (३)	विहारी सतसई	विहारीदास	गु० १८१४- १८२४	२४x१७ ५	१-४४	
१४०७	११०८५ (१२)	विहारी सतसई के रघुद दोहे	विहारीदास	१६ वीं श०	१६.५x१३.५	७१-७३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४०८	११०५६	बिहारी सतसई सटिप्पण	बिहारीदास	१७८६	२२.१०.५	१-३४	लि. क. रंजीत सागर गण्डि लि. स्या. जोधपुर ७०३ दोहे हैं
१४०९	१२३७१ (१२)	बिहारी सतसई सटीक	म. बिहारीदास	गु० १८३९	१८ ५.५६.५	१-१२२	अपूर्ण, ६९७ दोहो तक
१४१०	१२३७० (१७)६	बीज स्तुति	लविषविजय	१९ वीं श०	१६.२११ ५	१४६ वां	
१४११	११०१३ (३०)	बुद्धिरासो		गु० १८२२	२३.२१५	१८९-१९२	शिक्षाप्रद ६७ छंद
१४१२	१२२१८ (५)८	बुधरासो		१८ वीं श०	२६.५.२१०	३०-३१	शिक्षाप्रद ४४ छंद
१४१३	११५८५ (३)	बुलाकीदास कायस्थ की विगत		१८७६	१९.५.२११.५	३४-३६	लि. क. शिवदास कोचर
१४१४	१२३७८ (२२)	ब्रजसूची उपनिषद्		१८ वीं श०	२२.२१५.५	१४०-१४१	कृति संस्कृत में है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	भाप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष शालव्य
१४१५	१२४११ (५)	अज्ञानियास उपनिषद्		१६ वी श०	२१५१४	१११-११४	
१४१६	१२३६० (१७)	अज्ञानियास उपनिषद्		गु० १७२४	२०५१४	२१८-२२०	
१४१७	१२२२६ (८)	अज्ञानियास भाषा		गु० १८७७	१४५१२५	५६-६०	
१४१८	१२३७२ (११-१०)	अज्ञानियास, अज्ञानसागर	चरनदास शिष्य सुखदेव	१६ वी श०	२४५१६.५	१४४-१४५ १२६-१४४	११ वी कृति अमूल्य ।
१४१९	१२५७७ (५)	अज्ञानियास	संतदास	१६ वी श०	१४.५५१०	७६-८७	
१४२०	१२२१४ (६)	अज्ञानियास आदि	जनगुरमी	१६ वी श०	२१.५५१३	१०३-१०७	वाणी के स्फुट प्रकरणमात्र
१४२१	१०८६६ (२)	अज्ञानियास	हरिरामदास	गु० १९१०	७५.५६.५	११-१३	गीतक छंद

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४२२	१२५७२ (२)	ब्रह्मचरुति	हरिरामदास	१६ वीं श०	१० ५x८ ५	६-६	
१४२३	११०८६ (७)	भैरवगीता (अमरगीत)	विष्णुदास	१६ वीं श०	१८.५x१६ ५	६६-७५	छंद सख्या १२०
१४२४	१२५७७ (१०)	भक्त पचीसो	बालकदास शिष्य प्रेमदास	१६ वीं श०	१४ ५x१०	१३०-१३५	
१४२५	११०१२	भक्तमाल	छालबाल (दयालदास)	१८७२	३०x१४ ५	१-८०	लि. क. तुलसीराम लि. स्था. पचगाया केवास टैंड मध्ये ५३६ छंद है।
१४२६	१२३७३ (१५)	भक्तमाल	छालबाल शिष्य रामदास	१६०६	२२x१५ ५	७७-१६२	र का. १८६१ लि क बिहारीदास वैष्णव लि स्था पालो
१४२७	१२३८० (२२)	भक्तमाल	नारायणदास (नाभोदास) शिष्य अग्रदास	गु० १७२४	२०x१४	२३४-२६६	

॥४॥ ग्रन्थानां प्रतिलिखितानां (बोधपुर - सप्तह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

अ.मा.सं.	ग्रन्थासू.	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४२८	१२४२० (३)	भक्तमान	रामदास	२० वीं श०	१६x१४	१-२०	
१४२९	१२४६१ (२६)२	भक्तमाल	रामदास	२० वीं श०	१५.५x१०	१५३-१७४	
१४३०	१२३२३	भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त	सू. नाभादास टी प्रयादास	१६२८	२६.५x१७	१-१०५	र का १७६६ लि क हरमुखदास, तिलरी के सती की परम्परा का लि. रथा बीदासर पत्र स १-२, ६५-१०४ खण्डित
१४३१	१२५०८	भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त	सू. नाभादास टी प्रयादास टिप्पण लालदास	१८६२	३०.५x१४	१-१०४	
१४३२	११०४३	भक्तमाल टीका- 'भक्तिरसबोधिनी' युक्त	सू. नाभादास टी प्रयादास	१८७६	३१x१४.५	१-१५१	र का. दस सात सत्तज्ज- त्तर फाल्गुन मास वदि सप्तमी लि क जमनादास लि रथा जोधपुर प्रथम एव अतिम पत्र खण्डित

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४३६	१२०७४	भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी'	सू. नाभादास टी. प्रियादास	१८४६	३०.५x१५	१-१२	लि. क. कानडपथी सदाराम बाबाजी सूरत रामजी के लि.। लि. स्था. नागपुर (नागौर) पत्र स. ६६ अग्रपत्र
१४३७	११५५२	भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी'	सू. नाभादास टी. प्रियादास	१८४०	२५x१२.५	१-१४२	र. का टीका १७६६ लि. क. रामकृष्ण वैष्णव लि. स्था. नागपुर (नागौर)
१४३८	११५४४	भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी'	सू. नाभादास टी. प्रियादास	१६ वीं श.०	२५.६x११.५	१-१२८	र. का टीका १७६६ वृन्दावन लि. क. चरणदास वैष्णव लि. स्था. गाव छपिया
१४३९	११५६२	भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी'	सू. नाभादास टी. प्रियादास	१८६५	३१x१५.५	१-८६	पत्र स. ८५ वा अग्रपत्र ४६ वा दोबार अतः मे एक होली का पद है। र. का टीका १७६६ लि. क. यमुनादास लि. स्था. मुरलीमनोहरजी का मंदिर, बोकोनेर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४४०	१२०१५	भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी'	सू. नाभादास टी. प्रियादास	१६ वीं श.०	१४.५x११	१६८	अपूर्ण, ३१३ दोहे पर्यन्त
१४४१	११५४२	भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी'	सू. नाभादास टी. प्रियादास	१६ वीं श.०	२०x११ ५	२२१७	प्रथम पत्र अप्राप्त अतः मे लालदास कृत प्रशस्ति पद्य है।
१४४२	१२३८४	भक्तमाल भाषा टीका- 'भक्तिरसबोधिनी'	सू. नाभादास टी. प्रियादास	१६ वीं श.०	३१.५x१६	१-८४	२ का मूल १७६६ अतः मे लालदास कृत प्रशस्ति पद्य है।
१४४३	११६४४	भक्तमाल भाषा टीका	सू. राघोदास टी. चतुरदास	१८८७	२६x१५	१-६४	२ का. मूल १७१७ २ का टीका १८५७ लि. क. रामभजनदास लि. स्था. नागोर प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला में प्रकाशित।
१४४४	१२५०३	भक्तरत्न	जैदास	१६३२	२१.५x१६	१-२५	२ का १८३७ २३३ दोहे हैं। महाजनी लिपि में

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ - सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४४५	१२५५६ (४)	भक्त-विरदावली	भगवानदास	गु० १८५६	२२ ५x१६	१०७-११०	लि. क. विद्याप्रमोद लि. स्था. रूपनगर पत्र स ७० पर सतान होने का नुस्खा है ।
१४४६	१२२१८ (३)	भक्तामर भाषा	हेमराज	१८ वीं श०	२६ ५x१०	२०-२३	
१४४७	१२३२० (२८)	भक्तामर स्तवन	सोमरत्न	१८ वीं श०	२१ ५x१४ ५	३३ वा	
१४४८	१२२०५ (२३)	भक्तामर स्तोत्र	मानतु गसूरि	१७५०	१७x११	६४-६६	
१४४९	१०८६८ (१)	भक्ति जोगग्रन्थ	रामानन्द	१९ वीं श०	१० ५x८	१-३	
१४५०	१०८६९ (१४)	भक्ति जोगग्रन्थ	सुन्दरदास	गु० १९२७	८ ५x७	५५०-५५८	
१४५१	१०९०२ (१३)	भक्ति जोगग्रन्थ	रामानन्द	गु० १८०९	१५ ५x१२.५	८२-८३	

क्रमांक	ग्रन्थाक्ष	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.मे)	भाप (सें.मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४५२	११४८५	भक्तिभावती	लालदास शिष्य द्वारिकादास शिष्य प्रपन्न गंगानन्द	१६ वीं श०	२५.५११५	११५	र का १६०६ मथुरा-केशवालय
१४५३	१०६४० (४)	भक्तिविधान-जोगग्रन्थ		गु० १८८३	१५.५.१०.५	४४६-४६५	गर्भगीता, भागवत आदि के श्लोक देते हुए भक्तिमहिमा का वर्णन किया गया है।
१४५४	१०८६६ (८)	भगतमाल	खालबाल शिष्य रामदास	गु० १६१०	७.५.४६.५	१५८-३१६	लि. क. रामसजन शिष्य सेवगराम
१४५५	१०८७२ (१)	भगतमाल	खालबाल शिष्य रामदास	१६ वीं श०	२७.५.१५	१-४६	र का १८६१ कासी वद एकादशी
१४५६	१०८७२ (२)	भगतमाल	पूरणदास	१६ वीं श०	२७.५.१५	१-४	लि. क. पूरणदास शिष्य खालबाल अपूर्ण, चार पत्र मात्र हैं।
१४५७	१०६६७	भगतमाल का प्रसंग-दृष्टांत		२० वीं श०	२५.५.१२.५	१-७०	१०० दृष्टांत व कथाएँ दी हैं। अतः मे कुलधरणा नारी के बारे मे दो सवेये है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४५८	१०८५१ (६)	भगतविरह	चरनदास	२० वीं श०	१५ ५x१०	२००-२०३	
१४५९	१२३८० (१)	भगतिप्रताप		गु० १७२४	२०x१४	१११ वा	अपूर्ण
१४६०	१२५०४ (१)	भगवद्गीता सभाषा (गद्य)		१९०३	२३x१६ ५	१-५२	स्थाही फ़ैली हुई है। लि. स्था. जोधपुर
१४६१	१२०२०	भगवद्गीता सभाषा टीका (अपरनाम-परमानन्दप्रबोध)	शानन्दराम नाजर	१९०९	२३ ५x२०	१-१६७	लि. क. गुसार्द मानपुरी लि. स्था. जोधपुर, तखतसिंह विजयराज्य पत्र चिपके हुए हैं। अतिम पत्र खण्डित।
१४६२	१२२९३ (१)	भगवद्गीता सभाषा टीका सचित्र		१९ वीं श०	२२ ५x१६	१-८३	चित्र स — ४५ लि. क. एवं चित्रकार — विठ्ठलदास

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.मे)	माप (से.मी.मे)	पन्ना संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४६३	१२३०६	भगवद्गीता सभाषा टीका सचिन्म	भ्रानन्दराम नाजर	१६१५	३०.५x१५.५	१-६६	चिन्म स.-२५ लि. क. दीर्घाव भगवद्गीता कवीरपथी लालदास पठनाथ
१४६४	१२५६१ (१८)	भगवद्गीता सभाषा	भगवानदास निरजनी	१६ वीं श०	२३.५x१७	३७३-३८०	पंचम श्रव्याय पर्यन्त । पन्ना जीराण
१४६५	१०८४८ (४)	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	१६ वीं श०	१५.५x८	५०६-५६४	
१४६६	१०८४६ (४)	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	गु० १६३१	१७x११	१-६१	६८४ दोहे, प्रारंभ के तीन पन्नों पर बारखटी है । लि. क. साधु छद्मराम
१४६७	१०८६५ (१)	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	गु० १६४६	१२.५x८	१-२६	पन्ना स. २७ से २८ रिक्त
१४६८	१०६२७ (५)	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	गु० १८०६	२०.५x१०	१४६-१५३	अपूर्णा
१४६९	११२६४	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवल्लभ	२० वीं श०	१६x१२	१-७३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.से.)	माप (से.मी.से.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४७०	११४६६	भगवद्गीता भाषा पद्यानुवाद	हरिवरलभ	१६ बी.आ०	२२ ५.२१३ ५	७-६३	अपूर्ण १ से १६ एवं अतिम पत्र अग्राप्त
१४७१	१०८४१ (१)	भगवद्गीता सभाषा (गद्य)		१६००	२८.५१६ ५	१-५१	लि. क. मुरलीधर पुरोहित लि. रूपा जोधपुर
१४७२	१२२२५ (१)	भगवद्गीता सभाषा (गद्य) सचित्र		१६ बी.आ०	२४ ५.२१६ ५	१-८६	गु० चित्रस. ४६ पत्र स.- ५३ वा अग्राप्त
१४७३	१२४६४ (२)	भगवद्गीता सटीक 'पदबोधिनी टीका' एवं 'ज्ञानसतसर्द टीका'	भवामीदास पाठक जनहरिदास	१६२३	३३.२११	५-१५६	लि. क. मुरतराम ब्राह्मण लि. रूपा सिकन्दराबाद की छावनी र का १८११ भवामीदास पाठक ने पद- च्छेद व अर्थ माप दिया है।
१४७४	१२३५३	भगवद्गीता सटीक 'बालबोधिनी' टीका	कालूराम बोहरा	२० बी.आ०	३१ ५.२१६ ५	१-१५६	त्रिपाठ अपूर्ण, १८ वें अध्याय के ७७ वें श्लोक तक

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेंमी मे)	पृष्ठ संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४७५	१२४११ (१)	भगवद्गीता सटीक 'बालबोधिनो टीका'	कालूराम बोहरा पुत्र रामदत्त	१९ वी श०	२१x१४	३९-१८३	र. का. १८२५ पृष्ठ सं १ से ३८ अप्राप्त
१४७६	१०९५७	भगवद्भक्ति रत्नावली भाषा टीका सहित	सू. विष्णुपुरी टी चतुरदास शिष्य सतदास	१८९६	३२x१६	१-१५२	लि क आत्माराम 'मारवाड के पूर्व भाग मे भाषा लिखने का कार्य प्रारम्भ किया'
१४७७	१०९३२ (१)	भगवानदासजी की वाणी	सू भगवानदास सकलनकर्त्ता- काशीराम	१९२८	१७x१३ ५	१-३४३	लि क दयाराम लि स्था महामन्दि- र- जोधपुर
१४७८	१०९३४ (३)	भगवानद सजी की वाणी	भगवानदास शिष्य रामचरण	१९ वी श०	१४x८	७८-७०७	लि क मुलमदयाल, हरिदास एव मोबतराम
१४७९	१०९४४ (३)	भगवानदासजी की वाणी	भगवानदास शिष्य रामचरण	२० वी श०	८x५	२१-४४	
१४८०	१०९४५ (२)	भगवानदासजी की वाणी	भगवानदास शिष्य रामचरण	१९ वी श०	१४ ५x७ ५	२३६-३१९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४८१	१२२१८ (५) ८८	भजगोविन्द स्तोत्र	शकराचार्य	१७६७	२६ ५x१०	१०६-१०८	कृति सस्कृत है लि. क. रामकुण्ड लि. स्या. डिडपुर
१४८२	१२२२६ (१३)	भजगोविन्द स्तोत्र भाषा	सू. शकराचार्य	गु० १८७७	१४x१२ ५	६३-६४	पत्र स. ६५ पर तुलसीदास जी कृत स्फुट दोहे हैं।
१४८३	१२११८	भट्ट लीपुराण		१६ बी. ग०	२५ ५x१० ५	१-१२	अतः मे नक्षत्रों की स्थिति के आधारे पर वर्षा का फलाफल दिया है जो अपूर्णा है।
१०८४	१०८४६ (१६) १५	भरत की बारामासी	लालदास	गु० १६३१	१७x११	१२१-१२४	कर्ना वासवरेली के निवासी थे।
१४८५	१२१८५	भरत बाहुबलि सवाव	लक्ष्मोवल्लभ शिष्य लक्ष्मीकीर्ति (खेमकीर्ति भावा)	१८६६	२५x१२	१-५	छन्द सख्या १०३ लि. क. पंडित तिलकनिधान ज्ञानानंदजी वाचनाय लि. स्या. अजमेर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४८६	१०८६८ (५)	भरथरी उपदेश		गु० १६२६	१३४ ८५	८६-६५	
१४८७	१२२२६ (२२)	भरथरीजी की सबदी		गु० १८७७	१४४१२.५	६३४-६३८	
१४८८	१२४२६ (११)	भरथरीजी री लावणी	जरणादास (चरणदास) (नाथपथी)	२० वीं श०	१६ ५४१३	१-३	गुटके के प्रारम्भ मे सादूराम द्वारा अपनी चेली हीरा को गुटका बखशीस करने की टोप है।
१४८९	१२३७३ (१४)	भरथरी चैराग्य		२० वीं श०	२२४१५.५	पृ ४१-७४	पृ. ४१ पर गभं थभन का मंत्र है।
१४९०	१२४२१ (५)	भरम द्विधूस को अग (अम विध्वंस को अग)	हरखराम	गु० १८६३	१७४१२	११४-११६	पत्र स. १०२-११४ पर इन्ही की 'चितावणी' है।
१४९१	१२०६७ (३)	भतृहरि शतकत्रय भाषा पद्यानुवाद	महाराजा प्रतापसिंह	१६२६	२३ ५४१७	१-३७	र. का. १८५१ लि. क. बोहरा चदलाल लि. स्था. जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. म. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१४६२	१०६२६ (४)१-३	भर्तृहरि शतकत्रय भाषा पद्यानुवाद	भावनादास	गु० १६३६	२१x१५.५	२२०-२४४ २४५-२६५ २६५-२८६	अतः पत्र सं. २८६-२६१ पर सतदासजी के पद हैं।
१४६३	१२२१८ (५)३०	भवानीजी की पूजा विधि		१७६३	२६ ५x१०	४३ वा	अतः मे स्फुट तांत्रिक मन्त्र हैं।
१४६४	१२२१८ (५)३१	भवानी स्तुति		१७६३	२६ ५x१०	४४ वा	
१४६५	१०८४६ (१३)	भागवत (छुटकर दोहे)	पीताम्बरदास	१६३१	१७x११	१५-४४	दोहा-बद्ध भाषा की गई है। कर्त्ता-मथानिया के थे। लि. क. मनोरथराम द्वादशस्कन्ध पर्यन्त
१४६६	१२५८७	भागवत एकादशस्कन्ध दीपिका भाषा	भावनादास शिष्य दामोदर	२० वीं श०	२० ५x१६ ५	१-११८	र. का. हिमकर लोचन नद ससि = १६२१ महाराजा तखतसिंहजी विजयराज्ये। किञ्चित् कीटविद्ध

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८७	११६६५	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा (गय) मन्त्र		२० वीं श०	३१ x १४ ५	२-२६	चित्र सं-१६ प्रपूर्णे, दशमस्कन्ध के चारहवें अध्याय के प्रारम्भ तक।
१८८	१०८४५ (२)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८८६	१५ x १० ५	५२६-७६१	२ का १६६२ लि. क. जैरामनारायण लि. स्था. पोकरण
१८९	१०८५३	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८८६	३० x १४ ५	१-१४३	२. का १६६२
१९०	१०८६५ (६)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९४६	१२ x ४८	१८-४६	द्वितीय अध्याय पर्यन्त लि. क. साधु छुछमराम लि. स्था. सूरसागर रामद्वारा, जोधपुर
१९१	१०८६६ (११)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	गु० १९१०	७ ५ x ६.५	४२७-४८६	११ से १४ वें अध्याय तक।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.मे.)	माप (सें.मी.मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५०२	१०८७३	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	१६ वी श०	२८x१५	१-८२	र. का. १६६२ अपूर्णा, २१ वें अध्याय के ३८ वें पद्य तक
१५०३	१०६२४ (११)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	गु० १८४०	२३ ५x१२ ६	५२१-५३४	अपूर्णा, २६ वें अध्याय पर्यन्त ।
१५०४	१०६२७ (४)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	१८०६	२०.५x१०	७-१४६	पत्र बडकने हैं । प्रारम्भ की तीन कृतिया संस्कृत में हैं ।
१५०५	१०६३१ (१)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	१६ वी श०	१४x१० ५	१-३०७	र. का. १६६२ चौपाई २३६४ दोहा ४४
१५०६	१०६३८ (२)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	गु० १८८५	१६.५x८ ५	३-४६०	र. का. १६६२ जेठ शुक्ला ६ मंगलवार
१५०७	१०६४१ (१)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुर्दास शिष्य सतदास	गु० १६३७	१७x१० ५	१-८०	लि. स्या. श्री पारी मध्ये

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५०८	१०६६१	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८८२	२४.५x१२.५	१-११६	लि. क. गोविन्दराम साधु लि. स्था. लोहावट ग्राम
१५०९	११५४१	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९ वी श०	२५.५x११	१-२५	प्रथम पत्र खण्डित अपूर्ण, ११वें स्कन्धके ३०वें अध्याय के ६ ठे श्लोक तक
१५१०	११५५६	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९ वी श०	२८x१५	१-३१	अपूर्ण, जलाभिपित्त
१५११	११५८६ (४)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१८३३	१५.५x११	१४३-१६८	लि. क. मथेन अमराम लि. स्था. श्री नागपुर (नागौर)
१५१२	११६३१	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१९०८	२८.५x१५.५	१-१३०	२ का १६६२ लि. क. प्रसोत्तमदास, शिष्य मोतीराम शिष्य चालदास शिष्य रामदास पत्र स १२२-१२५ खण्डित

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिकाल (वि.सं मे)	माप (से मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५३१	१२३२७	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१६३०	२८x१३.५	१-१३३	र. का १६६२ लि. क. गुलाबदास शिष्य सायबराम लि. स्था. सुजानगढ रामद्वारा
१५१४	१२५०२	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१६२१	२०x१२.५	१-१६०	र. का. १६६२ लि. क. साधु सीसाराम पत्र स. २६, ७०-७२, ७४, ७५, १२५, १२८ अप्राप्त
१५१५	१२५६१ (५)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१६ वीं श०	२३.५x१७	२२५-३०८	र का १६६२
१५१६	१२५७६ (२)	भागवत एकादशस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१६ वीं श०	१६x८	७१-३७५	र. का १६६२ पत्र बडकने हैं अंतिम तीन पत्र नवीन
१५१७	१०८४८ (६)	भागवत तृतीयस्कन्ध इकतीसमो अध्याय सभाषा	कश्चित रामदास शिष्य	१६ वीं श०	१५.५x८	७१७-७५०	अंतिम कृति 'हरचंद सत' का प्रारम्भ मात्र है ।

क्रमांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५१८	भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	भगवानदास निरजनी	१९१८	२४.५x१३	१-४३४	र का १७६० लि क साधु दयालदाम शिष्य सेवाराम लि स्या महामंदिर, जोधपुर
१५१९	भागवत दशमस्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	रघुराजमिह	१९३४	१७x११	१-२६	र. का १९११ द्वितीय से सप्तम स्कन्ध पर्यन्त
१५२०	भागवत दशम स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	नरहरिदास बारठ	१९०६	२६.५x१८.५	१ १६१	चित्र म -२७ अन्य चित्रों के लिए रिक्त स्थान छोड़े हुए हैं। लि. क बिहारीलाल- गुलालचंदोत लि. स्या जोधपुर
१५२१	भागवत महापुराण भाषा	रसजानि शिष्य प्रियादास	१८६१	३१.५x१३.५	१०२१	र. का. १८०७ लि. क. रामगोपाल- खण्डेलवाल लि स्या सवाई जयपुर पत्र स. स्कन्धवार लगी है।
१५२२	भागवत माहात्म्य भाषा (पद्यपुराणगत)		गु० १९३६	२१x१५.५	२५-४४	दो अध्याय एव शुक मुनी की कथा मात्र है

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५२३	१२६०६ (१)	भागवतसार पञ्चीसी	गो० चंद्रलाल	१८८४	१८X१०५	२-१४	लि.क जगदीश व्यास (पारीक) प्रथम पत्र अप्राप्त । अग्रे के १-४ पत्रों पर संस्कृत में वैश्य सध्या है ।
१५२४	१२३५०	भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका	चैनकवि	१९ वी श०	३६X१८५	१-७८	उद्योगपर्व के प्रथम अध्याय पर्यन्त । सूर्यवंशी राव शम्भु के पुत्र राव चादसिंह की आज्ञा से रचित ।
१५२५	१२५०७	भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका (आदि, मौशल महाप्रस्थान पर्व)	चैनकवि	१९ वी श०	३०X१४५	१-६	र. का. १८८५ तीन पर्व, मात्र ।
१५२६	१०८३८	भाषा-भारत	सादू खेतसी (कवि सीह)	१९०६	३२५X२०	१-२१५	अत की पुष्पिका महत्वपूर्ण है । महाराजा अभैसिंहजी (जोधपुर) के आश्रय में रचित । र.का १७६० लि.क. परोपगाराय लि.स्था. जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५२७	११००८ (१)	भाषाभूषण	जसवतसिंह	२० वी श०	२६x१३	१-१४	अलंकार प्रकरण पर्यन्त ।
१५२८	११३२४ (१)	भाषाभूषण	जसवतसिंह	१६ वी श०	५x१५ ५	२-२८	प्रारम्भ के २७ दोहे अप्राप्त सर्व-२०४
१५२९	१२३३० (३)	भाषाभूषण	जसवतसिंह	१६ वी श०	५x१४ ५	१-३१	अपूर्ण
१५३०	११०१३ (१२)	भाषा-वर्णन		गु० १८-१८	२३x१५	११६-१२०	मराठी एवं गुर्जर आदि भाषा के १२ छन्द है ।
१५३१	१०८६६ (८)	भीखनजी की बावनी	भीखनदास शिष्य सतदास	गु० १६-२७	८ ५x७	२२०-२४२	र का १६८३
१५३२	११०१०	भीखनजी की बावनी	भीखन (भीखनदास)	२० वी श०	२६x१३ ५	१-७	र का १६८३
१५३३	१२३७३ (२५)	भीखन-बावनी	भीखनदास, शिष्य सतदास	२० वी श०	२२x१५ ५	पृ २२६- २३३	पृष्ठ २३३-२३५ पर सस्कृत की कृति है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५३४	१०८४३ (३)	भूपाल-चौवीसी (स्तोत्र भाषा)	भूपाल नरिंद	गु० १८६५	२५ ५X२०	३-४	लि क गंगराज लि स्था रतनपुरी
१५३५	११५८३	भोगलपुराण		गु० १६६३	१८X१५	३५-५०	
१५३६	१२५७४ (६)	भोगलपुराण		२० वी श०	१७X१० ५	१७३-१६४	
१५३७	११०१३ (२६)	भोज राजा री पनरमी विद्या री वात	भवानीदास व्यास	गु० १८१८	२३X१५	१६०-१८६	
१५३८	१०६०२ (११)	अमृतोड जोगग्रन्थ	सतदास	गु० १८०६	१५ ५X१२ ५	६३-८०	चौपाई ११६, दोहा १ अतिम पत्र शोभन
१५३९	१२३८० (२५)	अमर-गीत	जनमोहन	गु० १७२४	२०X१४	२८०-३००	पत्र सं. ३००-३०६ पर फुटकर पद है ।
१५४०	११०१३ (२२)	अमर-बत्तीसी	मुनि केशवदास	गु० १८१८	२३X१५	१३६-१३७	४८ दोहे है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५४१	११२८३ (३)	अमर-वत्तीसी	मुनि केशवदास	गु० १७८४	१६x१४ ५	५८-५९	र का १७१४ लि क अमरचन्द लि स्था लदेरा
१५४२	१२४६७	मंगलकलश चउपई	जिनहर्ष शिष्य गुणवर्द्धन	१८७९	२० ५x१० ५	१-२३	
१५४३	१२३२० (५७)	मंगलकलश फाग		गु० १८४७	२१ ५x१४ ५	४४-४८	
१५४४	१२३७० (६४)	मंडोवरपुर मंडन पार्श्वनाथ स्तवन आदि	साधु क्षमाकल्याण शिष्य अमृतधर्म	१९ वी श०	१६x११ ५	५४ वा	र का १८६८ र स्थान मंडोवर, जीधपुर
१५४५	११०१३ (१४)	मदनकुंवर सत	दामो	१८१८	२३x१५	१२४-१२९	लि क ऋषि सुजाण चेला प्रेमचन्द वाचनार्थ र स्था चाणोद नगर
१५४६	१२४५९	मदालसा आख्यान (मारकण्डेय पुराणगत)	माधोदास शिष्य दामोदर	१८३८	३०x१४	१-३१	पत्र जलाभिषिक्त लि क जति तिलोकचन्द लि स्था नागौर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५४७	१२२१८ (५) ३४	मधुबिंदु सज्जाय	प्रेममुख	१७६३	२६.५X१०	४८ वा	
१५४८	११६३३	मधुमालती रसविलास की कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास	१६ वी श०	२३.५X१७	३-१६७	चित्र स-३०२ प्रथम दो पत्र अप्राप्त ।
१५४९	११६०८	मधुमालती की कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास	१६ वी श०	२३X२०	२-१०१	चित्र स-८५ १, ३-६, ११-२२, ३८, ७५, ९६, १०० वे पत्र अप्राप्त ।
१५५०	११५८४	मधुमालती की कथा चौपई- सचित्र	चतुर्भुजदास	१६ वी श०	२०X११.५	४ कुल	चित्र स-५ मात्र स्फुट पत्र ।
१५५१	११५९५	मधुमालती की कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास	१६ वी श०	२३X२१.५	४ कुल	चित्र स-४ मात्र स्फुट पत्र । चित्र काट कर अलग, अलग चिपका दिए गए हैं ।
१५५२	१२३३० (१)	मधुमालती की कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास कायस्थ पुत्र अभैराम पुत्र नाथा	१६ वी श०	२५.५X१८.५	१-८८	चित्र स-१३५ विभागीय प्रकाशन 'मधु- मालती सचित्र कथा' में चित्रों का पूर्ण व्यौरा देखे ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं.से)	माप (सेंमी.में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५५३	१२३०१	मधुमालती की कथा चौपई सचित्र	चतुर्भुजदास पुत्र अभयराम पुत्र नाथा	१६ वीं शताब्दी	२३ x १७ ५	२-११६	चित्र सं-१०४ लि. क. भागचंद देवीचंद १, २२, ३२, ५०, ५१, ५४, ५७, ६०, ६४, ६५, ६८, ७०, ७२-७४, ७६, ८४-८६, ८०, ८८, १०६ वे पत्र अप्राप्त
१५५४	१२५५७ (२०)	मधुमालती की कथा चौपई	चतुर्भुजदास	गु. १८७८	२० x १५ ५	२३-७४	अपूर्ण लि. क. पं. वल्लभचंद लि. स्था. अजमेर
१५५५	१०६५५ (२)	मधुमालती की वात	चतुर्भुजदास	१८०५	२३ x १७ ५	१-५७	लि. क. उदयचंद लि. स्था. चौपासनी (जोधपुर)

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५५६	१०७००	मधुमालती की बात सचित्र	चतुर्भुजदास	१८३३	२० ५X१३	१-७६	चित्र स-४४ पत्र स ७१-८२ अप्रामा चित्रों का विवरण विभागीय प्रकाशन 'मधुमालती सचित्र कथा' में देखें। लि. क. नदकिशोर लि. स्था करोली, माणिकपाल के राज्य में।
१५५७	१२२२४ (६)	मनपरसग जोगग्रन्थ	जनहरिदास	१९ वीं श०	२१ ५X१३	७१-७३	
१५५८	११६५४ (१)	मनबोध		१९ वीं श०	२२X१० ५	१-२१	कृति मराठी भाषा में।
१५५९	१२२१८ (५) ५३	मन समझो सज्जाय (उद्बोधन)	आसो	१८ वीं श०	२६ ५X१०	६६-६७	
१५६०	१०८३९ (६)	मनसा वाचा की कथा		१९०६	३२X१७ ५	३१-४०	चित्रों के लिए शीर्षक देकर स्थान रिक्त छोड़े हुए हैं। लि. स्था जोधपुर

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

२२४

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५६१	१२३५८	मनहर छन्द (वाणी संग्रह)	रामचरण	१८६६	३१५X१६५	१-१६	छन्द १६२, अंग ४३ लि क प्रोहित घुघरराम लि स्था वीकानेर
१५६२	१२५८५ (६)	मलूकदासजी री परची	परमानन्द	गु० १६२७	१६५X१५	२२४-२४४	अनन्तदास के अतिरिक्त दो अन्य परचीकारों की जान- कारी इस गुटके से प्राप्त होती है।
१५६३	१०७७०	महादण्डक-भाषा		१८७०	२६५X१२५	१-२०	लि क लखमीचन्द लि स्था गोंय कुकडसर, हुलकर राज्ये।
१५६४	११०१३ (१३)	महादेवजी री निसाणी	लवराज	गु० १८१८	२३४X१५	१२१-१२३	८७ छद है
१५६५	११२६३	महादेवजी रो व्यावलो	शभुदत्त जोशी	१६वी श०	१८५X१४	१-३०	
१५६६	१०८३६ (५)	महादेवजी रो व्यावलो (गद्य)		१६०६	३२X१७.५	२१-३१	चित्रों के लिए शीर्षक देकर स्थान रिक्त छोड़े हुए हैं। लि स्थान जोधपुर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
*१५६७	११००४	महादेवजी रो व्यावलो (शिवरामस्तोत्र भाषा)	शंभुराम जोशी	१६०७	२७ ५X१२ ५	१-१५	लि. क. हीरविजय लि. स्था. लूणसर भंडारी श्रीचंदजी मोतीचंदजी की परत से प्रतिलिपि कृत। अतः मे तत्कालीन अनाज के भाव व गाव के भोक्ता का वर्णन है। इस समय महाराज-तखतसिंहजी का डैरा बालसमन्द में बताया गया है।
*१५६८	११०१३ (५०)	महाराजा अभैसिंहजी रा कवित्त	वगता खिडिया	१६ वी श०	२३X१५	३२८-३४६	गुटके की यह अंतिम कृति दूसरे के हाथ की है।
१५६९	१२५६८ (१२) १६	महाराजा जगतसिंहजी रो सिलोको		१६ वी श०	१८ ५X१२ ५	२८-२९	र का. १८४७
१५७०	१२२०५ (५)	महारुद्र तेरही	कीर्तिवर्द्धन	गु० १७४८- १७५५	१७X११	४-८	
१५७१	१२३८० (६-११)	महावीर, ऋषभदेव एव पार्श्वनाथ गीत	कुशलसिंह शिष्य रामसिंह	१८ वी श०	२१ ५X१४ ५	२१ वा	पत्र संख्या २२-२३ पर महावीर स्तवन तथा 'सूर्यजी रो सिलोको' है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५७२	१२५७५ (४०)	महावीर जन्माभिवेक कलश		१६ वी श०	१३X१४ ५	१११-११६	पत्र सख्या १०८-११० पर 'वृहत्शक्ति' संस्कृत में है।
१५७३	१२५६५ (८)	महावीरजी नो पारणो		२० वी श०	१६X१२	५८-६०	पत्र सख्या ६० पर 'गौडी- पार्श्वनाथ स्तवन' है।
१५७४	१०६०७ (३)	महावीरजी रो चो-ढालियो	ऋषि रायचंद शिष्य जैमल	१६ वी श०	२५ ५X१२	६-७	२ का १८३६, नागौर दीपावली के दिन।
१५७५	१२५५१ (१२)	महावीरदेव-विनती	वीरविजय गणि शिष्य तेजसार	१६ वी श०	१३X११	१०२ वां	
१५७६	११५८५ (८१६)	महावीर-स्तवन	समयसुन्दर	गु० १६०३	१६ ५X११ ५	१४६, १५८ वा	२ स्था जेसलमेर पत्र १५८ पर पूर्ण किया है।
१५७७	१२३२० (३६)	महावीर-स्तवन	लक्ष्मण	१७६७	२१ ५X१४ ५	४१-४६	२ का १५२१ फागण वद ७ सोमवार। लि क भावविजय लि स्था मेडता

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५७८	१२३७० (३१)	महावीर-स्तवन	समयसुन्दर	१६ वीं श०	१६x११ ५	७-१०	र. स्था जेसलमेर
१५७९	१२४०३	महासती द्रोपदी री चउपई	कनककीर्ति शिष्य जयमंदिर	१६४५	२५ ५x१३	१-२०	र. का १६६३ जेसलमेर अत मे शृङ्गारिक दोहे है ।
१५८०	१०६२४ (५)	महिमासमुद्र, ब्रह्मसत आदि (चोहूँ ग्रन्थ)	बालकराम शिष्य मीठाराम	गु० १८४०	२३x१२ ५	३२३-३३८	रामचरणजी की महिम आदि ।
१५८१	१०६२५ (४)	महिमासमुद्र (चोहूँ ग्रन्थ)	बालकराम शिष्य मीठाराम	गु० १६३३	२५ ५x१६ ५	३०-३७	
१५८२	११३८१	माघमाहात्म्य भाषा पद्यानुवाद		१६ वीं श०	३१ ५x१३ ५	२-१५	पद्मपुराणभक्त
१५८३	१०६२४ (४)	माणिक बोध (चोहूँ ग्रन्थ) (सबद माणिक बोध)	बालकराम शिष्य मीठाराम	गु० १८४०	२३x१२ ५	३१७-३२३	सूक्तियों का विस्तार चोहूँ ग्रन्थों में किया गया है ।
१५८४	११५८४ (७)	माताजी री छन्द		गु० १७०२	१६ ५x१३	३१-३३	४० छन्द है । पत्र स ३६ पर समयसुन्दर कृत कुन्धुनाथ गीत । है

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५८५	११५८४ (१८)	माताजी रो छन्द (पद)	अज्ञात	गु० १७१५	१६ ५X१६	५८-५६	राग-गउरी
१५८६	१२५४७ (३)	माताजी रो छन्द	हररूप	२० वी श०	१६ ५X१२	६-२५	गुटके के मध्य के पत्रों पर भीमसिंहजी राठौड पर कवित्त है।
१५८७	१२३६७ (१)	मानतु ग-मानवती चरित्र	अभयसोम	१६ वी श०	२५ ५X१६.५	३५-४४	र का १७२७ पत्र स १-३४, ४८-६६ अप्राप्त। पत्र स ४४-४७ पर 'भैण- रेहा चौपई' का प्रारम्भिक अंश मात्र है।
१५८८	११०५०	मानतु ग-मानवती रास	मोहनविजय शिष्य रूपविजय	१८६०	२६X१३	१-३६	र का ० ६ ७ १=१७६० पुण्य-काय मुनी चन्द्र सुवर्षे र स्था अणहिलपुर पट्टन, दुर्गादास राठौड राज्ये। लि क मुनि उमेदविजय लि स्था. गीरपुर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५८६	१२३३० (२)	मानमजरी	नन्ददास	१६ वी श०	२०.५X१४.५	१८-६१	अपूर्ण । ७७ वे छन्द तक । “श्रीकृष्ण रूप चैतन्य धन, तन सत मुकर प्रकाश ।”
१५६०	१२५५३ (५)	मानलीला		गु० १८-६७	१४.५X१३.५	११६-११७	
१५६१	१२५६८ (१८)	मानसिंहजी वार पधार्या तिण समय रो कवित्त		१६ वी श०	१८.५X१२.५	२८ वा	
१५६२	१०६५५ (५)	मानसिंहजी रा मरसिया		१६०५	२३.५X१७.५	१-३	महाजनी लिपि मे । लि क कुनणराज लि स्था. जोधपुर
१५६३	१०८४६ (३)	मानसी सेवा	रामानन्द	गु० १६३१	१७X११	५-६	
१५६४	११०००	मानसी सेवा	रामदास	१६ वी श०	३०.५X१४.५	१-७	पत्र कीटविद्ध ।
१५६५	१२४२० (६)	मानसी सेवा	रामानन्द	२० वी श०	१६X१४	४-५	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१५६६	१२५७१ (१)२	मानसी सेवा	रामानन्द	१६ वी श०	१० ५X८	१०-१३	
१५६७	१२२१८ (५)६६	मारू-भापा कवित्त एव पत्री		१८ वी श०	२६ ५X१०	११७ वा	
१५६८	१२४७१	मार्कण्डेयपुराण भाषा पद्यानुवाद	दामोदर	१६०८	२८.५X१६	१-७०	र. का १६८८ लि. स्था. पोकरण, रामद्वारा "पुस्तक प० साधु बुधराम की छै" प्रथम व अन्तिम पत्र नृटित ।
१५६९	१०८५५	मार्कण्डेयपुराण भाषा पद्यानुवाद	दामोदर	२० वी श०	२७ ५X१५	१-५७	र. का. १६८८
१६००	१०८४३ (८)	मार्गणा-विधान	वनारसीदास	गु० १८६५	२५ ५X२०	२७-२८	लि. क गगराज लि. स्था रतनपुरी
१६०१	१०८४२ (६)	सावडिया मिजाज		१८६५	२४ ५X१६ ५	७६-८२	लि. क. खिडियो हरसुख तथा वणसुर फत्तो लि. स्था. जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६०२	१०८४२ (६)	मिनष (मनुष्य) जन्म रा कवित्त	साधूराम गाडण	१८६५	२४ ५X१६ ५	८८ वा	लि क खिडियो हरसुख तथा वणसुर फत्ती लि स्था जोधपुर
१६०३	११०६२ (६)	मीडकीपावजी की सबदी	मीडकीपाव	गु० १८३६	१८X१० ५	१६२ वा	नाथ साहित्य
१६०४	१२५८५ (१३)	मीराबाई की परची	सुखसारण	गु० १६२७	१६ ५X१५	३११-३५५	दुर्लभ परची
१६०५	१०६५१	मुक्तारामजी की बाणी एव पद-संग्रह	मुक्ताराम शिष्य रामचरण	१६ वीं श०	१० ५X८	१-६३	बीच के ६ पत्रों में सुदामाजी की बारखडी है।
१६०६	१२५८५ (१४)	मुगतीबाई, ज्ञानदेव की परची	सुखसारण	गु० १६२७	१६ ५X१५	३५५-३८१	'दखण देश पूनो-सतारो ... विसनदेव ब्राह्मण हुआ ... ऐक सुता मु गता हुवी ॥'
*१६०७	१०६८०	मुनिपति-चरित्र	सिंहकुल	१७६५	२५.५X११	१-१५	२. का १५५० लि क किस्तूरचन्द लि स्था. कुण्णगढ 'जैन गुर्जर कवियों' में इसका कर्त्ता सिंहकुल देवगुप्त सूरि का शिष्य लिखा है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६०८	११६६८	मुनिपति-चरित्र	मुनि धर्ममंदिर शिष्य दयाकुशल	१८८६	२६X१२	१-२६	२ का १५२५, पाटण लि.क. के नाम पर रंग पोत दिया गया है।
१६०९	१२५५१ (१८)	मुनिमालिका	मतिभद्र शिष्य सूरविजय	१७ वी श०	१३X११	१२४-१३०	२ का. १६३६, र.स्था. रिणी पत्र चिपके हुए हैं।
१६१०	१२५७४ (८)	मुरलीरामजी का दृष्टांत	जनमुरली	२० वी श०	१७X१०५	१७२ वा	
१६११	१०६६३	मुरलीरामजी की वाणी	मुरलीराम	२० वी श०	२३५X१३५	१-५७	गुटका बाद में शुद्ध किया गया है।
१६१२	१२५५३ (६)	मूरख सत (मूर्ख शतक) गद्य		गु० १८६७	१४.५X१३५	१२६-१३२	मूर्खों के १०१ लक्षण दिए हैं। अतः में गुटके की कृतियों की विगत है। मुदामाजी की बारखडी विगत के अनुसार अप्राप्त है।
१६१३	१०८६६ (५)	मूलपुराण		गु० १८१०	७५X६५	६८-१०८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६१४	१०८४६ (८-६)	मूलपुराण एव पद संग्रह	रामदास	गु० १६३१	१७x११	१७-१६ २०-२५	
१६१५	१२२११ (२)	मूलपुरुष	द्वारिकेश	२० वी श०	१७x१३	१४-२०	वल्लभ-सम्प्रदाय की वंश- परम्परा ।
१६१६	१०६०२ (१४)	मूलमंत्र	कवीरदास	गु० १८०६	१५x१२x१२	८३-८५	
१६१७	११०५७	मृगलेखानी चौपई (मृगाङ्कलेखा)	ऋषि रायचन्द शिष्य जैमल	१८८६	२५x१२	१-१६	२ का १८३८ २. स्था. जोधपुर लि.क. रामजी की शिष्या । लि. स्था. बलुदा
१६१८	११५८५ (८) ३६	मृगापुत्र सज्जाय		१६ वी श०	१६x११x१५	१७२-१७४, १७१	महाजनी लिपि में । कृति का अतः पत्र सख्या १७१ पर किया गया है ।
१६१९	१२२१८ (५) १४३	मृगापुत्र सज्जाय		१८ वी श०	२६x११x१०	१५८-१५९	
१६२०	१२३२० (२६)	मृगापुत्र सज्जाय	मुनि खेम	गु० १७६२	२६x११x१०	३४ वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२१	१२२१८ (५) ६६-७०	मेघकुंवर सज्जाय	धर्मसार ज्ञानउदय	१८ वी श०	२६ ५X१०	६० वा ६०, ६१ वें	
१६२२	१२५६८ (३)	मेघकुमार चोन्ढानियो		१९ वी श०	१८ ५X१२ ५	३०-३३	अपूर्ण पत्र सं. ३४-४२ अप्राप्त ।
१६२३	१२१३६	मेघमाला सार्थ		२० वी श०	२७X१२ ५	१-१२	अपूर्ण श्लोक के नीचे राजस्थानी में अर्थ दिया है । पत्र चिपके हुए है ।
१६२४	१२३१९ (७)	मेघमुनि-गीत	देवमुनि	गु० १७६२-२१ १८४७	२१ ५X१४ ५	१९-२०	
१६२५	११९६२	मेतारज मुनि री चौपई	ऋषि चोधमल	१८७९	२५X१० ५	१-५	र का. १६८१ लि क लिखमीचद लि स्था वगरी
१६२६	१२२१८ (५) ११	मेतारिज ऋषि सज्जाय		१८ वी श०	२६ ५X१०	३२-३३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२७	१२१६६ (६)	मेरू-तेरस रो वखाण		गुं० १६७५	२७X१४	४४-४७	लि. समय - तपागच्छाचार्य विजयमुनि चन्द्रसूरीश्वर विजयराज्ये । लि. क. केसरीसागर, फत्तोदी
*१६२८	११०१३ (३३)	मेवाड़ गुण-वर्णन छंद	कवि जिनेन्द्र	गुं० १८२२	२३X१५	२०१ वा	
१६२९	११६६७ (१)	मैनासुन्दरी-नाटक	न्यामत	२० वीं श०	२५.५X१२	१-२३	
१६३०	१२४२० (११-१३)	मोतीरामजी का छुटकर सबद एव वाणी-संग्रह	मोतीराम शिष्य रामदास	२० वीं श०	१६X१४	२६१-३४२	
१६३१	१२३२० (३८)	मोनी-एकादशी-स्तवन	समयसुन्दर	गुं० १७६७	२१.५X१४.५	४७ वा	२ का १६८१ २ स्था. जेसलमेर लि. क. भावविजय लि. स्था. भेड़ता
१६३२	१२३७० (१६)	मोनी-एकादशी-स्तवन	समयसुन्दर	१६ वीं श०	१६X११.५	१३६-१४०	२ का १६८१ २ स्था. जेसलमेर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६३३	१०६३६ (३)	मोरधज राजा री कथा	सूरदास	गु० १६३४	१२ ५X८ ५	३१६-३३४	लि क. चोक्सराम लि स्था जोधपुर, बडा रामद्वारा
१६३४	१०६४४ (५)	मोरधज राजा री लावणी	सूरदास	२० वी श०	८X५	२२०-२४१	
१६३५	१०८४७ (३)	मोहमरद राजा री कथा	जगनाथ शिव्य तुरसी	गु० १६६६	१७X८	६६२-७२३	र का १७७६ काति वदी १२, सोमवार ।
१६३६	१०६२४ (१५)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	२३ ५X१२ ५५७-५७२	र का १७७६	
१६३७	१०६३० (२)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	१५ ५X१२	१६-५५	र का. १७७६
१६३८	१०६३१ (४)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	गु० १६३७	१७X१० ५	१०४-१३४	र का १७७६ "श्री तुलसीदास धर्यो सिर हाथ मोहमरद कथा कही जगनाथ"
१६३९	१२३७५ (७)	मोहमरद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	११X१६ ५	७८३-७९५	र का १७७६

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	तिथिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६४०	१२५६१ (१०)	मोहम्मद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	२३ ५X१७	३५१-३५५	
१६४१	१२५७२ (८)	मोहम्मद राजा की कथा	रामदास	१६ वी श०	१०.५X८.५	१४१-१६६	र. का. १८४१
१६४२	१२५८१ (१)	मोहम्मद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	१६X१०.५	१-१४	
१६४३	१२५८६ (२)	मोहम्मद राजा की कथा	जगनाथ	१६ वी श०	१२X६.५	७-३३	
१६४४	१२५७४ (१५)	मोहम्मद राजा की कथा का दृष्टांत		२० वी श०	१७५१० ५	३०४-३०७	
१६४५	११६७४	मोहम्मद की गुरो फल एवं ३२ शुभ-अशुभ लक्षण		२० वी श०	११ ५X८	१-४	ग्रन्थाङ्क ११८२२ के साथ के पत्र है।
१६४६	१२३८० (५)	मोहम्मद-विवेक	जनमोनाल	१७२४	२०X१४	११२-१२६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१३४७	१२१६६ (१०)०	मोनी-ग्यारस रो वखाण		गु० १६७५	२७X१४	४८-५१	
१६४८	१२२१८ (५)२६१	यत्र-महिमा		१७६३	२६.५X१०	४१-४२	पत्र स ४२ क पर मेडता व व कोटा के पाठाधीशो की प्रशस्ति है। पत्र स ४२ ख पर स्त्री- पुरुष वशीकरण मंत्र एवं औषधि संग्रह है।
१६४९	११४१२ (२)	यमुनाष्टक भाषा-टीका	मू. वल्लभाचार्य दो गोविन्दस्वामी	१९ वीं श०	२१X१६.५	१६-२६	
१६५०	१२५५६ (३)	यमुना-स्तुति टीका (यमुनाष्टक)	दो गोविन्दस्वामी	गु० १८०५	२१X१४	६१-६६	श्री वल्लभाचार्य कृत 'यमुना- ष्टक' की टीका।
१६५१	१२२१८ (५)४२	यादवा रो रास	पुन्यरत्न मुनि	१७५५	२६.५X१०	५६-६१	
*१६५२	११००६	युक्ति (युक्त निर्णय) संग्रह		१६२५	२८X१६.५	१-६१	प्राचीन हिन्दी-गद्य द्रष्टव्य है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६५३	१०७४१	योगपावडी	गरीवदास	१६ वी श०	२३X१२	१-४	
१६५४	११५८३ (२२)	योग-वासिष्ठ-सार भाषा	मुरारि मिश्र	गु० १६६३	१८X१५	१७२-१६४	मूल श्लोको सहित ।
१६५५	१०८४२ (३)	रघुनाथ-रूपक गीतों रो	कवि मँछ (मनसाराम)	१८६५	२४ ५X१६.५	४-७२	मरुघर देश-भाषा में । कामदारी लिपि । लि क वणसुर फत्तो नै खिडिया हरसुख । लि स्था जोधपुर - ठाकुरा भेरू दानजी री हवेली मे ।
१६५६	११००१	रघुनाथ-रूपक गीतों रो	मछाराम सेवग	१८६६	२६X१२ ५	१-५५	लि क हीरविजय लि स्था लूणसर
१६५७	१२५२२- १२५२३	रघुवर विसद जस (रामायण माहात्म्य)		१६ वी श०	३४ ४X१६	१-५ १-८	ग्रन्थाङ्क १२५२३ पर “रावण-वध” नामक कृति इसी के साथ के पत्र ज्ञात होते हैं ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६५८	११६८७	रत्नवती के कवित्त	रत्नव	१६ वी श०	२६x१३	१-११	अज्ञवद्ध ।
१६५९	१२३७६ (६)	रत्नवती के कवित्त	रत्नव	१६ वी श०	११x१६x५	७५३-७८३	कवित्त ६०, अंग ३८
१६६०	१२५६१ (६)	रत्नवती के कवित्त	रत्नव	१६ वी श०	२३x११७	३४३-३५१	
१६६१	११०७६	रतनसिंह महेशदासोतरी वचनिका	खिडियो जगो	१७६५	२२x११५	१-१३	लि.क. पडित मेमनन्द
१६६२	१०६२८ (१)	रतना-हमीर री वात		१८६६	२२x१७	१-३६	लि. क. हरलाल लि. स्या. हरिदुर्ग
१६६३	११०८०	रतना-हमीर री वात		१६ वी श०	२२x१४x५	१-४१	जलभिपित्त लि. स्या. पानी छन्द स. - ८२५
१६६४	११०६६	रत्नपाल रास	सुरविजय	१६१७	२६x११x५	१-२४	रत्ना १७३२ २ म्या बुग्दानपुर लि. क. उत्तमचन्द नागोरी लि. स्या. हेमावास, नागोर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६६५	११०५२	रत्नावती नो रास	जिनहर्ष	१६१७	२७x११५	१-२२	र का १७२१ लि क. उत्तमचन्द नागोरी र.स्था. नागोर, गाव हेमावास
१६६६	१०८२६	रमल शास्त्र		२० वी श०	२४५x१२	१-१३	लि क भोलानाथ
१६६७	१२२०१	रसरत्नाकर (मन्त्रखण्ड)	नित्यनाथ पार्वतीपुत्र	१६ वी श०	२४५x१२.५	१-६८	अपूर्ण । १६ वे उपदेश तक पूर्ण, २० वे उपदेश का प्रारम्भ मात्र ।
१६६८	१०८४४	रसराज (राजस्थानी भाषा टीका सहित)	मू० मतिराम	१६ वी श०	२१५x१५५	४२-१७७	आद्यन्ताश अग्राम । दो लिपियो में लिखित । पत्र स ५३-६५, १५४-१६६ अप्राप्त ।
१६६९	१२२१८ (५) ६७	रसावला	जसरज	१८ वी श०	२६.५x१०	११७-११८	पत्र स ११५ पर 'महावीर तप सज्जाय, पत्र स. ११६ पर तुलाकी- दास खत्री का वर्णन-आगरा से अन्य शहरो की दूसरी सबधी है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६७०	१२२१८ (५) ८६	राजा-वत्सीसी	राजो	१८ वीं श०	२६ x ११०	१०५-१०६	
१६७१	१२३७६ (५)	राजनीति की रीति	जसुराम	१६२८	१६ x १८	५०-१३६	र का १८१४, श्रीभपुर लि क विष्णुदास लि स्या. जोधपुर
१६७२	११०५६	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	१८३८	२८ x १२	१-१५	लि. क. लक्ष्मीचन्द्र
१६७३	११०८५ (१)	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	१६ वीं श०	१६ x १३५	१-५६	प्रारम्भ के पत्रों पर स्फुट कवित्त एवं शकुनावली है। पत्राङ्क ६१ पर भूषण कृत ७ कवित्त हैं।
१६७४	११२१५ (२)	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	२० वीं श०	२२ x १५५	१-१६	अपूर्ण - २५ कवित्त हैं।
१६७५	१२३७१ (८)	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	१८३६	१८ x १६.५	२६८-२८६	लि क भीखनदास लि स्या. नागपुर (नागौर)
१६७६	१२३७६ (२)	राजनीति रा कवित्त	देवीदास	२० वीं श०	१६ x १८	१३-४४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६७७	१२२१८ (५) ३	राजमती विनती		१८ वी श०	२६ ५x१०	२६-२७	
१६७८	१२५४७ (४)	राजा दावसलेम री कथा		२० वी श०	१६ ५x१२	२६-३५	अपूर्ण । आगे लिखना छोड़ दिया है ।
१६७९	११६७७ (?)	राजा नल री बात		१८६०	१८ ५x१४ ५	८-५५	लि. स्था बटुकापडी, जयपुर ।
१६८०	१०८५१ (३) २३	राजा भरथरी रा पद		१८ वी श०	१५ ५x१०	१०६-१०७, १८६-१६०	
१६८१	१०६५४ (१७)	राजा भोज री पनरमी- विद्या री बात	व्यास भवानीदास	गु० १८७४	२४x१६ ५	१३८-१८८	अंत के कवित्त मे बीलाडा के कल्याणदास भूपाल द्वारा भोज कथा कराने का आग्रह व चारण कीटु द्वारा कथा कहने का उल्लेख है ।
१६८२	११०६४	राजा भोज री पनरमी- विद्या री बात	व्यास भवानीदास	१६ वी श०	२५x१२.५	१-१५	सूक्ष्माक्षर ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (सं.मी. से)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६८३	१०८४१ (५)	राजा मान रे नाम पत्नी		गु० १६००	२८x१६५	१-३	जयपुर के राजा मानसिंह का मारवाड में जन्म लेने तथा पूर्वजन्म का वर्णन है। लि क मुरलीधर पुरोहित लि स्था जोधपुर
१६८४	१०६४२ (३)	राजा मोरघज की लावणी			१३x१६	२११-२३६	
१६८५	११०१३ (३१)	राजा रिसालू री बात	नरबद चारण	गु० १८२२	२३x१५	१६२-२०१	लि. क ऋषि सुजाण लि. स्था नदपुर नगरे
१६८६	१०६३६ (४)	राजा हरिश्चन्द्र की कथा	सूरदास	गु० १६३४	१२.५x८५	३३४-३४८	लि क चौकसराम लि स्थि जोधपुर, बडा रामद्वारा। पत्र संख्या ३५५-३५६ पर लावणी एव दोहा संग्रह है।
१६८७	१२२१८ (५) १२१	राजुल कागल	जीतविजय शिष्य विनयविजय	१८ वी श०	२६ ५x१०	१३४ वा	गुटके में जैन स्तुति-सज्जाय का सुन्दर संग्रह है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६८८	१२५५१ (३३)	राजुल गीत	समयसुन्दर	१६८०	१३x११	१७३-१७५	लि क समयकीर्ति
१६८९	११६२६ (५)	राजुलदे की बारेमासो	अज्ञात	गु० १८६४	३२x१५	१-३	
१६९०	१२२१८ (५) १-२	राजुल सज्जाय	हर्षकीर्ति, आनन्दवर्द्धन	१८ वी श०	२६ ५x१०	२६ वा	
१६९१	१२५६८ (३३)	राणकपुर यात्रा स्तवन	समयसुन्दर	१८५४	१८ ५x१२.५	३४-३५	र का १६७६
१६९२	११५८४ (३६)	राणकपुर स्तवन	समयसुन्दर	१८ वी श०	१६ ५x१६	२३४ वा	र. का. १६७६ र. स्था. राणकपुर
१६९३	१२५८५ (८)	रानाबाई री परची	सुखसारण	गु० १६२७	१६ ५x१५	२५३-२६८	परचीकार का नाम अत्यल्प- ज्ञात रहा है। रानाबाई — “मुरधर देस गाँव हरनामा।”
१६९४	१२२१८ (४)	रात्रि भोजन चौपई		१८ वी श०	२६ ५x१०	२३-२५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.से)	माप (से.मी.से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६६५	१०८४१ (४)	राधा-कृष्ण-व्रजविहार लीला		१६००	२८X१६५	६-३६	अत मे मारवाड के राजा मानसिंहजी के सम्बन्ध में किसी साधु की पत्नी है। लि क मुरलीधर पुरोहित लि स्या जोधपुर
१६६६	११०१३ (३४)	राम-गुण रासो	माधवदास दधवाडिया	१८२२	२३X१५	२०४-२४६	लि क ऋषि सुजाण लि स्या नन्दपुर नगरे
१६६७	११०७२	राम-गुण रासो	माधवदास दधवाडिया	१६ वी श०	२३X११५	१-४४	लि स्या वीक्षेवा नगरे
१६६८	१२४१६ (१)	रामचन्द्रजी की कथा		१६४३	२५X१७	४०-६४	महाजनी लिपि मे। पत्र सख्या ४२-४५ व प्रारभ के ७-३६ अप्राप्त।
१६६९	१०८४७ (१)	रामचरणजी की अणभे वाणी	रामचरण स क नवलराम	१६६६	१७X८	१-५८१	सन्त-साहित्य की दृष्टि से गुटका महत्वपूर्ण है। स स्या शाहपुरा "ननलगम अग वाधिया" लि स्या महामन्दिर, जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	मात्रा (सं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७००	१०६४२ (४)	रामचरणजी की लावणी	लवलीनराम शिष्य रामचरण	गु० १६५२	१३४६	२३६-२४३	
१७०१	१०६३६ (६३)	रामचरणजी की लावणी आदि	*लवलीनराम	गु० १६३४	१२ ५४८ ५	३१५-३१६, ३४६-३५२, ३५२-३५५	*तीनों लावणियाँ इन्ही की हैं।
१७०२	१०८४८ (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१६ वीं श०	१५ ५४८	१-२३	
१७०३	१०६२४ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण स कर्ता-नवलराम	गु० १८४०	२३४१२ ५	६५-२८८	सं का १८२७ स स्था. साहिपुरा, भीलवाड़ा सर्व 'सबद' ३०६३
१७०४	१०६२४ (६)	रामचरणजी की वाणी (स्फुट)	रामचरण	गु० १८४०	२३४१२ ५	३४२-३५६	
१७०५	१०६२५ (२) ५	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	गु० १६३३	२५ ५४१६ ५	१६-३०, ४२-५१, ५५-५६	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७०६	१०६२६	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१६२२	१३x८ ५	१-२५	लि. क. नैतूराम लि. स्था. साहिपुरा गु० १६२३ मे जोधपुर मे श्री हजूर चैनरामजी कू वकस्यो ।
१७०७	१०६३० (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१६वी श०	१५ ५x१२	१-१६	
१७०८	१०६३३ (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१६४०	१३ ५x८ ५	१-६०२	लि. क. विलासीराम लि. स्था. साहपुरा-भीलवाडा
१७०९	१०६३४ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१६वी श०	१४x८	१६-७८	लि. क. "मुलभदयाल हरि- दासजी तीजो मोवतराम । तीन् मिल गुटको लिख्यो
१७१०	१०६३७ (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	गु० १६२२	१४ ५x७ ५	१-४२४	छाटमा 'सनदो' का समूह है । लि. क. रामलाल लि. स्था. बदनोर, रामद्वारा

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (से.मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७११	१०६४० (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१८८३	१५.५X१०.५	६७-४१६	लि. क जैतराम लि. स्था. फलोदी राग २५, पद १०५।
१७१२	१०६४४ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१६ वी श०	८X५	११-२१	लि. क बालकराम शिष्य दुलभराम
१७१३	१०६४५ (१)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण		१४.५X७.५	१-२३६	
१७१४	१०८४६ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१६५०	१५.५X६.५	२२-२६	लि. क. रामनिवास लि. स्था. रतनपुरी
१७१५	१०६४८ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	गु० १६३५	१४.५X७	१०-३०	
१७१६	१०६४९ (२)	रामचरणजी की वाणी	रामचरण	१६३५	११X६.५	५७-११८	लि. क. चौकसराम लि. स्था. रतनपुरी

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७२२	१२३६१	रामचरणजी की वाणी एवं कृति संग्रह	रामचरण	१६ वीं श०	२८x१४	३-१४२	आद्यन्त पत्र अप्राप्त ।
१७२३	१०६३८ (१)	रामचरणजी की स्फुट- वाणी	रामचरण	गु० १८८५	१६ ५x८५	१-६	
१७२४	११०३३	रामचरितमानस	गो० तुलसीदास	१८६०- १६०७	३१x१५ ५	१-२८८	लि. क. हरसुखदास लि. स्था. डीडवाणा ।
१७२५	११४४३	रामचरितमानस (उत्तरकाण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६७	३१ ५x१४ ५	१-३८	लि. क. लालदास शिष्य सेवाराज लि. स्था. कोट मरोट
१७२६	११५४६	रामचरितमानस (भारण्य, लका एवं अयोध्या काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४५	२८x१४	१-२६ १-५० १-६४ १७०	लि. क. खेमदास मनसाराम
१७२७	११५५०	रामचरितमानस (बालकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड)	गो० तुलसीदास	१६०१- १६०२	३१ ५x१४ ५	१-६४ १-४४	लि. क. साधु कीमतराम एवं मगदत्त व्यास

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७२८	११५५३	रामचरितमानस (सुन्दरकाण्ड एवं किष्किंधा- काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	३०.५X१४	१-१८, १-११	
१७२९	११५५७	रामचरितमानस (आरण्यकाण्ड)	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	३१X१४	१-२४	पत्र बडकने हैं ।
१७३०	११५६१	रामचरितमानस (लङ्का, अयोध्या, सुन्दर एवं किष्किंधा काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६१५- १६१३	३०.५X१५.५	१-४६, १-८२, १-१६, १-१४	लि क रामकृष्णदास निरजनी लि. स्था पीपली गली, मीदर पोल, ग्रहिपुर (नागौर) लिखायत साध द्वाराकादास ।
१७३१	११५७०	रामचरितमानस (अयोध्या, बाल, आरण्य, सुन्दर एवं लङ्का काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६१०	३१X१४.५	१-७४ १-१०३ १-२२ १-१६ १-४८	पत्र बडकने हैं । लि क लालदास साधु लि स्था फलोदी, रघुनाथद्वारा ।
						२६३	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७३२	११५६३	रामचरितमानस (सातौ काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६३	३१ ५X१५	१-६३, १-७६, १-२१, १-१०, १-१६, १-४३, १-३६, २६८	लि. क रामजीदास लि. स्था अहिपुर (नागोर)
१७३३	११६२६	रामचरितमानस (सातौ काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६३२	३० ५X१६	कुल ५१०	पत्र सं-बाल. १५८, सुन्दर २५, आरण्य ३०, किष्किधा १६, लङ्का ८४, अयोध्या १२६, उत्तरकाण्ड ६८।
१७३४	११६५१	रामचरितमानस (सातौ काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८८६- १८८८		१-२४५, १-१५६, १-५२, १-१६, १-३३, १-६१, १-५३, ६४६	किष्किधा काण्ड का ७ वा पत्र अप्राप्त । लि. क महात्मा भीखमचंद, जती जेठमल एव शकरगिरि लि. स्था. विक्रमपुर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७३५	११६५२	रामचरितमानस (सातों काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६०६, १६१४- १६१५	३३x१८x५	१-८८ १-६२ १-२० १-६ १-१५ १-४६ १-२६	लि क लिछमणदास एवं मगदत्त सेवग लि स्था अहिपुर वापू हरखेठ द्वारा मुबई से शक सवत् १७७३ में प्रका- शित प्रति की नकल।
१७३६	१२०२७	रामचरितमानस (छह काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६१७	२५x१५x५	१-११३ १-६२ १-२४ १-१६ १-६१ १-४७ ३५६	सुन्दर काण्ड नहीं है। लि क ब्राह्मण खण्डेलवाल फूसा लि स्था लाडणू।
१७३७	१२२१२	रामचरितमानस (सातों काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६२	२५x२०x५	२-४४५	पत्र खण्डित, चिपके हुए। प्रथम पत्र अप्राप्त।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७३८	१२३२४	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६३८	२६x१७	१-३४ १-६७ १-१६ १-६२ १-२१ १-१४ १-४२ ----- २८६	लि क हरमुखदास लि. स्या वीवास (वीदासर)
१७३९	१२३५१	रामचरितमानस (सातो काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८७६	३५ ५x१६ ५	१-२७१	लि स्या सूरजगढ़
१७४०	१२५६६	रामचरितमानस (किष्किधा काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	३०x१५ ५	१-११	पत्रों के कोण खण्डित ।
*१७४१	१०६०२ (४)	रामचरित्र	मुन्दरदास शिष्य कालुजी	गु० १८०६	१५ ५x१२ ५	१७-२३	
१७४२	११६५४ (२)	रामचरित्र (रामलीला)		१६ वी श०	२२x१० ५	२१-२४	वात्समीकि कृत शतकोटि रामायण के आधार पर ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७४३	१०६२२ (१)	राम चरित्र-गुण-कथा वार्ता सचित्र (ब्रह्माण्डपुराण गत)			२६ ५X१६ ५	१-२२४	चित्र सख्या - ४४७ सभी चित्रों पर शीर्षक दिया गया है। सभी पत्र फूलयुक्त लाल बोर्डर के हैं। लि. क. बोरा पुष्करना हीरालाल, पुस्तक प्रकाश वाले। लि. स्था. जोधपुर ठाकुरा देवीसिंहजी रं. पूज्य माजीसायबा पठनार्थ।
१७४४	१०८४८ (२)	रामजन की वाणी	रामजन शिष्य रामचरण		१५ ५X८	२३-३०	
१७४५	१०६२५ (६)	रामजन की वाणी	रामजन	गु० १६३३ २५ ५X१६.५	२५ १६.५	१४६-३३५	
१७४६	१०६६८	रामजन की वाणी	रामजन	१६१४	२५.५X१२ ५	१-१२०	सद्वद, साखी एवं पद संग्रह।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपि ताल (वि.सं. से.)	माप (से.मी. से.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७४७	११६४८ (७) ५२-५३	रामदासजी का कडला एवं पद	रामदास	मु० १८५३	२७x१६ ५	३४४-३४५	पत्र सं ३४५ पर ही मुखदेव एवं कल्याणदास कृत आरंभ है।
१७४८	१२४२० (६)	रामदासजी का छुटकर मंत्र	रामदास	२० वीं श०	१६x१४	११८-११९	
१७४९	१०८५१ (४)	रामदासजी की वाणी	रामदास	१७९२	१५ ५x१०	१५३-१८१	लि क श्यामाबाई
१७५०	१२५६१ (२६) १	रामदासजी की वाणी	रामदास	२० वीं श०	१५ ५x१०	१३४-१५२	
१७५१	१०८६६ (१८) १	रामदासजी की वाणी कवित्तवत्	रामदास	मु० १९२७	८ ५x७	६१६-६६२	प्रज्ञा ७, कवित्त ६०१
१७५२	१०५७१ (१) १	रामदासजी के छुटकर मंत्र एवं कवित्त-गणह	रामदास	१९ वीं श०	१० ५x८	१६७-१९२	अङ्गवद्ध। पत्र सं - १९२ से २३४ तक इन्हीं की अन्य कवित्तों का संग्रह है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७५३	१२२२६ (२-३)	राम-ध्यानमजरी तथा रामचरित्र को कक्को	अग्रदास	१८७६	१४x१२ ५	२-८ ८-११	पत्र स - १ पर जनहरि- दास की 'ब्रह्मस्तुति' है। लि क वीरमदास निरंजनी सेवादास की शिष्य परम्परा में। लि स्था केरू, जोधपुर
१७५४	१२३७१ (१०)	राम-नाम महिमा	सतदास	गु० १८३६	१८x१६ ५	३१६ वा	पत्र स - ३१६-३२० पर स्फुट दोहे हैं।
१७५५	१०८६८ (७)	राम-वारखडो	रामरतन	गु० १६२६	१३x८ ५	१७७-१८७	
१७५६	१२५६१ (६)	राममन्त्र-महिमा	कबीरदास	२० वी श०	१५ ५x१०	५२-५४	
१७५७	१२३७६ (३)	रामरक्षा (स्तोत्र भाषा)	रामानन्द	गु० १८६६	२० ५x१४ ५	२६-३१	पत्र स - ३२ पर 'सप्त- श्लोकी गीता' है।
१७५८	१२५६१ (३८)	रामरक्षा (स्तोत्र भाषा)	रामदास	१६ वी श०	१५ ५x१०	२५३-२५५	अत में रामदासजी के कवित्त है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७५६	१०८४६ (२)	रामरक्षा (स्तोत्र भाषा)	रामानन्द	गु० १६३१	१७X११	१-५	प्रारम्भ के पत्र पर सूरदास का एक पद है।
१७६०	१२४२० (४-५)	रामरक्षा (स्तोत्र भाषा)	रामानन्द	२० वीं श०	१६X१४	२१-२२, १-४	पत्राङ्क, २२ के बाद पुनः १ से प्रारम्भ किए गये हैं।
१७६१	१०८६८ (४)	राम-रसायन	मानिकदास	गु० १६२७	८ ५X७	४६-१८७	अतः एक कवित्त है।
१७६२	१०६५६ (६)	राम-रसायन	मानिकदास	२० वीं श०	३२X१६	१-३५	संयोग्या।
१७६३	१२३६५	रामरासो	माधोदास दधवाडिया	१७८३	२२ ५X१६ ५	१-८८	पूर्व प्रति का उल्लेख है। लि. क. हरकिशन शिष्य दयारत्न लि. स्था. गोंव बलू दा— रामदास चाँदावत रे गाव
१७६४	१२५७० (१२)	रामरिष्या (रामरक्षा स्तोत्र-भाषा)	रामानन्द	२० वीं श०	६ ५X६ ५	४१-४६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.से.)	माप (से.मी.से.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७६५	१२५१७ (१)१	रामरिष्या (रामरक्षा स्तोत्र भाषा)	रामानन्द	१६ वी श०	१० ५X८	१-६	
१७६६	१२५६१ (३२)	रामरिष्या (रामरक्षा स्तोत्र भाषा)	रामानन्द	२० वी श०	१५ ५X१०	२०८-२११	पत्र सं - २१२ पर कवीर- दासजी का पद है।
१७६७	१२३११ (३)	रामवल्लभजी की साखी	रामवल्लभ	गु० १६४०	१७ ५X८ ५	३०३-४६४	अङ्गवद्ध। लि क साधु गगाराम लि स्था कोटा
१७६८	१२२१३ (१)	रामविनोद ग्रन्थ- रोगानुक्रमणिका		गु० १८४७	२१ ५X१६ ५	३-७	मूलग्रन्थ से पत्र अलग सीं दिये गए हैं। मूल ग्रन्थ इसी गुटके में है। रामविनोद ग्रन्थ में वर्णित रोगों की पत्र क्रम से अनु- क्रमणिका दी गई है। प्रथम दो पत्र अप्राप्त होने से पत्र सं ५१ से १०२ तक की विगत है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७६६	१२३८५	रामविनोद भाषा (आयुर्वेद)	रामचन्द्र शिष्य पद्मरग	१६२८	३२x१५५	१-७१	लि. क. घनस्यामदास वैष्णव अत मे स्फुट नुस्खे है।
१७७०	१२२१३ (४)	रामविनोद भाषा	रामचन्द्र शिष्य पद्मरग	गु० १८४७	२१x१६५	१-१००	अत के दो पत्र अप्राप्त। गुटका आयुर्वेद-विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। संस्कृत में लोलिम्बराज कृत "वैद्यजीवन" के १-२२ पत्र भी इस गुटके में हैं।
१७७१	१०८६३	रामविनोद भाषा	रामचन्द्र पुत्र केशवदास मिश्र	१६ वी श०	१६५x११५	१-८८	अपूर्ण। प्रारम्भ के तीन पत्रों पर "वैद्यमनोत्सव भाषा" का अतिमाश है।
*१७७२	१०६७६	रामविनोद भाषा	रामचन्द्र शिष्य पद्मरग	१८६५	२५५x१०५	१-७६	र का १७२० 'गगन पाखि फुनि दीप ससि' औरगजेव के समय में खुरसाण में रचित। लि. क. साधु गगाराम सर्वगाथा - ३०३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	मान (सं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७७३	१२३६४	राम विवर-विजय गीत (रामचरित्र)	तुलसी	१६ वी श०	२४ ५X१२	१-११५	दुर्लभ्यप्रति । अपूर्ण । दोहा चौपईवद्ध अहिरावण वध- कथा है । २३७ वी चौपई पर्यन्त ।
१७७४	१०६२४ (१०)	रामसत	चन्नभुजदास	गु० १८४०	२३ ५X१२ ५	५१८-५२१	
१७७५	१२३११ (२)	रामसत	चन्नभुजदास	गु० १६४०	१७ ५X८ ५	६६-१०२	लि क साधु गगाराम लि स्था कोटा
१७७६	१२३२६ (५)	रामसत	चन्नभुजदास	२० वी श०	२३X१६ ५	३७३-३७७	
१७७७	१०६२४ (१२)	राम सागर	कवीर	गु० १८४०	२३ ५X१२ ५	५३४-५३६	
१७७८	१०६७०	राम-सीता-चरित्र	ऋषि चोथमल	१८६७	२५ ५X१३	१-६७	र का १८६२, जोधाण लि क मोती लि स्था गुरा (गुढा-जोधपुर)

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विसं मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७७६	११०६७	राम-सीता चरित्र	ऋषि चोथमल	१६१२	२५x१२.५	१-६४	र का १८६२, जोधाणे लि क. केसर लि स्था गागराणा
१७८०	१०७५५	राम-सीता-चरित्र टीका (गद्य)		१६वी श०	२६x११५	१-१३	अपूर्ण । जैन कृति । सीता के पुनः अयोध्या लौटने पर लगाये गये कलक तक की कथा है ।
१७८१	१०६६४	रामाज्ञा	गो० तुलसीदास	१६४५	२५ ५x११५	१-१२	दोहे - ३४३ लि क चौकसराम
१७८२	११६४८ (१६)	रामानंदजी का पद एव रामरक्षा	रामानंद	गु० १८५३	२७x१६५	५५२-५५३	
१७८३	१२३१६	रामायण (अवतारचरित्र गत)	नरहरिदास बारठ	१६०८	२२x४२	४-२०४	लि क ब्राह्मण गंगादास गौड; लि स्था नागिना पत्र सख्या-१-३, ५, ६-१८ अप्राप्त ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग २

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
५१७८४	१०६६०	रामाश्वमेध भाषा	मधुसूदनदास माथुर	२० वी श०	३२X१६५	१-२०५	र का १८३६ पद्मपुराणगत ।
१७८५	१२५२०	रामाश्वमेध भाषा		१६०३	३१X१५५	१-१८	लि क व्यास रामसुख पारीक लि स्या बीकानेर
१७८६	१२५६७ (१३)	रायमल, महासिंह-राठौड रो सिलोको		गु० १८३१	२१X१५५	६४-६७	लिपि भ्रष्ट है । पत्र स —५७, ६१, ६२-६४ पर पट्टी-पहाडे हैं । पत्र स —५६-६० पर स्फुट पद हैं ।
१७८७	१०६४२ (५)	रावण की लावणी	लवलीनराम शिष्य रामचरण	गु० १६५२	१३X६	२४३-२४८	
१७८८	१२५६५ (१७) ५	रावण प्रतिवासुदेवजी की लावणी		२० वी श०	१६X१२	११७-११८	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७८६	१०७०१ (१)	रिसालुकुँवर री वार्ता (सचित्र)	नरवद चारण	१८६२	१६.५ x १२	१-६६	चित्र स.—७१ गुटके की सिलाई नहीं है। लि स्था सेडता
१७८७	१०६५४ (१६)	रिसालु राजा री वात	नरवद चारण	१८७४	२४ x १६.५	१२२-१३८	लि क फतेचन्द लि स्था. पाली समदकु वरजी जुहारमलजी वाचनार्थ ।
१७८९	१२३७० (६)६	रिषभदेव-गीत	जिनलाभसूरि	१६ वी श०	१६ x ११.५	५५ वा	
१७९२	१२६००	रुक्मिणीमगल	विष्णुदास	१६ वी श०	२०.५ x १५	१५-६६	लि क वलदेव लि स्था अलवर पत्र स - १-१४, २५, २८, २९, ६७ अप्राप्त। ३५ वा पत्र दो वार।
१७९३	२२४२५	रुक्मिणीमगल	पदमइयो शिष्य पीपा (पदमा तेली)	२० वी श०	२६.५ x १७	१-६०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७६४	१२५६२ (३)	रुक्मिणीमगल	जनपदम (पदमा तेली)	१६ वी श०	१४X१०५	५३-८६	
१७६५	११५८८	रुक्मिणीमगल (सचित्र)	पदमईया	१६४२	२७ ५X११८	१-११४	चित्र सं-८, पत्र के माप के। लि क नन्दराम लि. स्था. नागौर
१७६६	१२५५३ (२)	रुघनाथलीला	माधोदास	गु० १८६७	१४ ५X१३५	८२-६६	लि क ब्राह्मण श्रीधर लि स्था. भागनगर
*१७६७	१०८४२ (१६)	रूपग-दवावेत महाराजा- अजीतसिंहजी री	द्वारकादास	१६००	२४ ५X१६५	११२-११६	१२ दोहे, ३ कवित्त तथा २ गाथा। र. का. १७७२ लि क खिडयो हरसुख
१७६८	१२२१० (१३) १-२	रूप-चौदस के पद	विठ्ठलदास विठ्ठल	१६ वी श०	१८X१३५	६८ वा ६८-६६	राग-देवगधार, विलावल।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१७९९	१०८४२ (२०)	रूपदीप पिगल-भाषा	जयकृष्ण भोजग पुत्र भवानीदास	१६००	२४ ५X १६ ५	११६-१२३	पत्र स. - १२३ पर स्फुट कवित्त है। किञ्चित् अपूर्ण, महाजनी लिपि में।
१८००	१२५८० (१)	रूपदीप पिगल-भाषा	जयकृष्ण भोजग शिष्य कृपाराम	गु० १८६६	१५X १० ५	१-१२	२ का १७७६ अतः मे गणविचार दिया है। लि क वेणव भगताराम लि स्था रामगढ़
१८०१	१०८४७ (२) ३३-३४	रेखता (स्फुट)	गगादास बखतावर	गु० १६६६	१७X ८	६६४ वा ६६५ वा	
१८०२	१०८४६ (६)	रेखता-ब्रह्मस्तुति	हरिरामदास	गु० १६३१	१७X ११	१३-१४	
१८०३	१२५६२ (६) २	रेखता-संग्रह	हरिरामदास किसना	१६ वी श०	१४X १० ५	१७३-१७४ १७४-१७५	
१८०४	१२४४६ (१)	रेखादेनी चो-ढालियो	ऋषि रायचन्द	१६ वी श०	२५X ११	१-३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि स से)	माप (सेमी से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८०५	१२४२२ (२१)	रैदासजी की परची	अनन्तदास	गु० १८३१	१५X१० ५	४२६-४३३	पत्र स - ४४८-४४९ पर कवीरदास कृत 'वत्तीस जोग ग्रन्थ' का प्रारम्भ है। पत्र स - ४५० पर 'साध को व्योरो' है।
१८०६	१२५८५ (३)	रैदासजी रो परची	अनन्तदास	गु० १६२७	१६ ५X१५	१५०-१८३	गुटके में १५ सतों की परचियों का संग्रह है।
१८०७	११६४८ (१७)	रैदासजी की वाणी	रैदास	गु० १८५३	२७X१६ ५	५४२-५४६	राग १४, पद ८६
१८०८	१२१६६ (७)	रोहिणी-व्याख्यान		गु० १६७५	२७X१४	३८-४०	
१८०९	११०११	लघुचाणक्य भाषा पद्यानुवाद	भावनादास वंणव	२० वी श०	२६X१४	१-१३	र का १६२६ "अक अयन गह इन्दु"
१८१०	१०८६७ (८)	लघुतानाम ग्रन्थ	खेमदास	२० वी श०	१२X११	२४६-२५४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८११	१०७७३	लघुमहणी-बालावबोध	शिवनिधान गणि	१८६३	२६X१२५	१-७२	मध्य में सारणिया दी हुई हैं। लि. क क्षमासागर लि. स्था. श्री विक्रमपुर (बीकानेर)
१८१२	१०८४७ (८) ३, ५	लावणी	रामलोचन	गु० १६६६	१७X८	७५८-७५६	पत्र सख्या ७६१-७६२ पर निर्भयराम के पद हैं।
१८१३	१०८४७ (२) ३६-४०	लावणी	सेवाराम चोधमल	गु० १६६६	१७X८	६७६-६७७ ६७७-६८०	र का (३६) १८६६, रामपुरा गढ़ र का (४०) १८५२
१८१४	१२५७४ (६)	लावणी - प्रह्लादजी की	कुण्णदास	२० वी श०	१७X१० ५	१६४-१६७	
१८१५	१०६४२ (६-८)	लावणी - संग्रह	अमोलकराम कवीरदास सेवाराम	गु० १६५२	१३X६	२४८-२५० २५१-२५३ २५३-२५५	

ग्रन्थान्तर पाच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोगपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (विसं मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८१६	१०६३६ (१) ५३-५५	लावणी-संग्रह	रूपदास चौधे छीतमदास सुन्दर विरहन	गु० १६३४	१२ ५x८ ५	२१६-२२३ २२३-२२८ २२८-२२९ २५८-२५९	पदसंग्रह है।
१८१७	१२५७४ (२)	लावणी-संग्रह (मोगवाई व ध्रुवजी की)	रामनारायण देवीदास अज्ञात	२० वी श०	१७x१० ५	७४-७६ ७६-७९ ७९-८१	लि. क. वक्षीराम पत्र स - ८१ पर रामचरण कृत आरती है।
१८१८	१०६३५ (१)	लीलावती गणित चिन्तामणि	सेवग रिदलाल	१६ वी श०	२१ ५x१७ ५	१-१३५	
१८१९	१२३८० (२७) १-४	लीला-संग्रह (बाललीला, प्रबोधलीला, भक्तिप्रताप लीला)	माधोदास	गु० १७२४	२०x१४	३०७-३१३ ३१५-३१९ ३१९-३२६	पत्र स. - ३१४ पर नाम- देवजी की साखी है।
१८२०	१०६३५ (२)	लेखा रा ऊपर वाडिया		१६ वी श०	२१ ५x१७ ५	१३६-१५४	गणित सम्बन्धी प्रश्नोत्तर।
१८२१	१२५८१ (७)	वन्दना आदि	सेवादास	१६ वी श०	१६x१० ५	४७-५१	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (सें.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८२२	१०८४२ (१७)	वमेकवार री निसाणी	केसोदास गाडण	१८६७	२४ ५X१६ ५	१०१-१०६	पत्र स—१०६-११२ पर 'सारस्वत व्याकरण' है। लि क खिडियो हरसुख
१८२३	१२३७६ (२)	वमेकवार री निसाणी	केसोदास गाडण	गु० १८६६	२० ५X१४ ५	१४-२८	
१८२४	१२४३४	वमेकवार री निसाणी	केसोदास गाडण	१८६१	२५X१२ ५	१-६	कीर्तिमल रणजीत पठनार्थ ।
१८२५	११५८४ (६)	वरकानापाश्वर्नाथ स्तवन		१७१४	१६ ५X१६	३६ वा	पत्र स.-३७-३८ पर संस्कृत मे 'कालज्ञान' है ।
१८२६	१२२०५ (४७)	वरकानापाश्वर्नाथ स्तवन	कीर्तिवर्द्धन	१८ वी श०	१७X११	१४६ वा	पत्र सख्या-१५० पर श्रेख महीमदीन का पद है ।
१८२७	१२३२० (४)	वर्द्धमानस्वामी स्तवन	उदयसिंह	गु० १७६२- १८४७	२१ ५X१४ ५	१६-१७	र का १७६८ र स्था. किरानगढ

क्रमांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८२८	१२२११ (१)	गोपालदास	२० वी श०	१७x१३	१-१४	राग -- कैदारी, रामकली, भूपाली, प्रभाती, सामेरी, परज, धनाश्री ।
१८२९	१२२१८ (५) २८	गोपालदास	१७६३	२६x५१०	४१ वा	
१८३०	१०९७५	गोपालदास	२० वी श०	२८x१३ ५	१-९	कोश ग्रन्थ है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।
१८३१	१२५७० (२४)	वाजीद	२० वी श०	६ ५x६ ५	१४०-१५५	
१८३२	१०८६८ (१-३)	सतदास जनदरिया किसनदास	गु० १९२९	१३x८.५	१-४७ ४७-६७ ६७-८०	
१८३३	१२३३० (४२)	कल्याणप्रसाद	गु० १७९७	२१ ५x१४ ५	४९-५०	२ का १६६५ २ स्था हिसार पत्र सख्या ५० पर 'सीमभर स्वामी स्तवन' है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८३८	१२५६५ (३)	विंशति-स्थानक पूजा	जिनहर्षसूरि शिष्य जिनचन्द सूरि	२० वी स०	१६x१२	१०-३३	र. का १८७१ गुटके में स्तुति-स्तोत्र आदि लघु कृतियों का संग्रह है। पत्र स - ३४ पर इन्ही की 'वीसथानक आरती' है।
१८३५	११०६५	विक्रमादित्य-खापर्या चोर गी चौपई	लामबद्धन	१६१६	२७५x१३५	१-२०	र का १७२७ र स्था जैतारण सर्व ढाले--२७ लि क उत्तमचन्द लि स्था हुमावस (नागोर)
१८३६	११०७०	विक्रमादित्य राजा री चौपई	मानकवि	१७८०	२४५x११५	१-४६	सर्व ढाले--५१
१८३७	१०८४५ (४)१	विचारमाला	अनाथदास	१८८६	१५५x१०५	८२१-८३७	पत्र सख्या ८३७-८५० तक जडभरत कुत 'प्रश्नावली' संस्कृत में है। र. का. १७२६ लि. क जैरामनारायण लि स्था पोकरण

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिकाल (वि.स. मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८३८	१०८४८ (५)	विचारमाला	अनाथदास	१६ वी श०	१५ ५X८	५६४-५८१	र का १७२६
१८३९	११६४८ (२३)	विचारमाला	अनाथदास	गु० १८५३	२७X१६ ५	५६६-५६९	र का १७२६
१८४०	१०८४९ (१६)	विचारमाला	अनाथदास	गु० १६३१	१७X११	१४३-१५५	र का १७२६
१८४१	१०८६९ (७)	विचारमाला	अनाथदास	गु० १६२७	८ ५X७	२०५-२२०	
१८४२	११००५	विचारमाला	अनाथदास	१६१०	२७ ५X१३	१-४१	र का १७२६ लि क तुलछीदास शिष्य शभूराम लि स्था वेडापा, राम- मोहला
१८४३	१०६४१ (२)	विचारमाला	अनाथदास	गु० १६३७	१७X१० ५	८०-९९	र का १७२६ किचित् अपूर्ण ।
१८४४	१०६६५	विचारमाला	अनाथदास	२० वी श०	२५ ५X१२ ५	१-१६	र का १७२६

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. से)	माप (सें.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८४५	१२२२६ (४)	विचारमाला	अनाथदास	१८७६	१४x१२५	११-३०	र का १७२६ लि क बीरमदास निरजनी लि स्था केरू (जोधपुर)
१८४६	१२५६१ (७)	विचारमाला	अनाथदास	१६वी श०	२३५x१७	३३०-३३६	र का १७२६
१८४७	१२५७० (१५)	विचारमाला	अनाथदास	२०वी श०	६५x६५	७०-६६	र का १७२६ पत्र सख्या ६७-६६ पर सेवगरामजी कृत लावणी है।
१८४८	१०७२५	विचार पट्टित्रिशिका		१८वी श०	२६x११	५ वा	लि क. गजसार शिष्य धवलचन्द्र
१८४९	१०७६६	विचार पट्टित्रिशिका- बालावबोध		१८६८	२५x१२	१५ वी	लि क सवाईसागर लि स्था फलोधी नगर
१८५०	१०६५८	विचारसागर-भाषा	निश्चलदास	२०वी श०	३२x१६	१-३२	र स्था --- "दिल्ली तै पश्चिम दिसा कोस अठारह गाम । तामें यह पुरो भयो किहिडोली तिहि नाम ॥"

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८५१	१०६६७	विचारसागर-भाषा	निश्चलदास	१६२४	३१x१५५	१-१८०	लि. क. कुसलदास र. स्था. किहिंडोली ग्राम साधु रामसिंहजी की इच्छा से सतोकदास नारायणजी त्रिकमजी ने इसे मुबई में ग्रन्थप्रकाश छापवाने में छपवाया था।
१८५२	१०६३० (४)	विधवा-विवेक	मुरलीदास	१६वीं श०	१५.५x१२	४७-५२	स्त्री स्वभाव पर औपदेशिक कवित्त।
१८५३	१०८६७ (१०)	विनयपत्रिका के पद	गो० तुलसीदास	१६वीं श०	१८x११	६७-१००	गुटका श्रृणुणं है— पत्र स ५१ से १०० तक के ही पत्र हैं।
१८५४	१२३५२	विनयपत्रिका सटीक	मू० गो० तुलसीदास टी० शिवप्रकाश	१६वीं श०	३१x१८५	१-२६१	टी. का १६३५ पत्रों के कोण क्षतिग्रस्त।
१८५५	१२२१८ (५) १५२	विनयाध्ययन गीत	ब्रह्म	१८वीं श०	२६.५x१०	१६५ वा	गुटका त्रिभिन्न लिपिको द्वारा लिखा गया है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं.से)	माप (से.मी.से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८५६	१२२०३	विपर्यय को अग रहस्यार्थ-दीपिका टीका	सुन्दरदास	१६ वी श०	२१ ५X११	१-४१	टीका गद्य में है।
१८५७	११६८५ (८) ४१	विमलगिरि स्तवन	पद्मविजय	१६ वी श०	१६.५X११ ५	१७५-१७६	
१८५८	१२३७० (६) ५	विमलनाथ गीत	जिनगज	१६ वी श०	१६.५X११ ५	५५ वा	
१८५९	१२०६७ (७)	विमलपचीसी (देवी स्तुति)		गु० १६२६	२३ ५X१७	१३-१५	पत्र सख्या १५-१६ पर सक्षेप-पूजन विधि है।
१८६०	१२५७५ (२८)	विमलाचल स्तवन	गुणसागर सूरि शिष्य पद्मसागर	१६ वी श०	१३X१४ ५	८०-८६	
१८६१	१०६०० (७)	विरह को अग	परसराम	२० वी श०	१२X८ ५	५१-७०	
१८६२	१२६१२ (३)	विरह को कको		१८१६	२५X११	१४-१६	लि. क. हिम्मताराम राजा सूरजमलजी की बही से प्रतिलिपि कृत।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८६३	१२०६७ (६)	विराट एव सूक्ष्म-रूप वर्णन	लिच्छमन गिरि	गु० १६२६	२३ ५X१७	५-६	पत्र सख्या ६-१३ पर स्फुट नुस्खे एव मात्रादि है।
१८६४	११५७१	विराटपर्व बाणभगा माहात्म्य भाषा	अखैराम शिष्य चरणदास	१८४०	२६X१४ ५	१-६५	पत्र कीटविन्द । लि क साधु मनोहरदास लि स्था पत्तेपुर (फत्तेपुर)
१८६५	११०३०	विवाह-सारणी	पुण्यहर्ष	१६ वी श०	२५X१	१-२	कृति दोहा-कवित्तबद्ध है।
१८६६	१०६३६ (५)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	गु० १६३४	१२ ५X८ ५	३५६-३६६	लि क चोरसराम लि स्था जोधपुर
१८६७	१२३२६ (६)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	२० वी श०	२३X६ ५	३७७-३७६	
१८६८	१२३७८ (२१)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	१८ वी श०	२२X१५ ५	१३७-१३८	पत्र सख्या १३८-१३६ पर इन्ही की 'तर्क चितावणी' है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८६६	१२५७० (३)	विवेक चितावणी	रामजन	२० वी श०	६.५x६.५	३४-३६	
१८७०	१२५६१ (३)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	२० वी श०	१५ ५x१०	२७-३१	
१८७१	१०६२४ (२४)	विवेक चितावणी	सुन्दरदास	१६ वी श०	२३ ५x१२ ५	५६६-५६७	पत्र सख्या ५६७-५६८ पर 'हरबोल चितावणी' इन्ही की है।
१८७२	१२३७८ (४)	विवेकसागर	लछीराम	१८ वी श०	२२x१५ ५	२८-३१	
१८७३	१०६०४ (१-२)	विवेकसिन्धु एव परमामृत	मुकुन्दराज योगी	१६ वी श०	२०x१५ ५	२०-८४ १-२१	प्रथम कृति अपूर्ण है। दोनो कृतियाँ मराठी भाषा में है।
१८७४	१०६०० (११)	विश्वास को अग	कबीरदास	२० वी श०	१२x८ ५	७६-६४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८७५	१२४२८ (२)	विशातनलीला	प्रेमदास	गु० १६१२	२१x१५.५	६-१५	कृष्ण का सखी वेश में राधा मिलन प्रसंग ।
१८७६	१२५६२ (२)	विष्णुपुराण भाषा		१६४६	२८x२०	२५-१०६	लि स्था गाव जुम्ह पत्र स-११० पर नारायण- शास्त्री कृत सत्यनारायण कथा का प्रारम्भ मात्र है ।
१८७७	१२२०५ (१६)	त्रिहरमान-वीसी	कीर्तिवर्द्धन शिष्य दयारत्न वाचक	गु० १७४८ १७५५	१७x११	२६-३७	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर पत्र स-३७ पर ही सूरदास का पद है ।
१८७८	१२५५१ (२१)	वीर-जिन स्तवन (महावीर स्तवन)	समयमुन्दर	१७ वी श०	१३x११	१४५-१४७	पत्र खण्डित है ।
१८७९	११५८५ (८) ३-४	वीर स्तवन	जिनलाभ	गु० १८५२	१६५x११.५	१३६ वा	इसी पत्र पर 'लोदवा- पावर्चनाथ स्तवन' भी है ।
१८८०	११५८५ (८) ४०	वीर स्तवन	जसविजय	१६ वी श०	१६५x११.५	१७५ वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८८१	१२२०८ (८)	वीरस्तवन		१८ वी श०	२५x१८ ५	१२०-१२१	पत्र सख्या १२२-१६५ तक संस्कृत प्राकृत में टब्बे सहित मंत्र प्रवचन आदि ह ।
१८८२	११६३७	वीमथानक-पूजा	विजयलक्ष्मी सूरि शिष्य विजयसौभाग्य	१६१६	२६ ५x१२	१-१८	र का १८४१, प्रतिबोभन लि क मुनि जयसागर लि. स्या मु नई वदरे लिखावत— शाह श्री मूल- चन्द दुल्लभा ।
१८८३	१२५७५ (१३)	वीसविहरमान नाम-ठाम- विचार		१६ वी श०	१३ ५x१४	५१-५३	
१८८४	१२२१८ (५) १२८- १२६	वीसविहरमान स्तवन एवं वीरस्तवन	समयमुन्दर	१८ वी श०	२६ ५x१०	१३८ वा	
१८८५	१२३७० (३७)	वीहरमान गौतम चो-ढालियो	ऋषि रायचन्द	१६ वी श०	१६x११ ५	४२-४६	र का १८७३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८८६	११०१३ (३६)	वृन्दविनोद सतसई	वृन्द कवि	१८१६	२३X१५	२८७-३०७	र का १७६१ र स्था ढाका शहर
१८८७	१२३७१ (६)	वृन्दविनोद सतसई	वृन्द कवि	१८३५	१८ ५X१६ ५	२८७-३१८	र. का १७६१ "शशि हर (रस) वार शशि" र स्था ढाका सर्व ७०६ दोहे लि क भीखनदास गौड़ लि. स्था आहिपुर
१८८८	१०६८२	वृन्दसतसई	वृन्द कवि	१६ वी श०	२५ ५X१२ ५	१-२७	र का १७६१ र स्था ढाका
१८८९	१२०६७ (१)	वृन्दसतसई	वृन्द कवि	१६०५	२३ ५X१७	१-३६	र का १७६१ र स्था ढाका लि क सेवग भु गरलाल
१८९०	१२५८० (२)	वृन्दसतसई	वृन्द कवि	गु० १८६६	१५X१० ५	२-८२	र का १७६१ र स्था. ढाका लि क वैष्णव भगत राम लि स्था रामगढ़ फतेचन्द सरावगी पठनार्थ ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८६१	१०८७१	बृहद वासिष्ठसार भाषा		१६ वीं श०	२७ ५X१५	१-४१	अपूर्ण— वैराग्य प्रकरण, १८ वें सर्ग पर्यन्त ।
१८६२	१०८४३ (६)	वेदनिर्णय पञ्चाशिका	बनारसीदास	गु० १८६५	२५ ५X२०	२१-२५	लि क गंगराज लि स्था रतनपुरी
१८६३	१२०६७ (२)	वेदान्त अद्वैत-अदभुत नाटक	देवकृष्ण दरजी	१६२६	२३ ५X१७	१-१२	र. का. १६१७ लि. क वोरा चदलाल लि स्था जोधपुर
१८६४	१२२१८ (५) १३८	नैदर्भी चौपड़	सुमतिहस	१७६३	२६ ५X१०	१४४-१४७	र का. १७१३ र स्था जेतारण लि. क अमीचंद लि स्था लूणसर पत्र सख्या १४३ पर सवर् १७६६ में पोमदत्त को जिन- समुद्र-सूरि के समय दीक्षा देने की विगत है ।

क्रमांक	ग्रन्थ-नाम	कत्तों	लिपिकाल (विसं मे)	माप (सेंमी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८६५	वैदर्भी चौपई		गु० १८४७	२१ ५x१४ ५	४६-५५	
१८६६	वैद्यक नुस्खा संग्रह		२० वी श०	२१x१० ५	१-४४	गुटका लछीराम दाहपंथी का है।
१८६७	वैद्यक-वारता	बांकीदास	१८६५	२४ ५x१६ ५	८२-८४	ति क खिडियो हरसुख तथा वणसुर फत्तो नि स्था जोधपुर
१८६८	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख पुत्र केशवदास	१७८८	१५ ५x१०	१-२४	र स्था तीनिगासर नगरे (बीकानेर) अतिम दो पत्रों पर फुटकर नुस्खे है।
१८६९	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख पुत्र केशवदास	१८ वी श०	१६ ५x१६	१६७-२२१	पत्र कीटविद्ध एव गलित।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६००	१२२११३ (३)	वैद्यमनोत्सव-भाषा	नयनसुख पुत्र केशवदास	१८४७	२१x१६५	१-८३	पत्र स - ८४ पर फुटकर नुस्खे तथा अगले ७ पत्रों में तात्रिक मन्त्रादि है।
१६०१	१२५६६ (६)	वैद्यमनोत्सव-भाषा	नयनसुख पुत्र केशवदास	१९ वी श०	१६.५x११	१-१३५	अपूर्ण।
१६०२	१२४५८	वैद्यमनोत्सव-भाषा	नयनसुख पुत्र केशवदास	१८४७	२६.५x१३५	१-१६	२ का १६४६ अकबर शाह के समम में। लि क किशन व्यास पुत्र मोहनलाल लि स्था नागपुर
१६०३	११०१३ (२)	वैद्य विरहनी प्रबन्ध	उदैराज	१८२५	२३x१५	६८-७०	लि क ऋषि सुजाण लि स्था चाणोद (जोधपुर) ७६ दोहे है।
१६०४	१२५६१ (१६)	वैराग्यप्रकरण-भाषा	उदैराज	१८५५	२३.५x१७	३८०-३८२	लि क नदराम लि स्था ककोडग्राम पत्र स - ३८३ पर समनजी की साखी है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-मगध) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६०५	१२५६१ (११)	वैराग्यमजरी	भावनादास	२० वी श०	१५ ५X१०	५५-६२	अपूर्ण ।
१६०६	१२४२१ (१०)	वैराग्यमजरी-भाषा	महाराजा प्रतापसिंह	गु० १८६५	१७X१२	१६६-१८०	र का. १८५२ लि स्था जयपुर, चन्द्र महल में ।
१६०७	१०६५६ (१)	वैराग्यशतक-भाषा विवेक दीपिका टीका	इन्द्रजीत	२० वी श०	३२X१६	१-३८	
१६०८	१२२०५ (४०)	वैराग्य सज्जाय	राजसमुद्र	१८ वी श०	१७X११	१२४-१२५	
१६०९	१०६५४ (१२-१४)	वैराग्य सज्जाय आदि	मानसागर समयसुन्दर लावण्यसमय	गु० १८७४	२४X१६ ५	११२ वा १११ वा ११२-११३	पत्र सं - १११ पर समय- सुन्दर कृत 'तीर्थ जात्रा फल स्त्वन' है ।
१६१०	१२३२० (३४-३५)	वैराग्य सज्जाय एवं सीमधर-स्तोत्र	कुशलसिंह	गु० १७६७	२१ ५X१४.५	३६-४०	पत्र सं - ३६ पर 'मोसानी गजभाय' है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६११	१०८३६ (१)	वैशाख-माहात्म्य भाषा (पद्मपुराणगत)		१६०६	३२X१७५	१-६	१२ वा अध्याय । लि स्था जोधपुर
१६१२	१२४८२	वैशाख-माहात्म्य भाषा (पद्मपुराणगत)	सेसदास शिष्य मगनानन्द शिष्य रनजीत	१६००	३०X१५	१-१८	२ का १८६२ 'दस आठ साठ रु दीये' कर्त्ता ने एक स्थान पर अपना नाम लिखमणदास भी दिया है ।
१६१३	१२५०४ (२)	वैशाख-माहात्म्य भाषा		गु० १६०३	२३X१६५	१-२४	
१६१४	११३७८	वैशाख-माहात्म्य भाषा पद्यानुवाद	सेसदास शिष्य मगनानन्द शिष्य रणजीत	२० वी श० ३०	५X१४५	१-१७	अपूर्ण । पद्मपुराणगत ।
१६१५	१२३७१ (१५)	वैष्णववार्त्ता		गु० १८३६	१८X११५	१८-५८	अपूर्ण ।
१६१६	११६६६	अत-अन्नत नो थोकडो एवं बोल आदि		१६०८	२२५X११	१-७	लि स्था सोजत

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६१७	१२५७८	शम्भूरामजी की वाणी एव कृति-संग्रह	जनशम्भूराम शिष्य दयालदास	१६ वी श०	१४x१०	१-१४६	गुटके में केवल इन्ही का कृति संग्रह होने से महत्व- पूर्ण है।
१६१८	११०१३ (३७)	शकुनदीपिका		गु० १८२२	२३x१५	२५६-२८२	चौपईबद्ध।
१६१९	११५६०	शकुनपृच्छा सचित्र		१८०६	२२x१०	१-७	चित्र सख्या—४ किनारे दूटे हुए। लि क जति हरिचन्द लि.स्था अहिपुर (नगौर)
१६२०	१०८६२ (६)	शकुनविचार		गु० १८६८	१७x१४	३५-४१	अत में शकुन लेने का श्लोक है। लि.स्था जोधपुर
१६२१	१२५५१ (३४)	शकुनावली		१८ वी श०	१३x११	१७७-१६१	पत्र सख्या १६२ पर प्रताप- सिंहजी के पुत्र देवीसिंह तथा उनके पुत्र छजमल का संवत् १६२७ का जन्मलग्न है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२२	१२५६२ (१०)	शकुनावली (स्फुट)		१६ वी श०	१४X१० ३	१६६-१६८	र. को १८७०
१६२३	१२२६०	शकुनावली सचित्र		१८७०	१३X१२ ५	१-१२२	विजय सवत् १७०१ की प्रति से प्रतिलिपि कृत । चित्र स - ११७ लि क मोनजी (मोहनजी) लि स्था नवानगर पत्र सख्या ६६, ७५, ७६, ८६, ११७ खण्डित । पत्र २०, ७६, १०२ वे अप्राप्त
१६२४	१२५७५ (६)	शत्रुञ्जय सञ्भाष	मल्लिदास	१६ वी श०	१३ ५X१४	११-१२	प्रारम्भ के १० पत्रों में संस्कृत-प्राकृत में 'अजित- शक्ति - स्तवन', 'भयहर- स्तोत्र', 'लघुशक्ति' एवं 'उवसर्गस्तवन' तथा 'सात स्मरण' है ।
१६२५	१२२१८ (५)६०	शत्रुञ्जयउद्धार-स्तवन		१७७०	२६ ५X१०	१०६ वा	पत्र सख्या १०७ (ब) पर 'मुनिपति पडिलेहण ५० बोल' तथा 'रामानुज-स्तुति' है ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६२६	१२२१८ (५) ११७	शत्रुञ्जयगिरि-स्तवन	पेमविजय शिष्य विमलहर्ष	१८ वी श०	२६ ५X१०	१२६-१३१	पत्र सख्या १२६ पर भी 'शत्रुञ्जय - स्तवन' तथा कविगद कृत कवित्त एवं सुभाषित हैं।
१६२७	१२२०५ (४२) १-५	शत्रुञ्जय गीत आदि	कीर्तिवर्द्धन	१८ वी श०	१७X११	१४१-१४३	
१६२८	१२५५१ (२७)	शत्रुञ्जयगीत	श्रीकर्ण	१८ वी श०	१३X११	१५६-१५७	
१६२९	१०६५४ (७)	शत्रुञ्जयरास	समयसुन्दर	गु० १८७४	२४X१६ ५	८६-६४	र का १६८२ र स्था नागौर
१६३०	१२३२० (५६)	शत्रुञ्जयरास	समयसुन्दर	१८४७	२१ ५X१४ ५	४०-४४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६३१	१२३७० (४१)	शत्रुञ्जयरास	समयसुन्दर	१८६६	१६X११.५	८८-१००	२ का १६८२ २ स्था. नागौर लि. क. सूरजमल लि. स्था. जोधपुर
१६३२	१२५६५ (१०)	शत्रुञ्जयरास	समयसुन्दर	२० वी श०	१६X११	६४-७३	२ का १६८२ २ स्था. नागौर
१६३३	१२२०५ (६)	शत्रुञ्जय-स्तवन	समयसुन्दर	१८ वी श०	१७X११	६-७	
१६३४	११०८२ (३)	शनिश्चरजी री कथा		गु० १८४३	१८X१०.५	१-८	
१६३५	१२१६० (२)३	शनिश्चरजी रो छंद	कवि हेम	गु० १८६७	२१X११.५	२-५	पत्र सख्या ५ पर ही नैम- सागर कृत 'पार्श्वनाथस्तुति' है।
१६३६	१२५८० (३)	शनिसरजी रो छंद	कवि हेम	गु० १८६६	१५X१०.५	८२-८५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६३७	१२३७१ (१)	शनीमर देवता की कथा		१६ वी श०	२०x३१	१८५x१६५	महाजनी लिपि में । अपूर्ण । पत्र सख्या ६७ पर महाराजा मानसिंहजी की संबोधित कर लिखा एक कवित्त एवं दोहा है ।
१६३८	१२५६१ (३५)	शब्दप्रकाश (योग)		१६ वी श०	१५ ५x१०	२२१-२२६	
१६३९	११५८४ (३७)	शातिनाथ-स्तवन	सिद्धमूरि	१८ वी श०	१६ ५x१६	२३४ वा	
१६४०	१२२१८ (५) ६४	शातिनाथ-स्तवन	हर्षधर्म	१८ वी श०	२६.५x१०	८६-८७	
१६४१	१२२२८ (५) ७६	शातिनाथ-स्तवन	गुणसूरि	१८ वी श०	२६ ५x१०	६८-६९	
१६४२	१२३७० (४२) ६	शातिनाथ-स्तवन		१६ वी श०	१६x११ ५	१२७ वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६४३	१२५५१ (१३)	शातिनाथ-स्तवन	हर्षधर्म	१७ वी श०	१३x११	१०३-१०६	
१६४४	१२५६५ (१७) १०	शातिनाथ-स्तवन	दीपसागर	१६३७	१६x१२	१२३ वां	र का. १६३१ लि. क दीपसागर शिष्य हस्तीसागर लि स्था फलोदी पत्र सख्या १२४-१२६ पर गुटके की कृतियों के नाम तथा पद-स्तवनो आदि के चरण देकर सूचीपत्र लिखा गया है।
१६४५	१२५७५ (२५)	शातिनाथ-स्तवन (चम्पावती मङ्गल)		१६ वी श०	१३x१४ ५	७७ वा	
१६४६	१२५७५ (१७) (२४) (३२) (३८)	शातिनाथ-स्तवन	पार्श्वचन्द्र गुणसागर शिष्य पद्मसागर अज्ञात	१६ वी श०	१३ ५x१४	५८-५९ ७६-७७ ६४-६५ १०७ वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६४७	१२०७०	शांतिपर्व-भाषा	लालदास पुत्र ऊधोदास	१८८५	३०X१४५	१-४७	लि क जमना श्रावगी कर्त्ता आगरा निवासी है।
१६४८	१२२०५ (२६)	शावरमत्र एव फुटकर नुस्खे		१८ वी श०	१७X११	८७-१०२	पत्र सख्या ८७-६३ तक मत्र तत्र व यंत्रादि है।
१६४९	१२५६६	शावरमत्रतत्र एव नुस्खा- समूह		२० वी श०	१७X११	१-२८५	
१६५०	११०८३	शावर-मत्र-तत्र समूह		२० वी श०	१५X१०	१-३०	
१६५१	१०६०५	शालिभद्र महाभुनिरास	मतिसार शिष्य जिनसिंह सूरि	१८८०	२५X१२	१-६२	र. का १६७८ लि क. मुनि कनीराम लि स्था सणधरी
१६५२	१२५६८ (४)	शालिभद्रमुनि-चौपई	जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि	१९ वी श०	१८ ५X१२	३४-८१	र का १६७८ अंत में 'पार्वनाथ-स्तवन' है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (सें.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६५३	१२२०५ (२२)	शालिभद्रमुनि-सज्जाय	हर्षकुशल	१८ वी श०	१७x११	६३ वा	पत्र सख्या ६२ पर पीलिया रोग का नुस्खा है।
१६५४	१२२१८ (५)७४	शालिभद्र-सज्जाय	सहजसुन्दर	१८ वी श०	२६.५x१०	६४-६५	
१६५५	१०६४३ (२)	शालिहोत्र-भाषा (गद्य)		गु० १८८४	१८x१४	१-३६	अथ चिकित्सा।
१६५६	११०७६ (४)	शालिहोत्र-भाषा		१८५५	१५.५x१४.५	१-१६	“व्यास चतुरभुज देवदत्त री परत सु उतारी” लि क सवाईराम व्यास लि स्था चीतवाणा
१६५७	१२२१६	शिक्षापत्र भाषा	हरिराय	१९ वी श०	१६x१७	१-६६	अपूर्ण। पत्र कीटविद्ध-खण्डित। ४१ शिक्षाओ तक।
१६५८	१२२२० (१)	शिक्षापत्र भाषा	हरिराय	१९ वी श०	१६x१६.५	१-५६	पुष्टिमार्ग से सवधित।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६५६	१२२०४ (५)	शिवजीरो स्वरोदय भाषा		गु० १८५८- १८६३	१७X१५५	४०-४२	गद्य मे । गुटके मे 'स्वरोदय विचार का संग्रह है । पत्र सख्या ४४ - ७० तक 'पवनविजय-स्वरोदय' संस्कृत मे है । पत्र सख्या ७०-७२ पर पुन. 'स्वर विचार' है ।
१६६०	११०१३ (२५)	शिवरात्रि की कथा		गु० १८१८	२३X१५	१४४-१४७	
१६६१	१२५६७ (१)	शिवरात्रि की कथा		गु० १८३०	२१X१५५	१-६	कोण मुड़े हुए-जलाभिप्लव लि. क. केसरचन्द लि. स्था कटानिया ग्राम
१६६२	१११७८ (५)	शिवरी मंगल	तुलसीदास	१७६२	१५.५X१२	८८-६१	लि. क. राधावल्लभदास पत्र सख्या ८४ - ८८ तक 'गुरु-परम्परा' दी है ।

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	रुतों	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६६३	१२२०५ (२८)	शीतलनाथ-स्तवन	समयसुन्दर	१८ वी श०	१७x११	१०४-१०५	पत्र सख्या १०५-१०७ तक पेट दुखने, स्वेतमडल, स्तनभन आदि के नुस्खे हैं।
१६६४	१२३२० (३१)	शीतलनाथ-स्तवन	श्रीसार	१८ वी श०	२१ ५x१४ ५	३७ वा	
१६६५	१२२७८ (५) १०४	शील सज्जाय	जिनहर्ष सूरि	१८ वी श०	२६ ५x१०	११६ वा	
१६६६	१२३७८ (१७)	शुकदेवजी की स्तुति भाषा		१८ वी श०	२२x१५ ५	११३-११६	
१६६७	१०६२४ (६)	शुक-संवाद	लेख	गु० १८४०	२३.५x१२.५	५१२-५१८	
१६६८	१२४२२ (१६)	शुक-संवाद	लेख	गु० १८३१	१५x१० ५	३६६-३८२	
१६६९	१२४६७	शुक-संवाद	लेख	१६ वी श०	२०x१०	१-२७	लि. क. रामधन लिच्छमणदास पठनाथे।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६७०	१२१६१ (८)	शुकसवाद	खेम	१६ वी श०	२३.५X१७	३३६-३४३	
१६७१	१२५७४ (१)	शुकसवाद	खेम	२० वी श०	१७X१०.५	५३-७४	प्रारम्भ के ५२ पत्र अप्राप्त ।
१६७२	११३१३ (३)	शुभाशुभ-विचार		१८०२	१५X१४	१-१७	तत्त्वविजय-निहालचन्द्रजी वाचनार्थ । लि. स्था. जयपुर
१६७३	१२५६८ (६-१०)	शेरसिंहजी राठौड रो कह्यो सिलोको (राजा रामसिंहजी के लिए)	शेरसिंह	१८४४- १८४६	१८.५X१२.५	१३	(१०) कवर अमरसिंह पर जसवन्त के भाई गजसिंहजी ने कोप किया उस समय के कवित्त । लि. स्था. हेमावास (जोधपुर)
१६७४	१०८४२ (१६)	शेषसिंहजी ठाकुर का गीत	पहाडखॉ आढा	१६ वी श०	२४.५X१६.५	६६-१००	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

२१६

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६७५	१२३७० (११)	श्रावक री करनी सज्जाय	जिनहर्ष	१६ वी श०	१६x११ ५	११५-११८	
१६७६	११५८५ (८) ४५	श्रावक री करनी सज्जाय	जिनहर्ष	१८४६	१६.५x११ ५	१८०-१८२	लि. क. लिखमणदास कोचर अत मे स्फुट दोहे है।
१६७७	१२३७० (२६)	श्रावक री मर्यादा		१८७०	१६x११ ५	२५०-२५४	प्रस्तुत विगत रत्नचन्दजी के पास सवन् १८७० मे मानजी जैपुरिये ने व्रत लिया, उस समय की है। गुटके मे रत्नचन्दजी की कृतियां समकालीन होने से प्रामाणिक एव महत्वपूर्ण है।
१६७८	१२५६५ (१५)	श्रावक वदितु सूत्र		२० वी श०	१६x१२	८७-९०	प्राकृत भाषा मे है। पत्र सख्या ९०-९२ पर राग- कल्याणबद्ध दोहे है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६७६	१२४१३ (१-२)	श्रावकविचार, बोल, गुणठाणा आदि		१८२६	२६x११५	४-१८ १-२०	पत्र बडकने हैं। पत्र सख्या १ बीच से हटा हुआ है। लि. क आरज्या मोदी शिष्या सुजाणा लि. स्था बीकानेर
१६८०	१०६५४ (६)	श्रावक सज्जाय	जिनहर्ष	गु० १८७४	२४x१६५	८७-८८	
१६८१	१२२१८ (५) १०७	श्रीकृष्ण चरित्र	ज्ञानउदय	१८ वीं श०	२६ ५x१०	१२१-१२२	
१६८२	११६७६	श्रीकृष्ण-जन्मलीला		१६१०	२१.५x१० ५	१-३१	
१६८३	१२५५६ (१)	श्रीनाथजी की वार्त्ता		१८०५		१०-६८	कीटविद्ध। लि. स्था श्री मगवार पत्र सख्या १-६ अप्राप्त।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६८४	१०७६८	श्रीपाल-रास (सटिप्पण)	विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय एव यशोविजय	१८५८	२५.५x११	२२	लि. स्था. सोजत
१६८५	१०८२४	श्रीपाल-रास मटवार्थ	विनयविजय गणि शिष्य महो० कीर्तिविजय एव यशोविजय	२० वी श०	२४x१२	७२	तृतीय खण्ड के बाद पत्र सख्या ३४ से ७२ में टिप्पण दिये गये हैं। पत्र सख्या १० से २० तक प्राचीन तथा शेष पत्र नये प्रतीत होते हैं। र का १७२८, रानेर में चातुर्मास्य के समय। लि. क. ऋषभसागर लि. स्था. जोधपुर
१६८६	१०८७७	श्रीपाल-रास	विनयविजय एव यशोविजयद्वय	१६ वी श०	२५x१२.५	१-६२	
१६८७	११५४३	श्रीपाल-रास	विनयविजय एव यशोविजय	१६ वी श०	२६.५x११.५	१-५२	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.मे)	माप (से.मी.मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१८८८	१२२२८	श्रीपाल-रास (सचित्र)	ज्ञानसागर शिष्य गुणदेवसूरि	१७६४	२६x११	१-२१	चित्र सख्या—६। बाकी चित्र बनाने के लिए स्थान छोड़ा गया है। र का १५३१ र स्था पत्तन महानगर, शीतलनाथ प्रसादात्। श्राविका श्री रूपबाई पठनार्थ।
१८८९	१०८५६	श्रीपाल-रास सद्वार्थ (चरित्र चतुर्थ खण्ड)	विनयविजय एव यशोविजय	१८४१	२५x१२५	१-७१	र का १७२८ र. स्था. रानेर ७०० गाथा तक विनय- विजय और उनकी मृत्यु हो जाने पर यशोविजय ने इसे पूर्ण किया। लि क महात्मा करमचंद
१८९०	११३५३ (५)	श्री बद्रीनाथ विसभर स्तोत्र		१६ वीं श०	१४.५x१६.५	६६-६८	गुटके की अन्य कृतियां संस्कृत में हैं।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६६१	१०८४७ (५)	श्रीमुखनामो	वाजीद	गु० १६६६	१७X८	७२६-७३२	
१६६२	१२२०५ (१२)	श्रीस्तवन	ऋषभसागर	१८ वी श०	१७X११	१३-१४	पत्र सख्या १५ पर 'पृच्छा- सारणी' है ॥
१६६३	११३२७	पद्मस्तु-लीला के पद	सूरदास	१६ वी श०	२६X१२ ५	१-३७	१०७ पद रागबद्ध है। पत्र खण्डित एवं कीटग्रस्त हैं।
१६६४	१२५६४ (३)	पद्मपाठ स्तोत्र		१८८६	१४ ५X१० ५	५१-६१	२ का १८५६ छ. ढालो में धर्म और ईश्वर की ओर उन्मुख होने की शिक्षा दी गई है। लि क लिच्छमण
१६६५	११६२८	पद्मप्रदनी निर्णय-भाषा	मनोहरदास निगजनी	१८०६	३० ५X१५	१-६५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१६६६	१०७५४	पडावश्यक-बालावबोध		१७ वी श०	२६X११५	३३X८३	आद्यन्त अ प्राप्त ।
१६६७	१२२०८ (६)	षष्टीशतक	भण्डारी नेमिचन्द्र	१७१५	२५X१८५	१६६-१७७	भाषा - अपभ्रंश नि क चेला गुडीदास
१६६८	१०८४६ (१७)	पोडश-स्वप्न		गु० १६३१	१७X११	१३५-१३७	यत मे फुकीरी पर रोचक पद है ।
१६६९	१२२१८ (५) १०६	सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	गुणरत्न शिष्य	१८ वी श०	२६५X१०	१२२ वा	
२०००	१२३७० (१४)	सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन	उदयरत्न	१६ वी श०	१६X११५	१३५-१३६	
२००१	१२५५१ (२६)	सखेश्वर पार्श्वनाथ स्तवन		१८ वी श०	१३X११	१५३-१५६	लिपि भ्रष्ट— 'आदिजिन- स्तवन' तथा 'सखेश्वर पार्श्वनाथ का प्रारंभ मात्र ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२००२	१२५६८ (१३)	सखेयवर पार्श्वनाथ स्तवन	जिनचंद	१६ वी श०	१८ ५X१२ ५	१८ वा	लि. क. उत्तमचन्द नागोरी पत्र सख्या १८ पर ही स्फुट संख्या है। पत्र सख्या १६ पर 'वर्द्धमान पद' तथा स्फुट दोहे हैं।
२००३	१२५६८ (२०)	सखेयवर पार्श्वनाथ स्तवन	उदैरत्न	१६००	१८ ५X१२ ५	२६-३०	लि. क. उत्तमचन्द लि. स्था. हेमावास पत्र सख्या ३० - ३१ पर समयसुन्दर कृत 'जीव- सञ्ज्ञाय' है। अतः में स्फुट दोहे हैं।
२००४	१०७२६	संग्रह बेलि		१७७५	२६X११	२-११	प्रथम पत्र प्राप्त। लि. क. मुनि बालचन्द
२००५	१०८६८ (१)	सतदासजी की छाटमा साबी	सतदाम	गु० १६०७	११X६ ५	२-५७	लि. क. चोकसराम लि. स्था. रतनपुरी

क्रमांक	गत्यांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२००६	१०८४६ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१६५०	१५.५X६.५	१-२१	सर्व साखी १२१ गुटका सजिल्द । लि क रामनिवास लि. स्था. रतनपुरी
२००७	१०६२५ (१) ६	सतदासजी की वाणी	सतदास	गु० १६३३	२५.५X१६.५	१-१६; ५१-५४	
२००८	१०६२४ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	गु० १८४०	२३X१२.५	१-६४	स. का १८३० स क नवलराम स स्था साहिपुरा (भोलवाडा) सर्व सबद १३८८
१००६	१०६२६ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	गु० १६३६	२१X१५.५	१-२५	सतदासजी की परमधाम- प्राप्ति का भी अत मे कुण्डलिया है ।
२०१०	१०६३४ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१६ वी श०	१४X८	१-१५	
२०११	१०६४० (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१८८३	१५.५X१०.५	१-६६	लि क जैतराम लि. स्था फलोदी

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०१२	१०६३८ (६)	सतदासजी की वाणी	सतदास	गु० १८८५	१६ ५X८५	५०२-५२०	लि. क सधु रामबिलास
२०१३	१०६४८ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१६३५	१४.५X७	१-१०	
२०१४	११०६२ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१८३६	१८X१० ५	१-६७	लि क सेवादास शिष्य आत्माराम लि स्था धलूदा
२०१५	१०६४४ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	२० वी श०	८X५	१-११	
२०१६	१२३२६ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	२० वी श०	२३X६ ५	१-४६	पत्र बडकने है ।
२०१७	१२५७७ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१६ वी श०	१४ ५X१०	१-२६	
२०१८	१२५८६ (४)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१६ वी श०	१२X६ ५	४२-५६	गुरुदेव संतोषदासजी की आज्ञा से चम्पाबाई के लिए बिहारीदास ने लिखी ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०१६	१०८४२ (८)	सतोक (प) -वाक्वनी	वाँकीदास	१८६५	२४ ५X१६ ५	८४-८६	रचनाकाल से सन्निकट प्रति । र का १८७५ लि क खिडियो हरमुख तथा वणसुर फत्ती लि स्या जोधपुर
२०२०	१२५७१ (६)	सप्रदाय-यशवर्णन	पूरणदास	१६ वी श०	१० ५X८	३१६-३२४	रामानन्द सम्प्रदाय के सतों का गुणवर्णन है । अंतिम पाच पत्रों पर महा- जनी लिपि में कवीरदास आदि के पद है ।
२०२१	१२२०५ (२६) ४-८	सभवनाथ अभिनदन, सुमतिनाथ, पद्मप्रभु, पार्श्वनाथ गीत	जिनराजसूरि	१८ वी श०	१७X११	११०-११२	
२०२२	१२३२० (१८-२०)	सभवनाथ अभिनदन, वासपूज्य जिनगीत	जिनराज	१८ वी श०	२१ ५X१४.५	२६ वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०२३	१२५५१ (२६)	समवनाथ-स्तवन	चारुदत्त	१७ वी श०	१३x११	१७० वा	२ का १७३१ 'चन्द्र समुद्र शिवाक्ष शशि' सर्वदोधक ४५, सर्वैया ३२, कवित्त ।
२०२४	१२२०७ (२)	सयोग वत्तीसी	मानमुनि	गु० १८१४- १८२४	२४x१७.५	१-१४	वि स १५७६ से प्रारम्भ की गई है ।
२०२५	१०८१०	सवत्सर-सारणी		१८७६	२६x१२.५	५	लिपिभ्रष्ट । पत्र सख्या ५५ - ५६ पर गुटके के स्वामी जीवाजी के पुत्र नाथजी का जन्मलग्न संवत् १८५४ का दिया है ।
२०२६	१२५६७ (८)	सतनाथजी रो सिलोको	साधुकीर्ति शिष्य अमरमाणिक्य	गु० १८३०	२१x१५.५	५४-५५	२ का १६१८ लि क कमलसागर लि स्था आसोप
२०२७	१२१६४	सतरहमेदी पूजा विधि	साधुकीर्ति	१९ वी श०	२६x१०.५	१-७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०२८	१२३७० (४)	सतरहेभेदी पूजा विधि		१६ वी श०	१६X११.५	२०-३५	र का १६१८ र स्था अणहिलपुर
२०२९	१२५५१ (२)	सतरहेभेदी पूजा	साधुकीर्ति	१६५३	१३X११	७७-६०	पत्र विपके हुए है। लि स्था रायधनपुर पत्र सख्या ६० - ६२ पर 'दडक-स्तुति' संस्कृत में है।
२०३०	१२५६५ (५)	सतरहेभेदी पूजा	साधुकीर्ति	२० वी श०	१६X१२	३५-४५	र का १६१८
२०३१	१२२१८ (५) १३०	सती सज्जाय	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६ ५X१०	१३८ वा	पत्र सख्या १३६ पर विहर- मानों के नाम तथा उदय- राज कृत कवित्त है।
२०३२	१२३७० (४२) ३	सत्तरिसय जिनस्तवन		१६ वी श०	१६X११.५	१०८-११०	प्राकृत मिश्रित अपभ्रंश में।
२०३३	१११७८ (३-४)	सत्ताईस नक्षत्र एवं सप्तवार पद्धति विचार		गु० १७८२- १७९२	१५ ५X१२	८०-८१ ८१-८४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०३४	२२४२५ (३)	सत्यनारायण कथा भाषा	नारायणशास्त्री शिष्य रगाचार्य वैष्णव	२० वी श०	२६ ५X१७	६६-८१	इसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती के 'सत्यार्थप्रकाश' का खण्डन किया गया है। लि. क. गोवर्द्धनदास वैष्णव लि. स्था. नागौर
#२०३५	१२३६४	सत्यार्थ भास्कर वेद		१९४७	३०X१४ ५	१-८६	पत्र सख्या १८, २५ - २७ अप्राप्त।
२०३६	१२३२० (५०)	सदैवच्छ सावलिगा री वात		१८२७	२१ ५X१४ ५	१३-३६	लि. क. मुनि राजसी लि. स्था. नागौर वाई सरूपा पठनार्थ।
२०३७	१२३०५	सदैवच्छ सावलिगा री वात (सचित्र)		१९ वी श०	१८X१३ ५	१-१३९	अपूर्ण। चित्र स - १४१ पत्र सख्या १२० - १३८ अप्राप्त।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०३८	११५८५ (६)	सदैवच्छ सानलिगा री वात		१८५२	१६ ५X११ ५	७८-११६	अपूर्ण । लि क केसरविजग लि स्था वीकानेर
२०३९	१०७०२ (१)	सदैवच्छ सायलिगा री कथा (सचित्र)	मुनि केशव	१८५८	२५ ५X१७	१-२६	चित्र स - ३० प्रथम दो पत्र कीटविद्ध - जलाभिविक्त । कर्त्ता का नाम अद्यावधि अज्ञात था । र का १६६६, विजय दशमी, रविवार ।
२०४०	१२२२३	सदैवच्छ सानलिगा री वात (सचित्र)		१६ वी श०	१७X१३ ५	४-४५	चित्र स - ४२ कथा - प्रसंगानुसार चित्र दिए है । पत्र सख्या १-३ अप्राप्त ।
२०४१	१२२०५ (४६)	सनत्कुमार गीत		१८ वी श०	१७X११	१४८ वा	पत्र सख्या १४६ पर कनक- कीर्ति कुत 'जिनकुशलपद' है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०४२	१२२१८ (५)८१	सनत्कुमार सज्जाय	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६ ५X१०	१०३ या	
२०४३	१२२१४ (८)	सप्तभूमि का वर्णन	हर्षकुशल	१६ वी श०	२१.५X१३	८८-८९	
२०४४	१२२६३ (३)	सप्तश्लोकी गीता-भाषा	मनोहरदास निरजनी	१६ वी श०	२२ ५X१६	१-६	पत्र तडके हुए हैं।
२०४५	१२२२५ (३-५)	सप्तश्लोकी गीता-भाषा (सचित्र)			२४ ५X१६ ५	१६१-१६६	चित्र स. - १-१-१-१-१=३ पत्र सख्या १६६-१७० पर 'एकश्लोकी रामायणभाषा' पत्र सख्या १७१-१७४ पर 'एकश्लोकी भागवत-भाषा' दोनों कृतियों में एक-एक चित्र है।
२०४६	१०६२५ (३)	सबद माणिक वोध	रामचरण शिष्य कृपाराम	गु० १६३३	२५ ५X१६ ५	३०-३७	प्रारंभ व अंत में चौहौडग्रन्थ कृत बालकरोम 'सबद माणिकवोध' लिखा है।
२०४७	१२५७२ (४-५. ७)	सबद-संग्रह	दयालदास रामदास	१६ वी श०	१० ५X८ ५	१०-१०८ १०९-११३ ११६-१४०	अगवेंद्र ।

अग्रक्र.	ग्रन्थाङ्क.	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०४८	११६४८ (१२)१-६	सवदी-संग्रह	गोरखनाथ भरथरी चरपटनाथ गोपीचन्द जलधरपाव पृथ्वीनाथ	गु० १८५३	२७X१६५	३८२-३८८ ३८८-३८९ ३८९-३९० ३९०-३९० ३९१-३९१	
२०४९	११६४८ (१२)७-२४	सवदी-संग्रह	चौरगीनाथ कणैरीपाव हालीपाव भ्रीडकीपाव हृणवत अरजणजी नागा सिद्धहरताली गरीबजी धूमूललीलजी बालगुदाई घोडाचोली अजैपाल चोणकनाथ देवलनाथ मालीपाव दत्तात्रेय	गु० १८५३	२७X१६५	३९१ ३९१ ३९१-३९२ ३९२ ३९२ ३९२-३९३ ३९३ ३९३-३९४ ३९४ ३९४ ३९४ ३९५ ३९५-३९६	पत्र संख्या ३९५ पर 'महा- देव एव पार्वती की सबली' है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०५०	१२२०५ (३८-३६)	समतारस सज्जाय आदि	हर्षकुशल भुवनकीर्ति	१८ वी श०	१७x११	१२२ १२२-१२४	सजिन्दे । लि. क मुनि गंगराज लि स्था रतनपुर महाराजा बलवत्सिंहजी के समय मे ।
२०५१	१०८४३ (१)	समयसार नाटक	बनारसीदास	१८६५	२५.५x२०	१-७५	र का १६६३ शाहजहाँ के समय । लि क कीर्तिविजय लि स्था भु भणू प्रारभ के ३ पत्रो पर 'कवीरदास के पद' है । चौथे पत्र पर 'उडद की दौल का पाक' बनाने की विधि है ।
२०५२	१२२०६	समयसार नाटक	बनारसीदास	१७३१	२२.५x१३		र. का. १६६३ र. स्था. आगरा पत्र जलाभिषिक्त
२०५३	१२४१७	समयसार नाटक	बनारसीदास	१९ वी श०	२४.५x१४	५६	

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०५८	१०८४५ (१)	सर्वगिसार - सत विचार	नवलराम शिष्य रामचरण	१८८६	१५५X१०५	१-५२६	ग्रन्थ ३२ विधानों में बाटा गया है। गुटका सजिल्द। र का १८३४ र स्था शाहपुरा लि क. जैरामनारायण लि स्था पोकरण
२०५९	१२३२९ (३)	सर्वगिसार	नवलराम शिष्य रामचरण	२० वी श०	२३X९५	१७७-३६२	र का १८३४ ४१ विधानों में श्रेष्ठ संस्कृत ग्रन्थों से श्लोक लेकर उनकी टीका लिखी गई है।
२०६०	१०८४८ (३)	सर्वगिसार	नवलराम	१८३४	१५५X८८	३०-५०९	र का. १८३४ र स्था. शाहपुरा (भीलवाडा)
२०६१	१०८५२	सर्वगिसार	नवलराम	२० वी श०	२८X१५	१-१३२	र का १८३४ र स्था शाहपुरा (भीलवाडा)

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या
२०६२	१०८६६ (१०)१	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	सतदास	गु० १६२७	८ ५X७	४८० ४६६, ५०१-५०४, ५१८, ५१९ एवं ५२२ वा
२०६३	१०८६६ (१०)२	सर्व-अग-मार के छुटकर सवद	रामचरण	गु० १६२७	८ ५X७	४८१, ४८२, ४८५, ४८७, ४६३, ४६६, ५०२, ५०३, ५०७, ५०८, ५१२ एवं ५२२ वा
२०६४	१०८६६ (१०)३	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	कवीरदास	गु० १६२७	८ ५X७	४८१, ४८२, ४८५, ४८८, ४६१ ४६२, ४६८, ५०१, ५०६, ५०७, ५०९ ५१२, ५१६, ५१८, ५१९ एवं ५२० वा
२०६५	१०८६६ (१०)४	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	जनतुरखी	गु० १६२७	८ ५X७	४८१, ४८२, ४८५, ४८८, ४६१-४६२, ४६८, ५०१, ५०६, ५०७, ५१२, ५१६, ५१८, ५१९ एवं ५२० वा
२०६६	१०८६६ (१०)५-६	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	रज्जव चेतनदास	गु० १६२७	८ ५X७	(१) ४८२, ४६०, ४६८, ५०५ एवं ५१३ वा (२) ४८२ एवं ४८५ वा
२०६७	१०८६६ (१०)७-८	सर्व-अग-सार के छुटकर सवद	सूरदास अज्ञात	गु० १६२७	८ ५X७	(१) ४८३ वा (२) ४८३, ४८४, ४८६, ४६४, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११ एवं ५१४-५१५ वा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०६८	१०८६६ (१०) ६-१०	सर्व-अंग-सार के छुटकर सवद	जनहरिदास	गु० १६२७	८ ५X७	(१) ४८५ ५०१ ५०४ ५११ (२) ४८५ ४८८ ५०० ५०४ ५१२ ५१३	
२०६९	१०८६६ (१०) ११-१८	सर्व-अंग-सार के छुटकर सवद	गोरखनाथ परसराम रामप्रताप जगजीवन मारकण्डेय मुरारि रामदास नृसिंह	गु० १६२७	८.५X७	४८६ ४८६, ५१३ ४६७ ४६६, ५१६ ५०८ ५१६ ५१६-५२० ५२१	
२०७०	१२२१० (८)	साभी के पद		१६ वीं श०	१८X१३ ५	४३-४६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०७१	१२२१८ (५) १२	साम्प्रति राजा सज्जाय	कनकविजय शिष्य काल्हजी	१८ वी श०	२६ ५X१०	३३ वा	
२०७२	१०६३१ (३)	साती कवित्त संग्रह	जनहरिदास	१६ वी श०	१४X१०.५	३१६-३२४	
२०७३	१०८६६ (१७) १-१०	साखी-संग्रह	नानक बखनो कबीर समन रज्जव कविगद सजना नापा सैना पीपा	गु० १६२७	८ ५X७	५६७-६०२ ६०२ ६०३, ६१५ ६०५ ६०५, ६१० ६१५ ६०६, ६०६ ६११ ६१३ ६१३-६१४ ६१४	कविगद का संवेया है।
२०७४	१०८६६ (१८) ८-१२	साखी-संग्रह	नामदेव रेदास पीपा धना रज्जव	गु० १६२७	८.५X७	७०३-७०५ ७०५-७०६ ७०६-७११ ७११ ७११-७१२	आगे के पत्रों में गुटके की कृतियों की पद्यवद्ध विगत है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०७५	१०८६६ (१)	साखी-संग्रह	जनहरिया	२० वी श०	१४x११ ५	१, ३-११, १६-३४, ३४-४५, ६७	
			दयालदास			२ रा	
			तुलसीदास			३, ५४ वा	तुलसीदास के पद है ।
२०७६	१२२१८ (५) ११२	सागरसेठ चौपई	ज्ञानउदय	१८ वी श०	२६ ५x१०	१२३-१२४	
२०७७	१०५८५ (८) ५१, ५३-५४	सात सखिया रा, फुटकर एव जलालबूवना रा दोहा- संग्रह		१८५०	६१ ५x११ ५	१६२ १६३-१६४ १६४-१६७	
२०७८	१२५६५ (१७) ३	सात्रवीसना नी लावणी	चम्पालाल दीवान	२० वी श०	१६x१२	११७ वा	
२०७९	१२३२० (५१)	साधु-गुण गीत	उदयसिंह	गु० १८२७	२१ ५x१४ ५	३७ वा	२ का १७७५ २ स्या सुभटपुर (जोधपुर)

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (विस मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०८०	१०६२८ (३)	साधु-परीक्षा	मुरलीराम	गु० १८४०	२३X१२५	२६६-३१६	
२०८१	११५८३ (१४-१५)	साधु-परीक्षा एव मील-समाधि	पृथ्वीनाथ	गु० १६६३	१८X१५	१२६-१३५ १३५-१३७	
२०८२	१२५७१ (५)	साधु-महिमा आदि कृतिसंग्रह	दयालदास	१६ वी श०	१० ५X८	२३४-३१८	साध-महिमा, अरक्षनिरणं, रिष्यावतीसी, करुणासागर, पिता-पुत्र संवाद ।
२०८३	१२२१८ (५) २७	साधुवदना		१७६३	२६ ५X१०	३८-४१	लि क आणद लि स्था लूणसर
२०८४	१२२१८ (४०)	साधुवदना	समयसुन्दर	गु० १७५५- १७६७	२६ ५X१०	५७ वा	
२०८५	१२३२० (४७)	साधुवदना	पासचद	१८१६	२१ ५X१४५	१-६	लि स्था अहिपुर (नागौर)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रलिष्ठान (जोधपुर-सग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकान (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०८६	१२३७० (३८)	साधुवदना	मुनि देवचंद शिष्य ज्ञानचंद	१८७४	१६X११५	४६ ७३	लि स्था जोधपुर पत्र सख्या ७४ - ८७ तक संस्कृत में 'कल्याणमदिर स्तोत्र' तथा 'बृहत्शक्ति' है।
२०८७	१२५५१ (२८)	साधुवदना	पुण्यरागर उपाध्याय शिष्य जिनहस	१६३२	१३X११	१५८-१७० .	बीच-बीच में श्रद्धा रो का स्थान रिक्त छोड़ दिया गया है।
२०८८	१०६२४ (२६)	साधु-सगत को अग एव पद सग्रह	कबीरदास	१६ वी श०	२३X१२५	५६८-६०१	
२०८९	१२५६५ (११)	सामाङ्क लेवा नी विधि		२० वी श०	१६X१२	७३-७६	
२०९०	१२२१८ (५) १४६	सामाङ्क-व्रत स्तवन	जिनलब्धिमूरि	१८ वी श०	२६ ५X१०	१६२-१६४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०६१	१२३७३ (४)	सामुद्रिकशास्त्र भाषा	मुखदेव	२० वी श०	२२x१५.५	पृ ७-१७	पृ० सख्या १-७ तक संस्कृत की लीन कृतिया हैं। पृ० सख्या १७-१८ पर स्फुट रेखते हैं। पृ० सख्या १६-४० तक संस्कृत की ८ कृतिया हैं।
२०६२	१०६७६	सामुद्रिकशास्त्र सटीक	मृ० समुद्रकवि	२० वी श०	२५x१२	१-२४	
२०६३	१२५६१ (२१)	सायर		२० वी श०	१५.५x१०	१.१६-१२३	"तन सूखा कुवडी पीठ हुई घोडे पर जीन धरो बावा अब मोत नगरा आ बाजा चलने का फिकर करो बावा"
२०६४	१०६५६ (३)	सारचन्द्रिका भाषा	किशोरअलि शिष्य वशीअलि	१८३७	३२x१६	१-२७	२ का १८३७ सर्व सवद - ५६५
२०६५	१२५७४ (३)	सारचन्द्रिका भाषा	"	२० वी श०	१७x१०.५	८२-१४०	सत्सग माहात्म्य परक कृति- विभिन्न पुराणों और धार्मिक ग्रन्थों के श्लोक देते हुए भाषा पद्यानुवाद चौपई में है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०६६	१०८४८ (७)	चारचन्द्रिका भाषा व्याख्या	किशोरअलि शिष्य वशीअलि	१६ वी श०	१५ ५x८	६०८-६२२	र का १८३७ कर्ता सखि सम्प्रदाय के है।
२०६७	११५४७	सारतत्व संग्रह		२० वी श०	२५ ५x१२	१-३३	प्रसिद्ध आयुर्वेदिक ग्रन्थों के संस्कृत श्लोकों के आधार पर औषधी संग्रह। प्रथम दो पत्र खण्डित।
२०६८	११४७१	सावित्री की पोथी		१६ वी श०	२१x१२	१-२३	कृति मराठी भाषा में।
२०६९	११०६२	साहिजादा कुतबदीनरी बात		१८०३	२५x११	१-८	लि क दीपविजय गणि लि स्था कँवला
२१००	१०८४३ (५)	सिंदूरप्रकरण (मुक्त-मुक्तावली-भाषा)	बनारसीदास एव कुँवरपाल	गु० १८८५	२५ ५x२०	७-२१	गुटके में बनारसीदास की कृतियों का सुन्दर संग्रह है। दोनो मित्रों ने मिलकर ग्रन्थ बनाया है। र का. १६६१ लि क. गगराज लि स्था रतनपुरी

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सेंमी मे)	पन् सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१०१	११०१३ (२६)	सिंह-वानर कथा		गु० १८१८	२३x१५	१४७ वा	११ दोहे । अत मे प्रेम करने के सवध मे २ दोहे है ।
२१०२	११५८५ (८) ५६	सिंहासन-वत्सीसी री कथा		१८५७	१६ ५x११ ५	२१२-२२६	अपूर्ण । २३ वी कथा तक । लि क लालविजय लि स्था बीकानेर लछमणजी कोचर पठनार्थ ।
२१०३	११५४६	सिंहासन-वत्सीसी री वार्ता		१८३३	२६ ५x११ ५	१-१५	अत मे ३२ देवियों के नाम भी दिए है । लि क सिध्यणी फल्लु शिष्या केसरजी चेना लि स्था खण्डप शहर मध्ये
२१०४	११०१३ (१५)	सिंखामण एव वस्तु-विशेष- नाम वर्णन		गु० १८१८	२३x१५	१२६-१३१	पानी गगा रो, खेती वाडरो आदि ।
२१०५	११५८४ (२)	सिंघियाव कवित्त-छंद आदि	खेतसी	१७००	१६ ५x१६	२३ वा	लि क चेला नरसिंह लि. स्था चीतामा ग्राम

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१०६	१२१२५ (१-७)	सिद्धमुक्ताफल, प्रश्नोत्तर, सिद्धसम्प्रदाय, तेजमजरी, पञ्चावली, सिद्धगंगा, परमार्थ के कवित्त संग्रह	महाराजा मानसिंह	२० वी श०	२३ ५X१७ ५	१-११	मानसिंहजी की स्फुट कृतियों का संग्रह है। कवित्त प्रारम्भ कर लिखना छोड़ दिया है।
२१०७	१२५६५ (१३)	सिद्धाचलजीनो स्तवन	ग्यानउद्योत	२० वी श०	१६X१२	७८ वा	
२१०८	१२३७० (१७)२	सिद्धाचल स्तुति	नदसूरि	१६ वी श०	१६X११ ५	१४२ वा	
२१०९	१०९४६ (२)	सिद्धान्त-रहस्य सटीक	मू० वल्लभाचार्य	१६ वी श०	१४ ५X७ ५	१६-२७	
२११०	१०९२०	सिद्धान्त-विचार (जैन)		१६५६	२२ ५X११	१-४६	लि क सर्वाइसागर शिष्य विजयसागर लि स्था देपालपुर नगरे
२१११	१२२१६ (१)	सिद्धान्त-विचार-संग्रह	लब्धिशिष्य हर्षरत्न	१७५२	२४X१० ५	१-३६, ४०-५२	स्वलिखित प्रति। प्रारम्भ के पत्र जलाभिप्लवित एवं खण्डित। लि स्था खमनोरनगर

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२११२	१०७३७	सिद्धान्त सारोद्धार		१६ वी श०	२३ ५X१०	१-५३	ग्रन्थ का अन्तिमांश अपूर्ण है। लिपि दो प्रकार की है। सारणियों के लिए स्थान रिक्त छोड़े हुए हैं।
२११३	१२५८५ (१२)	सिवरीबाई री परची	सुखसारण	गु० १६२७	१६ ५X१५	२६८-३११	गुट्टे में कर्त्ता की आठ परचियों का दुर्लभ संग्रह है।
२११४	१२२१८ (५) ३७	सीता गीत	जिनरगसूरि	१७६३	२६ ५X१५	४६ वा	पत्र सख्या ५० वे पर स्फुट मन्त्र, पद व दोहे हैं।
२११५	१२२०५ (१४)	सीता गीत	जिनरगसूरि	१८ वी श०	१७X११	१६-१७	पत्र सख्या १८ वे पर राशि-फल है।
२११६	११५७५	सीताराम चौपई	समयसुन्दर वाचक शिष्य सकलचंद	१६ वी श०	२२ ५X१६	१-११३	पत्र चिपके हुए एवं स्याही फैली हुई है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२११७	१२५५१ (१४)	सीमधर स्तवन	भक्तिनाभ	१७ वी श०	१३x११	१०६-१०८	र का १६७४
२११८	१२२१८ (५)६३	सीमधर स्तवन	हर्षकुशल गिण्य जिनचंद	१८ वी श०	२६ ५x१०	८४-८६	
२११९	१२२०८ (१०)	सीमधर स्तोत्र	जयविजय गिण्य नयविजय	गु० १७१५	२५x१८ ५	१७८-१८२	
२१२०	१२२१८ (५)१२३	सीमधर स्तोत्र	लालचंद गणि	१८ वी श०	२६ ५x१०	१३४ वा	अत मे फुटकर कवित्त है ।
२१२१	१२२१८ (५)१८	सीमधर स्वामी गीत	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६ ५x१०	३५ वा	
२१२२	१२२१८ (५)४४	सीमधर स्वामी बृहत्- स्तवन	भक्तिनाभ	१७५५	२६ ५x१०	६१-६२	पत्र मख्या ६२ पर ४५ ग्रागमो के नाम दिए है ।
२१२३	१२२०५ (६१)	सीमधर स्वामी स्तवन	हर्षकुशल गणि	१८ वी श०	१७x११	१२५-१२६	अत मे विच्छु का विप उताग्ने का मत्र है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
११०४	१२२१८ (५) ३८	सीलरास	विजयदेव सूरि	१७५५	२६ ५ X १०	५१-५७	
११२५	१२२०५ (३)	सील-सज्जाय	समयसुन्दर	गु० १७४८- १७५५	१७ X ११	३ रा	इसी पत्र पर अज्ञात कर्तृक लावणी है।
११२६	१०८४२ (४)	सीह (सिंह) छत्तीसी	कृष्णसिंह कविराज	१८६५	२४.५ X १६.५	७२-७३	लि. क. खिडयो हरसुख तथा वणसुर फत्तो लि. स्था. जोधपुर
२१२७	१२३७० (१८)	सुदर्शन-चरित्र कथा	धर्मसीह शिष्य कृत	१६ वी श०	१६ X ११ ५	१६१-१६४	कर्त्ता लुंकागच्छी है। कवित्तबद्ध, १२१ कवित्त।
२१२८	१२१२३	सुदामा-चरित्र	बीरबल	२० वी श०	२६ X १५	१-७	
२१२९	१२२१७ (३)	सुदामा-चरित्र	बलभद्र	१६ वी श०	२१ ५ X १२	६५-६६	
२१३०	१०६०२ (१८)	सुदामाजी की बारखडी	सतदास	गु० १८०६	१५ ५ X १२ ५	६०-६४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपि-हाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१३१	१२४२८ (७)	सुदामाजी की वारखडी		गु० १६१२	२१x१५.५	२४ वा	अपूर्ण ।
२१३२	१२५६६ (२)	सुदामाजी की वारखडी		१८२२	१६.५x११	१-६	अपूर्ण— २० पद मात्र, 'न' वर्ग पर्यन्त । लि क रूपराम लि. स्था. खंडापा
२१३३	१२५६१ (५)	सुदामाजी से वारखडी		२० वी श०	१५.५x१०	३५-३६	
२१३४	१२५३६	सुन्दरदासजी का अष्टक	सुन्दरदास	२० वी श०		१-६	२ स्था. नारायणपुर १३ अष्टक हैं ।
२१३५	१२५७० (७-६)	सुन्दरदासजी की चितावणी (हरिवोल, विवेक, तर्क- चितावणी)	सुन्दरदास	२० वी श०	६.५x६.५	२२-२५ २५-३१ ३१-३६	
२१३६	१२५८१ (१३)	सुन्दरदामजी का सवैया	सुन्दरदास	१६ वी श०	१६x१०.५	७७-६०	

समांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१३७	१२४२१	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	गु० १८६३	१७x१२	२८७-२६१	पत्र सख्या २६२ पर स्फुट कवित्त एव पत्र सख्या २६२-२६४ पर 'दडक' नामक लघु कृति है।
२१३८	१२४२० (२२)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१६३४	१६x१४	४४८-४५४	अगवद्ध। लि क साधु उदोतराम लि स्था. बीदासर रामद्वारे
२१३९	१२५६१ (४)	सुन्दरदासजी का सवैया एव अष्टक आदि	सुन्दरदास	१६ वी श०	२३ ५x१७	१४७-१६३ १६३-२२५	
२१४०	१२५७४ (१६)	सुन्दरदासजी का सवैया आदि	सुन्दरदास	२० वी श०	१७x१० ५	३०८-३१७	
२१४१	१२३७५ (५)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१६ वी श०	११x१६ ५	४६८-७४३	
२१४२	१२३७६ (४)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	२० वी श०	१५x१४	३०-३५	पत्र सख्या ३६-४६ पर 'द्विजवदन चपेटा' संस्कृत में है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१४३	१२३७८ (५)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१८ वी श०	२२x१५ ५	३१-३७	
२१४४	१२५७७ (४)	सुन्दरदासजी का सवैया	सुन्दरदास	१९ वी श०	१९ ५x१०	७६-७८	अपूर्ण ।
२१४५	१२३७२ (१-७)	सुन्दरदासजी रो कृति-संग्रह	सुन्दरदास	१९ वी श०	२४x१६ ५	१-१०१	“ज्ञानसमुद्र, सवैया, अष्टक, हरिहर - सवाद, राजजोग, ज्ञानबोध, विज्ञानबोध” ।
२१४६	१०६२६ (३)	सुन्दर-विलास (अगवद्ध वाणी)	सुन्दरदास	गु० १९३६	२१x१५ ५	४४-२२०	
२१४७	११३१३ (१)	सुन्दरशृङ्गार	कविराज सुन्दर	१७६६	१५x१४	३१-८६	प्रारम्भ के ३० पत्र अप्राप्त । लि. क. निहालचन्द शिष्य कुशलसिंह लि. स्था. जिहानाबाद, (जैसिहपुर)

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१४८	११३१८ (२)	सुन्दरशृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	गु० १७६१	२२ ५X१५ ५	१-२५	अपूर्ण-कवि शाहजहाँ द्वारा सम्मानित किया गया था। लि क जुगलसागर लि स्था पाटण छद सख्या २८७ वे पर्यन्त।
२१४९	१२२०७ (१)	सुन्दरशृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१८१४	२४X१७ ५	१-५८	कीटविद्ध। र का १६८८, शाहजहाँ के समय। लि क पड्या पीताम्बर लि स्था गिरपुर (डूँगरपुर)
२१५०	१२५८२	सुन्दरशृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१८०७	१५X१०.५	८-९३	पत्र सख्या १-७ अप्राप्त।
२१५१	१२५५१ (२५)	सुन्दरशृङ्गार का संवैया	सुन्दरदास	१७ वी श०	१३X११	१५३ वा	
२१५२	१२५५१ (२०)	सुबाहु-सधि	पुण्यसागर उपाध्याय शिष्य जिनहस सूरि	१७ वी श०	१३X११	१३६-१४५	र का. १६१४ र स्था जेसलमेर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ -- नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (सं.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१५३	११०८५ (८)	सुभाषित-संग्रह	वृन्द कवि	१६ वी श०	१६.५X१३.५	६७-६८	
२१५४	१२५७५ (६)	सुमतिनथ स्तवन		१६ वी श०	१३.५X१४	२०-२१	पत्र सख्या २१-२२ पर संस्कृत प्राकृत में सुभाषित हैं।
२१५५	११०६१	सुरसुन्दरी चौपई	धर्मवर्द्धन	१८३७	२५X११	१-१६	पत्र बढकने हैं। लि क आरज्या जीऊ लि स्था. सोजत
२१५६	१०६०१ (२)	सूत्रा-बहुत्तरी री कथा		१६ वी श०	१५.५X१२.५	२६-६६	अपूर्ण। नवमी कथा के प्रारभ तक है। पत्र चिपके हुए है।
२१५७	१०६५४ (१८)	सूत्रा-बहुत्तरी री कथा		गु० १८७४	२४X१६.५	१८६-२८३	अपूर्ण। ६६ वी कथा बीच में छोड़ दी गई है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१५८	११०६१ (५)	सूरतण की अग (वाणी)	रामचरण	गु० १८३६	१८X१०.५	१७६-१८६	
२१५९	१११७८ (६)	सृष्टिपुराण	गोरखनाथ	गु० १७९२	१५.५X१२	९२-९३	
२१६०	१०६०३ (२)	सेऊसमन की परची	अनतदास	१९ वी श०	१३X८	१३-२१	
२१६१	१०६२४ (२७)	सेऊसमन की परची	अनतदास	२० वी श०	२३X१२.५	६०२-६०४	अत मे रामभक्तिपरक तीन 'धमाल' है।
२१६२	१०६४० (५)	सेऊसमन की परची	अनतदास	गु० १८८३	१५.५X१०.५	४७८-४८३	अत मे राग सुभग मे कवीरदास का पद है।
२१६३	१०६४१ (५)	सेऊसमन की परची	अनतदास	गु० १९३७	१७X१०.५	१३४-१३९	
२१६४	१२५७४ (१३)	सेऊसमन की परची	अनतदास	२० वी श०	१७X१०.५	२९४-२९९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१६५	१२५८५ (१५)	सेऊसमनजी की परची	अनन्तदास	गु० १६२७	१६ ५X१५	३८-१-३६०	लि. क. आरतराम शिष्य सुलभराम लि. स्था वदनोर
२१६६	१०८६८ (१८)६	सेवगरामजी का कवित्त अगबद्ध	सेवगराम	गु० १६२७	८ ५X७	६८०-६८६	पुष्पिका मे गुटके की सकलित कृतियों का पद्यात्मक वर्णन है।
२१६७	१२५७२ (१२)	सेवगरामजी का भूलणा अगबद्ध	सेवगराम	१६ वी श०	१० ५X८ ५	३४७-३६४	
२१६८	१०८६५ (५)	सेवगरामजी की साखी कुण्डलिया	सेवगराम	१६४६	१२ ५X८	१६-१७	लि. क. साधु रामस्वरूप
२१६९	१२४२१ (३)	सेवादासजी का रेखता	सेवादास	गु० १८६३	१७X१२	६०-१०२	
२१७०	१२२१४ (१)	सेवादासजी की वाणी	सेवादास	१६ वी श०	२१.५X१३	६-३८, ५६-६५, ७५-८८, ६७-१०३	पत्र चिपके हुए एवं खण्डित पत्र सख्या १-८। अप्राप्त पत्र सख्या ६ 'क' पर कबीरदास के पद हैं।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विसं मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१७१	१२४२२ (१४)	सेवादासजी की वाणी एवं कृतिसग्रह	सेवादास	गु० १८३१	१५X१०५	२६४-३५४	“गुरुमन्त्र, नाममहिमा, तत्त्व- निर्णय” ।
२१७२	१२२२६ (१६)	सेवादासजी की वाणी एवं पदसग्रह	सेवादास	गु० १८७७	१४X१२५	३००-४३८ ४३८-४७४	
२१७३	११६४८ (८)	सेवादासजी की वाणी एवं पदसग्रह	सेवादास	गु० १८५३	२७X१६५	१७०-२८५ २८५-३२७	लि क गोपालदास लि स्था कोलियानगर पद ४००, राग २३
२१७४	११६०६	सैलकु वरनी चौपई	समयसुन्दर	१९ वी श०	२४५X११	४ था मात्र	पत्र चित्रित है ।
२१७५	११५८५ (८) १३	सोलह-सतियो के नाम		गु० १९०३	१९५X११५	१४६ वा	पत्र सख्या १४७ पर एक सौ श्रुतावन कर्म-प्रकृति- वर्णन है ।
२१७६	१२२१८ (५) ३६	सोलह-सती सजभाय	प्रेमराज	१७६३	२६५X१०	४९ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१७७	१२३७० (१३)	सोलह-सती सज्जाय	उदयरत्न	१६ वी श०	१६x११५	१३१-१३४	
२१७८	१०६०० (५)	सोला-कला	द्यालबाल	२० वी श०	१२x८५	४६-४८	वाणी का ही एक अंग है ।
२१७९	१२४२१ (११)	सोलि-सुपना (स्वप्न)	परसराम	गु० १८६३	१७x१२	१८०-१८६	
२१८०	१२३८० (७)	सोहिलो (रामजी को)	तुलसीदास	गु० १७२४	२०x१४	१२७-१२९	पत्र सख्या १२६-१२७ पर रामजी की छड़ी के रागवद्ध पद है ।
२१८१	१२०६६	सौन्दर्यलहरी-सभाषाटीका	शभुदत्त पुत्र ज्योतिर्विद शिवकृष्ण	१८७६	१७५x११	१-१३८	पोरवाल बालकृष्ण वाचनार्थ । लि. स्था जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सेंमी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१८२	१२४३०	सौ-प्रश्नी भाषा		२० वीं श०	१६ ५X११ ५	१-२७	
२१८३	१२२१८ (१५३)	स्तभण-पार्श्वनाथ गीत	कुशललभ	१८ वीं श०	२६ ५X१०	१६५-१६८	अपूर्ण । अतिम पत्र खण्डित ।
२१८४	११५८४ (१३)	स्तभण-पार्श्वनाथ गीत		१७१४	१६ ५X१६	३६ वा	लि क नयणा लि स्था लाविया पत्र सख्या ४० - ४१ पर संस्कृत में नाडी-परीक्षा है ।
२१८५	१२२०५ (१२)	स्तभण-पार्श्वनाथ-स्तवन		१७५५	१७X११	११-१२	लि क विद्याप्रमोद लि स्था. रूपनगर
२१८६	१२२०५ (२७)	स्तभण-पार्श्वनाथ-स्तवन	भुवनकीर्ति	गु० १७४८- १७५८	१७X११	१०३ वा	लि क विद्याप्रमोद लि स्था रूपनगर
२१८७	१२५५१ (२३)	स्तभण-पार्श्वनाथ-स्तवन	जयसोम	१७ वीं श०	१३X११	१४६ वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१८८	१२५६५ (१६) १-११	स्तवन पद संग्रह	माणक, कुशालराय	२० वी श०	१६x१२	६३ वा	पत्र सख्या ६०-६२ पर रागवद्ध दोहे है।
			रूपचंद			६३, ६४, १०७, १०८, १०९	कल्याण राग के स्तवन १०, पत्र सख्या ६२-६४।
			माधोदास			६४	काफी राग के स्तवन ६, पत्र सख्या ६४-६६।
			वनारसी			६४, ६५,	
			रूपविमल			६५, ६७	
			देव			६५	
			अज्ञात			६६	
			चंदकुशल			६७, १००, १०८	जंजोटी के स्तवन ४, पत्र सख्या ६७-६८।
			हस्तीमल			१११	
						६८	ठुमरी के स्तवन ६, पत्र सख्या ६८-१००।

राजस्थान ग्रन्थविद्या प्रसिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निकाल (चिम मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१८६	१२५६५ (१६) १२-२१	स्तवन-पद-संग्रह	धर्मभगत लालचंद	२० वी श०	१६x१२	६८ वा ६९, १००, १०१, १०३-१०४ ११३, ११४ ६९ वा ६९, १०४, १०५-१०६ १०० वा १०१ वा १०२ वा १०१-११२ १०३ वा १०५ वा १०६ वा १०७ वा १०९ ११० वा ११३ वा ११० वा ११३ वा ११४ वा	५२ का १६३१ पत्र सख्या १०२ पर सोरठ राग के दोहे हैं। रेखते के स्तवन ४, पत्र सख्या १००-१०१।
२१९०	१२५६५ (१६) २२-३१	स्तवन-पद-संग्रह	धर्मपाल, हरखचंद श्रीधर धन्नो, खेम भावविजय केशरीचंद मुकनचंद चतुरकुशल वस्तीराम	२० वी श०	१६x१२		र. स्या बालोतरा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (विस में)	माप (सेमी में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१६१	१०८२२	स्तवन-संग्रह	जसविजय	१६ वी श०	२७.५X१३.५	१-११	“बीस विहरमान स्तवन” है। लि क लखमीकुसल
२१६२	११५८५ (८) १७-२२	स्तवन-संग्रह	रूपचंद लावण्यसमय जिनराज अज्ञात समयसुन्दर	१६ वी श०	१६.५X११.५	१५० वा १५१-१५३ १५३-१५४ १५४ १५५	सुविध जिन स्तवन पंचतीर्थ स्तवन वासुपुज्य स्तवन आदिजिन स्तवन श्रेणिक सजभाय
२१६३	१२२०५ (२५)	स्त्री-प्रवाह-प्रतिकार ओखद		१८ वी श०	१७X११	७६-८६	
२१६४	१२५७० (१७)	स्थूलदेह-वर्णन आदि	जनतुरसी	२० वी श०	६.५X६.५	१२३-१२४	पत्र सख्या १२५-१२८ पर 'नरसी' कृत पद हैं।
२१६५	१२३७० (३२)	स्थूलिभद्र नव-रासो	उदयरत्न	१६ वी श०	१६X११.५	१०-१८	रे का. १७५६

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१६६	१२१७८	स्थूलिभद्रनी सोयल वेल	वीरविजय	१६४०	२८x१२	१-७	र का १८६६, राजनगर लि क पवोरविजय लि स्था चाणसमा नगरे
२१६७	१२२०५ (३७)	स्थूलिभद्रमुनि-गीत	सोभाग्यसुन्दर	गु० १७४८- १७५८	१७x११	१२१-१२२	
२१६८	१२२१८ (७५)	स्थूलिभद्र सज्जाय	सिद्धविजय शिष्य शीलविजय	गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	६५-६६	
२१६९	१२२१८ (५) १६	स्थूलिभद्र सज्जाय	जिनराज	१८ वी श०	२६ ५x१०	३४ वा	
२२००	१२२१८ *(२१-२३)	स्थूलिभद्र सज्जाय	समयसुन्दर	गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	३६ वा	*(२१) भुवनकीर्ति कृत 'गुरु- स्तुति' रूप में ढाल है। (२३) "नीसाणी" शीर्षक से २५ सतों के नाम व उनकी जाति दी गई है।
२२०१	१२२१८ (४१)	स्थूलिभद्र सज्जाय	धर्मविजय शिष्य चारित्रविजय	गु० १७५५- १७६७	२६ ५x१०	५७-५८	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कृतो	तिथिकाल (वि.स.से)	माप (से.मी.से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२०२	१२३७० (१)	स्नात्रपूजा-विधि	देवचन्द्र	१६ वी श०	१६X११५	१-६	ढालबद्ध ।
२२०३	१२५६५ (१)	स्नात्रपूजा-विधि	देवचन्द्र	२० वी श०	१६X१२	१-८	
२२०४	१०६२७ (८)	स्नेहलीला	मोहनदास वैष्णव (जनमोहन)	गु० १८०६	२० ५X१०	१-१३	अगले दो पत्रों पर 'दत्तात्रेय स्तोत्र' है ।
२२०५	११६७५	स्नेहलीला	व्रजनिधि (सवाई प्रतापसिंह)	१६ वी श०	२३ ५X१० ५	१-११	अपूर्ण— ११८ छन्द है ।
२२०६	११५८६ (३)	स्नेहलीला (सचित्र)	विष्णुदास	गु० १८३३	१५ ५X११	१३३-१४३	चित्र सख्या—२
२२०७	१२५५७ (१६)	स्नेहलीला	जनमोहन	गु० १८७८	२०X१५ ५	१२-२२	
२२०८	१०६४७ (१)	स्नेहलीला	जनमोहन	२० वी श०	१४ ५X७	१-२८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२०६	१२४२८ (१)	स्नेहलीला	रसिकराय	१६१२	२१x१५५	१-६	प्रथम पत्र शोभन । लि क वैष्णव मोतीराम लि स्था जोधपुर
२२१०	१२१६०	स्फुट-आलापक (जिन-प्रतिमाजी री हुडी)		१८४६	१६५x११५	१-३२	जलाभिपिक्त । लि क अमरचन्द लि. स्था मेडता
२२११	१२५६७ (५)	स्फुट-औषधि एवं आयुष्य विचार-संग्रह		गु० १८३०	२१x१५५	४६-५०	पत्र सख्या ५० से ५४ पर स्कन्धपुराण के कुछ श्लोको की टीका एवं ज्योतिष- विषयक संग्रह है ।
२२१२	११५८४ (२)	स्फुट-औषधि एवं मन्त्र-संग्रह		१७४६	१६५x१६	१३०-१३६, १३८ वा	
२२१३	११५८५ (८)	स्फुट-औषधि सरसो री		१६०३	१६५x११५	१४० वा	
२२१४	११५८३ (२०)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	गगकवि	गु० १६६३	१८x१५	१६४-१६६	लि क अमरदास

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२१५	१०८५० (२)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	दयालदास	१८६६	१७x१० ५	१०-५३	अन्त में गुटके की कृतियों का विवरणात्मक कु डलिया है।
२२१६	१०८६७ (५)	स्फुट-कवित्त-संग्रह		१९ वी श०	१८x११	८६ वा	गुटका सजिल्द।
२२१७	१०८६७ (६)	स्फुट-कवित्त-संग्रह (वाणी के अंग)	रामदास	१९ वी श०	१२x११	२५४-२७०	गुटका अपूर्ण है। पत्र फटे हुए एवं चिपके हुए हैं।
२२१८	१०९३६ (७२)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	पद्माकर	१९३४	१२ ५x८ ५	४१५-४१६, ४१६-४२१	लि. क चौकसराम लि स्था जोधपुर
२२१९	११०८५ (२)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	रामदत्त	१९ वी श०	१६.५x१३.५	५७-५९	
२२२०	१२२१८ (१२२)	स्फुट-कवित्त-संग्रह		१८ वी श०	२६ ५x१०	१३४ वा	गुर्जर-भाषा मे।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	तिथिकाल (प्रि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२२१	१२६१२ (२, ४, ६)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	लछीराम देवीदास रावबुधा कासीराम बाजीद	गु० १८१६	२२x१५	११ वा १४ वा १७ वा १८ वा १६-२०	पत्र सख्या १८ पर 'तूला- पागला की खोट की टीप' है।
२२२२-	१२५४७ (२)	स्फुट-कवित्त एव लघुचाणक्य	कविशम्भु	२० वी श०	१६ ५x१२	२-३ ४-५	पत्र सख्या ३-४ पर 'पञ्चा- क्षर मन्त्र' संस्कृत में है।
२२२३	११५८४ (२४-२५)	स्फुट-कवित्त-संग्रह (जालिकावद्ध, मादगवद्ध, टोकरियो आदि)		१८ वी श०	१६ ५x१६	२११, २१२ वे	
२२२४	१०८४२ (१२)	स्फुट-कवित्त-संग्रह (राठोडा रा)		१६ वी श०	२४ ५x१६ ५	६२ वा	इसमें राव तीडा से लेकर, जोधपुर के महाराज विजय- सिंह तक का नामोल्लेख है।
२२२५	१०८४२ (१३)	स्फुट-कवित्त-संग्रह (रिणमल-रायों-राव)		१६ वी श०	२४.५x१६.५	६४ वा	अंत में स्फुट दोहा है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
*२२२६	१०८४२ (१५)	स्फुट-कवित्त-संग्रह		१६ वी श०	२४ ५X१६ ५	६७-६८	“जीवराज सोलखी लारे सती हुई जिणरो” । ११ चरण हैं ।
*२२२७	१०८४२ (११)	स्फुट-कवित्त-संग्रह (सरणै राखिया रा)		१६ वी श०	२४ ५X१६ ५	६० वा	मण्डोर के महाराजाओं के प्रशसात्मक कवित्त है ।
*२२२८	१०६५५ (४)	स्फुट-कवित्त-संग्रह		गु० १६०५	२३ ५X१७ ५	१-४	मानसिंहजी की प्रशस्ति- परक एवं श्रृङ्गारिक कवित्त है ।
२२२९	१२३७० (२०)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	धर्मसी	१६ वी श०	१६X११ ५	२००-२०७	
२२३०	१२३७६ (१)	स्फुट-कवित्त-संग्रह		२० वी श०	१६X१४	१-२२	
२२३१	१२४४८ (२)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	कविसिद्ध, सूरत पद्माकर गग कविलाल	गु० १६०६	२८X१३	६ वा ६, १० वे ६ वा १० वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२३२	१०६३० (५)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	कविगद	१६ वी श०	१५ ५X१२	५२ वा	स्त्री-स्वभाव पर औपदेशिक कवित्त है। अत मे तात्रिक मन्त्रादि है।
२२३३	१०८६६ (१८) २-६	स्फुट-कवित्त-संग्रह (अगवद्ध)	नारायण अज्ञात हरिदेव अज्ञात सेवगराम	गु० १६२७	८ ५X७	६६२-६६५ ६६५-६७० ६७०-६७७ ६७७-६७९ ६८०-६८६	
२२३४	११०१३ (११)	स्फुट-कवित्त, सवेया	कविगद आदि	गु० १८१८	२३X१५	११८-११९	प्रेमी-प्रेमिका के वार्तालाप सबन्धी शृङ्गारिक सवैये आदि हैं।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२३५	१२१७४ (१) १-१४	स्फुट-कवित्त, सवैया आदि	तुलसी जगनाथ गैव रामवल्लभ माणक साईदीन केशव वनारसी देवीदास हरिदास ईसरदास मालमदास राघोदास दीनानाथ	२० वी श०	१८ ५X७	१, ७, ९, २६ १, ८ २ रा ३ रा ४, ५, ६ ८ वा १०, १६ ११ वा १७, २५ १८-२४ १८ वा १९ वा १९ वा २५ वा	किसी बड़े गुटके के बीच के पत्र मात्र हैं। मूल पत्राङ्क ५१ से ७७ तक लगे हुए हैं। सगुण भक्ति-परक छन्द हैं।
२२३६	१२४२० (२०) १-३	स्फुट-कवित्त, सवैया आदि (वाणी के अंग)	परसराम जनतुरसी सुन्दरदास	२० वी श०	१६X१४	४३१-४३५ ४३२-४३४ ४३५-४३७	पत्र संख्या ४५२ पर भी परसरामजी के कवित्त हैं।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (चि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२३७	१२२२६ (७) १-१३	स्फुट-कवित्त, सर्वैया, कुण्डलिया-संग्रह	अज्ञात देवीदास कवि व्यास कवि ब्रह्म ऋषि लालचंद कवि जनक कवि सार कवि गद उदयराम गिरधरकविराय लिखमीदास केसोदास जगन्नाथ	१८७६	१४x१२५	४२-५८ ४२, ४३, ४६ ४३-४४ ४४, ५४ ४५-४६ ४७ वा ४८ वा ४८, ५१, ५३ ४९ वा ५० वा ५२ वा ५७ वा ५८ वा	सर्व ६१— अत मे तीन दोहे है। राजनीति रा। कलजुगी मित्र रा। लि. क. बीरमदास निरजनी शिष्य कोमलदास शिष्य वनमालीदास शिष्य मंगलदास शिष्य अमरदास शिष्य सेवादास लि. स्था कैरू (जोधपुर) पत्र सख्या ५४ से ५६ पर 'पृथ्वी रा खण्ड द्वीप रो प्रमाण' है।
२२३८	१२५७४ (१४) १-३	स्फुट-कवित्त, सर्वैया, ढाल	तुरसीदास माधोदास चोथमल	२० वी श०	१७x१०५	३०० वा ३०१-३०२ ३०२-३०४	र. का. १८५२

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२३६	१२२८१ (६) १-५	स्फुट-चन्द्रायणा	सेवादास हन्दिदास कबीर रूपदास जननुरसी	१६ वी श०	१६x१० ५	७०-७१ ७३-७५ ७२ वा ७३ वा ७५ वा	.
२२४०	१२३७१ (१६)	स्फुट-दोहा-संग्रह (शृङ्गार)		१८ ५२	१८ ५x१६ ५	५६-६०	जननुरसी की 'साखी' है। महाजनी लिपि में। पत्र सख्या ६१-६२ पर पत्र लिखने की कला के दोहे हैं। ७७ दोहे हैं।
२२४१	१२२०५ (४६)	स्फुट-दोहा-संग्रह		१८ वी श०	१७x११	१२६-१३१	
२२४२	१२५७० (२२)	स्फुट-दोहा-संग्रह (दोहावली)	गो० तुलसीदास	२० वी श०	६ ५x६ ५	१३०-१३५	
२२४३	१०६४० (७) ३६-३७-३८	स्फुट-दोहा-संग्रह	रहीमदास आदि	गु० १८८३	१५ ५x१० ५	५७४-५७५	पत्र सख्या ५७६-५७८ पर "रघुनाथ-ग्रजनी-सवाद" है।
२२४४	११५८५ (८) ६	स्फुट-दोहा-संग्रह		१६०३	१६ ५x११ ५	१४०-१४१	लि क लिखमीचद कोचर लि स्था वालाहेडा

क्रमांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (गि. सं. में)	माप (शे.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२४५	११०८२ (१)	समूह कर्ता मेघराज बलाई	१८४३	१८x१० ५	१-६७	पत्र खण्डित एवं जलाभिपिक्त लि. क. मेघराज बलाई लि. स्था. पाली गुटका प्रतिलिपि कर्ता का स्वयम् का ही है।
२२४६	१२२१३ (२)	रैदास	गुं १८४७	१२x१६ ५	५-२३	
२२४७	११५८३ (१६)		१८ वी श०	१८x१५	१६१-१६२	
२२४८	११५८५ (८) २५, २८	रूपचंद एवं अज्ञात	१६ वी श०	१६ ५x१५ ५	१५७, १६४	
२२४९	१२५६२ (८) १-३	पूरणदास देवीदास तुलसीदास	१६ वी श०	१४x१० ५	१८०-१८३ १८३-१६१ १६१-१६२, १६३-१६५	पत्र सख्या १६३ पर 'दावीस- अभक्ष वर्णन' है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.म.से.)	माप (से.मी. से.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२५०	१२६१२ (१२) १-५	स्फुट-पद, कवित्तादि	जुगताराम क्यालीराम विहारीदास भूधरदास अज्ञात	गु० १८१७- १८३६	२५X१५	६५ वा ४६ वा ६७ वा ४८-४९ ५०-५४	पत्र संख्या ४९ - ५० पर 'विहरमान विनती', ५१ वे पर 'पार्श्वनाथ स्तुति' एवं ५२ वे पर 'श्रीपाल दर्शन' है।
२२५१	१०६३६ (७)	स्फुट-पद, कवित्तादि	हरीदास अज्ञात पद्माकर	१९३४	१२ ५X८ ५	३७४-३७५ ४१५-४१६ ४१६-४२१	लि. क. चौकसराम लि. स्था. बडे रामद्वारे- चाँदपोल, जोधपुर
२२५२	१२०६६ (३)	स्फुट-पद, कवित्तादि	वेणीदास कवियण अज्ञात	गु० १६६०	१५ ५X१४	३४, ३८, ५०, ५१ २४ वा ३४-५५	पत्र संख्या ४२ - ४३ पर 'हनुमान-स्तुति' है। पत्र संख्या ४६ पर रामों के नाम हैं।
२२५३	१२५७० (२५) १-४	स्फुट-पद, कुण्डलिया आदि	सग्राम जनभावन जगजीवन रामदास	२० वी श०	९ ५X६ ५	१५५-१५७ १५९-१६७ १६८ वा १६९-१७०	

क्रमांक	पं.या.ह.	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकान (विस मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२५४	११३१३ (४)	स्फुट-पद, इला-मगह		गु० १८०२	१५X१४	१-७	
२२५५	१२६१२ (१८)	स्फुट-पद, विनती गादि	रिखवदास	गु० १८१६	२५X१५	६१-६३	पत्र सख्या ६४ पर धर्मचर्चा का प्रारम्भ मात्र है।
२२५६	१२२०५ (५१)	स्फुट-पद-सगह	मीरा	१८ वी श०	१७X११	१३३ वा	“राधा मोहनजोरी स्याम खेलो होरी”
२२५७	१०६०० (१२)	स्फुट-पद-सगह	नामदेव रैदास		१२X८५	६४-६५ ६५ वा	स्फुट नुस्खे व मत्र भी है। गुटका अपूर्ण है।
२२५८	११४७७ (२)	स्फुट-पद-सगह	ब्रह्मानन्द		२३ ५X१६	१-१०	लिपि गुजराती मोड लिए हुए है। पदों की भाषा भी गुजराती है।
२२५९	११५८३ (२४)	स्फुट-पद-सगह	जनहरिदास	गु० १६६३	१८X१५	२३८-२३९	अत मे सवत् १७४५ की घरेलू-याददाश्त है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	तिथिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२६०	१२२१७ (४)	स्फुट-पद-संग्रह	जिनरग केशवदास परमानन्द कासीराम	१६ वी श०	२१ ५X१२	७४ वा ७६ वा ७७ वा ७८-७९	
२२६१	१२२२६ (२०)	स्फुट-पद-संग्रह	तुलसीदास मीरा जनतुरसी	गु० १८७७	१४X१२ ५	६१४ वा	
२२६२	१२३७० (४५)	स्फुट-पद-संग्रह	आनन्दधन	१८७८	१६X११ ५	१५५-१५७	लि क विनैचद लि स्था जोधपुर पत्र सख्या १५८ पर लल- वाणी मानमलजी के पुत्र नवलमल का सवत् १८८१ का जन्म-लग्न है। पत्र सख्या १५९ पर साहजी रामचन्द्रजी के पुत्र सकलचद का जन्म-लग्न है।
२२६३	१२३७८ (१)	स्फुट-पद-संग्रह	गोविन्ददास सुन्दरविरहन	१८ वी श०	२२X१५ ५	१-६	वीच - वीच मे सस्कृत के सुभाषित भी है।

क्रमांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निष्पन्नता (चि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२०६४	स्फुट-पद-संग्रह	वपना आदि	गुं १७२४	२०x१४	१३२-१३६ १६०-१६१	पत्रों पर एक ओर ही लिखा गया है।
२२६५	स्फुट-पद-संग्रह	कबीरदास नापा कान्हा	गुं १७२४	२०x१४	२०८, २१५-२१६ २०६-२१३ २१३-२१४	
२२६६	स्फुट-पद-संग्रह	परमानन्द मीरा	गुं १६४३	२५x१७	६४ वा ६५ वा	पत्र सख्या ६५ - ६६ पर 'महादेवजी की स्तुति' है। अगले पत्रों पर 'फूलजी- फूलमती की बात' का प्रारम्भ मात्र किया गया है।
२२६७	स्फुट-पद-संग्रह	रायचंद प्रेमसागर	१६ की श०	१३x१४ ५	१०४ वा १०५-१०६	
२२६८	स्फुट-पद, सर्वथा आदि	रूपचंद वनारसी भूधर	गुं १८१७- १८३६	१५x१५	२१ वा २२, २८ २३-२४, २७-२८	पत्र सख्या २८ पर सवत् १६१४ की गांव की ग्रामदनी की टीप है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२६६	१२३७० (२३)	स्फुट-पद, सर्वया, कुण्डलिया	रत्नचन्द बनारसीदास	१६ वी श०	१६x११ ५	२१६-२२०, २२१-२२४ २२०-२२१	पत्र सख्या १० पर ही गोपीचंद का कुण्डलिया है।
२२७०	१२५७० (५) १०-१३	स्फुट-पद, साखी, कवित्तादि	जनरामा रज्जव जनहरिदास	२० वी श०	६ ५x६ ५	६ वा १० वा १०, ११	
२२७१	१२४२१ (२) १-१०	स्फुट-पद, साखी, सवया, कवित्तादि	अज्ञात मुकद राघोदास सेवादास जनतुरसी जगनाथ सुन्दरदास किशनदास गोपाल, जगजीवन	गु० १८६३	१७x१२	७२-७४, ७७-७८ ७४-७५ ७५ वां ७५-७६ ७६, ७८ ७७, ८०, ८२ ७७, ८८, ९० ७८ वां ७९ वा	

क्रमांक	पृष्ठांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	तिथिकाल (क्रि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सन्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२७२	१२४२१ (२) ११-२०	स्फुट-पद, सांघी, सांघी, कवित्तदि	रजव, विगनदास जननीजो, कृष्णदास बालकराम कवीर मोहनताल देवीदास खेमदास चतुरदास	गु० १८६३	१७X१२	८० वा ८१ वा ८१, ८७-८८ ८३, ८६ ८३ वा ८४ वा ८५ वा ८६ वा	
२२७३	१२४२१ (१६) १-६	स्फुट-पद, सांघी, सांघी, कवित्तदि	जनभगवान जगनाथ रजव जनतुसी माधोदास सुन्दरदास	गु० १८६३	१७X१२	२४३ वा २४४, २४५ २४४ वा २४६ वा २४६, २४७ २४७, २४१	
२२७४	११६७३	स्फुट-पद होनी आदि	नारायण	२० वी श०	१६ ५X१०	१-४	
२२७५	११३२४	स्फुट-रेखता		१६ वी श०	२२ ५X१५ ५	२८-३४	राधा-कृष्ण परक २८ रेखते है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निर्गिकान (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सङ्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२७६	११६४८ (२८)	स्फुट-रेखता, कवित्त सग्रह	रूपराम	गु० १८५३	२७X१६५	५७५-५७६	गुटके मे सत व नाथ-साहित्य का दुर्लभ सग्रह है।
२२७७	१२०६६	स्फुट-रोग एव नुस्खा सग्रह		गु० १६६२	१५५X१४	३२-५२	पत्र एक-ओर लिखे हैं।
२२७८	११५८५ (८) ३१-३२	स्फुट-सज्भाय एव पद	राजसमुद्र आनन्दधन	१६ वी श०	१६५X११५	१६६-१६७	
२२७९	१०८५० (१)	स्फुट-सबद-सग्रह	रामदास	गु० १८६६	१७X१०.५	१-६	लि. क खण्डूराम लि स्था कोटा
२२८०	१२५६१ (१)१-६	स्फुट-सबद-सग्रह	दासहरिना (हरिदास) भीखजन आतमगाम रामचरण जनरामा द्यालवाल	२० वी श०	१५५X१०	१-२ २-४ ४-६ ६ ठा ७-१२, १४-१५ १६ वा	
२२८१	१०६४५ (३)१०	स्फुट-सबद-सग्रह	अनेक सतो के	१६ वी श०	१४५X७५	३३८-३६०	सग्रह-सवैया, कवित्त दोहा मनहर-छंद आदि मे है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२८२	१०६४४ (६)१५	स्फुट-सवैया	केसोदास	२० वी श०	८X५	३०२-३०४	
२२८३	१२२१७ (४)	स्फुट-सवैया, कवित्त-संग्रह	मोहनविजय कविगण अज्ञात वनारसीदास मुकदकवि बिहारी हरिनाथ	१६ वी श०	२१ ५X१२	६६-७१, ७३ ८१ वा ७५, ८०-८१, ८२-८३ ८७-८८ ९१-९२ ९३ वा १०१ वा	
२२८४	१०८६१ (७)	स्फुट-सवैया, कवित्त		१६ वी श०	१६X१२	६६-१०३	
२२८५	११६४८ (६)	स्फुट-सवैया, कवित्त, रेखता		गु० १८५३	२७X१६ ५	३४५-३४७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (विस मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२८६	१२२१७ (२)	स्फुट - सर्वथा, सुभाषित, समस्यापूर्ति एवं नुस्खा-संग्रह	कविगग, मनराम लालकवि वनारसी, केसोदास आदि	१६ वी श०	२१ ५X१२	१३-२३ २६-२७ ३५-३८ ४५-५१, ५४	पत्र सख्या २३ से २५ पर 'सोमोत्पत्ति परिशिष्ट' संस्कृत मे है। पत्र सख्या २७ से ३४ पर संस्कृत मे सुभाषित एवं स्तुति है। गुटके मे भाषा व संस्कृत पद्यो को एक-साथ लिख दिया गया है।
२२८७	१०८६६ (१२) १-३	स्फुट-साखी	रज्जव	गु० १६२७	८ ५X७	५३७-५३८ ४५२ वे ५३६-५४१ ५४१ वा	
२२८८	११०६२ (१०)	स्फुट-साखी	कबीरदास	गु० १८३६	१८X१० ५	१६३-१६४	
२२८९	१२५६१ (८, १०, १७)	स्फुट-साखी	सेवादास कबीरदास जननुरसी	२० वी श०	१५ ५X१०	५२ वा ५४-५५ ६४-६५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२६०	१२५८१ (८) १-१३	स्फुट-साखी, पद, कवित्तादि	माधवदास रज्जब अज्ञात सेवादास जनरूपदास हरिराम समन तुलसीदास कबीर सेखवहावदी, सुन्दरदास कानड, मीरा	१६ वी श०	१६x१० ५	५१ वा ५२-५३ ५३ वा ५४ वा ५४-५६, ६८ वा ५६-६४ ६४ वा ६५ वा ६६ वा ६७ वा ६६ वा	
२२६१	११६४८ (२)	स्फुट-साखी, पद-संग्रह	दादूदयाल	१६ वी श०	२७x१६ ५	१-४	पत्र जीर्ण है।
२२६२	१२५८१ (२)	स्फुट-साखी-संग्रह	अहमद आदि	१६ वी श०	१६x१० ५	१४-२८	
२२६३	१२५७५ (८, १०, १२)	स्फुट-सैद्धान्तिक बोल-संग्रह (जैन)		१६ वी श०	१३ ५x१४	१७-२० २२-२८ २६-५१	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निर्णयकाल (चि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२६४	११०१३ (३)	स्फुट-शृङ्गारिक प्रहेलिका- संग्रह	दलपति विप्रभान पिंगल शुभसागर वृन्द	गु० १८२५	२३x१५	७०-७१	दोहा, कवित्त, सर्वैया वद्ध । आगे के पत्रों पर भी गूढार्थ एव पहेलिया हैं । पत्र स ७४ पर कुण्डलिया है ।
२२६५	१२२१८ (५) १०८	समयभू-पार्श्वनाथ स्तवन	हर्षकुशल	१८ वी श०	२६ ५x१०	१२२ वा	
२२६६	१२३८० (८)	स्वयंवर (सीता का)	नन्ददास	गु० १७२४	२०x१४	१२६-१३१	
२२६७	११८२२	स्वरज्ञान	चरनदास	१६ वी श०	११ ५x८.५	१-१०	स्वर-चलने के आधार .पर शकुन विचार है । जेबी डायरीनुमा है ।
२२६८	१२५५६ (२)	स्वरूप-निर्णय भाषा		गु० १८०५	२१x१४	६८-६९	पुष्टिमार्गीय ग्रन्थ ।
२२६९	१२२०४ (३)	स्वरोदय	चरनदास	१८६३	१७x१५ ५	२६-४०	लि क. फतेचद लि स्था अवतिका नगरे

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३००	१२२२६ (६)	स्वरोदय		१८७६	१४X१२ ५	३२-४१	लि.क वीरमदास निरजनी लि.स्था कौरू (जोधपुर)
२३०१	१२२०४ (२)	स्वरोदय-शास्त्र-तत्त्वज्ञान		गु० १८५८	१७X१५ ५	२६-२६	
२३०२	१०६८४	हंसराज-वच्छराज चौपई	जिनोदयसूरि	१६ वी श०	२५ ५X१२	१-२४	र का १६८० पत्र चिपके हुए है।
२३०३	१२५६८ (३४)	हंसराज-वच्छराज चौपई	जिनोदयसूरि	१८५६	१८ ५X१२.५	१-५३	र का १६८०। कीटविद्ध। रावत १८३० की पूर्व प्रति से प्रतिलिपि कृत। लि.स्था ग्राम माडावास
२३०४	१०८६६ (६) १५	हनुमन्नाटक-पद्यानुनाद	ग्रज्ञात	गु० १६२७	८ ५X७	८७१-४७२	मनहर छद मे कुछ श्लोको का अनुवाद है। उनके बाद जगन्नाथ कृत स्फुट सवैये है।
२३०५	१०६८४ (६) २१	हर्चद (हरिश्चन्द्र) की लावणी	सूरदास	२० वी श०	८X५	३४३-३४५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३०६	१०६२४ (१६)	हरचन्द (हरिश्चन्द्र) सत	ध्यानदास	१६ वी श०	२३ ५X१२ ५	५७२-५८७	
२३०७	१२८२१ (१३)	हरचन्दसत	ध्यानदास	गु० १८६३	१७X१२	१६३-२१४	
२३०८	१२३७३ (२०-२२)	हरबोल-चितावणी	सुन्दरदास	२० वी श०	२२X१५ ५	पृ० २१४-२१५ २१५-२१६	इसीके ग्रामे 'तर्क चितावणी' तथा 'विवेक चितावणी' । पृ० सख्या २१६-२२५ पर दो सस्कृत कृतिया ।
२३०९	१२३७५ (२-४)	हरबोल-चितावणी	सुन्दरदास	१६ वी श०	११X१६ ५	४७६-४८० ४८०-४८० ४८०-४८७	'तर्क चितावणी' 'विवेक चितावणी'
२३१०	१०६३० (३)	हरिचन्दसत	ध्यानदास	१६ वी श०	१५ ५X१२	१-४७	सर्व सवद ३४०
२३११	११००२	हरिचन्दसत	ध्यानदास	१६ वी श०	२१ ५X११	१-२४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३१२	१२४२० (१)	हरिचदसत	ध्यानदास	२० वी श०	१६X१४	१-३४	पत्र सख्या ३४-३५ पर मीरा के पद है।
२३१३	१२५७४ (१२)	हरिचदसत	ध्यानदास	२० वी श०	१७X१० ५	२५७-२६४	
२३१४	१२४२१ (१३)	हरिचदसत	ध्यानदास	१६ वी श०	१७X१२	१६३-२१४	
२३१५	१२२२६ (२८)	हरिचदसत	ध्यानदास	१८८२	१४X१२ ५	६७६-७०६	
२३१६	११०८७ (७)	हरिचरणा री महिमा		गु० १७६३	२१ ५X१५ ५	१२१ वा	
२३१७	१०८३६ (१०)	हरिजस	दी. दरवेश	१६०६	३२X१७ ५	१-४७	अत मे स्फुट सवेये तथा 'हरिगीता-छंद' दिया हुआ है। लि स्या जोधपुर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि. स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३१८	११५८३ (१६)	हरिदासजी का चन्द्रायणा एव पद-संग्रह (वाणी)	जनहरिदास	१८ वी श०	१८x१५	१३८-१४६ १४६-१५६	अमरदास ईश्वरदास पठनार्थ । अतः मे सवन् १७३८ की याददाश्त है ।
२३१९	१०६६६	हरिदासजी की वाणी	जनहरिदास	२० वी श०	२५x१२	१-३६	
२३२०	१२२२६ (१५)	हरिदासजी की वाणी एव कृति-संग्रह	जनहरिदास	१८७७	१४x१२	१-२६६	पत्र सख्या २६६ पर अमर- दासजी का, पत्र सख्या ३०० पर हरिदासजी का, पत्र स ३०१ पर मगलदासजी का, पत्र सख्या ३०२ पर वनमालीदासजी का चित्र है । लि. क वीरमदास निरजनी लि स्था कैरू (जोधपुर)
२३२१	१२४२२ (२)	हरिदासजी की वाणी एव कृति-संग्रह	जनहरिदास	गु० १८३१	१५x१०	१-१६३	लि क ऊगमदाम लि स्था डीडवाणा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३२२	११००३ (२)	हरिदासजी की साखी	जनहरिदास	१६ वी श०	२६ ५X१४ ५	४-३३	पत्र चिपके हुए है।
२३२३	१२५५३ (४)	हरि-नाम-प्रताप	दामोदर	गु० १८६७	१४ ५X१३ ५	११२-११६	
२३२४	१०६०२ (६)	हरिवोल-चितावणी	सुन्दरदास	गु० १८०६	१५ ५X१२ ५	५२-५४	
२३२५	१२३२६ (७)	हरिवोल-चितावणी	सुन्दरदास	२० वी श०	२३X६ ५	३७६-३८०	
२३२६	११०८६ (६)	हरिरस	ईसरदास वारठ	१६ वी श०	१८ ५X१६ ५	८८-१०१	२६४ छद है।
२३२७	१२४२० (६)	हरिरामदासजी का छुटकर सबद	जनहरिया	२० वी श०	१६X१४	२१-११८	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३२८	१२५७१ (३) ३	हरिरामदासजी री वाणी (गग्घर निसाणी)	जनहरिया शिष्य जैमलदास	१६ वी श०	१० ५X८	५३-१४७	
२३२९	१२५६१ (२५)	हरिरामदासजी री वाणी	जनहरिया	२० वी श०	१५ ५X१०	१३२-१३४	प्रारंभ मात्र है।
२३३०	१२५७१ (३) १-५	हरिरामदासजी के सवद एव कृति-संग्रह	ज : हरिया	१६ वी श०	१० ५X८	५३-१२८ १२८-१३५ १३६-१४३ १४४-१४६ १४६-१४७	अगवद्ध। पद-वत्तीसी गग्घर-निसाणी प्रश्नोत्तर पद
२३३१	११००६	हरिवंश-प्रबन्ध (ढाल-संग्रह)	गुणसागर सूरि शिष्य प्रेमसागर	१७८३	२६ ५X१०	१-६६	र का १६७२ 'मास सावण सुद तीज' र. स्था. कुकुटेश्वर नगरे लि क चेना— कनकादे प्रसादात् पत्र सख्या ७६-८४ अप्राप्त। पत्र जीर्ण।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३३२	११०६२ (८)	हालीपावजी की सवदी	हालीपाव	गु० १८३६	१८X१० ५	१६१-१६२	नाथ-साहित्य ।
२३३३	११५४८ (३४)	हिंगुलाजदेवी-गीत		१८ वी श०	१६ ५X१६	२३२ वा	
२३३४	१२२१८ (५) ११६	हित-शिक्षा-सञ्जय	विजयभद्र	१८ वी श०	२६ ५X१०	१३२-१३३	
२३३५	१२३७१ (२)	हितोपदेश कथा	मू० विष्णुशर्मा	१८३५	१८ ५X१६ ५	१००-१४१	लि क भीखनदास गौड लि स्था अहिपुर (नागौर)
२३३६	११६८८	हितोपदेश पञ्चाख्यान सभाषा-सहित	मू० विष्णुशर्मा	१६ वी श०	२३ ५X१६	१-७०	अपूर्ण— विग्रहभेद कथा तक ।
२३३७	१२५७६	हितोपदेश पञ्चाख्यान भाषा	मू० विष्णुशर्मा	१६ वी श०	२१X१५ ५	१-५०	अतिमाश अग्राम । प्रति जेठमल आसोपा की ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३३८	११०६० (३)	हितोपदेश भाषा		१६ वी श०	१४ ५X११	७८-३४३	अपूर्ण । गुटका दीमकग्रस्त । पत्र सख्या ३३६ वें के बाद पत्र गुटके से अलग हो गए है ।
२३३९	१२१५८	हितोपदेश भाषा		१६ वी श०	२५X११ ५	१-१३	विग्रह-कथा मात्र ।
२३४०	१२२१८ (५)६	हीरविजयसूरि-सङ्गाय	भक्तसेन शिष्य विजयसेनसूरि	१८ वी श०	२६ ५X१०	३१ वा	अतः मे हर्षकुशल का एक पद है ।
२३४१	१२२१८ (५)१५	हीयाली (प्रहेलिका)		१८ वी श०	२६ ५X१०	३४ वा	
२३४२	१२३२० (५४)	हीयाली-संग्रह	मुनि जयमल	गु० १८२७- १८४७	२१ ५X१४ ५	३६ वा	पत्र सख्या ३६ - ४० पर साध्वी सरूपा जिसके लिए गुटका लिखा गया है, उसी के हाथ का लिखा पत्र है ।

ग्रन्थाङ्क ७८५६ से १०६८८ तक के
हिन्दी ग्रन्थों तथा अवशिष्ट राजस्थानी
ग्रन्थों का विवरण :—

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकार (विराज से)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३५५	१०५०२	अमृतसागर	सवाई-प्रतापसिंह कारित	२० वी श०	२१ ५५ १३ ५	२-१७३	आयुर्वेदिक ग्रन्थ । अपूर्ण । पत्र सख्या ५७ से ७३ खण्डित ।
२३५६	१०१८१	अवतारचरित्र	नरहरिदास बारठ	१८६५	३१ ४२४	१-४३२	लि क ब्राह्मण गगविष्णु, ज्ञाति गुर्जरगौड, गौत्र सुरतान्या जोशी । वास्तव्य—लोचनपुर ।
२३५७	८५८४ (३)	अवतारमाला ती गरवी	जीवनलाल नागर	२० वी श०	२२ ४१ ७५	४०-४२	२ का १६१४ २ स्था वूदी समकालीन प्रति है । पत्र त्रुटित ।
२३५८	७८६०	अलकार-कलानिधि	श्रीकृष्णभट्ट- कवि कलानिधि	१६ वी श०	२१ ५४ १६	१-१६२	पत्र सख्या १३३-१३८ तक अग्राप्त । प्रारम्भ में 'गीत- प्रबन्धाध्याय' के ८ पत्र हैं । कवि लाल के आग्रह से सवाई-जयसिंह के समय में निर्मित ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-सगह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विसं मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
*२३५६	१०६८५ (१)	अलकार-रत्नाकर	दलपतिराय एव बशीधर	२० वी श०	२५ x १६	१-६६	२ का १७६८ पत्र सख्या ५६ - ६६ पर 'भापाभूषण' नाम से अल- कारो के मूल-लक्षण दिये गये हैं।
२३६०	६२६० (४)	अश्वलक्षण		१६ वी श०	२० x १४	३४७-३६८	प्रारम्भ के २६ छन्द अप्राप्त। पत्र सख्या ३४६ - ३५२ व ३६४ वा अप्राप्त।
२३६१	८४०४ (२)	अष्टप्रकारी-पूजा	मुनि देवचन्द	१६ वी श०	२० x १३	७-११	पत्र चिपके हुए हैं।
२३६२	८४०० (३६)	आदिजिन-गीत	मुनि देवचन्द	१६ वी श०	१६ x १३ ५	८३-८५	
२३६३	८४०० (३४)	आदिजिन-गीत	करमसिंह	गु० १८६४	१५ x १३ ५	७३ वा	
२३६४	८४०० (४३)	आदिजिन-गीत	मुनि देवचन्द	गु० १८६४	१५ x १३ ५	८५-८६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३६५	८४२२ (१४) १-२	आदिजिन-स्तोत्र	गुणसागर	गु० १७७६	२३x२०	७७-८०	
२३६६	८४२२ (१, ५)	आदित्यवार कथा (जैन) आदित्यहृदय स्तोत्र		गु० १७७६ "	२३x२० "	१८-२० २८-३७	अपूर्ण—प्रारभ के १७ पत्र अप्राप्त । कृति सस्कृत में है ।
२३६७	८६२८ (१-१२)	आरती-संग्रह (१२ आरतिया)		२० वीं श०	२३x१४	१-१४	पत्र सख्या १४-२२ पर सस्कृत में जैन स्तोत्र है ।
२३६८	८८५७ (२)	इतिहाससार-समुच्चय-भाषा	गुसाईं जुगतानन्द शिष्य चरणदास	१६ वीं श०	१६x१४	१-१८३	
२३६९	८२३६	इतिहाससार-समुच्चय-भाषा	लालदास पुत्र ऊधोदास	१८५५	२५ ६x१३	१-४२	२ का १६४३ लि. क. रामजीदास लि. स्था. नागपुर (नागौर) बखततडाग तीरे । कश्मीरी पत्र ।
२३७०	९६४१	इतिहाससार-समुच्चय-भाषा	लालदास	१८ वीं श०	२५x१३	१-५६	२ का १६४३, किंचित अपूर्ण । ३२ वे अध्याय के २५ व श्लोक तक ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विस मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३७१	१०१९६	इन्द्रजाल-भाषा		१६०६	३८x१८ ५	१-४८	चौरासी तन्त्रों के आधार पर मन्त्र-तन्त्र संग्रह है। प्रथम दो पत्र खण्डित है।
२३७२	८४२२ (३१)	इलापुत्र-सज्जाय	लब्धिविजय	गु० १७७६	२३x२०	६८ वा	
२३७३	९६८१ (२)	इक्षकचमन रा छटकर दूहा		१८९६	२४x११ ५	८-९	लि स्था. फलवर्धिका (फलोदी)
२३७४	९३१५ (१-२)	इक्षकलता	कवि भोलानाथ	१९ वी श०	१८x१३	६+६=१२	अत मे सुभाषित दोहा-संग्रह है। कृति पञ्चावी मिश्रित भाषा मे है। र का १८२७ महाराजकुंवर गोपालसिंह हित रचित।
२३७५	९७२० (५)	इक्षकलता	रसरशि	१९ वी श०	२०x१५ ५	१४-१६	अपूर्ण।
२३७६	८४२७ (४)	उपदेश-चितावणी	सुन्दरदास	१९ वी श०	१० ५x७	२९-४५	पत्र सख्या ४५ से ५४ तक दाह, सेवादास के स्फुट-पद, साखी, संवैया आदि है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३७७	६०८८ (५)	उपदेश-छत्तीसी	जिनहर्ष	१६५६	२२ ७X१४	१६-२६	लि क मोहनकीर्ति लि स्था लाखोला ग्राम र. का १७१३ 'सवत गुण शशि भक्ष'
२३७८	८५६२ (१३)३	ऐतिहासिक टीप (विगत)		गु० १७६६	२६ ५X१५ ५	७ वा (ब)	सवत् १७६६ मे किसन- विलास मे शक्तावत सूरत- सिंहजी के पुत्र प्रताप्रसिंहजी की हत्या की विगत है ।
२३७९	८४०० (३६)	ऋषभदेव-गीत	समरचन्द सूरि	गु० १८६४	१५X१३ ५	८१-८२	
२३८०	८४२२ (२३)	ऋषभदेव-स्तवन	गुणसागर सूरि	गु० १७७६	२३X२०	८६-९०	
२३८१	६३२७ (३)	कठाभरण की वचनिका	भोलानाथ	१६ वी श०	२८X१८ ५	३२-३४	स्फुट पत्र ।
२३८२	६२२८ (७)	कबीर-गोरख-गोष्ठी		१८४१	२६ ५X१४ ५	४०-४३	पत्र सख्या ४४ पर पट्ट- शास्त्र सम्मत पद्य है । पत्र सख्या ४५ पर कबीरदास की वाणी का अंश है ।

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३८३	८५६१ (१)	कबीरदासजी की परची	अनन्तदास	१७५४	२१ ५X१६	६-१४	पत्र संख्या १ से ८ अप्राप्त ! प्रारम्भ के पत्र नुदित ।
२३८४	८५६१ (२)	कबीरदासजी की वाणी	कबीरदास	१७५४	२१ ५X१६	१५-६६	३३ वा पत्र अप्राप्त । लि. क. रूपदास लि. स्था. करवर ग्राम (बूँदी) पत्र जीर्ण ।
२३८५	६७३२ (१)	कबीरदासजी की वाणी	कबीरदास	१६ वी श०	१७X१२ ५	१-२०	काया की, द्वादशपथ की, करम की, प्रबोध की, अक्षर- सङ्ग की रमेनी है ।
२३८६	८००३	कबीरदासजी का सबद एवं पद-संग्रह	कबीरदास	१६ वी श०	२८X१४ ५	१-१०४	प्रति में दो प्रकार के पत्र हैं । लि. क. किसानदास लि. स्था. जोधपुर
२३८७	६२२८ (६)	कबीरदासजी की साखी (कबीर-धर्मदाम-सवाद)	कबीरदास	गु० १८४१	२५ ५X१४ ५	३३-४०	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३८८	८५६२ (५)११	कवीरदासजी की साखी	कवीर	गु० १७६५	२४ ५X१५.५	७४ वा (ब)	
२३८९	८५६२ (५)८	कमलकुंवर बाईसा रो गीत		गु० १७६५	२४ ५X१५.५	६३ वा (अ)	महाराणा अमरसिंह द्वितीय के साथ सवत् १७६७ वि मे सती होने का गीत ।
२३९०	८४२२ (३६)	कर्म-सज्जाय	हीरानन्द सूरि	गु० १७७६	२३X२०	१०४-१०५	
२३९१	९०८८ (३)	कल्याणमंदिर स्तोत्र भाषा	बनारसीदास	१६५६	२२ ८X१३ ५	३-८	लि क मोहनकीर्त्ति लि स्था लाखोला ग्राम
२३९२	८४०४ (६)१	कल्याण-राग रा दूहा		१६ वी श०	२०X१३	५७ वा	
२३९३	८४०४ (६)२	कल्याण-स्तवन	कुशलराय	१६ वी श०	२०X१३	५७ वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३६४	६८३४ (२) १-७	कवित्त अमरसिंह का आदि	कविगद मोहन केहरि नयन	१८४५	१२x१५	२-३ ६ ठा ७ वा ८-२० २१ वा	पत्र सख्या ४ पर गिरधर कविराय के कुण्डलिया है। पत्र सख्या ५ पर मीरा के पद है। पत्र सख्या ४-५ पर रेखा- चित्र हैं।
२३६५	६२६० (३)२	कवित्त गुजरात की रसोई को		१६ वी श०	२२x१४	२८७ वा	
२३६६	६२६० (१)१२-१४	कवित्त जयसिंहजी की तथा कुण्डलिया आदि संग्रह	कविनोने गिरधर कवि गगकवि	१६ वी श०	२२x१४	२६२-२६४	पत्र सख्या २६४-२६७ पर दोहा-संग्रह है।
२३६७	६२६० (१)१-६	कवित्त, दोहा-संग्रह	मुरलीदास वनारसीदास मुन्दरदास अज्ञात ग्रामबरशाह गिरधर कविराय	१६ वी श०	२२x१४	२८१-२८७	पत्र सख्या २८४ पर 'गणेश जी की स्तुति' है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२३६८	६७२८ (४, ६)	कवित्त, दोहा-संग्रह	हरलाल	१६ वी श०	२१x१७	१७-१६ २१-२२	७ दोहे हैं। महाराजा तख्त-सिंहजी रा कवित्त।
२३६९	६८३४ (७)	कवित्त, दोहा-संग्रह	बेहरि	गु० १८४५	१२x१५	३३-६०	पत्र सख्या ३२ - ३३ पर पुराणों की सख्या का विवरण है।
२४००	१०२४७ (२) ३	कवित्त नायिका री दोहतर कला री	कविग्यान	गु० १८८३	१६x१२	२६-२६	पत्र सख्या २६ पर ही कवि गद कृत कवित्त है।
२४०१	६२६० (१) १५	कवित्त-पद्य-संग्रह	कवि केसो	१६ वी श०	२२x१४	२६७-२६८	सूरजमलजी आदि के कवित्त।
२४०२	६२६० (१) १६	कवित्त वरसाना की राड को	कवि केसो	१६ वी श०	२०x१४	२६६-३००	नवलसिंह जाट को।
२४०३	७८७६	कवित्त राजनीति रा	देवीदास	२० वी श०	३४.५x२२	१-६	कवित्त सख्या ७६ है। अतः मे १२५ उपदेशात्मक वाक्य है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४०४	६७२८ (२)	कवित्त राजनीनि रा	देवीदास	१६ वी श०	२१X१७	७-१४	पत्र सख्या १-७ पर 'मदना- ष्टक' है।
२४०५	१०२४७ (२)१	कवित्त रामसिंहजी रो		गु० १८८२	१६X१२	७-८	पत्र सख्या ७ पर 'जोगी- गीत' है।
२४०६	६८८६	कवित्त-रामायण	कवि चन्द	२० वी श०	२३ ५X१४	१४	
२४०७	६२६० (१)७-११	कवित्त-पद्य-संग्रह	केसोदास, बुधराव, काशीराम, कवि गोकुल	१६ वी श०	२२X१४	२८८-२६२	राग-रागिनियो के नाम आदि के कवित्त।
२४०८	८८५७ (१)४	कवित्त-संग्रह	जुगतानन्द	१६ वी श०	१६X१४	१५०-१६३	६८ कवित्त है।
२४०९	६८८६ (२)	कवित्त-संग्रह	भूपण, भोलानाथ, रघुराय आदि	१६ वी श०	१५X१०	६-२०	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४१०	६२६८	कवित्त-संग्रह	वद्रीजन	१८ वी श०	१७x१२	१-२६	कुल ६० कवित्त है। कवि का नाम प्रतिम पत्रो के कवित्त-सवैद्यो मे दिया गया है।
२४११	१०६७९ (१)	कवित्त-संग्रह	रामलाल जोशी	२० वी श०	१५ ५x११	१-७	इस गुटके मे इन्ही की कृतिया सगृहीत हैं।
२४१२	१०२४७ (२)२	कवित्त-संग्रह		शु० १८८२	१६x१२	२३-२४	कवित्त मे जयपुर राज्य का रजाई से व मुगल बादशाही का चादर से रूपक वाधा गया है।
२४१३	६७२८ (५)	कवित्त-संग्रह	पद्माकर	१६ वी श०	२१x१७	१६-२१	
२४१४	६३३७ (४)	कवित्त, सवैया-संग्रह	शोभागम तिवारी, हरिवल्लभ	१८ वी श०	१६ ५x१३	२३-२८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४१५	६४३१ (२)	कवित्त, सवैया-संग्रह	घनानन्द	१७८६	२१x१५.५	१-३७	अंतिम पत्र में स्फुट सुजान हित कवित्त-छन्द है।
२४१६	६७२८ (७)	कवित्त, सवैया-संग्रह		१६ वी श०	२१x१७	२३-२६	
२४१७	१०१४६ (१)१-१२	कवित्त, सवैया-संग्रह	कृपाराम, घनानन्द, उधोराम, कासे राम, देवीदास विहारी, सुन्दरदास, भूपण, सूरजमल, लालकवि, नाथकवि, जसराज	१६ वी श०	२१x१२.५	१-३४	कुल २८० कवित्त हैं। छत्रसाल, शिवाजी, मान- सिंहजी, बुधसिंह हाडा, आदि के प्रशस्तिपरक कवित्तों के साथ-साथ श्रुद्धारिक कवित्त भी हैं। पत्र सख्या ३५-३६ पर संस्कृत में 'जगन्नाटक' है।
२४१८	६२३६	कवित्त, सवैया-संग्रह	राय अमृताराम	१६ वी श०	२७x१६	१-२५	र का १८६६ कुल ३४ कवित्त हैं।
२४१९	६२६० (१).१६	कवित्त सिकखा की लडाई फतें करी जी को	कवि कैसी	१६ वी श०	२२x१४	१६६-३००	नवलसिंह जाट को कवित्त।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-समूह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निर्गमकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४२०	८५६२ (१३)२	कवित्त (स्फुट)		गु० १७६५	२४ ५X१५ ५	५ वा (घ)	
२४२१	१०५६३	कविप्रिया	केशवदास	१६ वी श०	२८X११	१-२६	६३ वे अन्ध पर्यन्त ।
२४२२	१०१५० (१)	कविप्रिया	केशवदास	गु० १७८५	२१X१६	१-१८	र का १६५८ छन्द संख्या ७६ से प्रारम्भ ।
२४२३	१००५६ (४)	कलिजुग-पञ्चीनी	नन्दराम पुत्र बलराम	१८११	२६ ५X१८	१०७-१०६	र का १७६४ लि क बलनराम चाटसूका नि स्था चुपौई
२४२४	८००८	कार्तिक मा. हात्म्य भाषा- टीका	भगवानदास निरञ्जनी	२० वी श०	२५X१५	६१	र का १७४३
२४२५	८४२७ (३)	कालचिनावणी को अग्र	सुन्दरदास	१६ वी श०	१० ५X७	१६-२८	
२४२६	६२६४ (४)	कालीनाथन-लीला	चरणदास	१८ वी श०	१६ ५X११	६४-६८	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (लं.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४२७	७८५७ (३)	कुण्डलिया-संग्रह	गिरधर कविराय	१६ वी श०	२७ ७x१८	१-६७	४० कुण्डलिया है। गुटके के प्रन्तिम ६ पत्रों में बालचन्द कायस्थ का वंश वर्णन एवं ऐतिहासिक टीप है। नूँदी में बालचन्द कायस्थ के नाम से 'बालचन्द पाडा' आज भी प्रसिद्ध है। ये वहाँ के कामदार थे।
२४२८	६७२८ (३)	कुण्डलिया	गिरधर कविराय	१६ वी श०	२१x१७	१५-१७	
२४२९	६३२७ (४)	कुनलया-नन्द-भाषा	भोलानाथ	१६ वी श०	२८x१८ ५	३६३८	स्फुट-पत्र मात्र।
२४३०	८६६३ (२)	कुण-बावनी (उपदेश-बावनी)	मिश्रन वाचक	१६ वी श०	१६x१३ ५	३६-५२	र का. १७६७
२४३१	६२५२ (२)	कुण-रुक्मिणी री वेली	पृथ्वीराज राठोड	गु० १७७४	२१ ५x१४	१-१६	र का १६३८

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिङ्गिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४३२	६२३६ (३)	कुष्ण-सुक्मिणी री वेली मटीक (गद्य)	पृथ्वीराज राठौड	१७२७	१६ ५X१४	३६-७०	लि. क आनन्दराम मिश्र पत्र सख्या ७१ से ८२ तक 'आदित्यहृदय-स्तोत्र' संस्कृत में है।
२४३३	६३२७ (२)	कुष्ण-लीला पद्य-संग्रह	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२८X१८ ५	२४-३२, ३६-५१	इसमें 'जुगल विलास' एवं 'कठाभरण की वचनिका' आदि के भी स्फुट-पत्र हैं।
२४३४	८८५८	कुष्णावतार-भाषा (अवतारचरित्र गत)	नरहरिदास वारठ	१६ वी श०	३६X२१	१-४५	
२४३५	६२२८ (२)	कुष्णोत्पत्ति भाषा (पद्य)	चतुरदास शिष्य सतदास	१६ वी श०	२५ ५X१४ ५	१४४-१५४	२ का १६६२ आगे के पत्र गुटके में से कटे हुए हैं।
२४३६	६७२८ (८)	कैवाट मगवहिया रा सोरठा	जोगीदाम	१६ वी श०	२१X१६ ५	२७-३५	अगले पत्र पर 'पन्ना वीरम- दे की बात' का प्रारम्भ मान है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४३७	६५०६	कोकसार-भाषा	ग्रानन्द कवि	१८५३	२४X१० ५	१-१३	लि स्था वीकानेर
२४३८	६७३० (१)	कोकसार-भाषा	ग्रानन्द कवि	१८२१	१५X११	१-४५	लि क ऋषि दयाराम प्रारम्भ के तीन पत्रों पर 'शनिश्चरजी की कथा' का अन्तिमांश है।
२४३९	६२५४ (४)	कोकसार-भाषा	ग्रानन्द कवि	१८१०	१६ ५X१३.५	१-२१	
२४४०	८४२२ (१५)	क्षमान्वत्तीसी	समयसुन्दर	गु० १७७६	२३X२०	८०-८२	र स्था नागौर
२४४१	६६८२ (१)	गगाजी रो सिलोको (श्लोक)		२० वी श०	२५.५X१२ ५	२ रा	
*२४४२	६५६४ (६)	गगा अतक	जीवनलाल नागर	२० वी श०	२२X१७ ५	७१-८०	र का. १६२० र स्था बूँदी समकालीन प्रति। पत्र त्रुटित।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४४३	६२६० (२)	गणेशजी की स्तुति		२० वीं श०	२२x१४	२८४ वा	पजानी मिश्रित भाषा में ।
२४४४	८५६२ (१३)१	गीत (मन रो)	पहाडखा	गु० १७६५	२४ ५x१५ ५	४(ब) वा	गुटके के पत्रों के पृष्ठीय भाग बाद में लिखे गये हैं ।
२४४५	८२५२	गीता-माहात्म्य (आनन्द-विलास)	आनन्दराम नाजर	१६ वीं श०	२६x११	१-२८	२ का १७६१, अनूपसिंह राज्ये, बीकानेर ।
२४४६	८४१७ (४)	गीता-माहात्म्य-भाषा (पंचपुराण गत)	तुलसीदास	१८ वीं श०	१६x१३	२-६६	ग्रादि के १७ श्लोक अप्राप्त । इस गुटके के प्राग्भिक पत्रों में (१) पुरुषोत्तम सहस्रनाम (२) यमुनाष्टक (३) चतु-श्लोकी आदि हैं । लि. क. जोशी पीथा वाम हस्तेंडा । 'राज, महाराजा श्री जैसिध को' ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निष्पत्ति (वि.स.से.)	मात्र (से.मी.से.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४४७	८४६१ (३)	गीता-माहात्म्य-भाषा (गद्य) (पञ्चपुराणगत)		गु० १७५४	२१ ५X१६	६७-१०४	लि. क. रूपदास पत्र सख्या ७५ वा अप्राप्त
२४४८	१०५६६६	गीता-माहात्म्य-भाषा (गद्य) (पञ्चपुराणगत)		१८७४	२१X१५ ५	१-५३	लि. क. हिम्मताराम लि. स्या अलवर
२४४९	८४००	गुरु-गीत	पद्मचन्द सूरी	गु० १८६४	१५X१३ ५	३७-३८	र. का १७१५ र. स्या माडल
२४५०	१०१३६	गुरुचार, कालज्ञान, राशि- फल आदि		१८०४	१४X१३	१-४६ ६०-७२	पत्र सख्या ७३-७६ पर स्फु- मत्र है।
२४५१	८८५७ (३)	गुरु-चैला गोष्ठी (पञ्चपुराणगत)	जुगतानन्द	१६ नी. श०	१६X१४	१८३-२२१	पत्र जीर्ण।
२४५२	८५६२ (५) ३	गूढार्थ (पहेलियाँ)		गु० १७६५	२४ ५X१५ ५	६६ वा	
२४५३	९४२५ (१)	गोकुलचन्द्रमाजी की सेवा, उत्सव-विधि	द्वारकेश	१६ बी. श०	२१ ५X१० ५	१-१११	पत्र सख्या १०६ से १११ खंडित।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४५४	६५७४ (७)	गोपीगीत		२० वी श०	२२x१७ ५	८०-८२	अपूर्ण ।
२४५५	६४२५ (२)	गोवर्द्धननाथजी की स्तुति- पद-संग्रह	चतुर्भुजदास	१८१४	२१ ५x१७ ५	१-५	
२४५६	१०६६२	गोविन्दचन्द्रिका	[इच्छाराम]	२० वी श०	२२ ५x१६	५०-३०१	१४ व अध्याय के ७० वें छन्द से ८५ वें अध्याय के १८ वें छन्द तक । वीच- वीच में पत्र अस्त-व्यस्त है । कर्त्ता का नाम अज्ञात ।
२४५७	८४०० (४४)	गौडी-पार्श्वनाथ-गीत	देवचन्द	गु० १८६४	१५x१३ ५	८६-८७	
२४५८	८४०० (१५)	गौडी-पार्श्वनाथ-स्तवन	प्रीतिविमल	गु० १८६४	१५x१३ ५	४५-५२	
२४५९	८५६३ (२)	गौतमपृच्छा-रास	लावण्यसमय	गु० १७५३	१७x१०	१-११	२ का १५५४ पत्र जीर्ण है ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४६०	८४२२ (१२)	गीतम-रासो	विनयप्रभ	गु० १७७६	२३X२०	६८-७२	
२४६१	८४२२ (४७)	गीतम-गजगाय	लावण्यसमय	गु० १७७२	२३X२०	१-१२५	पत्र सख्या ११७ - १२४ अप्राप्त । लि. क. ऋषि रामचन्द्र चौधरी उदभाण वाचनार्थ ।
२४६२	८४०० (४)	गीतमस्वामी-प्रष्टक	समयसुन्दर	गु० १८६४	१५X१३५	१०-११	१० वा पत्र दो-बार ।
२४६३	८४०० (२)	गीतमस्वामी-प्रष्टक	लावण्यसमय	गु० १८६४	१५X१३५	१-२	प्रारम्भ मे 'नवकार मन्त्र' है ।
२४६४	८४०० (५०)	गीतमस्वामी-स्तवन		गु० १८६४	१५X१३५	६५-६८	अपूर्ण ।
२४६५	६२६० (३) १०	घोडा-घोड़ी री परख रा दोहा		१६ वी श०	२०X१४	३०५-३०६	अपूर्ण । पत्र सख्या ३०१ से ३०४ तथा ३०७ से ३४६ अप्राप्त ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४६६	६३३२	चतुर-मुकट रानी चन्द्रकिरण री बात री कथा		१८८१	२१ ५X१५	१-२३	लि क पुष्कर मिश्र लि स्था रोसी नगर
२४६७	८५६२ (६)	चन्दन-मलयागिरी रा दूहा	भद्रसेन	गु० १७६५	२४ ५X१५	११८-१३१	१८२ दोहे है । लि क पचौली गुलाबराय हरीदारीत । मामाजी बगसी- रामजी री पोथी सू उतारी ।
२४६८	७६६६	चाणक्यसूत्र-भाषा	विष्णुगिरि शिष्य ब्रह्मानन्द	१६०५	२५X१० ५	१-१४	र का १७७६ लि क विजयचन्द्र लि स्था -उन्दोर
२४६९	८४१५	चितावणी को अग	रामचरणदास	२० वी श०	१० ५X६ ५	१-५६	'कोविद यतिवर विष्णुगिरि, मुगम रीति रचि राप । गोविन्ददास पवास हित, कवर गुमानो भाप ॥'
२४७०	६५५६ (५)	चितावणी को अग	तुलसीदास	१६ वी श०	२२ ५X१० ५	१-४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	निशेष ज्ञातव्य
२४७१	६८३६ (६)	चिन्तावणी की अंग	रामचरण	गु० १८२८	१२x१०	१००-११५	ग्रन्थ में 'चौथ माता एव गणेशजी की कथा' का प्रारम्भ मात्र है।
२४७२	६८३२	चेतनचरित	भगवनीदास	१९ वी श०	२४x११	१-७	र का. १७३६
२४७३	६४२२ (२६)	चेत्य-वदन	खीमो	गु० १७७६	२३x२०	६६-६७	
२४७४	६२४५	चौगड-हुलास	राय अमृतराम	१९ वी श०	२७x१६ ५	१-५	र का. १८६६
२४७५	६६६१	चौवीस-एकादशी कथा (ब्रह्माण्ड पुराणगत)		१८४०	२१x१५	१-५३	लि. क नन्दकिशोर मिश्र श्री सौनियाजू भण्डारी पठनार्थ।
२४७६	१२१६५	चौवीस-जिन-स्तुति	मोहनविजय शिष्य रूपविजय	१८७४	२६ ५x१० ५	१-८	लि क क्षमासागर लि स्था वडलू

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४७७	८४२२ (२८)	चौबीस-तीर्थङ्कर-स्तवन	ग्राणद शिज्य कमलमुनि	गु० १७७६	२३x२०	६५-६६	र का १५६२ 'इंद्र वाण रस नयण'
२४७८	८८५७ (१) ५	चौमासा	जुगतानन्द	१६ वी श०	१६x१४	१६४-१६५	
२४७९	८००५ (१)	चौरासी पद	हिनहरिवंश स्वामी	१८७४	२६x१६	२-२५	चौरासी पदों के आगे संस्कृत में 'निष्णु सहस्र नामावली' ११ पत्रों में है।
२४८०	१०६६६ (१४)	चौरासी-वैष्णव को धोत		१६ वी श०	२२ ५x१७ ५	११६-१२२	
२४८१	६४२५ (६)	चौरासी-वैष्णव कोल		१६ वी श०	२१ ५x१७	३४-४०	पत्र सख्या ४० पर गोकुल- चन्द का पद है।
२४८२	६७२५	चौरासी-वैष्णवों की वार्ता		१६ वी श०	२२x१६	३८-२२५	अपूर्ण — पत्र सख्या ३८, ३९, ४७-६० ७२, ७४-८८, १४७-१६०, १६२-१६३, १७०-१९६ व २२४-२२५ ही है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.से.)	माप (से.मी. से.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२४८३	१०६७१ (३)	चोरासी-शिक्षा (अष्ट-उपाधि, आदि)		१६ वी श०	२४x१३ ५	४-२०	पुष्टिमागीय ग्रन्थ ।
२४८४	८४२२ (३)	चौसठ-देवी-स्तोत्र		गु० १७७६	२२x२४	२२-२४	इसी के आगे 'क्षेत्रपाल- स्तोत्र' भी है। दोनों कृतिया संस्कृत में हैं।
२४८५	६१७१	छन्द-रत्नावली	हरीरामदास निरजनी	१६ वी श० ३० ५x१५ ५		१-१२	२ का १७६५ लि. क साधु जैतराम
२४८६	१०२४७ (१) १-५	छन्द-संग्रह—अमल रो भाग रो जलधरजी रो सूरजदेव रो चामुण्डा रो	कविराजो नरवद कानड	१८८२	१६x१२	१-३ ४-६ ८-१० ११-१२ २१ वा	लि क मेघराज मुंता ति. स्या जोधपुर मेवग यानजी की प्रति से प्रतिनिधि कृत ।
२४८७	८६४६	छन्दमार सटिप्पण (पिङ्गल ग्रन्थ)	सूक्ति मिश्र	१६४७	२६x११ ५	१-१४	लि क. मुखनाल पुग टेन- चन्द ज्योतिषी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
#२४८८	६२७०	छन्द-सुधाधर	कवि चन्द पुत्र बखतावर	१६११	२३x१६	१-१३६	२ का १८६८ 'वसु निधि वसु ससि' लि. क. भू बालाल दाहिमा ब्राह्मण । लक्ष्मणसिंह नरेश की ग्राज्ञा से । पत्र सख्या ५१ से ६२ तक अप्राप्त । प्रारम्भ की प्रशस्ति ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व- पूर्ण है ।
२४८९	६७२० (३)	छन्दाष्टक	रसराशि	१६वीं श०	२०x१५ ५	११-१२	पत्र सख्या १० से ११ पर स्फुट कवित्त है ।
#२४९०	१०१८५	जगत-विनोद	कवि पद्माकर	१६०६	१६ ५x१२ ५	१-१२६	लि. क. नागरभट्ट कुबेर लि. स्था. रत्नावती इसके बाद के १८ पत्रों में ५+४५ कवित्त-सर्वेष्ट है ।
२४९१	६२५४ (५)	जगदम्बा री निसानी आदि	कवि मण्डन	गु० १८१०	१६ ५x१३ ५	२२-२४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विस मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञानव्य
२४६२	१०१६६ (२)	जगन्नाथाष्टक		२० वी श०	२१x१२.५	३५-३६	
२४६३	१०२४७ (४)	जतीरासो	भीलामचन्द	गु० १८८२	१६x१२	१७-२१	
२४६४	८५६२ (६)	जनम-वत्तीसी (कृष्ण-जन्म-वत्तीसी)	भगतगाम पचोली	१७६५	२४.५x१५.५	७६-६०	२ का १७६५ लिक गुलाबराय हरिदासोत मुद्रका लिखने वाले के परि- वार के ही व्यक्ति द्वारा रचित। मूल प्रतिलिपि। वर्ष तथा जन्म-मन निर्माण का गणितादि पक्षार भाषा में बतया गया है। कुछ मस्तूत पत्रों का प्रारम्भ में भाषार्थ भी किया है। मुद्रके के प्रथम नील पत्रों में वर्णपाटी (प्रमाण-पत्र) के तथा लघु-चाणक्य-नीति के दो पद्याय लिखे हैं।
२४६५	८४०८ (१-२)	जन्मपत्री पद्धति भाषा तथा लघुचाणक्य्यादि		१६ वी श०	२३.५x१४	१२.१-३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२२४६६	८७३६	जलवय-शहनशाह-उष्क	जवानशिह (महाराजा)	१६५	२१x१६५	१-२	र का १६४५ लि. क कवि जय लि. स्या कुण्णगड स्वलिखित प्रति ।
२४६७	६७३६ (३)	जसामृतसागर-भाषा	मू० हरिव्यास भा० रूपरामिक	१६ वी श०	३०५x२१५	२०५-२६६	छन्द सख्या १६०६
२४६८	६२६४ (२)	जागरण-माहात्म्य	चरणदास	१६ वी श०	१६५x१११	८५-६०	
२४६९	१०१३८ (४)	जानकीमङ्गल	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	१४५x१३५	२८-३५	पत्र सख्या ३६ पर दो कवित्त है ।
२५००	८४०० (१०)	जिनकुशलसूरि-गीत	लालचन्द	मु० १८६४	१५x१३५	३८-४०	पत्र सख्या ३६ अप्राप्त ।
२५०१	८४०० (३८)	जिन-गीत		१६ वी श०	१६x१३५	८३ वा	२३ वे तीर्थङ्कर सम्बन्धी ।
२५०२	८४०० (४५)	जिन-चौबीसी	ऋषि देवीचद	मु० १८६४	१५x१३५	८७-८६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५१०	८३५४	ज्योतिष-सार (लघुजातक भाषा टीका पद्यानुवाद)	कृपाराम पुत्र तुलाराम	१८६७	२४x१२	१-५१	र. का. १७६२ लि.क ओकार दायमा ब्राह्मण लि स्था देवदुर्ग यह ग्रन्थ 'लघुजातक' का दोहानुवाद है।
२५११	६५५६ (१)	ज्ञान-तिलक	कवीरदास	१६ वी श०	२२ ५x१० ५	७-११	अपूर्ण—पत्र सख्या ११-१२ पर कवीरदासजी के पद हैं। पत्र सख्या १-६ अप्राप्त।
२५१२	६०८८ (६)	ज्ञान-पञ्चीसी	वनारसीदास	१८५६	२२ ५x१४	२६-३१	लि क मोहनकीर्ति लि स्था. लाखोला ग्राम
२५१३	८७०५ (५)	ज्ञानबोध		गु० १८६१	१४x८ ५	८३-८७	अन्त में पत्र संख्या ८७ से ६० तक स्फुट-नुस्खे एवं मत्र है।
२५१४	६३३८ (४)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१६ वी श०	१० ५x६ ५	५६-६६	प्रथम उल्हास मात्र।
२५१५	८५०७ (३)	ज्ञानसमुद्र	सुन्दरदास	१६०४	१६x१२	१-३६	लि.क रामदास कबीरपथी लि स्था पुरनगर

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (चि.स. मे)	माप (सं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५२२	६११५ (२)	तरक-वितावणी	सुन्दरदास	१६ वी श०	१५.११	२६६-२८१	
२५२३	८४२७ (२)	तरक-चितावणी	सुन्दरदाम	१६ वी श०	१०.६५	७-२०	
*२५२४	७९६८	तिलशतक	जुगनराय	१६ वी श०	२५.१०.५	१-४	
२५२५	८४०० (२७)	तीर्थमाला-स्तवन	समयसुन्दर	गु० १८६४	१५.१३.५	६५-६६	
२५२६	८५६१ (६)	तुरसी-पद-सग्रह	जनतुरगी	१७५४	२१.५.१६	१-४४	अपूर्ण । रागवद्ध । पत्र सख्या १५ अग्राम ।
२५२७	८५६२ (१)	त्रिया-विनोद	मुरली कवि	१७६४	२४.५.१५.५	३-६	र का १७३६ अपूर्ण—३० छन्द मात्र । कोठारया के ऊदा चौहान की गाला से रचित । प्रति पत्रों के एक तरफ ही लिखी गई है । प्रथम पत्र अग्राम । इसकी एक सचित्र एव पूर्ण प्रति उदयपुर शाखा कार्यालय में विद्यमान है ।

क्रमांक	पृष्ठ संख्या	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निष्कर्ष (क्र. म. से)	माप (से.मी. में)	पान गत्या	विशेष ज्ञातव्य
२५२८	८२८ (२८)	भगवद्-गीता-संस्कृत (संस्कृत के)		गु० १७७६	२३४२०	८७ वा	
२५२९	८३० (२८)	भगवद्-गीता-संस्कृत	विजयदेव सूरि	गु० १८६४	१५११३५	८०-८१	
२५३०	१०१८३	रत्नागङ्गा की कविता	दत्तनाथ	२० वीं श०	१६१११	१-२४	
२५३१	८२५४ (८)	रत्नागङ्गा	तच्छोराय	१६ वीं श०	१६११३५	१-१२	प्रपूर्ण । नायिका भेद है ।
२५३२	८१६६ (११)	दशमस्कन्ध की नायिका	दशमसागर	१८२४	२५११११	१-६	२ का १७४६ १ ७ ४ ६ सर्वत चन्द्रमसुद्र कथा निधि फागुण वदी तीज
२५३३	८७२६	दशमस्कन्ध के रत्ना-चित्र		२० वीं श०	१५११२५	१-७	पत्र सख्या ८-११ पर मीरा के पद है ।
२५३४	८२२२ (३५)	दशमस्कन्ध राजा की सज्जाय	लालविजय शिष्य विजय पंडित	गु० १७७६	२३४२०	१००-१०१	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५३५	८४०० (१३)	दादा-गुरु-गीत	समथमुन्दर	गु० १८६४	१५X१३.५	६३ वा	
२५३६	८४०० (२५)	दादा-गुरु-गीत	मुमतिरङ्ग	गु० १८६४	१५X१३.५	६३ वा	
२५३७	६३३८ (१)	दादुदयालजी की वाणी (लय को अङ्ग)	दादुदयाल	१६ वी श०	१० ५X६ ५	४-११	प्रारम्भ मे मुन्दरदास कृत 'विशवास को अंग' के ३ छन्द है।
२५३८	८४०० (२८)	दानगीत	जयन्तीदास	गु० १८६४	१५X१३ ५	६६-६७	
२५३९	८६२८ (३)	दानलीला	कृष्णदास	१९२९	१७X१२ ५	१३५-१४३	लि क मुकन्द ब्राह्मण लि स्या कल्याणपुरी
२५४०	६१०० (२)	दानलीला	कृष्णदास	१९ वी श०	१७ ५X११ ५	१६-२१	
२५४१	६२६४ (३)	दानलीला	चरणदास (स्वामी)	१९ वी श०	१६ ५X११	६१-६४	गुटके मे इन्ही की ६ कृतियों का संग्रह है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५४६	१०६७६ (४)	देवचितावणी एव रतन पचीसी	पन्नालाल जोशी	२० वी श०	१५.५x११	१-२	अपूर्ण—मात्र १० दोहे हैं।
२५५०	८६६४	देवी आरती व भैरव आरती	मगनीराम सेवक	१६ वी श०	१६.५x११	१ ला	
२५५१	६४३१ (४)	देहदशा	नागरीदास	गु० १७८६	२१x१५.५	५-८	अंतिम पत्र में ज्ञात-श्रीवना, मुग्धा आदि के लक्षण है।
२५५२	८५६२ (५) १५	दोहा, कवित्त अक्षर चितवणी रो	गो० तुलसीदास	गु० १७६८	२४.५x१५.५	७६ वा	
२५५३	८७०५ (३)	दोहावली	गो० तुलसीदास	गु० १८६१	१८x८.५	५४-७८	कुल १७१ दोहे हैं।
२५५४	१०६७६ (३)	दोहा-संग्रह	रामलाल जोशी	२० वी श०	१५.५x११	१-२४	१२८ दोहे हैं।
२५५५	८५६२ (१) २	दोहा-संग्रह	पञ्चोली नीलकण्ठ अनोपचन्दोत	१७६१	२४.५x१५.५	१ ला	लि क गुलाबचन्द

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-संग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निर्णयकाल (विस. में)	माग (में. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५६२	८४२२ (३७)	धर्मी-सज्जाय	चारुदा वाचक	गु० १७७६	२३४२०	१०२-१०३	
२५६३	८१६० (१)	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल	१८ वी श०	१२५४१	२-१६	पत्र सख्या १, ४, ५, ६-११ अप्राप्त ।
२५६४	८३८२	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल	१८७७	१७४६५	१-३१	लि. क. परमसुन्दर लि. स्था. पितावरी
२५६५	८५६१ (५)	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल	१७५४	२१५४१६	१२४-१३७	प्राग्भ के १५ छन्द अप्राप्त । पत्र सख्या १३७ से १३८ तक दाह, जनहरिदास तथा जनतुरसी के पद हैं ।
२५६६	६८३६ (५)	ध्रुव-चरित्र	परमानन्द	गु० १८२२	१२४१०	७६-८६	
२५६७	६८३६ (३)	ध्रुव-चरित्र	जनगोपाल	१८२२	१२४१०	२५-५७	लि. क. तछीराम
२५६८	८८२४	नख-शिल-वर्णन	बलभद्र	१७८४	२५४११	१-३	लि. स्था. योगनिपुर अतः में स्फुट औपधि-संग्रह है ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विस. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५६६	८८२५	नख शिख-वर्णन	केशवदास	१८ वी श०	२६ ५X११	१-७	
२५७०	६२५४ (२)	नख-शिख-वर्णन	वलभद्र	१८ वी श०	१६ ५X१३ ५	११२-१४३	
२५७१	६३१६ (१-२)	नख-शिख-वर्णन	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२३X१४ ५	१-७ १-१२	दो प्रतिया । कुल ५३ दोहे है ।
२५७२	८४११	नरसीजी को मायरो (मीरा-मिथुला-सवाद)	मीरादास (मीरा)	२० वी श०	२० ५X१४ ५	१-४५	ग्रन्थिम पत्र मे सदानन्द कृत 'अम्बाजी की आरती' लिखी हुई है ।
२५७३	६८३६ (६)	नरसीजी रो मायरो	पेमभगत (प्रेमानन्द)	गु० १८२२	१२X१०	६६-७६	
२५७४	७८७३	नल राजा दमन का किस्सा		२० वी श०	२३X१६ ५	१-२८	अपूर्ण—फारसी भाषा, नागरी लिपि मे लिखित ।
२५७५	८४०४ (३)	नवपद-गूजा	जसविजय	१६ वी श०	२०X१३	११-२२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५७६	६७३५ (२)	नवरतन		गु० १६०२	१७x११	४१-४४	नीति-परक कृति । अन्तिम चार पत्रों पर स्फुट कवित्त पद्य हैं ।
२५७७	१०६८५ (२)	नवरतन रा छप्पय		२० वी श०	२५.५x१६	६७-६८	१६ छप्पय है । पत्र सख्या ६६ पर 'दारू रा दूहा, 'शकुन रा कवित्त', 'छीक विचार' तथा श्रृङ्गा- रिक कवित्त छप्पय है ।
२५७८	६३१८	नवलानुराग	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२१x१३ ५	१-१६	
२५७९	१०६७१ (७)	नवहुलास (गद्य)		१६ वी श०	२४x१३ ५	६५-११५	७ वे हुलास के २४ वे प्रसङ्ग तक । पत्र सख्या १०१-११४ अत्राप्त ।
२५८०	१०१३८ (३)	नाग-छन्द (नागलीला)		१६ वी श०	१४ ५x१३.५	१८-२८	
२५८१	६८३४ (१)	नागदमन	सायाजी भूला	१८४५	१२x१५	१-२	प्रारम्भ मात्र ।

क्रमांक	गन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५८२	८४०५ (२)	नागदमन राग	गोकुल कवीश्वर	१६ वी श०	२१ ५X१४	४६-५२	
२५८३	६०५४ (२)	नाम-मञ्जरी	रघुनाथकवि	२० वी श०	२० ५X१६	१-८	अपूर्ण— ६१ दोहे है।
२५८४	६३१४	नायिका-भेद	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	१७X११ ५	१-३६	र का १८२८ महाराजा नवलसिंह प्रीत्यर्थ। कुल २४७ छन्द है।
२५८५	६५६६ (२)	नारद-गीता		१६ वी श०	२२ ५X१० ५	१-५	
२५८६	६१०४	नारायण-लीला	माधोदास गुसाई	१६ वी श०	२०X११	२-३२	लि क सर्वदास वैष्णव प्रथम पत्र अग्राप्त।
२५८७	६२६४ (१)	नासिकेतोपाख्यान	चरनदास स्वामी (गुसाई रनजीत)	१६ वी श०	१६ ५X११	२-८४	प्रथम पत्र अग्राप्त।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५८८	६७३६ (२)	नित्यविहार पदावली	रूपरसिक	१६ वी श०	३० ५X२१ ५	१६६-२०५	रागवद्ध । १२० पदो का सार ७२ पदो मे है ।
२५८९	६६८४	नित्यविहारी युगलध्यान	भगवतरसिक	१६ वी श०	२२ ५X१०	२-१२	लि क भक्तिसनेह पथम पत्र अत्राम ।
२५९०	१२६१२ (१४)	निर्वाण-काण्ड भाषा	भगोतीदास	१८१६	२५X१५	५५-५७	र का. १७४१ लि क सिधवी हिम्मतराम लि स्था जयपुर
२५९१	८५०७ (१)	नीतिशतक	भर्तृहरि	१६०५	१६X१२	१-४२	सस्कृत मे है । लि क रामदास लि स्था पुरनगर पत्र सख्या ४३ पर 'गणेश तुष्टि-तत्र' है ।
२५९२	८५६२ (११)	नीसाणी भाग री	कवि हरिचन्द	गु० १७६५	२४ ५X१५ ५	१३६-१३६	
२५९३	८४०० (२६)	नेमराजमती-नीत	अजीतसागर	गु० १८६४	१५X१३	६७-६६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५६४	८४०० (२४)	नेमिनाथ गीत	हर्षचन्द	गु० १८६४	१५X१३५	६२-६३	
२५६५	१०८४६ (१६)१६	नेमिनाथजी रो लावणी		गु० १६३१	१७X११	१२४-१२६	
२५६६	८४०४ (६)३२	नेमिनाथजी रो वारहमासो		१६ वी श०	२०X१३	६७-६८	
२५६७	८४२२ (४०)	नेमिनाथ-स्तवन	कल्याणसागर सूरि	गु० १७७२	२३X२०	१०५-१०६	
२५६८	६२४०	नेह-समर	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७५X१६	१-१३	र का १८६६
२५६९	६३२२ (२)	नैषध-महाकाव्य भाषा	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२३५X१७	१-२२	र का १८४० अपूर्ण । प्रथम सर्ग के १२४ वें छन्द पर्यन्त । कवि के वंशजों से प्राप्त प्रति ।
२६००	८४२२ (१७)	पञ्च-तीर्थ-स्तवन	मुनि लावण्यसमय	गु० १७७६	२३X२०	८३-८४	

क्रम सं.	ग्रन्थ सं.	ग्रन्थ - नाम	वर्णन	लिपिकाल (वि.सं. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६०१	८५६० (३)	पद्ममहोत्सव गीता	पद्ममहोत्सव गीता	१७६५	२४५x१५५	३७-४५	र. का. ११७५ लि. क. पचोली गुलाबराय हरिदासोत्त। लि. स्या. उदयपुर
२६०२	७८७७ (१)	पद्मपान मटीक (हितोपदेश)	पद्मपान मटीक (हितोपदेश)	१८६४	२७५x१८	१-६३	लि. क. कृष्णराम लि. स्या. बूँदी
२६०३	६५५३ (८)	पद्मपानमयी	पद्मपानमयी	१६वीं श. २२५x१०५		१०-२२	पत्र संख्या २३-२४ पर 'नवकार मंत्र' एवं तीर्थङ्करो के नामादि हैं।
२६०४	८५२२ (१६)	पद्मपान-गङ्गाभाष्य	पद्मपान-गङ्गाभाष्य	गु. १७७६	२३x२०	८२-८३	
२६०५	८५२६ (६)	पद्मपानगीता	पद्मपानगीता	१६वीं श. ३०५x२१५		६१-७२	
२६०६	१०१६७	पद्मपानगीता	पद्मपानगीता (महाराजा मावर्तमह)	१६वीं श. ३३५x२२५		१-६३	राम, तालवद्ध।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६०७	६२४६	पद-रत्नावली	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६	१-१०७	रागवद्ध । २५६ पद्य है । पत्र सख्या १८ से ७५ तक के पद्य सख्या ४३ से १८६ अप्राप्त ।
२६०८	८७०४ (२)	पद-संग्रह एव आरती	सूरदास, कबीर	१८४६	१५x१०	१ ला	लि क भोजजी पोकरणा लि स्था जोधपुर
२६०९	८४०४ (६) ३६	पद-संग्रह एव लावणी	जिनदास	१६ वी श०	२०x१३	७१-७३	
२६१०	१०१६५	पद-संग्रह	रसराज (महाराजा मानसिंह)	१६ वी श०	१६x१३ ५	१-११३	राग-तालवद्ध । पञ्जाबी शब्दों का पुट है । पत्र सख्या १, १५, २७, ४७, ५३-५५, ५७, ५६-६२, ६४- ११३ मात्र है । अन्तिम पत्र पर स्फुट कवित्त है ।
२६११	८४०४ (६) ३३-३८	पद-संग्रह	जिनदास, जिनचन्द, किशनगुलाब, सज्जन, कीरतनागर, धर्मचन्द	१६ वी श०	२०x१३	६८-७१	धर्मचन्द कृत 'नेमिजी की लावणी' है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६१२	८४०४ (६) ६-१५	पद-संग्रह	उदयप्रभु, शिवदास, लालचन्द, केशरीचन्द, सेवाराम, नयविमल, सेवग	१६ वी श०	२०x१३	५६-६१	
२६१३	८४०४ (६) १६-२४	पद-संग्रह	रूपचन्द, लालचन्द, भूधर, सेवग, नवलदास, कीरतसागर, देवचन्द, आनन्दरत्न, हर्षचन्द	१६ वी श०	२०x१३	६२-६४	
२६१४	८४०४ (६) २५-३१	पद-संग्रह	जिनदास, भूधर, रामचन्द्र, क्षमाकल्याण, दौलत, सेवग, रूपचन्द	१६ वी श०	२०x१३	६५-६७	पत्र सख्या ६६ पर 'सोरठ राग रा दूहा' है।
२६१५	६२४६ (२)	पद-संग्रह	मीरा, माधोदास, रामदास, सूरदास, तुलसीदास आदि	१६ वी श०	२७x१६	१-६२	पत्र ग्रन्थस्त— दो ग्रन्थों के पत्र सम्मिलित है।
२६१६	८४०० (३३)	पद-संग्रह	जिनहर्ष	गु० १८६४	१५x१३ ५	७२-७३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६१७	८४०४ (६)३-८	पद-संग्रह	शिवचन्द, भद्रगुलाव, लालचन्द, बालह, चैतनविजय, केजरीचद	१६ वी श०	२०x१३	५७-५६	
२६१८	८४०० (१६)	पद-संग्रह	अनुपमचन्द शिष्य जिनलाम	गु० १८६४	१५x१३ ५	५८-५६	
२६१९	८६०० (१७)१-८	पद-संग्रह	जिनराज, अज्ञात, मुखविलास, आणन्द, समयसुन्दर, जिनचद, सेवग, धर्मसी	गु० १८६४	१५x१३ ५	५३-५७	
२६२०	९२६४ (६)	पद-संग्रह (मटकी, हेली, रास)	चरणदास स्वामी	१८ वी श०	१६ ५x११	६६-१११	लि. क. मोठाराम शिष्य भक्तिसनेह
२६२१	१०६६६ (१२)१-७	पद-संग्रह	परमानन्द गोविन्दप्रभु कृष्णदास विठ्ठलदास सूरदास विष्णुदास, वल्लभ	१६ वी श०	२२ ५x१७ ५	६७, ६८, ६९, ६७, ६६ १००, ११०-१११ १०० वा ११२-११३ ११३-११६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६२२	८००५ (२)	पद-संग्रह	चदलाल, दयासखी, किशोरगलि, हीरालाल अलि	गु० १८७४	२६x१६	३७-४०	सखी सम्प्रदाय के पद है।
२६२३	६५५६ (८)	पद-संग्रह	कवीरदास	१६ वीं श०	२२.५x१०.५	३३-४४	रागबद्ध।
२६२४	६५५६ (६)४-६	पद-संग्रह	कवीरदास, सूरदास, नैदास	१६ वीं श०	२२.५x१०.५	२०-२५	रागबद्ध।
२६२५	६५५६ (६)१-३	पद-संग्रह	कवीरदास, दासकमल, माधोदास		२२.५x१०.५	४-२८	रागबद्ध। पत्र सख्या २६ पर वायु रोग का स्फुट तुस्का है। पत्र सख्या ३० पर तांत्रिक मंत्र है। पत्र सख्या ३० के बाद पत्राङ्क २० से प्रारम्भ है।
२६२६	१०६६७ (११)१-२	पद-संग्रह	तुलसीदास, मीरा	गु० १८४१	१२x६	८४६-८५०	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६२७	१०६६७ (३)	पद-संग्रह	पदम, रानी, रामचरण	गु० १८४१	१२x६	६६-७२	
२६२८	१०६७१ (२)१	पद-संग्रह	विष्णुदास	१६ वी श०	२४x१३ ५	१-४	राग विलावल के १० पद है।
२६२९	१०६७१ (१)१-३	पद-संग्रह	चत्रभुजदास, मूरदास, छोतस्वामी	१८२६	२४x१३ ५	४६-५०	लि क ब्रजमोहनदास पत्र सख्या ५० - ५१ पर 'हरिलीला' के १८ छन्द है। प्रारम्भ के पत्र सख्या १ पर 'मानसी सेवा' का प्रारम्भ मात्र है।
२६३०	१०६८३	पद-संग्रह	गोविन्दस्वामी	१६ वी श०	२३x१३ ५	४३-७०	रागवद्ध, अपूर्ण। जलाभिषिक्त।
२६३१	१०१५२	पद-संग्रह	सूरदास	१६ वी श०	२० ५x१५	१-२१	रागवद्ध, अपूर्ण— गुटके के बीच के पत्र है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६३२	६४२१ (३)	पद-संग्रह	तुलसीदास, चन्द्रसखी, वृजनिधि	१६ वी श०	१५x१३ ५	४७-६७	रागवद्ध ।
२६३३	६२६२	पद-संग्रह	देवादास, तानसेन, सूरज, आनन्दवन, चन्द्रसखी, बसीधर, भगवान, परमानन्द, नन्ददास, श्रीभट्ट, चत्रभुजदास, गोविन्दप्रभु, लखीगम, छीतस्वामी	१६ वी श०	१७x१४	१-६५	रागवद्ध । पत्र अस्तव्यस्त हैं ।
२६३४	६२४७	पद-संग्रह	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६ ५	६-२००	रागवद्ध । पत्र सख्या २ से ८, १७ से २३, ३६ से १०७, एवं १२५ वा अप्राप्त । अन्तिम पद्य सख्या ४६५ ।
२६३५	६३३७ (६)	पद-संग्रह	तुलसीदास, शोभाराम तिवारी, नन्ददास, आनन्दधन	२० वी श०	१६ ५x१३	४४ वा ४६-५४	अन्तिम पत्रों पर संस्कृत में स्फुट श्लोक एवं 'दसामृत हारीत' की भाषा तथा स्फुट पद्य है ।

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६३६	८४०७	पद-संग्रह	लक्ष्मणदास	१८८६	२०x१५	१-६८	रागवद्ध । लि क मोहनाचाराय गुटका कर्ता के शिष्य जैरामदास का है । इसमे रामभक्तिपरक, बाल- लीला, होली आदि के पद हैं । कर्ता अप्रसिद्ध ज्ञात होता है ।
२६३७	६०८८ (२)	पद-संग्रह	कवीरदास	१६५६	२२ ५x१३ ५	२-३	लि क मोहनकीर्त्ति लि स्था लाखौला ग्राम
२६३८	६७३६ (५)	पद-संग्रह (ग्राचार्य जन्मोत्सव- वधाई के एव परचुनी पद)	रूपरसिक	१६ वी श० ३० ५x२१ ५	१-१७	रागवद्ध । ४२ पद है ।	
२६३९	१०६७२ (५) १-२	पद संग्रह (गायत्री के)	छीतस्वामी, गोपाल	१६ वी श० २२x१५ ५	४६, ४७वा		

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि. स मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र संख्या
२६४०	१०६७२ (८) १-१४	पद-संग्रह (उत्थापन के कीर्तन)	परमानन्द गोविंदप्रभु, कुम्भनदास सूरदास, छीतस्वामी आसकरन, द्वारिकेश चन्नभुजदास रसिकदास, कृष्णदास नन्ददास, रामदास जनभगवान, अज्ञात	१६ वी श०	२२x१५ ५	५२, ५३, ५५, ५६, ५६, ६०-६१ ५२, ५३ से ५६, ५३, ५५, ५८-५९ ५३, ५४, ५७, ६०, ६४, ५४, ६१ ५५ वा ५५, ५६, ५७, ५६, ६२, ६३, ६४-६५ ५६ वा, ५७, ६१-६२ ५८ वा, ५६, ६० ६५ वा, ६६-६७
२६४१	१०६७२ (७) १-४	पद-संग्रह (कुञ्ज के)	परमानन्द, कुम्भनदास, नन्ददास, कृष्णदास	१६ वी श०	१५x१३ ५	४६-५०, ५१ ५१ वा
२६४२	१५६४ (४)	पद-संग्रह (कृष्ण चरित्र)	जीवनलाल नागर	२० वी श०	२२x१७ ५	४२-४५
२६४३	१०६६६ (१)	पद-संग्रह (गरवी)	अज्ञात	१६ वी श०	२२ ५x१७ ५	१-६
२६४४	१०६६६ (१३)	पद-संग्रह (गुसाईजी की जन्म-वधाई के)	मानिकचन्द छीतस्वामी	१६ वी श०	२२ ५x१७ ५	११७ वा ११८ वा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या
२६४५	१०६७२ (१०) १-१३	पद-संग्रह (गो-दोहन, सभा को- भालभोग के)	परमानन्द रसिकदास, कुम्भनदास चत्रभुजदास, रामदास गोविंदप्रभु, छीतस्वामी सूरदास, विठ्ठलदास नन्ददास कृष्णदास, जगजीवन आसकरन	१६ वी श०	२२X१५५	६६, ७१, ७३, ७४, ७७-७९, ८३, ८५, ८६-८७ ६६, ७०, ८१, ८३, ८४, ७०, ७२ ७०, ८७, ७१ वा ७१, ७२-७३, ७५-७६, ८०, ८४, ७२वा ७३-७४, ८१, ८२, ७४, ८३ ७४-७५, ७६, ७७, ८०-८१, ८५-८६ ७६ वा, ८१-८२ ८३ वाँ
२६४६	१०६६९ (१६) १-४	पद-संग्रह (गोवर्द्धन के एव फुटकर)	चत्रभुजदास, मोतीलाल गदाधर, गोपालदास	१६ वी श०	२२ ५X१७ ५	१२६-१३०, १३०-१३१ १३२, १३३ वा १३४ वे पर 'धमार' है।
२६४७	१०६६९ (७) १-४	पद-संग्रह (जन्मोत्सव के)	सूरदास विठ्ठलदास, चत्रभुजदास कृष्णदास	१६ वी श०	२२ ५X१७ ५	६५-६६ ६७ वा ६८ वा
२६४८	६७२६	पद-संग्रह	विठ्ठल, नागरीदास, आनन्दधन, हरिदास, गोविन्दप्रभु, विद्यापति आदि	१६ वी श०	२६ ५X१४	१-३६ राग ३६। प्रारम्भ के तीन पत्रों में रागनियों एव पदों की सूची दी है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (विस मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या
२६४६	१०६७२ (१-२) १-१२	पद-संग्रह (जमुनाजी के, मगला भोग के)	चत्रभुजदास, वल्लभ नन्ददास जनभगवान हरिदास, परमानन्द गोविन्दप्रभु, सूरदास छोतस्वामी, रसिकदास कुण्णदास, गदाधर	१६ वी श०	२२x१५५	३-४, ७, ११, १६, २१, ३, ४ ४-५, ६, १२, १७, १८ ५, १३, १४, २१ ५वा, ६, ७, ८, १५-१६, २०, २२ ६, ८, ११, १७, ६ से ११, १६ से २२ ७, २० वे, ८, ११ ११-१२, १३ वा
२६५०	६०८७ (१) ६७-१०३	पद-संग्रह (डोल के)	विठ्ठल, व्यास, चतुर्भुजदास, परमानन्द, सूरदास, रामदास, गोविन्दप्रभु	१६ वी श०	२१ ५x१२ ५	१४५ से १५१ कुल १० पद है।
२६५१	६०८७ (१) १०७-११३	पद-संग्रह (डोल के)	आसकरण, कुण्णदास परमानन्द, नन्ददास, माधोदास, हरिदास, कुम्भनदास	१६ वी श०	२१ ५x१२ ५	१६० से १६३ कुल ६ पद है।
२६५२	६४२७	पद-संग्रह (नित्य के)	सूरदास, परमानन्द	१६४०	१६ ५x१६ ५	१-५६

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५३	६०८७ (१) १०४-१०६	पद-संग्रह (फाग एव स्फुट)	चतर्भुजदास, कृष्णदास, जनहरिदास	१६ वी श० २१ ५X१२ ५	१५२-१६०		
२६५४	१०६६६ (६) १-३	पद-संग्रह (फाग के)	माधोदास मुरारिदास गोविन्दस्वामी	१६ वी श० २२.५X१७ ५	७२ वा ७३-८२ ८३ वाँ		
२६५५	६५६४ (१)	पद-संग्रह (रामचरित्र) (वसन्त-वर्णन)	जीवनलाल नागर	२० वी श० २२X१७ ५	१-५		समकालीन प्रति है। गुटके मे तूँदी के महाराजा राम- निह के मन्त्री-परिवार द्वारा निर्मित कृतियों का सकलन है। प्रथम दो पत्रों पर 'भीत गोविन्द' के पद्य हैं। पन्नांक १-४ अप्राप्त।
२६५६	६०८७ (१)(१)(१) १-७	पद-संग्रह (वसन्त के)	परमानन्द, स्यामदास, सूरदास, चतुर्भुजदास, कुम्भनदाम, कृष्णदास, श्रीभट्ट	१६ वी श० २१ ५X१२ १	५-१०		
२६५७	६०८७ (१) २-६	पद-संग्रह (वसन्त के)	मानकचन्द, परमानन्द, रघुनाथदास, मूरदास, कृष्णदास, नन्ददास, छोतस्वामी, गदाधर, जनहरिया, हरिदास	१६ वी श० २१ ५X१२ ५	१०-१५		

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स मे)	माप (सेंमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५८	६०८७ (१) १०-१५	पद-संग्रह (वसन्त के)	छोतस्वामी, कृष्णदास, कल्याणराय, लघुगोपाल, सूरदास, कुम्भनदास	१६ वी श०	२१ ५x१२ ५	१५-१६	कुल ३८ पद है।
२६५९	१०६६६ (४) १-६	पद-संग्रह (वसन्त, फाग, धमार)	चत्रभुज गोविन्दस्वामी सूरदास गोविन्दप्रभु कृष्णदास परमानन्द	१६ वी श०	२३.५x१७ ५	२०, २५, २७-२९ २१-२२ २३-२४ ४८-४९ ५०, ४९ २६, ४०-४१	
२६६०	१०६७२ (६) १-३	पद-संग्रह (मान के)	परमानन्द, छोतस्वामी मूरदास	१६ वी श०	२२x१५ ५	४७-४८ ४८ वा	
२६६१	६०८७ (१) * १६-२५	पद-संग्रह (धमार के)	केवलराम, लछौराम, माणकचंद, माधवदास, चतुरविहारी, सूरदास, वल्लभ, जनहरिया, गजाधर, विचित्रविहारी	१६ वी श०	२१ ५x१२ ५	१६-३४	* १६-६६ तक धमार के कुल १४६ पद है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (विस से)	माप (सेंमी से)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६६२	६०८७ (१) २६-३५	पद-संग्रह (धमार के)	दत्त, जिह्मार्णि, गोकुलचन्द, नन्ददास, कुम्भनदास, विठ्ठल, सूरदास, परमानन्द, कृष्णदास, धोधी	१६ वी श० २१ ५x१२ ५	३४-४२		
२६६३	६०८७ (१) ३६-४५	पद-संग्रह (धमार के)	प्रासकरण, गोकुलचन्द, जनगोविन्द, चतुर्भुज, गोविन्दप्रभु, छीतस्वामी, रसिकदास, दामगोपाल, सूरदास, हरिदास	१६ वी श० २१ ५x१२ ५	४२-५५		
२६६४	६०८७ (१) ४६-५५	पद-संग्रह (धमार के)	माधवदास, हिनहरिवंश परमानन्द, विठ्ठल, कृष्णदास, हरिवल्लभ, कुम्भनदास, चतुर्भुज, ताजखान, गोपीदास,	१६ वी श० २१ ५x१२ ५	५५-६४		
२६६५	६०८७ (१) ५६-६५	पद-संग्रह (धमार के)	गोकुलचन्द, सूरदास, गोविन्दप्रभु, नन्ददास, गदाधर, परमानन्द, गोवर्द्धन, स्यामदास, गजाधर, नारायण	१६ वी श० २१ ५x१२ ५	६४-७६		

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या
२६६६	६०८७ (१) ६६-७५	पद-संग्रह (धमार के)	सूरदास, नन्ददास, स्यामदास, जसुदास, लखीराम, जगन्नाथ, हरिदास, रघुवीर, कुरम्भनदास, जनगीविद	१६ वी श०	२१ ५X१२ ५	७७-१००
२६६७	६०८७ (१) ७६-८५	पद-संग्रह (धमार के)	चतुर्भुज, सूरदास, विष्णुदास, लघुगोपाल, मोहनदास, छीतस्वामी, हरिदास, गोविन्दप्रभु, रामदास, कुम्भनदास	१६ वी श०	२१ ५X१२ ५	१००-१२४
२६६८	६०८७ (१) ८६-९६	पद-संग्रह (धमार के)	गोकुलचन्द, नन्ददास, गदाधर, कृष्णदास, चतुर्भुज, विट्ठल, मुरारिदास, जगन्नाथ, गोपालदास, बल्लभ, परमानन्द	१६ वी श०	२१ ५X१२ ५	१२४-१४५
२६६९	१०६६९ (६) १-६	पद-संग्रह (धमार के)	अज्ञात, माधवदास जनहरिया, सूरदास गोविन्दप्रभु, मुरारिदास गोपालदास, हरीदास छीनस्वामी	१६ वी श०	२२ ५X१७ ५	३०-३१, ३७, ३८, ३१-३४, ३६-३७ ३४-३५, ३८-३९ ३६-४३, ४३ वा ४४-४५, ४६ वा ४६-४८

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या
२६७०	१०६६६ (१५)	पद-संग्रह (धवल पद)	हरिदास	१६ वी श०	२२ ५x१७ ५	१२३ से १२६
२६७१	१०६६६ (३) १-४	पद-संग्रह (धोल के)	कुम्भनदास, दामनुदास हरिदास, माधवदास	१६ वी श०	२२ ५x१७ ५	१४, १६-१७ १८, १९ वा
२६७२	७८५८ (२) १-१०	पद-संग्रह (धोल, सुखपाल, सोहिलो एव रास के)	भगवानदास, परमानन्द, कृष्णदास, कल्याण, हितहरिवंश, सूरदास गोविंदप्रभु, कुम्भनदास, मुरारिदास, चवभुजदास	१६ वी श०	१८ ५x१५ ५	४६ से ५६
२६७३	१०६७२ (४) १-१३	पद-संग्रह (वेणी के)	सूरदास परमानन्द विठ्ठल, श्रौतस्वामी रसिकदास, चवभुज आसकरन, नददास कुम्भनदास, रिपिकेश जनभगवान, रामदास जगजीवन	१६ वी श०	२२ ५x१५ ५	२६, २७-२८, ३०, ३१, ३३-३४, ३७, ३८, ४१, ४२ २६-२७, २८, २९-३०, ३१-३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७-३८, ३९ ४०, ४१, ४३-४६, ४५, ४६ २७, ३५, ३८, ३९-४०, २७, ४४, ४५-४६ २८-२९, ३२, ३०, ३२, ३३, ४२-४३ ३२-३३, ४२, ३६, ३८-३९ ३६ वा, ४० वा ४१ वा, ४२ वा ४५ वा

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर-सग्रह) राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. से)	पत्र सख्या
२६७४	१०६७२ (३) १-६	पद-सग्रह (शृङ्गार के)	विष्णुदास, चत्रभुजदास छीतस्वामी परमानन्द, गोविन्दप्रभु नन्ददास	१६ वी श०	२२x१५ ५	२२-२३, २४, २३, २४-२५ २३ वा २४वा २५ वा
२६७५	१०६७२ (६) १-४	पद-सग्रह (सभा की आरती के)	परमानन्द, छीतस्वामी सूरदास, चत्रभुजदाम	१६ वी श०	२२x१५ ५	६७ वा, ६७-६८, ६९ वे ६८ वा; ६९ वा
२६७६	१०६७१ (४) १-३	पद-सग्रह (सेवापद)	सूरदास, चत्रभुज, छीतस्वामी	१६ वी श०	२४x१३ ५	२१ से २३
२६७७	६४२६ १-२	पद-सग्रह (हिडोरा के)	कृष्णदास, नन्ददास	१८ वी श०	२७ ५x१३	१ से ६० पत्र अस्तव्यस्त है ।
२६७८	६३३७ (५) १-४	पद-सग्रह (हिडोरा के)	तुलसीदास, कृष्णदास, शोभाराम तिवारी	२० वी श०	१६ ५x१८	२७ से ३४ पत्र सख्या ३४-३५ पर 'मानस पूजा विधि' भी है ।
२६७९	१०६६६ (५) १-८	पद-सग्रह (होरी)	जसुदास, यज्ञात कनीलाल, स्यामदास गोविन्दप्रभु, वल्लभ परमानन्द, मानिकचन्द	१६ वी श०	२३ ५x१७ ५	४६-५०, ५१-५२, ५८, ६०-६४ ५२ वा, ५२-५४ ५५-५६, ५६-५७ ५७ वा, ५९ वा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६८०	६४३२ (२)	पद-संग्रह (होरी)	किशोरीदास	१६ वी श०	२२ ५X१७	१-८	५१ पद हैं।
२६८१	६३३७ (२)	पद-संग्रह (होरी)	शोभागम तिवारी, जगन्नाथ कविराय, तानसेन, उदयराज, गदाधर, सूरदास, तुलसीदास, ठाकुर, काशीराम	१६ वी श०	१६ ५X१३	१-१७, ३६-३७	
२६८२	६७२० (११)	पन्नावीरमदैरी वात		१६ वी श०	२०x१० ५	६०-१४२	
२६८३	६६७२	पवनविजय स्वरोदय (सभापाटीका गद्य)		१८६१	३२ ५X१६	१-१०	कुल २८६ छन्द हैं।
२६८४	८७०८	पवित्रामण्डल व्रजलीला		१८७५	२६X१८ ५	१-६५	
२६८५	८६६३ (४)	पहेली और मुकरियाँ		१६ वी श०	१६X१३ ५	६६-७४	
२६८६	६२६६ (२)	पाण्डवगीता		गु० १७३५	१६ ५X१५	२६-३७	लि. क. आनन्दराम मिश्र कृति संस्कृत में है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	निर्णयकान (वि.सं. मे)	माग (सं.सं. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६८७	६२२१ (१)	पाण्डवगीता स्तोत्र		१६ बी ज०	१५११३५	१-१६	कृति संस्कृत में है।
२६८८	६२२३	पायूजी रा दूहा	नधराज	१६ बी ज०	२५११०५	१-५	कुल ३०१ दोहे हैं। २ भा १७७८
२६८९	६४०० (२१)	पार्वतीनाथ-गीत	धर्मसी	गु० १८६४	१५११३५	५६-६०	
२६९०	६४०० (११)	पार्वतीनाथ-गीत	समयमुन्दर	गु० १८६४	१५११३५	८०-८१	
२६९१	६४०० (२०)	पार्वतीनाथ-गीत	जिननन्द	गु० १८६४	१५११३५	५६ भा	
२६९२	६४०० (३१)	पार्वतीनाथ-गीत	जिननन्द	गु० १८६४	१५११३५	७०-७१	
२६९३	६४०० (४१)	पार्वतीनाथ-गीत	तालचन्द	गु० १८६४	१५११३५	६३ भा	
२६९४	६०८८ (१)	पार्वतीनाथ-छन्द	प्रमोद	१६५६	२२५११३५	१-२	नि. क मोहनकोटि लि स्वा लानोला ग्राम

क्र.सं.	पुस्तक-सं.	प्रकरण - नाम	कर्ता	विषय-सूची (विषय में)	पृष्ठ (पृष्ठों में)	पुस्तक-सं.	विषय-सूची (विषय में)	पुस्तक-सं.
२१२२	२२०० (१)	पुस्तक-सं. २२०० (१)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४
२१२३	२२०० (२)	पुस्तक-सं. २२०० (२)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४
२१२४	२२०० (३)	पुस्तक-सं. २२०० (३)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४
२१२५	२२०० (४)	पुस्तक-सं. २२०० (४)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४
२१२६	२२०० (५)	पुस्तक-सं. २२०० (५)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४
२१२७	२२०० (६)	पुस्तक-सं. २२०० (६)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४
२१२८	२२०० (७)	पुस्तक-सं. २२०० (७)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४
२१२९	२२०० (८)	पुस्तक-सं. २२०० (८)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४
२१३०	२२०० (९)	पुस्तक-सं. २२०० (९)	विषय-सूची	गु० १२६४	१२६४	१२६४	१२६४	१२६४

कर्ता का नाम स्पष्ट नहीं है।

पुस्तक-सं. १३५ पर स्फुट कवित्त-संख्या है।

कवित्त-संख्या १३५ पर स्फुट कवित्त-संख्या है।

अपूर्ण।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७०२	८५६२ (५) २	पृथ्वीराज चहुआण रा कवित्त सवैयादि	कवि चन्द, कवि गद	गु० १७६५	२४ ५X१५.५	६७-६८	
२७०३	८५६२ (५) १३	पृथ्वीराज चहुआण रो छन्द		गु० १७६७	२४ ५X१५.५	७६-७८	कृति मे पृथ्वीराज के बंदी- काल का वर्णन है । लि. क. पचोली गुलाबराय हरिदासोत्त
२७०४	६३३४	पृथ्वीराज रासो (महवो खण्ड)	कवि चन्द	१८२६	'२० ५X१४	१-४३	अन्तिम पत्र पर उम्मेद- सिंहजी का कवित्त है । मुटके के अन्दर चार पत्रो मे (नवीन प्रतिलिपि) रासो के कुछ छन्द हैं ।
२७०५	६३३५	पृथ्वीराज रासो	चन्दवरदाई	१८१२	२६X१६	१२-३२६	लि. क. राधाकृष्ण—ठाकुर हमीरसिंह पठनार्थ । पत्र सख्या १-१२ अप्राप्त । 'कनवज खण्ड से शहाबुद्दीन युद्ध वर्णन खण्ड' पर्यन्त ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	तिथिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७०६	१०१४५	प्रीति-चौवनी	ध्रुवदाम	१६ वीं श०	१६.५X११	१-६	
२७१०	६२४२	प्रोतिवेल	राय अमृतनराम	१६ वीं श०	२७.५X१६.५	१-१८	र का १८६६ (रचनाकालीन प्रति)
२७११	६३१७	प्रेम-पञ्चसी	कवि भोलानाथ	१६ वीं श०	१७X१०.५	१-८	महाराजा माधवसिंह प्रीत्यर्थ । अक्षर धु धले हो गए हैं ।
२७१२	६७२० (४)	प्रेम-पत्रिका	रसराशि	१६ वीं श०	२०.११X५	१२-१३	
२७१३	६२३७	प्रेम-वहार	राय अमृतनराम	१६ वीं श०	२७X१६	१-१३	र का १८६६ (रचनाकालीन प्रति)
२७१४	६४३१ (६)	प्रेम-मञ्जरी (रूप मञ्जरी)	जनवद्वीशनि	गु० १८७६	२.११X५.५	१-४	अन्तिम ५ पत्रों पर 'कामद- कीय नीति शास्त्र' भाषा है ।
२७१५	७८७८	फुटकर किस्से		१८६६	२३.५X१८	१-३५	अन्त में हाजगों का एक कवित्त और अन्तिम पत्र में 'राधिका स्तोत्र' (अपूर्ण) है ।

क्र.सं.	पं.सं.	पद्य - भाग	तर्ता	निर्माण (वि.न. मे)	माप (मै.मी. मे)	पद्य संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२५१२	६११२ (३)	पुन विवाहो		गु० १७७४	२१.५११४	१-३	
२५१३	६११३ (३३)	समस्तगणेशो गीत	समस्तगणेशगौरि गीत	गु० १७७६	२३X२०	८८-८९	
२५१८	६८१७ (१)२	गारुडगता	जुगनानन्द	१९ वी श०	१९X१४	१६५-१६७	पत्र जीर्ण । पद्य संख्या १६७ से १६८ पर ८ कवित्तान्ति हैं ।
२५१९	६८१८ (२)	वारुणगता	गुन्दरगाम	१७९२	२५X१०	३१-३४	
२५२०	६८१९ (१)	वारुणगता ग दोहा	मुरलीदाम	१९ वी श०	२२X१४	२८२-२८३	प्रारम्भ के २८१ पत्र यत्राप्त ।
२५२१	६८२० (३)	वायनन्द वसोमी	वायनन्द	१८२४	२५X११	६-१२	
२५२२	६८२१ (३६)	वाह्वयनि मन्मथ	मन्मथमन्दिर	गु० १७८६	२३X२०	१०१-१०२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (क्रि.श. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७२३	६२२८ (३)	विचारमाला	अनाथदास	१६ बी.श. २५ ५५ १४ ५	२५ १४ ५	२-१२	र. का. १७२६ प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२७२४	६०४६	विहारी सतसई	विहारीलाल	१६ बी.श. २१ ५५ १४ ५	२१ ५५ १४ ५	१-५६	अपूर्ण—पत्र सख्या १ से ४ के प्रथम ५३ दोहे अप्राप्त । पत्र सख्या ४५ के बाद दोहा सख्या ७५ से ६८ अप्राप्त ।
२७२५	६२६६ (६)	विहारी सतसई (सटिप्पण)	विहारीलाल	१७ ३५	१६ ५५ १४	१३६-१७३	लि. क. ऋषि दीपचन्द लि. स्था. श्री राघवपुर
२७२६	८८६१	विहारी सतसई	विहारीलाल (विहारीदास मागुन)	१८ बी.श. ०५ ५५ १० ५	०५ ५५ १० ५	१-१६	जीर्ण प्रति ।
२७२७	८२२७	विहारी सतसई	विहारीलाल	१८ ३६	२७ ५५ १२ ५	१-२५	लि. स्था. प्रतापगढ़ इसमें ७०४ दोहे हैं । प्रन्त में कुछ ग्रन्थ कवियों के सूक्तिपरक कवित्त सङ्कलित है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७३४	८८५७ (१)	भक्त-प्रबोध	गुसाई जुगतानन्द शिष्य चरणदाम	१६ वी श०	१६x१४	१-८४	पत्र वडकने हे । पत्र सख्या १६७ पर दिण् गण कवित्तो मे रचना काल १८२४ दिया है ।
२७३५	८६२७	भक्तमाल (भक्तिरस-वोधिनी टीका)	सू० नाभादाम टी० प्रियादाम	१६१२	२५x१३x५	१-१५६	टी २ का १७६६ लि स्था गजाव (पटियाता) ग्रन मे लातदास कृत टीका की प्रशस्ति मे पद्य है ।
२७३६	६०८८ (४)	भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमगज	१६५६	२२x११x३x५	८-१६	लि क मोहनकीति लि स्था लाखोला ग्राम
२७३७	८१६१ (४)	भक्तिभावती	प्रपन्नगैमानन्द	१७५८	२१x११x६	१०५-१२३	२ का १६०६ लि क रूपदाग २ स्था मथुरा
२७३८	६७३६ (४)	भक्तिसदाचार सागरी	रूपगिरि	१६ वी श० ३०	५x२x१x७	२६६-२७१	कुल १४० छन्द है ।
२७३९	६३२४ (२)	भगवद्गीता-भाषा	भोलानाथ	२० वी श०	२२x१७x५	१-३३	१५ वे ग्रन्थाग गर्यन्त- नवीन प्रनि ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी मे)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७४५	६२२८ (१)	भागवत एकादश स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	चतुरदास शिष्य सतदास	१६ वी श०	२५ x १४ ५	१-१४४	२ का १८२६ महाराज नवलसिंह प्रीत्यर्थ । कवि वंशजों से प्राप्त प्रति । ४६ वें ग्रन्थाय पर्यन्त ।
२७४६	६३२५	भागवत दशम स्कन्ध भाषा पद्यानुवाद	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२५ x १७	१-१०७	२. का १७२३ लि क सदाशिवलाल
२७४७	६४३३	भागवत दशमस्कन्ध भाषा	देवीदास	१८५३	२४ x १७	१-६५३	
२७४८	६५६४ (२)	भागवत द्वादश स्कन्ध भाषा संक्षेप	शंभुराम पुत्र जीवनलाल	२० वी श०	२२ x १७ ५	५-३६	पत्रों के किनारे दूटे हुए हैं । दूँदी के महाराजा विशनसिंह के पुत्र रामसिंह के मंत्री तुलाराम नागर के लघुभ्राता शंभुराम द्वारा निर्मित ।
२७४९	८१६० (३)	भागवत द्वितीय स्कन्ध चतुर्थाध्याय भाषा		१८ वी श०	१२ x ५ x ६	२६-३६	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपि-काल (वि. स. से.)	माप (से.मी. में)	पत्र सन्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७५०	६४२८	भागवत महापुराण पञ्चम स्कन्ध भाषा		१६ वी श०	२३x१६ ५	२-६६	पुष्पिणा अर्पणं । कीटविद्ध । पत्र सख्या १, ३, ५, ६, ८ प्रप्राप्त ।
२७५१	६७२० (२)	भावना-पञ्चीसी		१६ वी श०	२०x१५ ५	६-१०	
२७५२	७८७१	भाषा-भूषण	महाराजा जसवंतसिंह	१६ वी श०	१६x११ ५	१-२१	
२७५३	६३३१	भूपतीन्द्रविलास		१६ वी श०	२२x१४ ५	१-५७	अर्पणं—लण्डन प्रति । दिल्ली के चहुआन राजा भूपतीन्द्र प्रीत्यर्थ ।
२७५४	६०६३	भेद-भास्कर		१६ वी श०	२२ ५x११ ५	१-८	गुरु-शिष्य-सवाद रूप में है । पा सख्या ८ पर 'चतु- स्तोत्री भागवत' है ।
२७५५	८५६२ (२)	भोगलपुराण		१७६४	२४ ५x१५ ५	१-३६	ति क अरौराग—गुलाबजी की पोथी में प्रतिलिपि कृत । लि स्या. उदयपुर

क्रम-क्र.	ग्रन्था-क्र.	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता:	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७५६	१०१३६ (२)	भोगलपुराण		१८१६	१४X१३	४७-५६	
२७५७	६४२५ (७)	भ्रमर-गीत		१८१८	२१५X१७	४१-५०	महाजनी लिपि मे । पत्र सख्या ५० - ५१ पर स्फुट पद्य-संग्रह है ।
२७५८	६२४६ (१)	भ्रमर गीत (भागवत दशम अध्यायगत)		१८६६	२६.५X१८५	२-२६	प्रथम पत्र अप्राप्त । ११७ छन्द हैं ।
२७५९	८४२२ (४१)	मगसी पार्श्वनाथ रत्नवन	पद्मानन्द शिष्य जीवविजय	गु० १७७६	२३X२०	१०७-१०८	लि. क मुनि अमरसागर
२७६०	८४२२ (२६)	मगसी पार्श्वनाथ-स्तवन	गुणमानर सूरि शिष्य पद्मानगर सूरि	गु० १७७६	२३X२०	६०-६१	
२७६१	६७२८ (१)	मदनाष्टक		१६ वी श०	२१X१६५	१-७	कृति रास्तुत मे हे ।
२७६२	८५०७ (५)	महादेव गोरख-सवाद		१६०६	१६X१२	१-३	लि. क रामदास तवीरपथी

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७६३	६३२४ (१)	महाभारत-भाषानुवाद (भीष्म पर्व)	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२२ ५X१८	१-३०८	र का १८३२ कवि वगजो मे प्राप्त प्रति।
२७६४	८५६२ (५)१०	महाराणा अमरसिंहजी रो गीत	तेजसिंह वारठ	गु० १७६५	२४ ५X१५	५७४ वा (अ)	
२७६५	८४०० (४८)	महावीर पारणा-स्तवन	देवीचन्द	गु० १८६४	१५X१३ ५	६०-६२	यह गुटका भोजराज पुत्र अखैराज का है।
२७६६	८४२२ (१०)	महावीर-स्तवन	सेवक लक्ष्मण	गु० १७७६	२३X२०	५१-६३	र. का १५२१
२७६७	८४०४ (६)४०	महावीर-स्तुति	समयसुन्दर	१६ वी श०	२०X१३	७३-७५	
२७६८	८४०० (३६)	महावीर स्वामीजी रा पारणा	मुनिमात	गु० १८६४	१५X१३ ५	७५-७८	३१ छद है।
२७६९	१०६६७ (७)	महिमासमुद्र	रामचरण	१८६१	१२X६	३६१-३६७	'चोहूँ गुत' बालकराम

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७७०	६७६६ (७)	साँभ वत्तीसी	रूपरसिक	१६ वी श०	३० ५X२१ ५	७२-७४	अपूर्ण—२७ पद मात्र ।
२७७१	६२६४ (५)	माखन चोरी-लीला	चरणदास	१८ वी श०	१६ ५X११	६८-६९	
२७७२	६३३३	माधवानल कामकन्दला कथा-चउपई	आलम	१८ वी श०	२२X१५	१-५०	२ का हि सवत् ६६१— अकबर के शासनकाल मे । लि क मिश्र पोहैकर लि स्था. रोसी नगर
२७७३	१०२४७ (६)	मारवाड री पीढियाँ री विगत		गु० १८ वी श०	१६X१२	२५ वाँ	सेतराम से मानसिहजी तक ।
२७७४	१०६६७ (६)	मुरलीरामजी की अणभै वाणी, कृति-संग्रह एव पद-संग्रह	जनमुरली स क नानजी	१८ वी श०		४०६-८१० ८१०-८४१ ८४१-८५४	स. का १८४० ८ ग्रन्थ हैं । स स्था बालाखेडा (हाड़ौती प्रदेश) लि क. टैलदास लि स्था बालोतरा

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७७५	६११७ (२)	मूलपुरुष	द्वारिकेश	२० वी श०	१६x१२५	२२-३०	इसमें वल्लभाचार्यजी की वशावली है जो मूल पुरुष भगवान नारायण से प्रारभ होती है।
२७७६	१०६६६ (११)	मूलपुरुष	द्वारिकेश	१६ वी श०	२२५x१७५	६०-६६	पुष्टिमागीय ग्रन्थ।
२७७७	६४२५ (४)	मूलपुरुष	द्वारिकेश	१६ वी श०	२१५x१७	२२-२७	
२७७८	८५५८ (२)	मृगकपोत-चौपई	चतुर्भुजदास	१६ वी श०	१५x११५	१-१६	पत्र सख्या २० व २१ पर 'नरसिंहजी की आरती' है।
२७७९	८५६२ (५)५	मोकमसिंहजी शक्तावत रो गीत	भीमजी ग्राढा	गु० १७६५	२४.५x१५५	७१ वा (अ)	भीडर ठिकाने के।
२७८०	१०६६७ (१२)	मोरघजरी लावणी		गु० १८१४	१२x६	८५४-८७४	
२७८१	८१६० (२)	मोहमरद राजा की कथा	जन जगन्नाथ	१८ वी श०	१२५x६	१६-२६	पत्र बडकने हैं।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७८२	६३२६	मोहविवेक	रामदास कायस्थ (टोडा निवासी)	२० वी श०	१५X१०.५	१-२७	र का १६२३
२७८३	६३२०	युगलविलास	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	१६X११	१-२६	र का १८२८ के लगभग । भोलानाथ के वंशजों से प्राप्त संग्रह की प्रति ।
२७८४	६३२७ (१)	युगलविलास	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२८X१८.५	१३-२७	कवि के वंशजों से प्राप्त प्रति । पत्र अस्तव्यस्त—दो प्रतियाँ । प्रारम्भ में राज- वंशावली प्रशस्तिपरक एक पत्र है । सभी पत्र रफ लिखे हुए ज्ञात होते हैं ।
२७८५	६३२६	युगलविलास (अष्टयाम)	कवि लाला हरसहाय	१८१३	२१X१४	१-१८	संभवतः समकालीन प्रति ।
२७८६	६६६६	यमन के वादशाह निहायत साहब का किस्सा		२० वी श०	२८X१८.५	१-२६८	कथा उर्दू भाषा में है । नवीन प्रतिलिपि ।

क्र.सं.	ग्रन्थ-सं.	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७७८७	८०८२	रामप्रबोध	दीलत कवि	१८६६	१५५X१११	१-२६	र का १८६६ लि क कल्याणदास कुंभट, मुहणोत सौभाग्यसिंहजी की परत से प्रतिलिपि कृत । लि. स्था किशनगढ श्राद्ध दो पत्रों के १८ छन्द अप्राप्त ।
२७८८	६७३५ (१)	रत्न-परीक्षा	रत्नसागर	१६०२	१७X११	१-४१	र का १७५५ लि क. कनीराम लि स्था सवाई माधोपुर ठाकुर श्री भोपालसिंहजी को 'नजर' करने के लिए लिखी गई प्रति ।
२७८९	६२५४ (७)	रसमञ्जरी	नन्ददास	१६ वी श०	१६५X१३.५	१-१८	अन्त मे चन्द कवि कृत स्फुट कवित्त है ।
२७९०	१०१७६	रसमञ्जरी भाषा	सू० भानुदत्त भा० छज्जूमल्ल	१७३२	२५X११	१-१२	लि क प० अमरविजय नायिका भेद के ८२ छन्द है ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२७६१	६३३०	रसमञ्जरी भाषा	कवि आनन्द	१७०८	१२X१४	१-२३	लि क शिरोमणि
२७६२	१०१३७	रसमुक्तावली	ध्रुवदास	१८६६	१७.५X११	१-२१	प्रथम पत्र अप्राप्त । कुल ८६ छन्द है ।
२७६३	६०५४ (१)	रसरज	मतिराम	२० वी श०	२०.५X१६	१-५४	आधुनिक नीले लेजर पर काली और लाल स्याही से मुलिखित प्रति ।
२७६४	६२५४ (३)	रसरज	मतिराम	१८१०	१६.५X१२.५	१३२-२४१	पत्रों में पृष्ठाङ्क लगे हैं ।
२७६५	६७२० (६)	रसरज	मतिराम	१६ वी श०	२०.५X१५.५	१-४०	अन्त में 'शुक्लाभिसारिका' के कवित्त है ।
२७६६	६८५८	रसरज	मतिराम	१६ वी श०	१६.५X१४	८४-१२२	अपूर्ण—३८२ छन्द पर्यन्त । पत्र संख्या १ से ८३ एवं ८५ वा अप्राप्त ।
२७६७	१०१५० (२)	रसरज	मतिराम	१७८५	२१X१६	४८-५२	अपूर्ण—पत्र संख्या १ से ४७ अप्राप्त, छन्द संख्या ३७६ से ४१६ पर्यन्त ।

क्र.सं.	पृष्ठ-सं.	पद - भाग	तर्जा	निर्णयकाल (वि.सं. मे.)	माप (है.मि. मे.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२१८८	२१४४१	रमिहारीमो		१६ वीं श०	२०x१५	१-२०	प्रपूर्ण—१२५ ने छन्द पर्यन्त ।
२१८९	२१४४० (१)	रमिहारीमो	रमनि	१६ वीं श०	२०x१५ ५	१-५	महाराजा मवाई प्रतापसिंह की आज्ञा से रचित । अन्त में स्फुट सर्वैया है ।
२१९०	२१४४१	रमिहारीमो	रमनि	१६ वीं श०	२२x१४	३-६६	आदि व अन्त के पत्र अप्राप्त ।
२१९१	२१४४१	रमिहारीमो	रमनिदास	१७ वीं श०	२५ ५x११ ५	१-१००	लि.क. मुनि जगराज शिष्य ज्ञानराज
२१९२	२१४४२	रमिहारीमो	रमनिदास	१८ वीं श०	२३ ५x१३	१-६७	जीर्ण प्रति ।
२१९३	२१४४४ (१)	रमिहारीमो	रमनिदास	१८ वीं श०	१६ ५x१३ ५	६-१११	लि. स्था जीधपुर प्रथम प्रभाव अप्राप्त, प्रथम ५ पत्र अप्राप्त ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८०४	१०२२२	रसिकप्रिया सटीक	केशवदास	१६ वी श०	२५X१० ५	१-४०	अर्थ गद्य में किया गया है। गुजराती भाषा का पुट है।
२८०५	६४३१ (३)	रसिकरत्नावली	नागरीदास (महाराजा सावतर्सिंह)	१७८६	२१X१५.५	१-५	र. का. १७८२
२८०६	६४२६	रसोई पातस्याही की (पोथी)		१६ वी श०	२१ ५X१६ ५	१-१२६	फारसी के ग्रन्थ 'नुस्ख-ए- शाहजानी' का जयपुरी भाषा में अनुवाद।
२८०७	८७०५ (४)	राजजोग ग्रन्थ		गु० १८६१	१४X८ ५	५८-८३	
२८०८	८६६३ (६)	गजनीति रा दोहा	जमराम	१६ वी श०	१६X१३ ५	८२-१११	र का १८१४ सोडा जगमाल सुल उदय- सिंह के लिए रचित।
२८०९	८४०० (२३)	राणकपुर गीत	समयसुन्दर	गु० १८६४	१५X१३ ५	६१-६२	र का १६७६
२८१०	८४२२ (४४)	राणपुरा (राणकपुर) रो स्तवन	शिवसुन्दर शिष्य देवसुन्दर	गु० १७७२	२३X२०	११३-११४	र का १७१५ कर्त्ता-साडेराव गच्छ का है।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (विस मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८११	६२००	राम आरती-शकुनविचार	तुलसीदास	१६ वी श०	२२X१०	१-२४	अन्तिम पत्र खण्डित । सात सर्गों मे ।
२८१२	८२०६	रामगीता सभाषा टीका	केशवदास वैष्णव	१८६६	२५X१४	१-२६	टी र का १८६१ लि क श्रीगौड रघुनाथ अध्यात्मरामायण के उत्तर- काण्डान्तर्गत ।
२८१३	८६१६	रामगीता सभाषा टीका	केशवदास वैष्णव	१८६५	२७X१४	१-३०	टी र का १८६१ 'भू रस वसू विश्रमभरु' लि क मोकमराम प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२८१४	८६६७	रामगीतावली	गो० तुलसीदास	१८५७	२४ ५X१०.५	१-११६	लि क सनमुखराम
२८१५	८४८६	रामचन्द्रिका	केशवदास	१८५४	२५X१६	१-१४३	लि क महात्मा शम्भुराम लि स्था सवाई जयपुर
२८१६	८१६३	रामचन्द्रिका	केशवदास	१६ वी श०	२४X१५ ५	१७-१७४	अन्तिम पत्र खण्डित ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८१७	१०६६७ (४)	रामचरणजी की अणभै वाणी एव कृति-संग्रह	रामचरण शिष्य कृपाराम	गु० १८४१	१२X६	३-३५०	स. का १८२७ स क नवलराम स स्था शाहपुरा(भीलवाड़ा) लि क टेलदास लि स्था पाली
२८१८	१०६६७ (८)	रामचरणजी की महिमा का सबद	द्वारकादास, मालिदास जनभगवान, तुलछी सेवादास	१८४१	१२X६	३६७-४०६	विभिन्न संतो के सबदों का संग्रह है।
२८१९	१०६६७ (१०)	रामचरणजी की लावणी (द्वारामासी)	दासकरन	गु० १८४१	१२X६	८४१-८४८	
२८२०	७८६४	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	३० ५X१४	१-११८	प्रारम्भ व अन्तिम पत्र खंडित।
२८२१	७८६५	रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वी श०	३०X१४	१-६१	
२८२२	७८६६	रामचरितमानस (अरण्य-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०X१४	१-२५	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८२३	७८६७	रामचरितमानस (किष्किन्धा-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०X१४	१-१२	
२८२४	७८६८	रामचरितमानस (सुन्दर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०X१४	१-२०	केवल इसी काण्ड की पुष्पिका में लिपिकाल दिया गया है।
२८२५	७८६९	रामचरितमानस (लङ्का-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०X१४	१-४६	
२८२६	७८७०	रामचरितमानस (उत्तर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८४०	३०X१४	१-४७	ग्रन्थाङ्क ७८६४ से ७८७० पर एक ही प्रति के विभिन्न काण्ड हैं।
२८२७	७८८८	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९ वीं श०	३२X१५	१-६४	अपूर्ण।
२८२८	८१४९	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१९१४	२६X१६५	२-९९	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि. क. बगसूराम गुर्जरगौड लि. स्था. उणियारा

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (सें मी. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८२६	८२२३	रामचरितमानस (अयोध्या, अरण्य, सुन्दर और लङ्का-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१७८८	२७x१२	१-१८०	लि. क. पीताम्बरदास लि. स्था. काशी
२८३०	८४०६	रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड अरण्य-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	२६x१६ ५	२-१६८ १-५३	अपूर्ण—जिल्दयुक्त गुटका । प्रथम पत्र एवं पत्र सख्या ८६ अप्राप्त । पत्र अस्तव्यस्त ।
२८३१	८६४८	रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	२३ ५x१४ ५	१-११५	
२८३२	६०७७	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८७०	२२ ५x१२ ७	१-२६	लि. क. गणराम लि. स्था. कोटा, नीलकण्ठ समीपे, चरमण्वती(चम्बल)तीरे ठाकुर देजूसिंहजी पठनार्थ ।
२८३३	६०७८	रामचरितमानस (अयोध्या-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८८७	२१ ५x१४	१-२३४	
२८३४	६०७९	रामचरितमानस (सुन्दर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६३	२३x१३	१-२३५	लि. क. हीरालाल खण्डेलवाल लि. स्था. कृष्णगढ़ मुलिखित प्रति ।

राजस्थान प्राञ्चनिधा प्रतिष्ठान (जोधपुर-सग्रह) गजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग ३

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निष्काल (दि स मे)	माप (सेमी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८३५	६०८०	रामचरितमानस (ग्रन्थ-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८८७	२३X१३	१-५६	लि क रूपदास वैष्णव लि स्था कुण्णगढ
२८३६	६०८१	रामचरितमानस (लङ्का-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६२	२३X१३	१-११६	लि क ललितादास ब्राह्मण लि स्था कुण्णगढ
२८३७	६०८२	रामचरितमानस (उत्तर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८२२	२२ ५X१३	१-५७	लि क राममङ्गल वैष्णव लि स्था दक्षिण देशे, गोदावरी तीरे, जेथर मध्ये
२८३८	६३२८	रामचरितमानस	गो० तुलसीदास	१८६८	२१ ५X१८	१-४३५	किनारे त्रुटित ।
२८३९	६५५३	रामचरितमानस (बाल-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६ वी श०	३३ ५X१५	१-१५६	अपूर्ण — छन्द सख्या २६५ पर्यन्त ।
२८४०	६६६५	रामचरितमानस (सचित्र) (लङ्का एव उत्तर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१८६३	३३ ५X१७	१-७१	दोनों काण्डों को समग्र चित्र सख्या १०० है ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८४१	६७२१ (२)	रामचरितमानस (मुन्दर-काण्ड)	गो० तुलसीदास	गु० १६१७	२०x११	१-३७	अपूर्ण ।
२८४२	६७२१ (३)	रामचरितमानस (अरण्य-काण्ड)	गो० तुलसीदास	गु० १६१७	२०x११	१-६	अपूर्ण ।
२८४३	१०६८१	रामचरितमानस (किष्किन्धा-काण्ड)	गो० तुलसीदास	१६८८	१७x१०	१-२८	सुलिखित । काश्मीरी पत्र । पत्रों के चारों ओर रंगीन बोर्डर है ।
२८४४	८८५६	रामचरित्र (लङ्का-काण्ड) (अवतारचरित्रान्तर्गत)	नरहरिदास बारठ	१८६७	३६x२१	७५-११५	लि क रामावतार चतुर्वेदी एक ही ग्रन्थ तीन हिस्सों में ग्रन्थाङ्क ८८५८ से ८८६० पर उपलब्ध ।
२८४५	१०६७०	राम-नामावली	गुसाई जगन्नाथ पुत्र वेणीदत्त	१८८२	२३x१०	१-१०	ति क देवीदास
२८४६	६८३६ (२)	रामरक्षा(रामरिच्छया)स्तोत्र	रामानन्द	१६ वी श०	१२x१०	१६-२४	अन्त में 'चतु श्लोकी भाग- वत' है ।

क्रमांक	ग्रन्थ-क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (प्रि.म.से)	माप (से.मी.से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८५७	१०६६३	रामविनोद	रामचन्द्र	१६०७	२६ ५X१७ ५	३-१२७	प्रति कीटविद्ध । लि क श्रवणदास दादूपथी लि स्था गाव भूलेट, श्रीनाथजी की वस्ती मे ।
२८५८	६११८	रामायण-सार	हरिचरणदास	१६ वी श०	१५X१३	१-३६	अन्तिम पत्र त्रुटित ।
२८५९	६२३४	रास को रेखतो	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७X१६	१-६	र का १८६६ २७ पद्य है ।
२८६०	८६१४	रासपञ्चाध्यायी भाषा	नन्ददास	१६ वी श०	२६ ५X१६	१-१८	लि क गगाराम
२८६१	६५६४ (५)	रासपञ्चाध्यायी भाषा (भागनत दशमस्कन्धगत)	शंभुराम	२० वी श०	२२X१७ ५	४५-७१	र का १६१५ र स्था बूँदी समकालीन प्रति । पत्र त्रुटित ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८५२	८४०५ (१)	रासविलास	गोकुल कवीश्वर	१६ वी श०	२२x१४	३३-४६	रागवद्ध । इस गुटके का प्रारम्भ लिपि-कर्त्ता द्वारा विन्यस्त पत्र सख्या ३३ से होता है ।
२८५३	८४०० (२२)	रिषभदेव-गीत	अज्ञात	गु० १८६४	१५x१३ ५	६०-६१	
२८५४	८६३३	रूपदीप-पिङ्गल	जयकृष्ण भोजगपुत्र भवानीदास	१८८३	२६x१३	१-५	र का १७७६ लि क चम्पाराम
२८५५	६२३५	रेखता (भक्ति के)	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६	८४-९१	रागवद्ध । पत्र सख्या ८७-८८ अप्राप्त । र का १८६६
२८५६	६२३८	रैन-रङ्ग	राय अमृतराम	१६ वी श०	२७x१६ ५	१-५	र का १८६६

क्रमांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स.मे.)	माप (से.मी.मे.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८५०	लावणी	नवलीनगम	गु० १८४१	१२X९	६३-६९	
२८५८	लीना-पञ्चसी	कवि भोनानाथ	१८२०	२०X१३५	१-७	लि. क. नन्दराम महाराजकुमार नाहरसिंह पुत्र सूरजमल्ल प्रीत्यर्थ । १०७ छन्द है ।
२८५९	लुकमानी नसीहत	हकीम लुकमान	१९ वी श०	२०X१५५	८६-९०	
२८६०	लूहर		१९१०	१५ २X११	२०९-२१३	लि. क. प्रोहित मानमल राजकुमार फोजसिधजी पठनार्थ । १५ छन्द है ।
२८६१	वशी-वहार	राय अमृतराम	१९ वी श०	२७X१९५	१-६	
२८६२	वडो-नवकार		गु० १७७६	२३X२०	४२-५०	र. का १८६९
२८६३	वन-यात्रा परिक्रमा वार्त्ता (८४ कोस परिक्रमा री वार्त्ता)	गोकुलनाथ	२० वी श०	२४ ५X१७	१-५३	पत्र सख्या ४९-५३ पर वन के प्रकार का वर्णन है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकान (वि.सं मे)	माप (से.मी मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८६४	८४२२ (४३)	वरकाणा पार्श्वनाथ-स्तवन	सेवक	गु० १७७२	२३X२०	११३ वा	
२८६५	६४२५ (३)	वल्लभाख्यान		१८१६	२१५X१७५	६-२१	पुष्टिमागीय ग्रन्थ ।
२८६६	६११७ (१)	वल्लभाख्यान		२० वी श०	१६X१२५	१-२२	
२८६७	१०६६६ (१०)	वल्लभाख्यान		१६ वी श०	२२५X१७५	८४-८६, १०१-११०	तीजा कडखा से ।
२८६८	८८५७ (४)	विचार-बोध	जुगतानन्द	१६ वी श०	१८X१४	२२१-२२७	रू का १८३२ गुटका जीर्ण है ।
२८६९	८०६१	विचारमाला	अनाथदास	१६३८	२४.५X१६	१-१५	रू का. १७२६ लि क कोमलदास लि स्था कपासन ग्रन्थम विश्राम तक ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (से.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८७०	६१६८	विचारसागर भाषा	निश्चलदास	१८ वीं श. ३०	५५ x १३ ५	१-२८६	पत्र अस्तव्यस्त हैं। प्रारम्भ के पत्र संख्या १ से ३ अप्राप्त। र. स्था 'किहिडोली' ग्राम जो दिल्ली से पश्चिम दिशा में १८ कोस की दूरी पर स्थित है।
२८७१	१०६७६	विचारसागर भाषा	निश्चलदास	१६१७	६५ x २	१-१३४	र. स्था किहिडोली ग्राम लि. क. देवकृष्ण दरजी लि. स्था जोधपुर
२८७२	८४०० (३०)	विनती	कनककीर्ति	गुं. १८६४	१५ x १३ ५	६६-७०	
२८७३	८६८५	विनयपत्रिका	गो. तुलसीदास	१६०६	२३ ५ x १७	१-१५०	पत्राङ्क ७४, ७५, ७६ एक ही पत्र पर। १४० वा पत्र अप्राप्त।
२८७४	८४२२ (४२)	विमलसाह रो सरनोको (इलोक)	प. विनयविमल	गुं. १७७२	२३ x २०	१०८-११३	लि. क. अमरसागर

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपि ढाल (वि.स. मे)	माप (सेमी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८७५	६२४४	विरहतरङ्ग	राय ग्राम्भृतराम	१६ वी श०	२७X१६	१-६	२ का १८६६
२८७६	६११५ (२)	विवेक-चिन्तावणी	सुन्दरदास	१६०१	१५X११	२५६-२६३	
२८७७	८६६३ (१)	विवेकसागर-सप्तसई		१६ वी श०	१६X१५	१-३६	कामदारी लिपि में। ४५२ दोहे मात्र। विभिन्न कवियों के दोहों का सकलन है।
२८७८	६८३६ (५)	विष्णुपजर-स्तोत्र-भाषा		गु० १८२२	१२X१०	५६-६१	पत्र सख्या ६२ पर स्फुट पद्य एवं पत्र सख्या ६३-६५ पर 'शकुनविचारादि' है।
२८७९	६२६६ (१)	विष्णुसहस्रनाम-स्तोत्र		१७२७	१६५X१४	१-२८	लि 'न आनन्दराम मिश्र कृति सस्कृत मे हे।
२८८०	८४०४ (५)	वीस-थानक पूजा	जिनहर्षे सूरि	१६ वी श०	२०X१३	३५-५६	

क्रमांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिगता (नि.सं. मे)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८८१	चुन्दसतनई	चुन्दरवि	१८८२	१५.५X१०.५	१-७६	२ का १७६१ २ स्था ढाका शहर लि क अमीचन्द पत्र सख्या २, ३ अत्राप्त ।
२८८२	चुन्दसतसई	चुन्दरवि	१६१०	१५X११	१-२०६	२ का १७६१ २ स्था ढाका लि क प्रोहित मानमल महाराजकुमार फोजसिहजी पठनार्थ । कुल ७१५ दोहे हैं ।
२८८३	चुन्दवचनसत (अतक)	ध्रुवदास	१८२८	१४X११	१-१७	२ का १६८६ प्रथम पत्र अत्राप्त ।
२८८४	चुन्दवचनसत (अतक)	भगवन्त शिष्य हरिदास	१७८६	१२X१४.५	१-२५	२ का १७०७ लि स्था शाहजहानाबाद अत मे 'गङ्गाजी' के कवित्त है ।
२८८५	चुन्दसवमणिमाला	रूपरसिक	१६ वी श०	३०.५X१२.५	७५-१६५	रागवद्ध । पूरे गुटके मे रूपरसिक की कृतियों का संग्रह है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकात (प्रि.श. मे)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८८६	८४३५	वेद्यमनोत्सव (आयुर्वेद)	नयनसुग पुत्र केशदास	१८६१	१६.५x११	१-५६	नि. क. ईसुरीदास लि. स्था. घाट के गाँव में अन्तिम ६ पत्रों में ओपधी- संग्रह है।
२८८७	६२०१	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख पुत्र केशवदास	१६ वी श०	२२x१५	१-१३	
२८८८	६६११	वेद्यमनोत्सव (सप्तमोद्देश पर्यन्त)	नयनसुग पुत्र केशवदास	१७६६	२५.५x१०.५	१-८	लि. क. प० अमरमूर्ति मुनि लि. स्था. सुद्धती
२८८९	६८०४	वैद्यमनोत्सव	नयनसुख पुत्र केशवदास	१७४६	२५.५x१०.५	१-१४	लि. क. भाग्यविजय
२८९०	६२६८	वैराग्यप्रकरण भाषा		१८६१	२०x१४	१-७८	लि. क. ज्ञान ब्राह्मण
२८९१	८५०७ (२)	वैराग्यशतक सटीक	मू० भट्टहरि	१६०४	१६.५x१२	१-२५	टी. क. अज्ञात लि. क. रामदास

क्रमांक	संख्या	ग्रन्थ - नाम	रुप्ति	लिखित (वि. मं.)	माप (से.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८६३	६७३२ (४)	नाराटपुराण		१६ वी श०	१७x१२ ५	७८-६५	कृति संस्कृत में है ।
२८६३	१०६७१ (६)	ग्रजनिहार-लीला		१६ वी श०	२४x१३ ५	५७-६५	८५ छन्द है ।
२८६४	१००५६ (२)	आस कथा		१८११	२६ ५x१८	११६-१२१	पंडितो पर व्यय है । पत्र संख्या १६१ पर रोवादास का पद है ।
२८६५	८३८३	शकुनावलि (शकुन, स्वप्न, दिशा, पशु, ग्रग फुरकनादि)		१८३२	१७x१० ५	३-२२	अपूर्ण । महाराणा भीमसिंहजी के समय में लिखित । प्रथम दो पत्र अप्राप्त । लि. क. माणकचन्द लि. स्था. उदयपुर पत्र संख्या २३ - २४ पर रामयसुन्दर, साधुकीर्ति एवं ग्रगरचन्द के पद हैं ।
२८६६	८४२२ (२६)	रात्रुञ्जय-स्तवन	कवियण	गु० १७६	२३x२०	६२-६४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	निर्गमाल (लि. स. मे.)	माप (से. मी. से.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८६७	८४२२ (११)	शुक्लजय-राग	समयमुन्दर	गु० १७७६	२३X२०	६३-६८	२ का १६८२
२८६८	८१०४	शनिश्चरजी की कथा	जोरा (जोरावन) पुत्र हुकमराय	१६४३	२१.२X११ ३	१-१६	२ का. १८२० कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है— भायस्थ माथुर जात भिनानी । नगर नागपुर वाली जानो ।। हुकमराय पुत जोरो जानो । जीवणदास की गोद बग्यानो ।। निमदिन व्यान शनिको ध्यावे । हुस-कष्ट कदे नही पावे ।। लि स्था लक्ष्मणपुर
२८६९	८४१६	शनिश्चरजी की कथा	जोरा पुत्र हुकमराय	१६०३	१६ ५X११ ५	१-२५	लि स्था मन्दमीर
२९००	८४२०	शनिश्चरजी की कथा	जोरा पुत्र हुकमराय	१६३८	१६ ५X१६ ५	३-४०	लि क विजयनाथ गौड मुन्नीताल हलवाई पठनार्थ । प्रथम २ पन अप्राप्त ।

क्रमांक	ग्रन्थ-सं.	ग्रन्थ-नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (से.मी. में)	पान सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६०१	६३३८ (३)	अनिश्चरजी की कथा (मनिन)	असकरण	१६ वी श०	१० १/४ x ६	२१-५६	शिन, राम-सीता-लक्ष्मण एवं हनुमानजी के ३ चित्र है।
२६०२	१०१४२ (२)	अनिश्चरजी की कथा (गद्य)		१६ वी श०	२२ ५/४ x १६	५-११	पत्र सख्या ११ - १२ पर 'विसभरा को सोण' शकुन विचार है।
२६०३	१०५६७	अनिश्चरजी की कथा (पद्य)		१६ वी श०	१६ ५/४ x १४	१-८७	वि.सं. १८१३ की प्रति से प्रतिलिपि कृत। महाजनी लिपि में। लि. क. चैनसुख श्रीवास्तव लि. स्था. जावली
२६०४	८७५८ (३)	अनिश्चर-मञ्जरी (थावर-गस)	कपूरविजय (तपागच्छी)	१६ वी श०	१५ ५/४ x ११ ५	१-८	र. का १८४३ 'भुवन वेद सिद्धि चन्द्र' रचनाकालीन प्रति।
२६०५	६३३८ (२)	अनिश्चर-स्तोत्र		१७ वी श०	१० ५/४ x ६	११-१४	कृति संस्कृत में है। पत्र सख्या १५ से २० तक जिन्स खरीदने की विगत है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	तिथिकाव (वि.म. मे)	माप (सं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६०६	८८५७ (६)२	शब्दवर्णन (संवाद)	जुगानन्द शिष्य चरणदास	१६ धी श०	१८५१४	८५-१४६	रागवद्ध । गुटता जीर्ण ।
२६०७	६४२२	शरणमन्त्र एवं समर्पण रत्नोक्त की भाषा टीका (गद्य)	गो० गिरिधर	१६ धी ज०	१६४१२	१-१०	
२६०८	८४०० (२६)	शान्तिनाथ-स्तवन	पाशचन्दसूरि	गु० १८६४	१५४१३५	६३-६५	
२६०९	८४२२ (४५)	शान्तिनाथ-स्तवन	सहजसागर	गु० १७७०	२३५२०	११८-११५	
२६१०	८४२२ (१८)	शान्तिनाथ-स्तवन	गुणसागर शिष्य पद्मसूरि	गु० १७७६	२३४२०	८४-८५	
२६११	८४२२ (४८)	शालिभद्र महासुनी चौपई	जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि	१७७२	२३४२०	१२५-१५४	७ का १६७८ लि क ऋषि गगजी पत्र सख्या १५५-१५७ पर 'गीतमस्वामी रास' के ४२ छन्द मात्र है ।

क्र.सं.	ग्रन्थ-सं.	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.सं. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६१२	८४२२ (२७)	शान्तिभद्र-मन्त्रभाग	सहजगुन्दर	गु० १७७६	२३x२०	६४-६५	
२६१३	८३३६	शान्तिहोत-भाषा टीका	गु० नकुल	१८६२	३१x२० ५	१-३६	
२६१४	८४२५ (८)	शिक्षापत्नी-भाषा	हृत्विगय	१६वीं श०	२१ ५x१७	१-६६	
२६१५	७८६१ (६)	शिव-प्राग्ती	माँवला	१६१५	१७x१३	४३-४४	लि. क. भज्जूराम लि. स्था. वामनवास
२६१६	८५६२ (४)	सुत-मन्त्राद	खेमदास	१७६५	२४ ५x१५ ५	४५-६६	अपूर्ण—छन्द सख्या १३० पर्यन्त। लि. क. पचोली गुलावराय हरिदासोत्त लि. स्था. उदयपुर
२६१७	८५६२ (१)	श्यामवत्तीभी या (कृष्णध्यान चतुराष्टक)	श्याम सखी	१८वीं श०	१५x११ ५	१-११	पत्र सख्या १२ से २० तक विविध श्रीपधियो के नुस्खे एव वशीकरणादि मन्त्र लिखे हुए हैं।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकारा (विस मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६१८	८४०० (१४)	श्यावकरी-करणी-सज्जाय	जिनहर्ष	गु० १८६४	१५X१३५	४२-४५	
२६१९	८४०० (३)	श्रीनक्र-स्तवन		गु० १८६४	१५X१३५	२-१०	कृति प्राकृत मे हे ।
२६२०	८४२२ (२५)	श्रीमन्-गुणतोसी	गुणरागर सूरि	गु० १७७६	२३X२०	६१-६२	
२६२१	८४०० (३२)	सखेश्वर-पार्श्वनाथ-स्तवन	जिनचन्द	गु० १८६४	१५X१३५	७१-७२	
*६२२२	८७५६	सग्राम-सार	कुलपति मिश्र	१७६४	२५X१६५	१-२४१	र का १७३३ लि क कवि पूरण लि स्था सवाई जयपुर किनारे खण्डित । पत्र सख्या २४० वा खण्डित ।
२६२३	१०६६७ (१)	सतदासजी की वाणी	सतदास	१८४१	१२X६	१-६३	स का १८३० स क नवलराम स स्था गाहपुरा लि क टैलदास लि स्था भीरावाडा

क्रम-क्र.	गन्ध-क्र.	गन्ध - नाम	कर्ता	निर्णय (वि.म. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र मख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६२२	६८८६ (१)	समरि-गुद्ध	गविग्वानिधि कुणभट्ट	१६ वी श०	१५X१०	१-८	
२६२५	६१६६ (२)	सत्रेग-वत्तीसी (मान वत्तीसी)	मानकवि	१८२४	२५X११	६-६	
२६२६	८४०४ (४)	सतरहभेदी-पूजा	साधुकोति	१६ वी श०	२०X१३	२३-३२	२ का १६१८
२६२७	८४२२ (१०)	मदया-सज्जाय		१८ वी श०	२३X२० ५	५१-५३	
२६२८	८४०० (८)	सदगुरु-गाम	मुनि मेघगज	गु० १८६४	१५X१३ ५	३६-३७	
२६२९	१०१८३ (२)	मनेह-तीला	जगमोहन	२० वी श०	२४ ५X१७	५३-६३	
२६३०	८८५७ (१) ३	सप्तरंगीकी-गीता-भाषा	जुगतानन्द	१६ वी श०	१६X१४	१४६ वा	
२६३१	६८३६ (४)	मन्तश्लोकी-गीता		गु० १८२२	१२X१०	५८ वा	कृति संस्कृत में है।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (चि. सं. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२८३२	०८३४ (३-५)	सप्तश्लोकी-गीता		गु० १८४५	१२x१५	२२-२४	पत्र संख्या २२ (ब) पर शिव-पार्वती एवं २७ (ब) पर कृष्ण व गणेश के रेखा- चित्र है। पत्र संख्या २५ पर 'एकश्लोकी भागवत' एवं पत्र संख्या २५-२६ पर 'एकश्लोकी महाभारत' है।
२८३३	१०६६७ (६)	सबद-माणिक-त्रोध	रागनरण	१८४१	१२x६	३८१-३६६	चोहूँ कृत बालकराम
*२८३४	६७२० (६)	सभाभूषण-भाषा	गगाराम	१६ वीं श०	२०x१५	७४-८५	२ का १७४० २ म्या सागनेर (जयपुर) सङ्गीत-शास्त्र का ग्रन्थ है।
२८३५	७८५७ (२)	सभात्रिलास	तुलसीदास	१६ वीं श०	२७ ५x१८	६३-६७	इस कृति में ६६ दोहे हैं।
*२८३६	१०११६	सभा-विनोद (रागमाला-भाषा)	पायदावेग पुत्र सगीवेग पुत्र योगवेग	२० वीं श०	२३ ५x१५	१-१६	शाहजहाँ के जामन-काल में रचित।

क्रम-सं.	ग्रन्थ-सं.	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकान (वित्त में)	माप (सं. मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
१०६३७	८३६३	सभासार नाटक	कवि रघुराम	१८४३	२३ ५५१२	१-२४	र का १७५७ लि क छजमत
२६३८	८५३७	सभासार नाटक	कवि रघुराम	१६०४	२४ ५४१३७	१-६५	लि क नक्षमीराम श्रीमाली लि स्था लाडणु
२६३९	६७२० (७)	सभासार नाटक	कवि रघुराम	१६ वी श०	२०४१५५	१-४२	र का १७५७
२६४०	१०१४७	समन रा दोहा आदि	समन	२० वी श०	२०४१५५	२-६२	पत्र सख्या १, ३ से ५ एव २५ से ५७ अप्राप्त । स्फुट पत्र ।
४२६४१	६५१७	समयसार नाटक	वनारसीदास	१७४८	२७४२१	१६५-१६५	र का १६६३ र स्था आगरा लि क ऋषि हेमराज लि स्था सादडी पत्र जीर्ण । अन्त में एक पद है ।

पन्नाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.सं. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६४२	६२२८ (४)	समयसार नाटक	वनारसीदास	१६ वीं श०	२५ x १४ ५	१-१६	छांटमा ५० कवित्त है।
२६४३	८५६३ (१)	समयसार नाटक	वनारसीदास	१७ ५३	१७ x १०	१-४८	र. का १६६३ लि. क जयचन्द्र
२६४४	८४०० (४६)	समेतशिखर-स्तवन	देवीचन्द्र	गु० १८६४	१५ x १३ ५	८६-६०	
२६४५	१०६८४	समै-सु-प्यार-सतसई	वसन्तराम	१८४१	२२ x १६ ७	१-३६	र. का १८३३ लि. स्था जोधपुर प्रति कीटविद्ध। पत्र सख्या ३७ - ३८ पर मतिगम कृत 'रसराज' का प्रारम्भिक अंश है। पत्र संख्या ३६-४१ पर रामदास के पद हैं।
२६४६	८४२२ (४)	सरस्वतीजी रो छन्द	शातिकुशल	गु० १७७६	२३ x १०	२५-२७	

क्र.सं.	गन्ध-नाम	कर्ता	तिथिकात (वि.त.से.)	भाप (त.नो.से.)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६४७	मनसा देव-देवजी भागा रा		१७६५	२४५१५५	६३-६५	गजानी, ब्रज, गुजराती, मारवाडी, हाडोती एवं दक्षिणी प्रादि प्राचलिक भाषाओं में मंदैये हे।
२६४८	मात सविता रा दृष्टा		गु० १८८२	१६११२	२२-२३	
२६४९	सार्दाजी अर अमलीरी स्त्री रो मवाद		गु० १८८२	१६११२	१३-१७	
२६५०	माध-पारम्भा	रामचरण	१८६१	१२४६	३५१-३८१	चोहूँ कृत मुरलीराम
२६५१	साध-वन्दना	पाशचन्द मुनि	१८६४	१५११३.५	२२-३५	७ ढालो युक्त।
२६५२	सारसप्त-पत्रिका		गु० १८६४	१५११३.५	६२-६४	कृति संस्कृत में है। अपूर्ण—प्रारम्भ मात्र।
२६५३	मिहामन-वत्सीमी, ध्यान पद्मीनी एवं हिनोपदेश तथा चन्दनमित्रियागिरी नो वान (सचित्र)		१६ वीं श०	२६५११८	१५२ कुल	चित्र संख्या-३२१ अपूर्ण। पत्र अस्तव्यस्त एवं मिश्रित।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५४	६७१७ (१)	सिंहासन-वृत्तीसी	महादेव पुत्र विट्ठलदास	१८५६	२३ ५x१६.५	१-६४	ति. क जती मयाचन्द लि स्या कल्याणपुरी वादशाह प्रकवर की आज्ञा से निर्मित । प्रारम्भ मे चगत्ताई पातशाह वावर आदि की कीर्ति वर्णित है । इस कृति के बाद ८ पत्रों मे 'राममहसनाम' (लिंगपुराण- गत) संस्कृत मे है ।
२६५५	६०५३	सिख-नख-वर्णन (तिलक टीका सहित)	मू० बलभद्र टी० मनीराम	१८६२	२१ ५x१६	१-६४	टी २ का. १८४२ उणियारा के राजा महसिंह की आज्ञा से रचित । पत्र सख्या ३ से ६ तक अप्राप्त ।
२६५६	८४०० (१८)	सिद्धाचल-स्तवन	जिनचन्द	गु० १८६४	१५ १३ ५	५७-५८	
२६५७	६६८२ (३)	सीख का संवेधा आदि		२० वीं श०	२५ ५x१२ ५	८-११	७ वा पत्र अप्राप्त । कविगद आदि के २८ छन्द है ।
२६५८	८३११	सीताजी की आलोचना		२० वीं श०	२६x१२ ५	१-१०	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६५६	८४२२ (१३)	सीमधर-आयोयणा-स्तवन	मल्लिदास शिष्य देवराज	गु० १७७६	२३x२०	७२-७७	
२६६०	८४२२ (१६)	सीमधर-पार्श्वनाथ-स्तवन	भक्तिनाथ	गु० १७७६	२३x२०	८५-८७	
२६६१	८४०४ (६)४१	सीमधर-स्तुति	भक्तिनाथ	१६ बी.श.०	२०x१३	७५-७६	गुटके के ग्रन्थिम २ पत्रों पर प्रतियों की शीप है।
२६६२	६२४१	मुखकरन-लता	राय गगनराम	१६ बी.श.०	२७x१६ =	१-६	र ता १८६६
२६६३	६२२८ (५)	मुखनिधान (मन्नादात्मक)		१८४१	२५x१४ ५	१-३३	कुल २७० छन्द है।
२६६४	६३१६	मुखनिवास	पति भोलानाथ	१६ बी.श.०	२०x१३ ५	१-३८	र ता १८३० 'नमः शिवाय' नाम भू' छन्द नतुरनिह प्रोहार्य। गम्पूर्ण संग्रह त्रि के वल्लो ने प्राप्त हुआ है पर मन- तानेन का ॥ मून नदी ना मकता है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६६५	६३०७	सुदामा-चरित्र		१६ वीं श०	१७ ५x११	१-१२	लि क अग्निहोत्री भाषमुनि कुल ७३ छन्द है। इस कृति के पूर्व के ५ पत्रों पर हिन्दी के पदादि एवं पश्चात् कुछ संस्कृत के श्लोक संगृहीत है।
२६६६	१०१३८ (२)	सुदामाजी की वारखड़ी		१६ वीं श०	१४ ५x१३ ५	१०-१८	
२६६७	६८३६ (८)	सुदामा-सार (चरित्र)		गु० १८२२	१२x१०	८६-१००	लि क लक्ष्मीराम
२६६८	८४२२ (४६)	सुनक्षत्रसाधु-संभाष	सहजसुन्दर	गु० १७७२	२३x२०	११५-११६	लि क अमरसागर
२६६९	६०४८	सुन्दरदासजी का अष्टक	सुन्दरदास दादूदयाल	१६ वीं श०	२५x१४ ५	१-११	१३ अष्टक है।
२६७०	६११५ (१)	सुन्दरदासजी की वाणी (सवैयाबद्ध)	सुन्दरदास	१६०१	१५x११	२-२५५	प्रथम पत्र अप्राप्त। लि क जयदेव लि स्था मागरोल

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स.से.)	माप (से.मी.से.)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६७१	६३३८ (५)	मुन्दरदासजी का सर्वैया (विशवास को ग्रन्थ)	मुन्दरदास	१६ वीं शताब्दी	१० ५ १६	६६-७५	अपूर्ण ।
२६७२	६५१८	मुन्दरदासजी का सर्वैया (वेदान्त प्रकरण)	मुन्दरदास	१८ वीं शताब्दी	२६ ५ ११	७-१२	अपूर्ण । प्रतिलिखित । अपूर्ण । पत्र जीर्ण ।
२६७३	६५५६ (३)	मुन्दरदासजी का सर्वैया	मुन्दरदास	१८ वीं शताब्दी	२८ १० ५	६-१०	
२६७४	६७४४	मुन्दरदासजी का सर्वैया	मुन्दरदास	१८ वीं शताब्दी	१६ ११ ५	१-१३७	निस्था सनेहडी पत्र गन्या ६-७ गम्राप्त । पत्र जीर्ण एवं कोटविन्द । १०६ पे मन्द गे प्रारम्भ ।
२६७५	८०१२ (२)	मुन्दरदासजी का सर्वैया	कवि राज मुन्दरदास	१८ वीं शताब्दी	२८ ११ ४	६-७७	
२६७६	६०२६ (१)	मुन्दरदासजी का सर्वैया	कवि राज मुन्दरदास	१७६२	२३ ४ १०	१-११	र. ला. १६८८ कवि रमाधिपति निरामो है । मन्दरदास जी का नाम मे रमा ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सें.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
#२६७७	६२५२ (३)	सुन्दर-शृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१७७४	२१ ५X१४	१-३२	र का १६८८— लि. स्था. राणा संग्रामसिंह राज्ये । कवि ग्वालियर निवासी है ।
२६७८	६७३० (२)	सुन्दर-शृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१८८१	१५X११	४६-१४८	र का १६८८ र. स्था. आगरा बादशाह शाहजहाँ की आज्ञा से रचित । लि. क ऋषि दयाराम
२६७९	६८३०	सुन्दर-शृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१९ वी श०	२३X१२ ५	८-७६	प्रारम्भ अपूर्ण । पत्र सख्या ७६ से ७८ पर 'द्वादशमास वर्णन' के ६ छन्द है ।
२६८०	१०६८२	सुन्दर-शृङ्गार	कविराज सुन्दरदास	१९ वी श०	२४ ५X११	१-१५	र का १६८८ २७१ वै छन्द पर्यन्त ।
२६८१	८४०० (४०)	सुमतिनाथ-स्तवन	पानचन्द सूरि	गु० १८६४	१५X१३ ५	८२-८३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ-नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६८२	८४०० (४२)	सुमतिनाथ गीत	पाशचन्दसूरि	गुं १८६४	१५x१३५	८४ वा	
२६८३	६३२३	सुमन्तप्रकाश (सुमनप्रकाश)	कवि भोलानाथ	१६ वी श०	२३x१७	१-३	२ का १८३७ कवि के वंशजों में प्राप्त प्रति। अपूर्ण — ३० पद्य मात्र। अगले ६ पत्रों पर स्फुट पद्य है।
२६८४	६३३७ (३)	सूर्य-स्तव		१६ वी श०	१६ ५x१३	१८-२३	कृति संस्कृत में है।
२६८५	८४०० (६)	सूरज गे डलो क	मेव क	गुं १८६४	१५x१३५	१६-२१	
२६८६	६३३७ (१)	सूर-पद्मावली (रागत्रय)	मुरदाग	१६ वी श०	१६ ५x१३	१-१६६	अपूर्ण। ६३६ पद्य है।
२६८७	८४२१ (३८)	मोलह-स्वप्न-मञ्जाय	अज्ञान	गुं १७७६	२३x२०	१०३-१०५	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (सं.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६८८	८४०४ (१)	स्नात्र-पूजा		१६ वी श०	२०X१३	१-७	
२६८९	८६२८ (२)	स्नेह-लीला	नन्ददास	गु० १६२६	१७X१२ ३	११६-१३५	
२६९०	९१०० (१)	स्नेह-लीला	जन मोहनदास	१६ वी श०	१७.५X११ ५	१-१५	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२६९१	८५६२ (५)१	स्फुट-कवित्त	कामीराम	१७६५	२४ ५X१५ ५	६७ वा	
२६९२	८५६२ (५)४	स्फुट-कवित्त	कविसार	गु० १७६५	२४ ५X१५ ५	६६-७०	
२६९३	८६६२ (५)७	स्फुट-कवित्त	अज्ञात	गु० १७६५	२४ ५X१५ ५	७२ वा	
२६९४	८५६२ (५)१४	स्फुट-कवित्त	अज्ञात	गु० १७६५	२४ ५X१५ ५	७८ वा	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
२६६५	८६६३ (३)	स्फुट-कवित्त (अरिल, छप्पय आदि)		१६ वी श०	१६११३५	५२-६८	
२६६६	८६६२ (५)६	स्फुट-कवित्त (छत्तीत राग का)		गु० १७६५	७४११५५	७३ वा	
२६६७	६२५२ (६)	स्फुट-कवित्त, दोहा-संग्रह		गु० १७७४	२१५११४	१-६	
२६६८	८५६२ (७)३	स्फुट-कवित्त (शृङ्गाणि)		गु० १७६५	२४५११५५	६५-६६	
२६६९	६७२० (८)	स्फुट-कवित्त-संग्रह	राधावल्लभ पुत्र गोस्वामी दयानाल	१६ वी श०	७०११५५	४३-७३	१४४ छन्द है। यस्तु मे गताराणा भोगमिह के गुण की परान्तिन परत छन्द है।
३०००	६२५४ (६)	स्फुट-कवित्त-संग्रह		१६ वी श०	१६५११३५	१३-१७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. मे)	माप (से.मी. मे)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३००१	८५६२ (७)१	स्फुट-कवित्त, सवैया	कविराम	गु० १७६५	२४ ५X१५ ५	६१-६३	
३००२	८५६२ (५)१२	स्फुट-गीत, दोहा		गु० १७६५	२४ ५X१५.५	७५ वा	
३००३	६६८१ (१)	स्फुट-दोहा, कवित्त, सवैया, कुण्डलियादि-संग्रह	देवीदास, कविगद, उदयराज, ईशगदाम, गुमान, तुलसीदाम, गिरधर कविराय, बुधराय, वृन्द, जमाल	१६ वी श०	२५X११ ५	१-७	लि क भक्तिसुन्दर
३००४	६७६८	स्फुट-दोहा-संग्रह		१६ वी श०	२३X१२	१-६	विषयवार दोहो का संग्रह है— तत्वसार, हीर-राभा, पत्री रा, बरसात रा एवं वानामासा रा ।
३००५	६२५२ (५)	स्फुट-दोहा, सोरठा	किसना	१६ वी श०	२१ ५X१४	३-४	ग्रन्थ में आलम कृत सवैया है ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. में)	माप (से.मी. में)	पत्र संख्या	विशेष ज्ञातव्य
३००६	६२४३	स्फुट-पद	राय अमृतराम	१६ वीं श०	२७x१६	१-१०	२० का १-६६
३००७	६२६० (५)	स्फुट रसायन-विधि		१६ वीं श०	२०x१४	३६८-३६९	पत्र संख्या २८३ पर भी रसायनविधि के साथ सबन्ध १८१६ में सदाशिवराव भाऊ साहव के साथ गूट में जो घल मान गया उसकी विगत दी गई है।
३००८	८५६२ (१)१	स्फुट-सर्वाया	वृजनाथ	१७८५	२४x१५x५	१ ला	लि. क. गुनावचन्द्र प्राग्भ में 'पणन या गुनावली' के १० प्रश्न हैं।
३००९	८५६२ (१३)४	स्फुट-साखी		१७६८	२४x१५x५	१६ वा	लि. क. पनोली नीलकण्ठ प्रनोपचदोत
३०१०	१०१४२ (१)१-६	स्फुट-स्तुति-संग्रह	कविचन्द	२० वीं श०	२२x११x६	१-५	इसमें राम, वाचन प्रवतार, विष्णु, गणेश, गुरु, भगवती, हनुमान, जिन, पशु पादि की स्तुति है।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	लिपिकाल (वि.स. से)	मात्र (सं.मो. से)	पत्र सख्या	विशेष ज्ञातव्य
३०११	१०६७१ (५)	स्वरूप-निर्णय		१६ वी श०	२४x१३५	२३-५७	पुष्टिमागीय ग्रन्थ ।
३०१२	८३७२	स्वरोदय-विचार	चरणदास	२० वी श०	२१५x११५		लि क दलीचन्द
३०१३	६६८२ (२)	हसादे राया रो सिलोको, आदि		२० वी श०	२५x१२५	२-६	७ वा पत्र अप्राप्त ।
३०१४	६७३२ (२)	हठ-प्रदीपिका (सिद्धान्त मुक्तावली)	आत्माराम योगिन्द्र	१८६६	१७x१२५	१-२६	कृति संस्कृत में है । लि क रामदास पत्र सख्या ३० पर सेवादास कृत पद्य है ।
३०१५	६७३२ (३)	हठ-प्रदीपिका (सिद्धान्त मुक्तावली)	आत्माराम योगिन्द्र	१८८६	१७x१२५	१-७३	कृति संस्कृत में है । लि स्था लाव्या
३०१६	६८६६	हमीर-रासो	महेश कवि	१६ वी श०	२०x१६	२-३४	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
*३०१७	६४३२ (१)	हमीर-रासो	महेश कवि	१६ वी श०	२२५x१७	१-२७	लि क नाजर नैनमुख

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ - नाम	कर्त्ता	तिथिकाल (वि.स. मे.)	माप (से.मी. मे.)	पत्र सन्ख्या	विशेष ज्ञातव्य
३०१८	८४२७ (१)	हरबोल चितावणी	सुन्दरदास	१६ वीं श०	१०x६५	३-६	प्रथम ७ छन्द अप्राप्त ।
३०१९	६११५ (३)	हरबोल चितावणी	सुन्दरदाम	१६ वीं श०	१५x११	२६४-२६८	
३०२०	८६६३ (५)	हीयहुनास रा दोहा		१६ वीं श०	१६x१३५	७५-८१	गगचन्द्र । मूल ७० दोहे हैं ।
							ग्रन्थांक ७८५६ से १०६८८ तक का विवरण नमोन्नत ।

परिशिष्ट १

कतिपय विशिष्ट चिह्नित * ग्रन्थों के उद्धरण

५६

१२६०३^१

अवतारचरित्र

प्रारम्भ — श्री गणेशाय नमः । श्री सरस्वत्यै नमः । श्री कृष्णाय नमः ।
श्री गुन्म्यो नमः । अथ श्री अवतारगीता अवतारचरित्र भाषा
वारहट नरहरदासेन विरचित गणेश स्तुति ।

गुण साटक

मु डा दड प्रचड मेक डसन, मद गध गल्लस्थल ।
सिद्धारुण तु ड मडिन मुख, भ्र गेस गु जारव ॥
यपुर सकर धार सार सगण, प्रारभ अग्रेस्वर ।
त सतत सदन सफल सकल, वरदाय लबोदर ॥ १ ॥
(सरस्वती एव गुरुदेव स्तुति के बाद . . .)

आर्या (आर्या)

गणपति ग्यानी ज्ञान गु न अप्यन ।
सरसति सुदति सुमति समप्यन ॥
गुर परसाद पाइ बर्दी धन ।
भूत भाव जुग जुगति वखान ॥ ४ ॥
इति चतुर असतुति सपूरणं ।

कविरुवाच

दूहा

कवि परिचय — चारन जाति जु वारहट, नरहर मति अनुसार ।
मैं सागर पैर न लयो, कहन चरित अवतार ॥ १ ॥
रुद्रस पचम विरचि चव, सेष सहस मुख सग ।
नित्य रसना जस कहत नव, ओर न लहत अभग ॥ २ ॥

१ प्रथम सरया क्रमाङ्क और द्वितीय सख्या ग्रन्थाङ्क-सूचक है ।

रसना एक मुस्वाद रस, मय दिन रहत संगेद ।
 कितोक तिहि हरजम कहू, वरगत नेति गवेद ॥३॥
 जो आपन असमस्त्य ह्वै, कहिये मति अनुना ।
 पावन दीन दयाल प्रभु, कृत मानत करतार ॥४॥
 जथा सुमति नरहर मुकति कहि अवतार रस रूप ।
 जिहि जिहि गथनि जे सुने, रिप प्रणीत अनुसू ॥५॥
 नरहर प्रभु वाराह भी, अवनि उधारन हेत ।
 निरमूल निदिन जात कुल, देह सत्य मम मेत ॥६॥
 उनी कवि लघुता वरनदो नाम ॥ (पञ्चाङ्क ३ ग (ए))

अन्त —

चौबीस अवतार नाम ।

कवित

विसद आदि वाराह, भग सनकादिक स्वांगी ।
 जथा जय अवतार, नर जु नारायण नामी ॥
 कपिल गु दत्तात्रेय, विष्णु ध्रुव प्रभु हत्तीवा ।
 कुरम सफर नरसिंघ, द्विज गु वामन हर्दिना ॥
 हूअ हस मन्वन्तरि घन्वन्तरिहि, जामदग्नि जय व्यान जय ।
 रघुनाथ कृष्ण अर वोध प्रभु, भुव एते अवतार भय ॥१॥
 विदित तीन अर बीस, लए अवतार अग जीय ।
 सत त्रेता द्वापर सजोग, कारुण्य रूप कीय ॥
 अव कलिजुग के अत, हेत अवतार जु ह्वै हैं ।
 धर्म कर्म मख ध्यान, जवै निरमूल नसै हैं ॥
 भवतव्य पुन्य विस्तार भुव, हठि अनेक जवनेस हनि ।
 अखिलेस स्वेत अरु हय विहित, प्रभु कलंक त्रयलोकपति ॥२॥

यह जु प्रकार अवतार, भए भवतव्य अभय भूव ।
 चिदानन्द चौबीस, हेत अदभूत देह हूव ॥
 दुष्ट दान दम दया, रूप रस रोष जु रजीय ।
 भई भूअ भाराक्रांति, तव ही भुव भार सु भजीय ॥

द्विज वेद सहाइक धर्म दृढ, हित त्रिलोक वंदित हरे ।
मुभ नाथ मुखद आगम सहति, कवि नरहर वदन करे ॥३॥

रचनाकाल - सतरह सै तेतीस, नियत सवत उत्तरायन ।
रितु ग्रीष्म आषाढ, मास पख कृष्ण मुनावन ॥
वनि आठम तिथि भीम, वार सिधि जोग समगल ।
पहुकरन्य प्रसिद्ध, मध्य पूजित भुव मडल ॥
अवनार चरित्र चौवीस ऐ, विजय मुजस जग वित्थरघौ ।
कवि दास दास नरहर सु कवि, कृत उधार अपनो करचौ ॥४॥

छंद झपताल

ग्रन्थ माहात्म्य :—

अवनार गीता ईस्वरी । भक्ति कवि नरहर करी ॥
मख मुक्ति मारग मानिये । सोपान स्वर्ग मु जानिये ॥
यह सहित सरवा ऊचरे । पुनि सो न भव वधन परे ॥
सम साध जी वाचै सुने । अति प्रेम नेमहि आपनै ॥
सोइ सत जोति समाइ है । पुनि पुनर्जन्म न पाइ हैं ॥

झुहा

छंद सख्या- सतर सहस अरु आठ सै, इकसठ ऊपर आन ।
छंद अनुष्टुप करि सकल, पूरन ग्रन्थ प्रमान ॥१॥
मैं जोइ सुन्यौ पुरान मह, क्रम सोइ वर्णन कीन ।
श्रोता पाठक हेत सौ, पावे मुक्ति प्रवीन ॥२॥

पुष्पिका-

इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्विंशति अवतार चरित्रे

सपूर्ण । भापा वारहट नरहरदासेन विरचित । सवत १६१७ श्रावण
शुद्ध १३ चद्रवासरे ग्राम धवोला मध्ये पट्या वेणीराम मुत
वशीधरेण लिखितं । गांम नवागाम नाम इयारी आडा कोर-
उदेसिधजी तत्पुत्र चडीदानजी पठनार्थं । श्रुभं । छ।

५६ १२३०३ अवतारचरित्र सचित्र

गुटका सजिल्द । हाथ के बने मोटे कागज पर मुर्तील एवं मुवाच्य लिपि में लिखित । चित्रों की सुरक्षार्थ पत्रों के मध्य मलमल का कपड़ा रखा गया है ।

चित्रों का विवरण निम्न प्रकार है —

शीर्षक/भाव	माप सेंमी में	पत्र संख्या
१ चतुर्भुज गणेश मय ऋद्धि-निद्धि एव गणादि के	२६ x २८	प्रथम पत्र से पृष्ठ
२ ब्रह्मा एवं सनकादिक अवतार	२३ x ११ ५	८ बी
३ राजा परीक्षित, मुत्तदेव ऋषि एव दोनों ओर ऋषिगण	२३ x ११	४ बी
४ यम-अवतार	२३ x १६ ५	५ ए
५ नर-नागायण अवतार	२३ x १३	५ बी
६ कपिल अवतार एव माता देवहूती	२३ x १४	७ बी
७ दत्तात्रेय अवतार— दत्तात्रेय, अप्सरा एव कामदेव	२३ x १० ५	८ बी
८ ऋषभदेव अवतार	२३ x १२	९ ए
९ भक्त ध्रुव एव गरुडवाही भगवान विष्णु	२३ x १४	१२ ए
१० राजा पृथु मय गनी के एव गो-स्वरूपा पृथ्वी	२३ x १५ ५	१५ बी
११ हयग्रीव अवतार एव हयग्रीव दानव युद्धमुद्रा में	२३ x ११	१६ बी
१२ कूर्म अवतार मय चौदह रत्नों के	२३ x १३	१८ बी
१३ मत्स्य-अवतार मय सखामुर के युद्धमुद्रा में	२३ x १२	२० ए
१४ नरसिंहा अवतार	२३ x १६	३४ बी

शीर्षक/भाव	माप सें.मी. में	पत्र संख्या
१५ वामन अवतार मय वचावली— रानी, राजा वली एवं गुकाचार्य के	२३x१८ ५	३७ ए
१६ हरि अवतार गज को ग्राह के फदे से छुड़ाते हुए	२३x१४ ५	३६ बी
१७ हस्ता अवतार मय ब्रह्मा के	२३x१३	४० बी
१८ मनुअवतार मय स्वयम्भू मनु के	२३x१३ ५	४२ ए
१९ धन्वतरि अवतार, नाडी परीक्षा करते हुए	२३x१३	४२ बी
२० परशुराम अवतार मय कामधेनु, जमदग्नि ऋषि तथा रेगुका के । राजा सहनार्जुन एवं पशुराम युद्धमुद्रा में	२३x१६ ५	४६ बी
२१ वेदव्यास अवतार व्यासजी, सुखदेव (शुकदेव) तथा व्यास के कोप से सुखदेव वृक्ष में समाते हुए	२३x१४ ५	४८ ए
२२ रामचन्द्र जन्म (चतुर्भुजस्वरूप) मय माता कौशल्या के	२३x१८.५	६१ ए
२३ वाली वध— वाली - सुग्रीव युद्ध करते हुए, राम का तीर मारना तथा वाली की मृत्यु पर शोकाकुल ताग केश नोचती हुई ।	२३x१८	१२३ बी
२४ गिद्धराज सपाति द्वारा वानरो को सीता का पता बनाना, अशोक वन में हनुमान द्वारा सीताजी के सम्मुख मुद्रिका गिराना तथा लौटने से पूर्व यात्रा सांगते हुए ।	२३x१६ ५	१४७ बी

शीर्षक/भाव	माप सेंमी में	पत्र संख्या
२५ राम-लक्ष्मण रावण से युद्ध करते हुए ।	२३x२०.५	१६७ ए
२६ राम के अयोध्या आगमन पर स्वागत समारोह की भांकी ।	२३x२०	२१४ ए
२७ श्रीकृष्ण बाल-लीला— पूतना, अघासुर, केशी, व्रणासुर, वेनुकासुर आदि असुरों का वध तथा वसुदेव द्वारा कृष्ण को उफनती कालिंदी से गोकुल में लाना आदि ।	२३x१२.५	२४४ बी
२८ रामचन्द्र राज्याभिषेक की भांकी ।	२३x१५	२४८ बी
२९ श्री कृष्ण का स्वधाम गमन— मृगाकार चरणाविद देखकर व्याघ्र का बाण मारना तथा आकाश में (ब्रह्मा एवं शिव) देवताओं द्वारा स्तुति करने का भाव	२३x१८.५	
३० बुद्धा अवतार	२७x२७.५	३२५ ए
३१ कल्कि अवतार	२३x२०.५	३२७ बी
३२ वराह अवतार	२६x२८.५	३२६ ए
३३ शेषशायि आदिनारायण (विष्णु) मय लक्ष्मी एवं नाभिनाल पर ब्रह्मा तथा नमुद्र में मत्स्य, कच्छप, मकरादि स्वच्छन्द विचरण करते हुए चित्रित किए गए हैं ।	२६.५x२५	३३० ए

सभी चित्र एक ही व्यक्ति द्वारा जोधपुरी कलम में बनाए गये हैं । चित्रों में भावों के अनुरूप ही रंगों का चयन कर चित्रकार ने चित्रों को अधिक प्रभावोत्पादक बना दिया है । चित्रकार के सम्बन्ध में ग्रन्थ में कुछ भी ज्ञातव्य नहीं दिया गया है ।

१५३ १०६८३ उपदेशी ढाल संग्रह (पत्रवार विवरण)

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एव र.स्था
१	पञ्चजिन स्तवन	लावण्यसमय	१/६	
२	उपदेशी पद— जोवनीया री मोजा फोजा जाय नगारा देती रे	दयारत्न	१/५	
३	धर्मरुचि सज्भाय— चम्पानगर निरोम मुन्दर	रत्नचन्द	२/१५	१८६५ जोधपुर
४	समतारस ती सज्भाय	रत्नचन्द	२/५	
५	विष्णु उपदेशक पद— किउ विषया रस निजर भरे तेरो पलक पलक आउ जाय रे	लालचन्द	२/४	
६	चवदै-स्थानक सज्भाय		२/१०	
७	नववाडि को स्तवन	हरिसिध	२/६	१८७६ मायपुर
८	पचतीर्थ नो स्तवन		२-३/६	
९	धर्मरुचि स्तवन		३/६	
१०	ढाल—अमोखा भमरजी हो सायवा भाला द्यु घर आव (दे०)	चोधमल	२/२	
११	ढाल—इम धनो धण ने परचारें (दे०)		३/२१	
१२	वातपचवीसी— दुर्लभ मनुष जमारो पाय	ऋषि जैमल	३-४/२८	
१३	दृष्टात—वसतपुर नामे नगर जित सत्रुनिहा राय		४/१४	
१४	सील रा कडा— अपूर्व जीव जिण धर्म धाम्यो	ऋषि रायचन्द	४-५/२५	१८३३ मेरना

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एव आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द संग्रह	र या पद्य र म्वा.
१५	सामायक नी सज्भाय	कुशालचन्द्र	५/१६	१८६४ करेडा
१६	मेतारज री लावणी	हीराचन्द्र मिश्र	५-६/६	१८१४ रूपजी
१७	पाचमा-आरा नो रत्नवन	जैमल	६/१३	
१८	सोले सत्या रो स्तवन		६/५	
१९	विजेकु मरजी री लावणी	ऋषि लालचन्द्र	६-७/१६	१८६१ शिष्य दौलतराम कोटा(रामपुरा)
२०	नेमजी री लावणी गाफल मति रहरे मेरी ज्याण	विनेचन्द्र	७-८/४२	
२१	घन्नाजी री लावणी	विनेचन्द्र	८-९/२०	
२२	उपदेशी पद— कर गुदरान गरीवी सै, तन धर सुखिया कोई न दीठा, सतो भाई कूए भाग पडी, माया के मजूर की कहा जाणै बदगी, चावडा री पूतली रे चावै वीडा पान, तू माहरो बावो रे बावो, थारो मिट्ठा न आवो जावो ।	कवीरदास	९-१०, १४-१५	
२३	उपदेशी पद	रूपचन्द्र	१०	
२४	”	आनन्दधन	१०-११, १५	
२५	”	नवल	१२	
२६	”	वनारसी	१२	
२७	”	लालचन्द्र	१२	
२८	”	मान	१२	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्त्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र. का. एवं र. स्या.
२९	उपदेशी पद-	समग्रमुन्दर	१२, १४	
३०	"	रूपविजय	१२-१३	
३१	ढाल १ ली अलवेली (दे०) पहिलौ दडक नर्कनो रे लाल	ऋषि जैमल	१३/११	
३२	ढाल . अलवेली (दे०) आज एकादशी है नणदल मूर्त करी मुख रहियै ।	उदेरत्न वाचक	१३/७	
३३	ढाल रे माधव डम बोलै (दे०) दया रणसीगो वाजियी रे		१३-१४/३७	
३४	ढाल . सोना केगे वेहडो (दे०) जिनमनवन	पद्मविजय	१४/७	
३५	उपदेशी पद (रागवट्ट)	रामजन	१४-१५	
३६	"	आनन्दधन	१५	
३७	"	गरीबदास	१५	
३८	"	लालचंद	१५	
३९	"	शाहहुसेन फकीर	१६	
४०	ढाल १ ली . विछीयानी (दे०) अहो सिध सिला सगला सीरे	रायचंद जिप्य जैमल	१६/१७	१८३० फलोदी
४१	ढाल २ री हमीरीयानी (दे०) श्री गोतम स्वामी पूछा करे	"	१७/१६	
४२	ढाल ३ री : अजितनाथजी रावा रानी (दे०) प्यारो मोह नगारो राज	"	१७/१३	१८४० पीपाड़
४३	ढाल ४ थी अर्णक मुनिवर (दे०) पाचू डूरी हो अहि निस बस करे	विजेदेव मुनी	१७/८	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं श्रावजी)	वर्तिका	पत्राङ्क/ छन्द मन्त्रा	र का पत्र र. मन्त्रा
४४	ढाल ५ वी एक दिन घोडा हाशिया रे	लावण्यमय	१८/१३	
४५	ढाल ६ वी रज्ज्यानी (दे०) म कर हो जीव प- वात दिन रात तु		१८/६	
४६	ढाल ७ वी हमीरीयानी (दे०) चावत म करो प- तणी		१८/५	
४७	ढाल ८ वी इण स्थान्य मिद्र रे चदग्वे० (दे०) माध पणा को मारग तेने	त्रामकरण	१८/१३	१८७२ जोवाणे
४८	ढाल ९ वी अलवेग्या री (दे०) च्यार पोहर रो दिन हुवे रे	रायचन्द	१८-१६/११	
४९	ढाल १० वी रसीयानी (दे०) सुगण मनेही रे सामळ लीमडी	आनन्द मुनि	१९/१०	
५०	ढाल ११ वी नणदल री (दे०) मत कोई रमजो जुवटे चतुर तिके नर नार हो	कुमालचद	१९/११	१८७१ पाली
५१	ढाल १२ वी नवकार मंत्र नो ध्यान धरो (दे०)		१९/११	
५२	ढाल १३ वी करो दान सीयल ने तप भावे (दे०) देवगुरु धर्म री पारख करो		१९-२०/१३	
५३	ढाल १४ वी (सारङ्ग राग) देव तणो आचार न जाणे		२०/६	
५४	ढाल १५ वी घमाल मात पिता सुत वधवा हो		२०/८	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं श्राकडी)	वर्ति	पत्राक/ छन्द संख्या	र का एव र. स्था
५५	ढाल १६ वी जिनवर गणि मुनिवर ने केहरे (दे०) आउखो दुटा ने साधो को नहि रे		२०/८	
५६	ढाल १७ वी मिनख जनम दूल हो लह्यो	जमल	२०-२१/२७	
५७	ढाल १८ वी : ताणा कोन तणावे रेजा कोन वरोगा (दे०) गुर का कह्या मान ले रे		२१/६	
५८	ढाल १९ वी नवकार मत्र रो ध्यान० (दे०) गुर अमृत जीम लागे मीठा	रायचन्द	२१/१६	१८४० खेडा साडियेगाव
५९	ढाल २० वी पुन्य जोगे ग्यानी मोने गुर मिलिया	रायचन्द	२१-२२/१४	१८४२ मगडाणा
६०	ढाल २१ वी ते गुर मेरे उर वसे, ते भव जलधि जिहाज		२२/१३	
६१	ढाल २२ वी हरयसरी (दे०) बोहोत निहाल किया हो परम गुरु	रायचन्द	२२/१३	
६२	ढाल २३ वी गयोरो जोवन (दे०) गुरु समभाय ने सजम दीनो	„	२२/२१	१८४१ जेनारण
६३	ढाल २४ वी जोर वण्योजी आजरो नेमीश्वर (दे०) सवर रो सिणगार धर्मप्रेम पीठीजी	„	२२-२३/१३	१८४१ पीण्ड
६४	ढाल २५ वी मोटा थे तो चतुर सुजाण	गोरधन	२३/८	

नमाङ्क	कृतिनाम (देगी (तर्ज) एवं आकडो)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एव र स्या
६५	ढाल २६ वी चौपई सूधे मन मुणजो नर नार	आणदविमल	२३/२२	
६६	ढाल २७ वी नवकार मत्र री(दे०) दुलहो मिनख जनम लाधो	रायचन्द	२३/१२	
६७	ढाल २८ वी कुट कपट कर माया मेली		२३-२४/१२	
६८	ढाल २९ वी देवर पूर खडा रे रेलो काम धर्म धरेगा (देगी)		२४/१०	
६९	ढाल ३० वी मेरा माह्व सगुण सोभागी	नयविमल	२४/९	
७०	ढाल ३१ (३२) वी आदर जीव खिम्या गुण आदर(दे०) किण मुं बाद विवाद न कीजे	रायचन्द	२४/१८	१८३३ मेडता
७१	ढाल ३३ वी मन मेला रे तन क्या धोया		२४/७	
७२	ढाल ३४ वी श्री कल्याण गुर मोम गी मार	ऋषभदास	२४-२५/९	
७३	ढाल ३५ वी प्रथम नमु सह गुरु नाम	लालविजय शिष्य शुभविजय	२५/५	
७४	ढाल ३६ वी जोन्वण्यो ३ जी आजगो (दे०) भेद माह्व का दोय भान्या		२५/६	
७५	ढाल ३७ वी लोटी वाता मोटी धावे		२५/७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एव र स्या.
७६	ढाल ३८ वी चेतन छाँडो यह रीत	विनोदीलाल	२५/२१	
७७	ढाल ३९ वी नर माया काये कु जोडी रे(दे०) समकृत ने चोखी आराधे	जैमल	२५-२६/६	
७८	ढाल ४०(४१) वी . नाह लीया विहूणी (दे०) प्रीतडी न कीजे हे नारी परदेशीया रे	समयसुन्दर	२६/५	
७९	ढाल ४२ वी चेडो महाराज रे (दे०) एक कनक अरु कामणी परदेशी रे		२६/१०	
८०	ढाल ४३(४४) वी वीर जिणैसर गोतम ने कहे		२६/६	
८१	ढाल ४५ वी . सुण वहिनी प्रिऊडो परदेशी (दे०) डम सतगुरु जीव ने समझावे		२६-२७/२१	
८२	ढाल ४६ वी चन्द्रायणा नवघाटी उलगने रे पायो नरभव सारो	हीरो	२७/७	
८३	ढाल ४७ वी तु गीया गिर सिखर सोहे (दे०) मोह मद की नीद सुतो जाग वदे जाग वे	सेवग	२७/१३	
८४	ढाल ४८ वी वीर मती कहे रे वहू(दे०) सुण २ सुगण तू जीवडा	पद्मविजय	२७/१४	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एवं र स्था
८५.	ढाल ४६ वी कर्म ममो नही कोई (दे०) चैत्य मंदिर माहे वृक्षज उगो	पासचंदसूरि	२७-२८/१६	
८६	ढाल ५० वी दुल हो नर भव भवे भमता	„	२८/१५	
८७	ढाल ५१ वी अग्रिहत सिद्ध आचारज मोटा	जैमल	२८/१६	
८८	ढाल ५२ वी भला पधारचा मेरे पूज जी (दे०) रतन चितामण जेहवो	ऋषि आसकरण	२९/२१	१८६३ नागोर
८९.	ढाल ५३ वी नित करू साधूजी ने वनणा (दे०) डण काळ रो भरोसो भाईरे को नही		२९/१४	
९०	ढाल ५४ वी पोते पुन्य हूवे जेहने, दुख नेडो नही आवे तेहने	रायचन्द	२९-३०/२८	१८३५ जोधपुर
९१	ढाल ५५ वी राणी कहे नटराज आ० (दे०) वैठी साधा रे पामक	मोतीचन्द	३०/३०	१८५३
९२	ढाल ५६ वी सामीजी सादर सुणो विनती	रायचन्द	३०-३१/१८	१८४२ पीपाड
९३	ढाल ५७ वी नवकार मत्र तो व्यान धरगे (दे०) नूत्र मे दग मुन दारया दगमे ठाणे ज्यारा नाम भास्या	रायचन्द	३१/१२	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एन आंकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एन र स्था
६८	ढाल ५८ वी आदनाथ रो ननणजी (दे०) धर्म पावे तो कोई पुनवन पावे		३१/६	
६५	ढाल ५६ वी म्हारो गुर दीठा दील हूवे (दे०) तिर्थकर चोवीसे ध्यावो	रायचन्द	३१/१०	
६९	ढाल ६० वी . तृष्णा तुग्णी हे तु व्यापार हि जग माय (दे०) जव ही उसकी बात वणावे		३१-३२/१७	
६७	ढाल ६१ वी चौपई री अस्त्री ने दु ख कहा अनेक	रायचन्द	३२/३५	१८४८ रायपुर
६८	ढाल ६२ वी केल करावे रे हाथीयो (दे०) एक एक मानवी एहनी		३२-३३/२१	
६९	ढाल ६३ वी भूलडा स्याने (दे०) इण ससार मे थिर नहि कोड	चोथमल	३३/८	
१००	ढाल ६४ वी एतो जुग छै प्रतक कारमो		३३/७	
१०१	ढाल ६५ वी भूलडा स्याने फिरो (दे०) दिन उगे तू धवे लागो		३३/६	
१०२	ढाल ६६ वी पाडली पूररी सेरीया भमता (दे०) वीस सखी री टोली मील ने	गोरधन	३३-३४/२३	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एवं र स्था
१०३	ढाल ६७ वी काची कली अनार की रे हा० (दे०) इथर माणस रो आउखो रे हा		३४/६	
१०४	ढाल ६८ वी अलवेल्यारी(दे०) आद अनाद रो जीवडो रे लाल		३४-३५/२५	१=३५ जोधागो
१०५	ढाल ६९ वी नवकार मत्र रो ध्यान धरो(दे०) इद्र ने वले इद्राणी, ज्याने ही काल लपेटे आणी	रायचन्द	३५/१५	
१०६	ढाल ७० वी नवकार मत्र (दे०) पुन जोगे नर भव लह्यो ढाणो	„	३५/२४	
१०७	ढाल ७१ वी गुर विन ग्यान नही (दे०) पुन जोगे गुरु मिलीया भारी	„	३५-३६/२०	फतोदी
१०८	ढाल ७२ वी गुर विन० (दे०) मात पिता वह ने भाई जाणो स्वारथ री सव सगाई		३६/११	
१०९	ढाल ७३ वी कलमी री जोड री(दे०) मोह मिथ्या नरी नीद मे- जीवा मुनो काल अनन्त	जैमल	३६-३७/२३	
११०	ढाल ७४ वी नीलावटीनारी तथा पनारी (दे०) ननगुन मानो सीख		३७/१५	
१११	ढाल ७५ वी तुम पन वानी २ (दे०) अलगी रेहनी हे रेहनी		३७/६	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं प्राकडी)	वर्त	पत्राक/ छन्द सरदा	र का एव र स्या
११२	ढाल ७५ बी आवे काल नपेटा लेतो(दे०) कदे हूवो गोजदर साहो रे	जैमल	३७-३८/२६	
११३.	ढाल ७६ बी नायक मोह नचावीयो	जिनराज	३८/५	
११४.	ढाल ७७ बी . मारा स्वामी हो मुण सीतलनाथ (दे०) थे मुणजो हे आरजीया एम	रायचन्द्र	३८/२२	१८३२ अहिपुर
११५	ढाल ७८ बी दोषा सडली थुत अति भलो सिंघ सकल आधार		३८-३९/७	
११६	ढाल ७९ बी होली री—राग वसत ऐसे मुनी राज छड काय के पीहर खेलत होरी सदइया	विनेचन्द्र	३९/१४	'जवू विच जोरी'
११७	ढाल ८० बी : वोलो २ जी म्हारी मगी नणदरा वीर(दे०) सुमत सखी डम वीनवे रे		३९/७	
११८.	ढाल ८१ बी चतु विचार करो ने देपो (दे०) नेम सरीखा वादण आवे	रायचन्द्र	३९/१५	१८३३ वीसलपुर
११९	ढाल ८२ बी . ते मुझ मिच्छामि दुक्कड(दे०) भूलो मन भमरा काइ भमे	महमद	३९/१२	
१२०	ढाल ८३ बी खटमलीयो मेवासी(दे०) अभिमान म करजो कोड		३९-४०/७	

क्रमसङ्ख्या	कृतिनाम (देणी (तर्ज') एव आन्धी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सरमा	र का एव र म्था
१२१	ढाल ८४ वी साधू निर्वद भापा बोलजो (दे०) साधू धन ते जीता मोहणी	आसकरुण	८०/२०	१८३२ नागौर
१२२	ढाल ८५ वी ऋषभ जिणसर प्रीनम माहरो (दे०) मूरख जीवडा रे गाफल मत रहे		४०/१२	
१२३	ढाल ८६ वी ऋषभ जिणसर तुमने ध्याड (दे०) मम कर जीवडा रे महारो महारो	जमल	४०-४१/१३	
१२४	ढाल ८७ वी नदी जमुना के तीर उडे दोय पषीया प्रीड चाल्या पग्देस (दे०) आ देही असारक हाड ने चर्म री	सीयल	४१/२१	
१२५	ढाल ८८ वी कोयल पर्वत धू धलो रे लाल (दे०) सूतर भगोती सतक पै लडे रे लाल	रायचन्द	४१-४२/१७	
१२६	ढाल ८९ वी हिंडो हाले रे (दे०) ओ जीव काल अनादी हलीयो	लालचन्द	४२/६	१८७६ अजमेर
१२७	ढाल ९० वी गोरी दिल वसे जीदवो (दे०) जेन धर्मे पायो दोहिलो		४२/६	
१२८	ढाल ९१ वी निहालदे रा गीत री (दे०) समकृतधारी सुध मति साधू गुणारी माल	चन्द्रभाण	४२/१६	१८६३ फतेपुर
१२९	ढाल ९२ वी कमखारी (दे०) जोवन वय माहे जोर जालम वण्यी	रायचन्द	४२-४३/९	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं प्राकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द संख्या	र का एवं र त्या
१३०	ढाल ६३ वी . तेमुज मिच्छामि दुक्कड (दे०) काया रे वाडी करमी सीचता सूके	रतनतिलक	४३/६	
१३१	ढाल ६४ वी . सूत्र भगोती गतक(दे०) पुन्य जोगे नर भव लह्यो	रायचन्द	४३/१६	१८३१ पाली
१३२	ढाल ६५ वी : वाहा वणायो रे वीजणो (दे०) डण विपय थकी डूवा घणा		४३/१३	
१३३	ढाल ६७ वी नवकार मत्र रो ध्यान घरो(दे०) सतगुरु उपदेस घणो ही देवे		४३ ४४/१४	
१३४	ढाल ६८ वी श्रावका चित्त चोपी करो (दे०) जिण जल माहे माछली व्याड	कवीर	४४/७	
१३५	ढाल ६९ वीं डोगी मोरी आवे रे रसीया कर तले (दे०) साधूजी रो मारग रे कंठण कह्यो केवली	रूपचन्द	४४-४५/४३	
१३६	ढाल १०१ वी . कूसल मुनिवर देवे देसणा जी		४५/१२	
१३७	ढाल १०२ वी . चेत चेत मन गाफल मत रहे		४५/६	
१३८	ढाल १०३ वी . आतम राम सयाणा	माणकदेव	४५/८	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आंकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सरमा	र का एवं र. रया.
१३६	ढाल १०४ वी नवकार मत्र गो ध्यान धरो (दे०) इण जग माहे केड नर नारी, जोगी जती ने वले भेख धारी	रायचन्द	४५-४६/१०	१८४० पीपाड
१४०	ढाल १०५ वी मुण रे भाई तेरा कीया ते पावेगा	जालम	४६/६	
१४१	ढाल १०६ वी आघा आप पधारो पूज्य (दे०) जुग मे जोर मुग्गी रे लाल	ऋषि रायचन्द	४६/१४	१८५२ कृचेरा
१४२	ढाल १०७ वी सघ आयो रे सेत्रु जाजी को (दे०) होरी खेलो रे भविक मन थिर करके	रूपचन्द	४६/५	
१४३	ढाल १०८ वी लेखो वेठो लोभे लागे		४६/६	
१४४	ढाल १०९ वी अव मन मेरा है मुन सुन सीख सयांणी		४६-४७/५	
१४५	ढाल ११० वी चालो सहेल्या आपा भेरु ने मनास्या है (दे०) भाव पचीसी जोड़ भारी आगम ने अनुसारी	चन्द्रभाण	४७/२५	१८१८ फत्तेहपुर
१४६	ढाल १११ वी प्यारो मोहण गारो राज (दे०) भवसागर मे भटकत र	रामचन्द	४७/१३	
१४७	ढाल ११२ वी चउपईनी पोते पाप हवै जेहने	रायचन्द	४७-४८/२५	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एवं र स्था
१४८	ढाल ११३ वी गढ सुरत को कारीगर आयो		४८/११	
१४९	ढाल ११४ वी एक सुणजो हे मारी बाई वेनडीया		४८/१५	
१५०	ढाल ११५ वी चीतोडी राजा रे(दे०) केइ खोल उतारे रे		४८-४९/३०	
१५१	ढाल ११६ वी सुण चतुर सुजाण परनारी सु प्रीत कछु नही कीजीये		४९/१०	
१५२	ढाल ११७ वी सीहल नृप कहे चद ने (दे०) हा रे मारा प्राणीया	रतनसागर	४९/८	
१५३	ढाल ११८ वी चीणजा रानी०(दे०) जीवा चेतो रे दे मुनिवर उपदेश	जैमल	५०/१७	
१५४	ढाल ११९ वी अवको चोमासो प्रभुजी अठै करो(दे०) सासण नायक दीयो उपदेस	चोथमल	५०/१६	१८६० जयपुर
१५५	ढाल १२० वी सुगर पचीसी साध म जाणो इण चल गन मु(दे०) सुगुरु पीछाणो इण आचारे	जिनहर्ष	५०-५१/२४	
१५६	ढाल १२१ वी साध म जाणो इण चल गत सु(दे०) इण आरा मे निन्नव वीगड्या	रायचन्द	५१-५२/३९	१८३३ पाली
१५७	ढाल १२२ वी छत्तीसी नित करु साधुजी ने वनण, (दे०) निखरो माणस निदक हूवे	„	५२/२५	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द मर्यादा	र दा एव र स्या
१५८	ढाल १२३ वी मान न कीजे रे मानवी (दे०) सनगुरु आगम सीख थी	जैमल	५२-५३/३७	
१५९	ढाल १२४ वी कहो नी चतुर नर कुण (दे०) चाखो रे नर समता रस चाखो	रायचन्द्र	५३/२१	१८३३ मेडता
१६०	ढाल १२५ वी कर्म न छूटे रे प्राणीया (दे०) मान न कीजे रे मानवी		५३-५४/४१	
१६१	ढाल १२६ वी . पुन्य जोगे नर भव पामीयो	रायचन्द्र	५४/१८	१८४३ वीकानेर
१६२	ढाल १२७ वी (नारी स्वभाव पर) नुवे सवेली उठे अवेली देफारा दळ राधे		५५/१४	
१६३	ढाल १२८ वी लोभ पच्चीसी एक सदा जिन धर्म आराधो (दे०) लोभी मिनख सु प्रीति न कीजे	रायचन्द्र	५५/२५	१८३४ वीकानेर
१६४	ढाल १२९ वी चेतन्य पच्चीसी नणदल री (दे०) नीठ नीठ नर भव लह्यो	„	५५-५६/२५	जोधपुर
१६५	ढाल १३० वी दान पच्चीसी अलवेल्या री (दे०) पुन्य जोगे नर भव पामीयो रे लाल	रायचन्द्र	५६/२५	१८३५ जोधपुर
१६६	ढाल १३१ वी विरला इसडा ब्रह्म (दे०) रात दिवस ते माया मेली कर २ देही दोरी रे		५६-५७/१५	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एव र स्था
१६७	ढाल १३२ वी अर्णक मुनिवर चाल्या गोचरी (दे०) चचल जीवडा रे मे तोने वरजीयौ		५७/११	
१६८	ढाल १३३ वी नयण निहाले राणी देवकी (दे०) साधूजी नगगी मै आव्या सदा भला रे		५७-५८/३०	.
१६९	ढाल १३४ वी भूलो मन भवरा काई भमै (दे०) हटवाडा मेळो जिसो जुग जाणौ एह		५८/१६	
१७०	ढाल १३५ वी जीव दया व्रत पाळो रे (दे०) प्राणी कर्म समो नही कोर्ड		५८-५९/२२	
१७१.	ढाल १३६ वी कवरी बोलावे रे (दे०) समकृत परो अराधो रे	जैमल	५९/३४	
१७२	ढाल १३७ वी नवकार मत्र रो ध्यान धरो (दे०) एक दिन निश्चय करने मरणो	रायचन्द	५९/११	
१७३	ढाल १३८ वी सुग्यानी उजल रापै हो मनरी भावना	चोथमल	५९-६०/१३	१८६५ चण्डावल
१७४	ढाल १३९ वी वय-पचीसी मन रे तुं जीव ने समझाय	रायचन्द	६०/२३	१८२१ जीडवाणा

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देगी(तर्ज) एव आकड़ी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एव र स्या
१७५	टाल १४० बी डम मत गुग् जीव ने नमभावे (दे०) पाचमा आरा रा भावज एहवा	रायचन्द	६०-६१/३०	१८१७
१७६	टाल १४१ बी कपटी मनुष्य रो विश्वाम न कीजै (दे०) कु गुग् तणे उपदेसे भूला	जैमल	६१-६२/४५	
१७७	टाल १४२ बी आरे नेणा रो पाणी लागणो मारुजी (दे०) गुग्जी मे दग्मण ठीठो नयण, भलो दिन आज रो	रायचन्द	६२/२५	१८३२ नागौर
१७८	टाल १४३ बी गुणवन-पचीसी हर मुग्ली ए (दे०) मिप मुवनी तज देपने ठरे गुग् रा नेण	"	६२-६३/२४	१८२५ नागौर
१७९	टाल १४४ बी आरे नेणा रो पाणी लागणो (दे०) गुग्जी माग हिवडा रे माहि माला आग जाव रो	"	६३/२१	पाली
१८०	टाल १४५ बी नागो माह लो (दे०) मिपणी नामो जोव ने रे गुग्जी दोने दोलर	"	६३-६४/२०	
१८१	टाल १४६ बी नागो माह रे जिगवन वादगा (दे०) गुग्जी नामो नामो रोहिरो	"	६४/१८	१८५२ जोधपुर

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं अंकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द संख्या	र. का. एवं र. स्था
१८२.	ढाल १४७ वी . बदु सोले जिन सोवन वर्णा (दे०) निन्नव नीकलीया पांचमे आरे	रायचन्द	६४-६५/५४	१८१८ पाली
१८३	ढाल १४८ वी टलोकड पचीसी टोला रा अवगुण वोले टलोकड	"	६५-६६/२५	
१८४.	ढाल १४९ वी निन्नव पदावली (सारङ्ग राग) निन्नव माहे कला न काड	"	६६/२०	१८३१ पाली
१८५.	ढाल १५० वी निंदक पचीसी दोहिलो मानव भव काई नुं हारे (दे०) इण दुष्म आरा माहि उघाडा निन्नव पापी जीव रे	"	६६-६७/२७	"
१८६.	ढाल १५१ वी . हमची हेली हे सागरीयो विप नी वेली		६७/३१	
१८७	ढाल १५२ वी सहेल्या हे आवो मोरीयो (दे०) निंदडली वैरण हूय रही	जैमल	६७-६८/२२	
१८८	ढाल १५३ वी . चेतन चेतजो रे मनुष्य जमारो पायो रे	"	६८/२२	
१८९	ढाल १५४ वी ऋषभ जीनेसर प्रीतम माहरा (दे०) जीवडा ने मेले रे ओ मन मोकळो		६८-६९/२७	
१९०	ढाल १५५ वी . समजणी वाई रा थे गुण मुणो	मोतीचन्द	६९/१२	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी, (तर्जु) एवं आकड़ी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द सत्या	र का एवं र स्या
१६१	ढाल १५६ वी मुणजो रे ब्रह्मचारी	विजेदेव सूरि	६६/१३	
१६२	ढाल १५७ वी चेतोरे प्राणी चेतो, मति राजो रे रमणी रे रग		७०/१६	
१६३	ढाल १५८ वी सकर वसै रे केलास मे (दे०) तप बडो रे ससार मे	आसकरण	७०/१५	१८५३ जोधपुर
१६४	ढाल १५९ वी साध सगत नित कीजिये रे लाल	धर्मदास शिष्य समरचन्द	७०/७	
१६५	ढाल १६० वी ते तीरीयारे भाई ते तीरीया (दे०) मान ने रे सतगुरु तु सीखडली	रायचन्द	७०-७१/१५	१८५४ जोधपुर
१६६	ढाल १६१ वी श्रावक धर्म करो मुखदाई (दे०) दोषण टाली ने करो समाई	आसकरण	७१/१७	१८३७ रीया ग्राम
१६७	ढाल १६२ वी रमीया री- (दे०) मारो मन लागो हो जीनजी रा व्यान नु	रायचन्द	७१/१३	१८५५ मेडता
१६८	ढाल १६३ वी एक दिवस लका गढ कैरो (दे०) नाग्व वचन विचारी ने जोडजो	रत्नचन्द शिष्य लालचन्द	७१-७२/२०	१८०३ रीया
१६९	ढाल १६४ वी मुनि नणो मगल तीमगे (दे०) मम करो काया माया कारमी जी	जैमल	७२-७३/३३	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	रुका एवं स्थिति
२००	ढाल १६५ वी . दीक्षा पचीसी 'नणदल री (दे०) दीक्षा मत दीजो अयोग नें	रायचन्द	७३/२४	१८३६ नागौर
२०१	ढाल १६८ वी . इण समकृत मन थिर करो (दे०) सुण गोतम पचखाण विधि		७३/१३	
२०२	ढाल १६९ वी कुलक्षणी बोले तु रेहनी ३ वरज्यो रेहनी	गोरबन	७३-७४/१२	१८३८ खेजडला
२०३	ढाल १६९ वी . इण कोड पूर्व लग पामी (दे०) डम स्वार्थ सिद्ध रे चदरवे कांड मोती जु वक सोहेजी		७४/१५	
२०४	ढाल १७० वी स्वामी जी थासु वानवू	लालचन्द	७४/१४	रतलाम
२०५	ढाल १७१ वी ओ भव रतन चितामण सरिखो	अखैराम	७४-७५/१०	
२०६	ढाल १७२ वी आवे काळ लपेटा लेतो (दे०) ए तो हथी कर्म से वेजाण रे	रायचन्द	७५/८	
२०७	ढाल १७३ वी सूक्ष्म पचावनी निन्नव जाणो इण चल गत सु (दे०) सूक्ष्म छत्तीसी सामल प्राणी	उदय कृषि	७५-७६/५४	औरंगाबाद
२०८	ढाल १७४ वी नगरी खूब वणी छै (दे०) काड तु गरभ रही छे हे ओ घर माहरो ने हू घर की	जसरूप	७६/१२	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एन आफड़ी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सङ्ख्या	र का एव र स्या.
२०९	ढाल १७५ वी समदृष्टी पर्चासी उपजे आणद (दे०) अपूर्व जीव जिन धर्म पामीयो	रायचन्द	७६-७७/१३	१८३३ मेटना
२१०	ढाल १७६ वी वात म काढो जी व्रत तणी(दे०) डम समकृत मन थिर करो		७७-७७/५६	
२११	ढाल १७७ वी नव वाड सहि जिन राज कही मुनि राज लही हे हितकारी		७८/११	
२१२.	ढाल १७८ वी तुम तो भले विराजे जी सावलीया गिरधारी(दे०) जोयजो अँसी दुनीया भोरी धर्म करंती लाज करै ले परतख खेले होरी	चैनमुख	७८-७९/९	
२१३	ढाल १७९ वी तत मारग एक मुगत छै	रायचन्द	७९/९	१९३७
२१४.	ढाल १८० वी लालन लील करुंगी रे (दे०) भवीयण ग्यान विचारो रे	माणकचन्द	७९/१४	१८७८ जालोर
२१५	श्री रामजी री लावणी हा रे काळ सु डरे रे	जसकीर्ति शिष्य रत्नचन्द	७९-८१/६७	१९२१ आगरा
२१६	ढाल मोटी जग मै मोहणी	रत्नचन्द	८१/११	१८७२ देवगढ
२१७.	ढाल महावीरजी रो स्तवन आयो २ मारुजी विणजारा रो पीठ	मनोहर विजय	८१/६	
२१८	ढाल रमो २ हे चेलकज्यौ फू दा री डोरी (दे०) मीठी इम्रत सारपी सत गुर की वाणी	रत्नचन्द	८१/१०	१८७३ रूपनगर

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एन आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द संख्या	र का एन र स्था
२१६	ढाल ढढण ऋषजी री ढढण ऋषजी ने वनणा हू वारी	जिनहर्ष	८२/१०	
२२०	ढाल लालन लील करू गी आछो (दे०) नगरी खूब वणी छै जी	रत्नचन्द	८२/१२	
२२१	ढाल कोप्यो देव पापुर धणी (दे०) वे वधव वन मे थका रे वात करे कुरणाय		८२/१५	
२२२	ढाल मिनख जनम दोहली कह्यी लाधो आरज खेत रे (दे०) दुलहौ मानव भव काय तु हारे		८२-८३/२२	
२२३.	ढाल मे सरनी रा गीत नी (दे०) सीख सुध मानो रे सतगुर री	रत्नचन्द	८३/२५	१८७८ नागोर
२२४.	पद किसका छोर छोकरा रे		८३/४	(राग पजाबी)
२२५	पद नेमनाथजी री जव रथ दूर गयो तव चेनी	रूपचन्द	८४/४	
२२६	पद जिन मेरो रे पारसनाथ आधार	सेवक	८४/२	(राग भैरवी अजमेरी)
२२७	ढाल नीबूडा ना गीत नी (दे०) सुखकारी हो जिनजी	रत्नचन्द	८४/७	
२२८.	पद भव जीवा हो वादो भगवत नै	"	८४/१३	१८७१ अजमेर
२२९	पद जिनराज हाजी थाने कोणक वादण जाय	"	८४/१०	वडलू ग्राम

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशो(तज') एव आकडी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द सत्या	र. का. एव र स्या
२३०	पद वीर वखाणी श्रावक एहवी रे	रत्नचन्द	८४-८५/७	१८८४ पानी
२३१	ढाल नेणा रो भकोळो हे गवालण मोह्यो(दे०) तुम पर वारीजी वीर वखाणी हो	,,	८५/७	-
२३२	पद म्हारा मोडा राणा मेलो रे माभळ रात री (दे०) माहरा ग्यानी गुर री वाणी हो इम्रत सारखी	,,	८५/६	१८४२ जोधगणे
२३३	ढाल आधी तो नीरुकर हा एलची (दे०) समुद्र विजेजी रा लाडला हो	,,	८५/५	-
२३४	ढाल पना मारु हिवडे रा हार(दे०) प्रभु म्हारा हो— हे दरसण देखी ने हिवडी उमगेजी	,,	८५/५	-
२३५	ढाल गुल गुल रही नीद हो नयणा लोभी आलीजा मारु नै नीद(दे०) मनडो उमायी हो दरसण देखवा	,,	८५-८६/६	१८७३ कृष्णदुर्ग
२३६	ढाल सुवर सोहनी (दे०) मनडो उमायी हो दरसण देखवा	,,	८६/६	१८६० पीपाड
२३७	ढाल सावणीया रे पेलडै मामजी(दे०) हा हे दरसण देव रो हे हीया नौ सेहरो हे पार्श्वनाथ	,,	८६/६	१८७४ पानी
२३८	ढाल सोनल नै वाघेली परण पधागीया (दे०) ऋषभदत्त नै देवा नदा नार	,,	८६/७	१८८० पाली

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं प्रांकी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्दसंख्या	र. का एवं र स्था
२३६	ताल जचारी (दे०) श्री ऋषभ जिनद ऋषभ मारा मन मे वसीया हो		८६/६	
२४०	ताल रावण नाय आमारै रघु की धाय (दे०) सेणक रे वाडि सचरचौ रे	समयसुन्दर	८६/८	
२४१	ताल अत्र घर आयो हो आवो जी मारा मन गमता माराज (दे०) हू तौ अलादी होय रही रे	रत्नचन्द्र	८७/६	
२४२	पद अत्र घर आवो हो (दे०) चेतन चेतो रे चेतो धारी छिन छिन छीजे आव	विनेचन्द्र	८७/५	
२४३	ताल दुर्लभे लाधो मानव नो भव थे किउं जाउ हार		८७/६	
२४४	ताल चतुर नर अर्थ विचारो रे जानी जतन करो छकाय	कुमल	८७/११	
२४५	ताल गिरधारी रा गीत री (दे०) मातपिता मुत बधवा हो सगा सनेही मित्त	रत्नचन्द्र	८७/८	
२४६	पद तू काड चाळ लागो रे लोभीडा आयो छै बूटापो		८७/८	
२४७	पद बडे घर तानी लागी रे		८७-८८/६	
२४८	ताल माने एक आपरो आधार (दे०) जीव रे तू सील रो कर सग		८८/१०	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द मर्यादा	र का एवं र. स्या
२४९	पद राग निहालदे री अव मति छोडो हो मान महिपतिजी		८८/११	
२५०	पद मुनिवर मन नै पाछो घेर		८८/९	
२५१	पद साधू री आचार छत्तीमी साधू ते सूत्र भणि स्यू कीधो	रत्नचन्द शिष्य गुमानचन्द	८८-८९/३७	पाली
२५२	पद निठुर थयो गोकुल मथुरा विचे(दे०) आज नेण भर गुरु मुप निरख्यी	„	८९/१०	
२५३	पद स्तवन मिलीया गुर ग्यान तणा दरिया	„	८९/५	
२५४	पद मन मनगुरु सीख कहा भूले	„	८९/४	
२५५	पद गुरु सम कुण जग मैं उपगारी	„	८९/९	
२५६	पद सतगुरु मन भूलो एक घडी	„	८९/४	
२५७	पद कठन लगन की पीर		८९-९०/३	
२५८	पद पथीडा रे पथ चलेगो	रूपचन्द	९०/५	
२५९	पद घ्राणेन्द्री के वस नहि पडियै	विनेचन्द	९०/५	
२६०	पद नाम धरायो फकीर वेदुक लाज न आई	हुसेन फकीर	९०/४	
२६१	पद जोगारम को मारग वाको रे		९०/५	
२६२	पद मत कर मान गुमान	लालचन्द	९०/५	
२६३	हेरी काया मत सग छाड हमारी	कवीर	९०/४	(राग काफ़ी)
२६४	पद मत कोई करियौ प्रीत दुख के फद पडोगे		९०/३	„
२६५	पद मुसापर चोकस रेणा ठग लागा तेरी लार	कवीर	९०/३	„

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एवं र. स्या
पद-संग्रह—				
२६६.	भावै सोड करो मे तो तेरे हाथ विकांना	रसकनाथ	६०/२	(राग काफी)
२६७	तू क्या हूँ वन वन मे, तेरा नाथ वसै नेनन मे		६०/४	"
२६८	एक आस भली जिनवर की		६०/५	" "
२६९	मत ताकौ नार विराणी		६१/६	"
				१८८६, जोधपुर
२७०	निंदा मोरी कोइय करो रे दोष बिना सोच न कोय		६१/३	(राग काफी)
२७१	श्री जिन मेटो विरथा हमारी		६१/४	(राग विहाग)
२७२	जीवडला यू ही जनम गमायो	रत्नचन्द	६१/६	"
२७३	चदा ने विच मे वेच लियो रे	कवीर	६१/४	"
२७४	राज सुणी सीखडली		६१/७	(राग भागडली)
२७५	बिनवै चुमता नारी घर आवोनी पियारा	रत्नचन्द	६१/७	(राग खभायच)
२७६	मानव कौ भव पायकै मत जाय रे निरागा	"	६१/७	"
२७७	कर्म तणी गत न्यारी कोई पार न पावै	"	६१/५	"
२७८	काया पिंड काचो राज	"	६१/४	(अलिया वेलावल)
२७९	ओतो गढ बाको राज	"	६१-६२/४	"
२८०	आटो कर्मा को राज	"	६२/४	"
२८१	पिंडत पूछ पिया किम पाणै	कवीर	६२/५	(राग आसावरी)
२८२.	मन रे अगम तीरथ कु चलणा	"	६२/४	"
२८३.	फिर गई राम दुवाइ रे	तुलसीदास	६२/५	"
२८४	पगला धिर रे नही तेरी काया		६२/३	"

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं श्रावणी)	कर्ता	पद्य-रस/रस-रस	रस-रस
पद नगह—				
२८५	मना रे तोने कोतक वेर कही		६२/४	(राग कटयाण)
२८६	हेरि मोरी अखियन हगल भरी		६०/३	"
२८७	अव मोरी नाव कगे जिनगज	रत्नचन्द	६२/४	"
२८८	मेरे पट ग्यान भानु भयो भोर	आनन्दधन	६२/३	"
२८९	तू जासी मे जाणी रे जोवडा		६२/५	"
२९०	तू किणरो कुण	रत्नचन्द	६२/६	"
थागे रे चेतनिय				
२९१	ते मेरा दरद न पाया रे चग्यानि		६२-६३/६	"
२९२	रसना विगर विचारी म बोल	रत्नचन्द	६३/४	(राग धनाश्री)
२९३	जाण्यो धारो भाव प्रभुनी हो		६३/४	"
२९४	बाहु नित गज सुग्गाल मुनीम	,	६३/५	"
२९५	भोला मन कव सिवरे प्रभु नाम	सुरदास	६३/४	"
२९६	भजन बिन बेल विगना भयो	कवीर	६३/४	"
२९७	देख्या दुनियां बीच रे		६३/४	"
कोइ अजब तमासा				
२९८	क्या नेणा समझावै हे ठगणी	कवीर	६३/५	"
२९९	तन वस्त्र के रग लगायो	जिनदास	६३/३	"
मन के रग न लागो रे				
३००.	कुटल मजारी तोतो ले गइ	कवीर	६३/३	"
३०१	हा रे नगरी पेस की	"	६३/६	"
३०२	बटाउडा बीत गई हो सारी रेण	"	६३/४	(राग जगलो)
३०३	जीवत मार मुवा मति लाइयो	"	६४/४	(राग दुमरी)
३०४	किन गुन भयो रे उदासी भवरा	आनन्दधन	६४/३	"
३०५	किण वन हूहु गी माई	तुलसीदास	६४/५	"
३०६	हा रे तेरा तन का		६४/३	"
तनक भरोसा नाहि				

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आगड़ी)	कर्त्ता	पत्राक/ छन्द सरया	र का एव र स्था
३०७ पद	धम आया रे नहि आया		६४/४	(राग बगाली)
३०८ पद	ऐसी होरी खेलो जामे हुरमत लाज रहो री	कवीर	६४/५	(राग कालिगडो)
३०९ पद	हमारे कुण खेले ऐसी होरी	सोभाचन्द्र	६४/१०	(होरी काफी) १८८६, जावरा
३१० पद	होरिया रग खेलण आवो		६४/४	(होरी काफी)
३११ पद	होरी खेलण की रत भारी		६४/४	"
३१२ पद	नखी तोय केती थी काने से प्रीत लगाय मती		६४-६५/५	
३१३ पद	हे मारे स्याम मुन्दर दिल मे वसियो		६५/४	
३१४ पद	अवर देवो मुरारि हमरो	चन्द्रसखि	६५/४	
३१५ पद	आज स्याम के मे अग लगू गी		६४/२	
३१६ पद	जलम थारो वाता मे वीत गयो रे	कवीर	६४/४	
३१७ पद	जोवन घन पावणो पावणो दिन च्यारा	"	६५/४	
३१८ पद	सात वीसन छोडो भाव सुं ससारी लोका	रामचन्द्र	६५/५	
३१९ ढाल	नेमनाथजी रो तवन संकर वसे रे केलास मे (दे०) श्री नेमीसर वसे रे वेराग मे	चोथमल	६५/१४	
३२० ढाल	कहा रे अग्यानी जीव कु गुर ग्यान बतावे	जिनराज	६५/३	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	पत्रां	पत्राण / छन्द मन्था	र या एव र म्था
३२१	ढाल क्षमा छत्तीसी आदर जीव खिम्या गुण आदर	समयमुन्दर शिष्य	६५-६६/३६	
३२२	ढाल पुन्य छत्तीसी पुण्य तणा फल परतन्व देखो	"	६६-६७/३६	१६६६ सिद्धपुर
३२३	ढाल वृटकनी जाति परनारी (दे०) सुणि सुणि कता सीख मुहावणी		६७-६८/१०	
३२४	ढाल मग्मनि मुजरे माता द्यो वहु मान रे		६८/१०	
३२५	ढाल सात व्यमन री पर उपगारी मावु मुद्ध गुरु डम उपदेमे	पुण्यकलसमूरी शिष्य [रगे]	६८/६	
३२६	ढाल तमाखु री प्रीतम सेनी वीनवे	आनन्द मुनि	६८-६९/१५	
३२७	ढाल चित सभूत री वधव बोल मानो हो	कवियण	६९/२३	
३२८	ढाल : इण काळ रो भरोसो भाई रे को नही	रत्नचन्द्र	६९/१२	१८६७ किसनगढ
३२९	ढाल अजित गाति जिण थुइ मगल कमला कदुए सुख सागर पुनम चदुए	मेरुनन्दन	६९-१००/३२	
३३०	ढाल भूलो मन भमरा काइ भमड (दे०) जागरे सुग्यानी जीवडा सूतो वहु काल	रत्नसमुद्र	१००/१६	
३३१	ढाल वीर वखाणी राणी चेलणाजी	समयसुन्दर	१००/७	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकड़ों)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द सख्या	र का एव र स्या
३३२	ढाल दया धरम दिल धार मुगत की करणी	हीर	१००-१०१/७	
३३३	ढाल : ओलवडे मत कीजो जिणदजी	मोहनचन्द शिष्य	१०१/५	
		रूपचन्द		
३३४	ढाल : आज सु दीन मे बाईजी मे जिनजी जुहारया		१०१/६	
३३५	पद : समुद्रविजे सुत नेम विराजे		१०१/६	
३३६	ढाल : घोडी तो आई थारा देस मे मारुजी (दे०)	रामविजय शिष्य	१०१/५	
	सांवलडी सुरत मन मोहियो साहिवजी	विमलविजय		
३३७	ढाल : मेडतिया भमरजी रो करहलो(दे०)			
	भारी वदणा प्रभूजी अवधारजो	रूपसेवक	१०१/७	
३३८	ढाल सोकडली रो साळ माने दोरी लागे जी (दे०)		१०२/१७	
	कोहोनी किस विध आउजी साधुजी रो वखाण सुणवा			
३३९	ढाल तु गीयापुर री इण नगरी मे वाजा वाजे (दे०)		१०२/१७	
	आया सुग्यानी साध मन मोयो रे तु गीयापुर नगर सुहामणो रे			
३४०	ढाल : भुकजाय भमरजी रा करहा (दे०)			
	भवीया सकल मनोरथ सिद्ध	प्रधानसागर	१०२/७	
३४१	ढाल आज ऊछव छेरे अधिको		१०२/७	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं ब्राह्मण)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द शब्दा	र. दा. एवं प. र. गा
३४२	ढाल वादळ दह दिस उनम्यो (दे०) वीरखा रत ग्राई मोहना	मानसागर	१०२-१०३/१२	
३४३	ढाल पूण्ये सुपना ए देखे, मन माहे हरख विसेखे		१०३/६	
३४४	ढाल मगल कमला कदुए (दे०) सोहमपती आसण कपीयो		१०३/१३	
३४५	ढाल जिन रयणीजी दशदिसी उजळता घरे		१०३-१०४/१५	
३४६	ढाल पच कल्याणक नीर्थ कमल उदक भरीने पुसकर सागर आवे	देवचन्द	१०४/६	
३४७	ढाल कोटारे कोपे कागरा (दे०) रत अगोछो पटरो किण ही दीठो हुवे तो दीजो रे लाला	डोकरो ?	१०४/६	१८३६, सिराही
३४८	ढाल सकल ससार अवतार एहु गिगु	भक्तिलाभ	१०४-१०५/१६	
३४९	ढाल निडलीनाहनी(दे०)वर्द्धमानस्तवन वीर सुणो मोरी वीनती	समयसुन्दर	१०५/१६	जेसलमेर
३५०	ढाल सिटारथ कुल दीपक चद	रायचन्द	१०५/१२	१८३७, मेडता
३५१	पद विधना तू तो गेहली भड्ये		१०५/४	
३५२	ढाल भीमघर स्तवन श्री मिंदरजी सुणजो मारी वीनती	लालचन्द	१०५-१०६/७	
३५३	ढाल आग्निथ आदि जिनवर वदि सफल मनोरथ कीजिए	उदयरत्न	१०६/१७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (दिशी (नर्ज) एव अंकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एवं र स्या
३५८	पद पडिन वाद वदे ते झूठा	कवीर	१०६/५	
३५५	पद सूरज सू उतपन्न पुरस ने अस्त्री हुवा		१०६/	
३५६	ममन मत कीजो राज मन मे	पेम	१०६/४	
३५७	जवू कु वर रो नवन जवू कवर बेरागीया		१०६/१२	
३५८	पूज्य गुणमाल सामी वास वेराड मे थे वसो काकरीया कुल जात जी	कीरतमल	१०६-१०७/११ १८७८, पीपाड	
३५९	ढाल वाणी श्री जिनराज तणी काने सुणी रे माइ		१०७/१५	
३६०	ढाल धारणी मनावे हो मेघ कवार ने रे	प्रीतविजय	१०७/५	
३६१	ढाल सात वारो की अदितवार दिन दुनियां भूली		१०७-१०८/८	
३६२	ढाल श्री सखेसर पास जिनेमर भेटीये	जिनचन्द	१०८/५	
३६३	ढाल श्रावक तु उठे पगभात	जिनहर्ष	१०८/२३	
३६४	ढाल शूलभद्र मुनीसर आबो नी	सीलविजय शिष्य सिद्धविजय	१०८-१०९/१७	
३६५	ढाल लाख चोरासी घोडा पायदल छिनु कोड (दे०) श्रेणक राय तिर्यकर पद पासी	रायचन्द	१०९/१६ १८८६, मेडता	
३६६	ढाल मास खमण ने पारणे मुनी आया वामण गेह	मुनि रामचन्द	१०९/७	
३६७	ढाल पिणहारी री (दे०) जवू द्वीप राची देह मे जिनवर जी हो राज	रामचन्द शिष्य विरधीचन्द	१०९-११०/१३ १९०९, वीसलपुर	

क्रमांक	हृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आकडी)	कर्त्ता	पत्रांक/ छन्द सरया	र का एव र स्या
३६८	ढाल कलाली रे गीत री(दे०) त्रिभुवन मामीजी हा तो विराजे थी जग नायकु हो राज	मुनि रामचन्द	११०/८	
३६९	लावणी लाज मेरी रखले भवानी(दे०) प्रभुजी प्रगट फुरमावे सुर तर मुणवाकु आवे	„	११०/६	
३७०	लावणी मिंग साभल लो सनगुर की जिण मु होय भव पार लारलो	जिनदास	११०/४	
३७१	ढाल उग्रमेण की लली, नेमजी चंदण गिरनार चली		११०/६	
३७२	ढाल - आनन्दधन जिनदास गावे, मीम चरणा से निमावे		११०-१११/५	
३७३	लावणी तुम नज कर राजुल नार तज्या सब घर रे	„	१११/५	
३७४	ढाल खवर नही है जुग मे पल की	अवेमल	१११/६	
३७५	लावणी हलाहल कलजुग चल आयो रे	मुनि राम	१११/६	
३७६	लावणी - मन मुणरे थागे मफल घडी मरावकी हाथ सुं जावे	जिनदान	१११/५	
३७७	लावणी नुनन की बात तेरे हाथ रती न रही रे	„	१११-११२/५	
३७८	लावणी - सीसी की गोटी नही करीये रे	„	११२/५	
३७९	पद - नेगी पल नी देह पलक मे पलटे तथा मगरगी गले रे	रत्नचन्द	११२/५	
३८०	पद निउ निपीया रन निजर भरे तेरो पनय पनय आउ जाय	लालचन्द	११२/४	

क्रमांक	कृतिनाम (देजी (तर्ज) एवं आकड़ी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द संख्या	र का एवं र स्था
३८१ पद	देखी रे सुरत पारस की मारो जनम सफल भयो आज	रूपचन्द	११२/४	
३८२. पद .	विराजे वगला मे मारो सावलीयो	„	११२/५	
३८३. पद :	विपीया वस जनम गयो रे	रत्नचन्द	११२/४	
३८४ पद .	प्रभुजी के पाए लाग रे मे कयो तोकूँ	आनन्दधन	११२/४	
३८५ ढाल .	नवकार मंत्रजी रो ध्यान धरो	रायचन्द	११२-११३/१३	व्रीकानेर
३८६. ढाल .	घोडी तो आई थारे वाग मे मारुजी (दे०) साहेबजी अजित सभव भगवत हो	भान्नीराम शिष्य भगवानदास	११३/८	
३८७. पद	श्रीमिदर क्या जांगु मुज करम कटक दल केवा	रामचन्द	११३/८	
३८८. पद :	जिनराज रो मेरे इननो चाहिये नित उठ दरसन पावुँ	आनन्दधन	११३/३	
३८९. पद .	काहारे अग्यानी जीव कुं गुर ग्यान बतावे		११३/३	
३९०. ढाल	सीता सती री मुजाण सीता जाणे केसूला फूलीया रे लाल	जिनहर्ष	११३/९	
३९१ ढाल :	पदमावती (राग बेराडी) हिव रांणी पदमावती जीव रास खमावे	समयसुन्दर	११३-११४/३४	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एन आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र.का. एवं र.स्था.
३९२	ढाल मृख लखगा रे कनक ने कामण जग मे पास है	रामचन्द्र	११४/३५	१६१८ जोधपुर
३९३	ढाल भव जीवा आद जिनेसर वीनवु	रायचन्द्र	११४-११५/३१	
३९४	नवन चेतन तेरी रसना वस कर रे	विनेचन्द्र	११५/५	
३९५	वात डोकरी गी वात (गद्य)		११५/६	
३९६	ढाल चउपई— भगवती भारती चरणन मेवी सद गुरु नाम सदा समरेवी	प० लखमी	११६/१६	
३९७	ढाल जीव री उतपत उतपन जोय जीव आपणी मन माहि विमास	रत्नहर्ष गिष्य [रगे]	११६-११७/६१	
३९८	ढाल माहावीरजी आवी समो सरचा राजग्रही नगरी माहि		११७/५	
३९९	ढाल सुण चेतन रे तुम गु णवत मुनि कु सेवो	रामचन्द्र	११७/५	
४००	ढाल घन घन वीर जिणद हो सुखकारी हो प्रभुजी	भानीराम	११७-११८/८ १६३३	जालोर
४०१	ढाल नाथ केमे गज को पाय छुडायो (दे०) ऋपभ जिन मे तो शरण तिहारी वारी हु वार हजारी	सूर्यमल	११८/७	
४०२	ढाल किण डारी पिचकारी गोरी के किण डारी (दे०) काम क्रोध से न्यारा रे गुरदेव हमारा	"	११८/७	

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र. का एवं र स्या
४०३.	ढाल . मे डरू एकैली वादल मे चमके वीजळी (दे०) आधो भोजन रात नो सरे निण माहे अति दोष	,	११८/६	१६२४ डेह नगरी
४०४	पद . अब तोरी सरण मे विरद सभाल	जसरूप	११८/४	
४०५	ढाल . एक दिवस वसे नेमकवर निज (दे०) अहो सर्व गुणी मुनि, चुन्नत माहाराज काज मुज सारो	सूर्यमल शिष्य कुशालचन्द	११८-११९/७	१६११ डेह ग्राम
४०६	ढाल . मत ताको नार विराणी है(दे०) अरजी सुणो नेम हमारी कहे इम राजुल नारी	"	११९/१५	१६०६
४०७	ढाल . हा रे काई भरवा गई जल जमुना तीर (दे०) हा रे काड रजपुर सोहे	"	११९/६	१६०४ अहिपुर
४०८	ढाल . कु जन मे ले चालो कान मोने(दे०) सुविध जिन तुम चरणे चित दीनो	"	११९/६	
४०९	ढाल सीमधर स्तुति पूरव पुखलावती विजय मे जनमीयाजी नगरी पु डकरी कणी नाम	जैमल	११९-१२०/११	
४१०	ढाल घमके रे घमके गवादे रो गागरो (दे०) ऋषभानदन वदीये प्रभूजी पोह उठी प्रभातो रे	आसकरण	१२०/७	१८३८ वूसी गाँव

क्रमाङ्क	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एव आकटी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द सत्या	र. का. एव र स्या
४११	ढाल कीर्त थारी हे माता जुग माहे भारी	गोरधन	१२०/५	
४१२	ढाल . नाम एला पुत्र जाणीये धनदत्त सेठ नो पूत	लब्धिविजय	१२०/८	
४१३	पद पहिले पद अरिहत जाणी, ज्यारो भजन करो भवियण प्राणी	जैमल	१२०/७	
४१४.	ढाल वीरा मोरा गज थकी उतरो गज चढ्या केवल न होसी रे	समयमुन्दर	१२०-१२१/७	
४१५	ढाल . रे जीव जिन धर्म कीजीये	समयमुन्दर	१२१/६	
४१६	ढाल . पाच पचाम छोकरा घर में कयो कोई न माने	मगल	१२१/५	
४१७	ढाल . जोवन धन प्रावणो दिन च्यारा इण रो गर्भ करे सो गिवारा	माणकदास	१२१/५	
४१८.	द हा : नमो सिद्ध निरजण, नमुं सतगुरु पाय घिन वाणी जिनराज री, सुणता पातक जाए		१२१/३१	
४१९	ढाल : मोने भाखो नी माहावीर(दे०) चोमासी ईग्यारमीजी विचरत साहस वीर	मुनिमाल	१२१-१२२/२५	
४२०.	लावणी , कव देखु जिनेमर देव जगत गुरु ग्यानी	जिनदास	१२२/५	
४२१	लावणी : दे गथा दगा दिलदार सुणो मेरी माई लग रही नेम दरषण की सरम आसनाइ	जिनदाम	१२२/५	
४२२.	लावणी - मन सुण रे थारी सफल घडी आवकी हाथ सु जावे		१२२/५	

क्रमांक	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्रांक/ छन्द संख्या	र का एव र स्या.
४२३.	ढाल प्रणमु श्रीजिनराय मनवच काय करीए		१२२-१२३/१८+११	
४२४	ढाल ताम हुवो प्रभात मोछव मांझ्यो तात	देवराज गिण्य ज्ञानचन्द्र	१२३/१० १८२३	गगराणा
४२५.	ढाल चोवीमे जिनवर कहू ज जाप नाम ठाम लछण माय तात	"	१२३-१२४/२८ (डपु रस अग्व रत्रि)	
४२६	ढाल . प्रणमी जिनवर भावु आयु प्रमाण	देवराज	१२४/५	
४२७	ढाल . रतन कुँवर की रतन कुमर गुण आगलो रे आगला मुख ना बोल		१२४-१२५/४२	
४२८	ढाल . सफल दीहाडो जी भलाई सूरज ऊगीयो	हीराचन्द्र	१२५/१३ १८६६	नागौर
४२९.	ढाल . चंगरण रंग मगल हुवा घणा		१२५-१२६/१६	
४३०.	ढाल : कागलीयो कीरतार भणी सी पर लिखु रे	जिनराज	१२६/५	
४३१.	ढाल समाडक सुखदाड जी चित लाड कीजो		१२६/६	
४३२.	ढाल . तेवीममा हो प्रभू पास जिणद के चरण करण मधु मोहीयो	मनरूप गिण्य हीराचन्द्र	१२६-१२७/१६	
४३३	ढाल . मोरा माहिव हो मुझ वीनती एक के सुणोजी कहं सुख कारणे	हीराचन्द्र	१२७/२३ १८८६	जोधपुर
४३४	ढाल . मिखामण हो तूमे नुणियो सार के एक मना चित वारजो	"	१२७-१२८/२५ १८६८	वीसलपुर

क्रमांक	कृतिनाम (देशी(तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सङ्ख्या	रक एवं र स्था
४३५	ढाल श्री ऋषभ अजीत सभव अभिनदन सुमत पदम सुपारख मन रजन		१२८/	
४३६	ढाल प्रह उठी ने समरीजे हो भवीयण मगलीक सरणा च्यार	चोधमल	१२८/११	१८५२ पानी
४३७	ढाल सावूजी ने वनणा नित कीजे पोह ऊगते सूरजी	आसकरण	१२८-१२९/८	१८३८ वूसी गाव
४३८	ढाल पास जिगेसर पूरण आसा गावत मगल लील विलासा	जिनराज	१२९/१३	जैतपुर
४३९	ढाल एक कुवो ने पाच पीणीहारी नोर भरे हो न्यारी न्यारी	कवीर	१२९/४	
४४०	ढाल घडा एक सो आठ सहेली रम मु भरिया नीका	नथमल	१२९/९	
४४१	ढाल मुणीयो रे वावू कुटल मजरी लारे लग रही	कवीर	१२९/३	
४४२	ढाल हाथ जोडी काली इम बोले ऊभी सनमुख तीर	आसकरण	१२९/१७	
४४३	ढाल काइ रे गुमान करे आपणो, मान करेगो गुमान करेगो तो नीची रे गत मे जाय पडेगो	रामचन्द	१२९-१३०/१०	
४४४	ढाल प्रह उठी गोतम प्रणमीजे मन वछित फल नो दातार	समयसुन्दर	१३०/७	
४४५	ढाल नव वाड सही जिनराज कही मुनि राज लही अति हित कारी		१३०/११	
४४६	ढाल आरभ करतो रे जीव डरे नही		१३०/५	

क्रम-संख्या	कृतिनाम (देशी (तर्ज) एवं आकडी)	कर्ता	पत्राक/ छन्द सख्या	र का एव र स्या
४४७	ढाल निरखण दो असवारी (दे०) धना मुनी धन मानव भव पायो श्रीमुख ईउ फुरमायो	रामचन्द	१३०-१३१/७	
४४८	ढाल घुमर रमवा मे जासा (दे०) गुणधरजी रा गुण मे गासा ज्यामु परम आणद हूय जासा हो राज	भगवानदास	१३१/६	
४४९	ढाल जाग हो जाग हो जाग होजीव तू, काड तू मोहनी नीद सूतो	कुसालचन्द शिष्य जिनराज	१३१/११ १८८०, जोधारे	
४५०	ढाल सीतल जिन सहज सुरगा तुज दरसण थी दिल चगा रे		१३१/६	

अंतिम ढाल अपूर्ण है। ढाल की पक्तियों से ज्ञात होता है कि इसकी रचना उदयपुर में तपागच्छाचार्य विजयक्षेमसूरि के चातुर्मास के समय में की गई थी।

सकलन में लिपिकर्ता तथा लिपि-स्थान का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है। (पत्राङ्क ७९ पर लिपिकाल १९३७ दिया गया है।) सग्रह में सन् १९३३ तक रचित ढालों का समावेश किया गया है जिसमें प्रस्तुत सग्रह में अनेक अप्रकाशित ढाल-पदों की विद्यमानता स्पष्ट है।

सग्रह में प्रमुख रूप से १९ वीं एवं २० वीं सदी के मारवाड़ एवं गुजरात में कार्यरत लुकागच्छीय ऋषि जैमल, रामचन्द, चोथमल, रूपचन्द, रत्नचन्द तथा इनके शिष्य प्रशिष्यों द्वारा रचित ढाल-पदों का सकलन किया गया है।

लुकागच्छ के बाद तपागच्छीय तथा खरतरगच्छीय मुनियों एवं आचार्यों के औपदेशिक पदों एवं ढालों को भी स्थान दिया गया है। जैनतर कवियों में कवीर एवं हुसैनफकीर के पदों का समावेश इन कवियों के सार्वभौम प्रभाव का द्योतक है।

प्रस्तुत सूची-पत्र में अनेक जैन पदों एवं ढालों का उल्लेख किया गया है। उनके स्वरूप परिचय की दृष्टि से 'देशियों' की वानगी उभर्युक्त विवरण में दी गई है। समस्त 'देशियों' का सकलन व उनका अनुसंधान अपने आप में शोध कार्य का एक स्वतन्त्र एवं मौलिक विषय हो सकता है। 'देशियों' के साथ ही साथ रागों का भी उल्लेख सकलन में किया गया है किन्तु स्थानाभाव के कारण उनके उल्लेख के लोभ का संवरण करना पड़ा।

१५६. ११००८ (२) उपमासंग्रह

प्रारम्भ —

॥ अथ उपमा संग्रह लिख्यते ॥

मगलाचरन— दोहा

उपमान रु उपमेय नहि, तह उपमा का होय ।
अनुपम पद मे गन वचन, आदि न पहुचे कोय ॥१॥

करन अनुग्रह जीव पर, विग्रह धरत मुगारि ।
तसु मुमिरत मे ऊपमा, संग्रह करो विचारि ॥२॥

उपोद्घात— दोहा

जहा वर्गन आकार श्री, आदि एकही नुल्य ।
तहा कहत उपमान कवि, पावत हर्ष अमुल्य ॥३॥

उपमान रु उपमेय मे, चमत्कार दरसाइ ।
अधिक न्यून मे मिल रहे, तह उपमा ठहराइ ॥४॥

अति रूपवती स्त्री रूपोपमा

मुख पर पकज चद्रमा, हृग पर मृग हृग मीन ।
कमल कमल की पखुरी, खजन की कवि कीन ॥५॥

तारक हृग तारेन पर, अरु कटाछ पर वान ।
भोहन पर भोरावली, धनुष लता हू मान ॥६॥

अलक ऊपर चामर अही, जाल त्रिवेनी पाग ।
अर्द्ध चद्र है भाल पर, पट्ट पटल हू तास ॥७॥

टेडि भोह दो को कहत, पख सवारत भोर ।
जावक भीने मीन सम, लोचन लाल सुठोर ॥८॥

नासा पर सुक तिलकु सम, दीपक नथ भक्त हर्न ।
मधुक वदर जु कपोल पर, सूक्ति पान पुट कर्न ॥९॥

ओठन पर वधूक अरु, विव प्रवालहु मान ।
दातुन पर दार्या विजुल, बीज कु दकली जान ॥१०॥

अन्त -

ग्रन्थ प्रयोजन

यो उपमा बहु विध कही, कवि नै ग्रंथनि माहि ।
सो सब सग्रह क्यो वने, कछुक कही मे ताहि ॥६६॥
एक देश ते ऊपमा, लगी रहत सब ठोर ।
ओर देश को छोडिकै, वरनत नर शिरमोर ॥६७॥
कछुक अबुध के हित अरथ, उपमा सग्रह कीन ।
पढहि विचारहि सोड नर, होहि अति परवीन ॥६८॥

रचनाकाल सत्रत वाइस उन्निगो, पोष कृष्ण हरि दोस ।
कीनो हीराचद ने, उपमा सग्रह घोष ॥६९॥

पुष्पिका - इति कवि हीराचद कानजी कृत उपमा सग्रह समाप्त ।

प्रारम्भ -

अथ लुप्तोपमा विलास^१

जहा दोऊ वस्तु की शोभा को चमत्कार समान दिखत होइ तहा उपमालकार होत है । नामे हु अधिक गुन उपमान अरु हीन गुण उपमेय सो दोउ को सबव करन हारी उपमा है । तहा उपमान अरु उपमेय मे काव्य की भावना करकै परिपक्व बुद्धि वारे रसिक पुरुष के हृदय को आनद होय, ऐसो जो व्यजना विन स्पष्ट ममानता को प्रकाश होत है, तहा उपमालकार जानियै ।

उदाहरन—चन्द्रमुख । चन्द्र सो अधिक-गुन उपमान है । मुख सो हीन गुन उपमेय है । सो दोउ की समानता करावन हारी तीसरी वस्तु एक उपमा प्रगट होत है । चन्द्रमा मे उज्ज्वलता, गोलता अरु आह्लादकता है सो सब साधारण धर्म है । ए सर्व साधारण धर्म का धरनहार जो चन्द्रमा है सो धर्मी है । सो इहा धर्म - धर्मी मे अभेद उपचार मान्यो है । क्यो जो धर्मी, जो चन्द्रमा है ताको नाम कहते है, धर्म को गृहण होत है, तातै चन्द्रमुख यो कह्यो सो मुख मे उज्ज्वलता, गोलता और आह्लादकता अैसे सर्व धर्म रहे है । तातै चन्द्र जेसो मुख कह्यो है ।

१ उपमा सग्रह नामक मूल ग्रन्थ से पूर्व हीराचन्द कानजी कृत "लुप्तोपमा विलास" शीर्षक से पृथक् कृति लिखी गई है । जिसका आद्यन्त भी यहां उद्धृत किया जा रहा है ।

अन्त -

दोहा

“कनक लता पर चद्रमा, धरे वनुष द्वे वान ।”

देखा, सोने की लता पर चद्रमा ता पर द्वे वनुष और वानन सो कछु एक दूसरे पर धरे जात नाहि । यह तो सोने की वेल जेसी स्त्री कही और ताके मुख को चद्रमा कह्यो, और ताकी भोह को दो वनुष कहे, और ताके कटाछन को वान कहे । ऐसे केवल उपमानन के नाम लेके उपमेय को वर्णन कियो है ; ताने यह रूपकातिशयोक्त्यलकार भयो है । और जो लुप्तोपमा सो तो आगे वर्णन कियो है ताने समुभनों ।

पुष्पिका - इति प्राचीनोदाहरण पूर्वक कवि हीराचद कानजी कृत लुप्तोपमा विलास संपूर्णम् ॥ श्रुभम् ॥

३११

१२१५३

कोकशास्त्र

[प्रति अशुद्ध लिखी गई है]

प्राग्म्भ - ॥ दं० ॥ ॐ नम ॥ दूहा

मातगी मति आपीई, कवीत करू रसाल ।
कोक कला गुण वर्णवी, जे प्रीछे वाल गोपाल ॥१॥

श्री सारद तुह्य व्याईई, अक्षर आपो माय ।
कृपा करी मुख अवतरे, जिम गुण आवे ठाय ॥२॥

जे नर पेहेला कवी हूँगा, ते ताहरो प्रसाद ।
नाम जपता सरस्वती, भाजें दुख विष वाद ॥३॥

कविन करेवा मन घणो, खनि करू दिनराति ।
वाचा अवीचल आपीई, कीजे कवित सु जाति ॥४॥

पिंगल जोइ वाधिस्तू, उत्तम कवीत प्रमाण ।
लघू दीर्घ गुण भला, चापै चगनि वखाणि ॥५॥

कोक शान्त्र कोकें कीऊ, ते जोई सु वचन ।
कवीत छट डम उचरे, वाधू कवीन कथन ॥६॥

चौपाई

श्री शारद दिघुं वरदान । मातंगी आप्यां सनमानं ॥
 श्री गुरे कृपा कीवाज घणी । करू चोपै कोकज तणी ॥७॥
 पहिला अथ अनेकज हूआ । मति एक ने प्रवध जू-जूआ ॥
 छे आनद कवीश्वर तणी । कांम गास्त्रनी मति छे घणी ॥८॥
 कोक देवे कीघुं कोक । ते उपरे रजे सवी लोक ॥
 तेहनो मत जोड ने सही । कोक कला वाघु चोपै ॥९॥
 जे नर होसैं चतुर सुजाण । नारी प्रेम विलूवा प्राण ॥
 भोग तणा गुण जे जाणस्यै । ते नर सुणता उल्हस्ये ॥१०॥
 कोक कला कुसम मालनी । अर्थ सुगध ने राते चालनी ॥
 भमरो नर भोगी जेहस्ये । ते सास्त्र ले वाचि न वस्ये ॥११॥
 दग प्रकार जे कोके कहा । तेहना अर्थ विगेपे लह्या ॥
 विगते करी कहू वेगला । प्रीछे नाहो मोटा भला ॥१२॥
 गाहा दुहा अने चोपै । ग्लोक सुभाषित बोलीस सही ॥
 मति मारू हूं करुं कवीत । साभलयो सहू एके चीत ॥१३॥
 कविता कवीत करे सु रसाल । साभलयो नर चित्त बीसाल ॥
 वक्ता करि विचार अनेक । कथा तणो रस उपजे विवेक ॥१४॥

श्लोक

शृङ्गार गायन नृत्यं वाद्यं तालीं (न) रतिक्रिया ।
 साहित्य पट (द) लालित्यं पट (द्र) वाच्यो (वन्धो) गतिस्तथा ॥१५॥
 कटाक्ष लक्ष मरभो (सरम्भो) वरसे मृदु भाषण ।
 वशीकर्णतायानि कथया (कथिता) षोडसी कला ॥१६॥

अन्तिमाग -

कवि-परिचय - पन्नाङ्क ८२-८४

हवे नर्यद बोले कथा । नांम ठांम पोतानु यथा ॥
 कवण वंस माहि उपना । ते संखेपे बोनु अधुन ॥८८॥

गुजर देस माहि अभिराम । धर्म ध्यान नो उत्तम ठाम ॥
 यती सती तप आगम गनान । सर्व लोक वस्त्रे सावधान ॥६६॥
 कलीयुग गगा सावरमती । उत्तम नीर वहे सरस्वती ॥
 सदा काल जत पूर्ण वहे । स्नाने पाप सवेने दहे ॥६००॥

काठे नगर वसे अभीराम । अहमदावाद श्री उत्तम ठाम ॥
 सर्व वस्तु पामीजे जिहा । जवू द्वीप मा न मलि कही ॥१॥

श्री श्रीमाल तिहा व्यवहार । देवराज नामि उपचार ॥
 मान दिड महिमुद सुरताण । महिता माहि वडो वधान ॥२॥

तेहनि घरि कुलवती सात । वे पखि पूर्ण कुल विख्यात ॥
 माता राजलदे नामे उचरो । तेहनी क्रुखें हु अवतरचो ॥३॥

का नाम

कर्म सयोगें मारु देश । नगर शीरोही कीध प्रवेश ॥
 तिहा रहिवानो कीधो ठाम । योगि थयग लह्या गुणग्राम ॥४॥

नवमे वर्ष श्री गुरु तणा । पाम्या चरण मनोरथ घणा ॥
 दीक्षा लीधी श्री गुरु पास । भव वधन थी छोज्यो तास ॥५॥

गच्छ, श्रीगुरु तपगच्छ माहि जसवत । कमलकलस साखा बोलत ॥
 वर्णन गच्छ नायक श्रीपूज्य प्रमाण । जाणो गगन उमतो भाण ॥६॥

धर्म धोरधर श्री गुरु नाम । कमलकलस साखा अभीराम ॥
 महा गुणवत गभीर । पच महाव्रत यती सुधीर ॥७॥

प्रोढा भटार्क पदवा घणी । जेहनी कीरति जग माहि घणी ॥
 महा गुणवत महानुभाव । पडित श्री मनिलाव्यणभाव ॥८॥

बीजा सुमतिकलस पन्यास । श्री गणधर कहे सुखवान ॥
 बीजा गणि मतिपन्यास । कल्याण भाव प्रते प्रकास ॥९॥

सुरिसर ना गणधर एह । केनला नाम कहु बहुतेह ॥
 गण माहि गुणवत गभीर । जती सकल माहि ते धीर ॥१०॥

एहवा गुरु भट्टारक जेह । कहु उपमा सवाई तेह ॥
 निघ्य नवद ने कृपा करी । दीधो पद ने करुणा करी ॥११॥

देइ दिक्षा ने दीधा मत्र । श्री सरस्वती इ वांध्यो तत्र ॥
 घणा दिवस मे सेवा करी । श्री सारद सेवा आदरी ॥१२॥
 वर्ष तेरमे दीधो मान । मातगी दोधो वरदान ॥
 श्रीगुरु स्तवना कवीजने करी । मति नर्वद नी ए चा(आ)चरी ॥१३॥
 घणा दीवस मि गुरु सेवीया । भणी गुणी ने पोढा थया ॥
 विहार कर्म वली तिहा श्री कीव । श्रीगुरु नी अनु जा लीध ॥१४॥
 दक्षिण देश प्रति कियो विहार । कउतक जोया देश अपार ॥
 वोध पमाज्या बहु जीव ने । कवि सदगति पामी देश ने ॥१५॥
 देवयोगि चालता सही । खानदेश मा आया वही ॥
 गाढ आसेर तिहां अभिराम । बुरहानपुर नगर नो नाम ॥१६॥
 राज्य करि वर्त्मवत सुजाण । वेरी ना भाजे भड ठाण ॥
 महा अभग तरवारह तेग । जाति फारक कला वीवेक ॥१७॥
 मीरह दहसाह सुजाण । तास पुत्र वलवत वखाण ॥
 मीरा वाहादुर साह फकीर । कीरति सर्व न जाणे लखीर ॥१८॥

रचना काल-

सवत सोल छपन्ना(१६५६) सार । शाक पन्नर एकवीस(१५२१) ॥
 वीया - दशमी दने आणद । बुध वासरि बहु प्रमाणद ॥१९॥
 उत्तराषाढी नक्षत्रे मु विचार । मकर चद्र भोगवि तिण वार ॥
 कर्क रासि ग्रह गुरु भोगवि । तु लि गनि आवण चितवि ॥२०॥
 शुन्य मुहुरत सुभ वेला सार । उत्तम लक्षण तणो विचार ॥
 श्री नर्वद वोले कवीराज । करी चोपई सपूर्ण आज ॥२१॥
 श्री गुरुदेवे वरुणा करी । कोक चोपाई सपूर्ण करी ॥
 जे नर होस्ये चतुर सुजाण । नारी प्रेम विलुधा प्राण ॥२२॥
 जे ए कथा मुणस्ये सही । अथवा भणस्ये सरसी जही ॥
 सुणतां चित हाम्ये आणद । परम सुख पामि मति मद ॥२३॥
 कोक तणो मत लेइ करी । चालीश चोपाई कवी उचरी ॥
 रस्था बुरहानपुर नगर मा थई । कोक देव नामे चोपाई ॥२४॥

दश प्रकार सपूर्ण थया । विगते करी कथा जू-जूया ॥
 श्री मातंगी ने वरदान । करी चोपाई अमृत समान ॥२५॥
 जे नर रसलुब्धा हुम्ये । तेहना मन डरो ग्रथे वम्ये ॥
 जिम कमल माहि भमरो रमे । गध केतकी छाडी किमे ॥२६॥
 जेरा जाने घरि नहि गास्त्र । कामकला किम प्रीछे पात्र ॥
 कामगास्त्र नो जे हुई जाण । तेरा जानु जीवित प्रमाण ॥२७॥
 जेह नर मुणम्ये श्रवरो सही । बुद्धि विस्तार न होस्ये लही ॥
 विरही नणा भजे दूख । भोगी जन के प्रेम दा सुख ॥२८॥
 जिहा लगे रवी गगने तपे । जिहा लगं मेरु मही मध्य जवे ॥
 जिहा लगे कथा रहस्ये पुराण । कवि नर्वद कहे कथा वखाण ॥२९॥
 कामशास्त्र मा उत्तम एह । देइ चित ने श्रुणस्ये जेह ॥
 अनन मुख पामे सदा । श्री नर्वद कहे श्रुव सपदा ॥३१॥

पुष्पिका - इति श्री मज्जिनाचार्य कवी श्री नर्वद विरचिते कोकगास्त्रे आसन
 आग्रहन कीतक भेषया ज्ञान वर्णनोनाम दशमो प्रकार ॥१०॥

ल० ठकरलालजी शवजी ।

५२३ ११५८५ (८) चंदकुंदर री वात

प्राग्भ - ॥ दं० ॥ अथ चंदकु वर री वात निखतै ।

समर सारद माय, गणपति दै कै लागु पाय ।

कर्त्तानाम परतापसिध की अगाज, कीनी कथा रसिक(क)विराज ॥१॥

प्रतापसिध गुमाण तै, हुकम कीयो कर चाव ।

हस कवि^१ एसो कहौ, कुछीयक वात मुणाय ॥२॥

१ प्रस्तुत वार्ता के कर्त्ता का नाम प्रतिष्ठान से प्रकाशित पूर्व सूची-पत्रो मे 'हसकवि' दिया गया है, उसी के अनुरूप प्रस्तुत सूचीपत्र मे भी कर्त्ता का नामोल्लेख 'हसकवि' के रूप मे किया गया है । वार्ता के आद्यन्त का अध्ययन करते समय अनायास यह विचार आया कि "हस कवि सू अैसे कह्यौ" का सीधा अर्थ "प्रसन्न होकर कवि से ऐसा कहा"

सबकु लगे मुहावणी, रस सजोग सिंगार ।
मूरख के मन हरै, सब रसीयन को सार ॥३॥

रचनाकाल सनरै सै चालीस^२ समै, तेरस पोसज मास ।
गुण कीनौ कर चाव कै, भोगो पूरण आस ॥४॥

कथा-प्रारम्भ - नगर नाम अमरापुरी, पंच कोस लवाय ।
अमरसेन राजा तिहा, राज करै बैठाय ॥५॥

चदकुमर ताकै भयो, मानु काम अवतार ।
चल्यौ सैहर सिकार कु, रहि विमोहित नार ॥६॥

अधिक लगत है क्योंकि 'हस' पद 'विहसि' के समीप एवं उपसर्ग रहित है । प्राचीन प्रतियों में प्रतिलिपिकर्त्ताओं द्वारा प्रायः सर्वत्र चन्दविन्दु का प्रयोग नहीं मिलता एवं यह पाठानुसन्धान की प्रवृत्ति पर ही निर्भर करता है अतः इसके कर्त्ता का नाम जैसा कि प्रारम्भ की पक्तियों में "कीनौ कथा रसककवीराय" तथा अन्त में भी 'चदकुमर की वारता, करि रसककवीराय" स्पष्टतः उल्लिखित है इसलिये कर्त्ता का नाम 'रसिक कवीराय' अथवा 'रसिकराय' कवि मानना ही सर्वथा उपयुक्त है । प्रस्तुत संग्रह की तीनों वार्त्ताएँ एक ही कवि की हैं किन्तु ग्रन्थाङ्क ११५८५ (७) वाली प्रति अपूर्ण है ।

२ सवत् १७४० में जोधपुर के पाट पर प्रतापसिंह पुत्र सूरतसिंह नामक किसी राजा के होने का इतिहास ग्रन्थों में उल्लेख नहीं है । 'जोधवश' में दूसरा राज्य दीकानेर का है । वहाँ चाचा-भतीजे के रूप में उक्त दोनों नाम मिलते हैं किन्तु प्रतापसिंह के गद्दी पर बैठने के दो वर्षों के अल्पकाल ही में उनके चाचा एवं सरक्षक सूरतसिंह ने उनकी हत्या करवा दी थी । उक्त घटना सवत् १८४४ के बाद की है । सभी प्रतियों में रचनाकाल सवत् १७४० उपलब्ध होता है अतः उक्त कवि की वार्त्ता की रचना का आदेश देने वाले प्रतापसिंह जोधपुर और दीकानेर के महाराजाओं से भिन्न कोई और व्यक्ति होने चाहिए । उक्त प्रतापसिंह कहाँ के राजा थे ? यह अनुसन्धान का विषय है ।

* [वार्त्ता के अनेक पाठभेद प्राप्त होते हैं अतः उक्त दोनों विषयों को स्पष्ट करने के लिए ग्रन्थाङ्क १०६५४ (१५) वाली प्रति का भी आद्यन्त इसी के साथ दिया जा रहा है ।]

चद्रायणा

एक दिन चदकुमर आहैडै चालियौ ।
 राजाजी को साथ सबै हालीयो ॥
 उठीयो एक वाराह तास पै लगीयो ।
 परिहा कुमर लागो पूठ कै सूवर भगीयो ॥७॥

साय कवर रो भूलकै चूको वटडी ।
 दन खड हैवा नवौ तरवर वटडी ॥
 कोस वत्रीसा उपर सूर मारीयो ।
 परिहा साथ न आयो कोयक निहारीयो ॥८॥

दुहा

पडीयो कुमर उजार मै, आथमीयो तिहा भाण ।
 तपसी वेठो तप करै, तिहा आयो राजान ॥९॥

अन्त -

वारता

कु वरजी घरै आया । सगलाडनु मुख हुर्वो । साहुकार री बहू नै,
 राजा री वेटी परणाड, तिणने पिण लेता आया । पिण साहुकार री बहू
 मु प्रीत मनेह घणौ ॥१०॥

दूहा

मो मन प्यारी मु बस्थी, प्यारी को मन पीव ।
 मै प्यारी का जीवडा, प्यारी मेरा जीव ॥११॥
 प्रतापसिन्धु मुरनाण है, जिहा की बात सुणाय ।
 कविनाम चदकुमर की वारता, करि रसककविराय ॥१२॥

जोत(ध) बस जुग जुग जीवो, घणा हेत परवार ।
 नाम धरची प्रताप तै, या गुण को गुण सार ॥३००॥ (६३)

पुष्पिका - इति श्री चदकुवर री बात संपूर्ण । ग्रथाग्रथ तिनसै ।
 निखत ५० लालविर्ज वीकानेयर मध्यै । सवत १८५७ वर्षे । मिति
 मिगसर वदि ६ शुक्रवार को सु० लछमणजी वाचनार्थ ।

दूहा

पोथी प्यारि प्राण थी, हर हीया को हार ।
लाख जतन करि राखज्यो, पोथि सेति प्यार ॥१॥

श्री गणेशदेव शाहाय छै जी । श्री ।

५२१- १०६५४ (१५) ॥ दं० ॥ अथ श्री चंदकुंवर री वात लिख्यते

प्रारम्भ - समरुं सरसति सामणी, गणपत देव कु लागुं नाय ।
कर्त्तानाम परतापसिघ की आग्या पाय, कीनी कथा रसककविराय ॥१॥

परतापसिघ कु माण लै, हुंकर कीयो कर वाच ।
हस कवि सू अैसे कहाँ, कछु ईक वात सुणाय ॥२॥

सत्र कुं लगे सुहामणी, रच सजोग सिणगार ।
मुखहु को मन हरे, सरव रय(स)न को सार ॥३॥

सतरह सै चालीस मे, तेरस पोसज मास ।
गुण कीनो कर वाच कै, भोगी पुरण आस ॥४॥

अन्त - परतापसिघ सुरतसिघरो, वसत सदा सुहाय ।
चंद वात पूरी हुई, कर(रि) सकलकविराय ॥६३॥

जोव वछ जुग २ जीवो, घणो होत परिवार ।
नाम घरयो परतापसी, या गुण को गुण सार ॥६४॥

पुष्पिका - ईति श्री चंदकुमार री वात सपुरण ॥
उपरली पोथी तण माफक लखी छै । खोटी खरी तो श्री परमेसर
जारो ॥ सवत् १८७४ शाके १७३६ माह वद ८ श्रुक्वासरे ।

६२४ १२३५६ छन्दसार

प्रारम्भ - ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ छंदसार ॥

दोहा

कृष्ण चरन चित आन, कहु सुमति पिंगल कछु ।
जिह्वै छदै हि जान, प्रभु गुन जामैं वरनियै ॥१॥

पोडस कर्म चौपई

प्रथमहि सख्या करम वताय । प्रस्तारह सूची चित लाय ॥

पुनउ दष्टि नष्टि सुख खान । मेर पताका मरकट जान ॥२॥

अष्ट कर्म ए मत्त के पुन वरनन के जान ।

इह त्रिध पोडस कर्म ए वहे सुकवि सुख दान ॥३॥

अन्त :-

॥ अथ वर्ण मर्कटी ॥

छपै

वर्ण सख कोठार, करहु सूरत गठ पकत ।

वृत पकत भर आदि, एक ते अंक क्रमहि गत ।

दूजी पंकत भेद, दोय घर दुगने ठानहु ।

इन दोहूवन गुण, चतुर वर्ण पंकत मे आनहु ।

इह अर्थ अक गुरु लघु पंकत, पच छठइ भरि सु पुन ।

गुरु अरु वर्ण अक सम मत्त, पक्त त्रई वर्ण मर्कट सुगुन ॥५॥

इति वर्ण मर्कटी ।

टीका —

वर्ण मर्कटारी वर्ण जितरा री मर्कटी करणी ह्वैं तितरा कोठा उभा कीजै ।
तिरछा ६ कोठा कीजै, सदैव उणा १ आगें इसी सख्या मालीजै । व्रत १, भेद २,
मात्रा ३, वर्ण ४, गुरु ५, लघु ६, इण तरै ६ नाम लिखीजै । अठै वर्ण ३ री मर्कटी
करणी है । प्रथम व्रत पक्ति १ सु अनुक्रमे आक भरीजै (१) दूजी पक्ति भेद री
प्रथम २ घर ने दूणा करने आगैं जितरा कोठा हुवै सो भरीजै । २।४।८।१६।
३२।६४। इण रीत भरीजै (२) हमे चौथी वर्ण पक्ति । इण ने पहिली पक्ति ने
दूजी पक्ति रा आक गुणाय ने भरीजै । २।८।१६।३२। इण रीत भरीजै (४)
हमे गुरु लघु री ५।६। पक्ति भरीजै । तठै वर्ण पक्ति रा आक आधा करने दोनु
५।६। पक्ति भरीजै । १।४।१२।३२। इणरी ५।६ पक्ति गुरु लघु री भरीजै । (५-६)
अव ३ मात्रा पक्ति भरीजै । अठै वर्ण पक्ति ने गुरु पक्ति रा आंक भेला करने
भरीजै । ३।१२।३६।९६। इण रीत मात्रा पक्ति प्रस्तार १२ मात्रा, ८ अक्षर,
४ लघु, ४ गुरु । तीन वर्ण ग ८ प्रस्तार, ३६ मात्रा, २४ वर्ण, १२ गुरु, १२
लघु । चार वर्ण रा १६ प्रस्तार, मात्रा ६६, वर्ण ६४, गुरु ३२, लघु ३२,
इण रीत उत्तर दीजै ।

वर्ण ३ री मर्कटी यत्र

१	२	३	४	५	व्रत
२	४	८	१६	३२	भेद
३	१२	३६	६६	२४०	मात्रा
२	८	२४	६४	१६०	वर्ण
१	४	१२	३२	८०	गुरु
१	४	१२	३२	८०	लघु

पुष्पिका - इति षोडस कर्म सूरत मिश्र कृत छदसारे सपूर्णम् ॥ इति श्री पुष्करणा ज्ञातौ पुरोहित वैणावत भवानीरामात्मज इद्रभानु कृत टीका समाप्त ॥

श्लोक

एकोनविंशे पचदशोपि वर्षे कार्तिकमासे शुक्लदले च पक्षे ।
 करोतिथोना च अर्कपिवासरे लिखत च साधुरुदेरामकेन ॥१॥
 फलोधीनगरे श्रीहरमदिरे लिखित च साधु निरञ्जनी
 श्री भागवतीदाशजी तस्य शिष्योदेरामकेन स्ववचनार्थम् ॥२॥
 (सवत) १९१५ का० शु० २ । श्रीरस्तु । शुभ भूयात् ।

६६० ११२८३ (२) जसवन्तसिंहजी के दोहे^१

प्रारम्भ - जसवत गरव न किजीयै, तज दीजीयै अभमीन ।
 षट दरसण वेठा रहा, अ(उ)डगन चढी वीमीन ॥
 कविनाम कला रहै कालु कहै, मुठी चीणा चवाय ।
 सत जाय पत छाडियै, घैवर खाय बलाय ॥

१ कालू द्वारा महाराजा से यथोचित सम्मान प्राप्त न होने के कारण क्षुब्ध होकर लिखे गये ज्ञात होते हैं। महाजनी लिपि में, अनेक अशुद्धियों से पूर्ण, विषहर कोटि के दोहे आदि स्फुट छन्द हैं ।

सौ कवत न एकै दुहरो. नावक कैसे तीर ।
 लागत ही छिः जात है, नैक न होत अधीर ॥
 बढूक वीन गुणोण अड, नैणन वीण दुरस ।
 सो लगै छै लीण उर, कोड जीवी न तुरस ॥
 गात सुग्गी गीग्डी, ऊभी अग लगाड ।
 सीर कु रयण मही तणौ, फल पौमीयो कीवाड ॥
 जा घर कु तू कहै अपना घर,
 ता घर मै घर केऊ वसे है ।
 नील वियाल विलाव विली,
 विल मुसह भीतन माँह घुसे है ॥
 भुछ छछुदरी छपगी छपगी,
 मंकरा मंकरी तिण माँहै पसै है ।
 तै ज कियौ अपने रस कु,
 अपने अपने रस सवे ई बिरसै है ॥

६६१

११६८३

जादवरास

प्रारम्भ :-

॥ श्री दे० ॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

दुहा

समर रिषभ जिनेसरु, मन वल्लित दातार ।
 अलिय विघन दुरै हरै, वर्त्ते मंगल चार ॥१॥
 सासण नायक वीर नै, नमता नवनिध होय ।
 उत्पति कहू जादव तणी, माँभल ज्यौ सहू कोय ॥२॥

ढाल चौपाइनी देसी

एहीन जवू द्वीप वखाण । भगत खैत्र कोसवि जाण ॥
 गढ मढिदर पोल पागारि । वन वाडी कुठाठ विचारि ॥
 घन घान करि पुण भरी । लोभै जाणै इद्रनी पुरी ॥
 मुखोया लोक वसे निण माय । विहावति नामै तिहा राय ॥

हय गय रथ पायक दल पुर । चारणी राणी नित रहै हजुर ॥
 सुख विलसै करै लील विलास । आयो वसत खेलननो मास ॥
 एक ममै राजा नीसरचौ । निज सेन्या सेती परवरचौ ॥
 वीर कुविदक केरी नारि । राजा देखी मैहल मभारि ॥
 रूपै रज्यो भुप विशेष । नयणन खडे वनमाला देख ॥
 रामति रमनै आयो राय । निज मन्त्रीसर नै तेडाय ॥
 वात कही वनमाला तणी । त्यावो नारी मुज सुख भणी ॥
 रिप चोथमलजी कहै पैहली ढाल । आगै सुणज्यौ वात रसाल ॥

अन्त -

दुहा

संजम लीधो मनरली, परजन संव कुमार ।
 थिवरा पासै सीखीया, द्वादसी अग वीसतार ॥१॥
 सीह ज्यु सजम पालता, मुर वीर नै धीर ।
 गुणरतन छवछर करै, तपीत खीयौ जिन सीर ॥२॥

तीर्थ ते नमुरे ए देसी

मुनीवर मोटा वेजण गुण गिर वारे ।
 पालै पाच अचार साध गुण गिर वारे ॥
 करणी करता निरमली गुण गिर वारे ।
 नवकोटी धर है विहार साध गुण गिर वारे ॥१॥

जादव वंस उजवालीयौ गुण गिर वारे ।
 सहै परीना घोर साध गुण गिर वारे ॥
 अत समै केवल लही गुण गिर वारे ।
 मुक्त गया करम तोर साध गुण गिर वारे ॥२॥

सोलैं वरस लगै पालीयौ गुण गिर वारे ।
 चारत्र खडानी धार साध गुण गिर वारे ॥
 अत गढ मै चालीयौ गुण गिर वारे ।
 एक मास तो सथार साध गुण गिर वारे ॥३॥

मुनवर ना गुण गावता गुण गिर वारे ।
 तुटै करमारी कोड साध गुण गिर वारे ॥
 रिष चोथमलजी कहै साधना गुण गिर वारे ।
 पाय वटु वेकर जोड साध गुण गिर वारे ॥४॥

उतपत कही जादवा तणी गुण गिर वारे ।
 काड मुत्र कथा कार साध गुण गिर वारे ॥
 साचा करनै सरद जौ गुण गिर वारे ।
 पछै गानी वदै ततसार साध गुण गिर वारे ॥५॥

सुणीयौ धारचौ ज्यु दाखीयौ गुण गिर वारे ।
 फेर क्यु हीक चोज लगाय साध गुण गिर वारे ॥
 मारी मत सारु कह्या गुण गिर वारे ।
 वले सुत्र वदै सौ न्याय साध गुण गिर वारे ॥६॥

रचनाकाल सवत १८७८ गुण गिर वारे ।
 काती वद तेरम दिन जोय साथ गुण गिर वारे ॥
 डणमै इधकौ उछ्यौ हुवै गुण गिर वारे ।
 तो मिछामटुक्कड मोय साध गुण गिर वारे ॥७॥

रचनास्थान नगर नगीनी नित नवी गुण गिर वारे ।
 लोक कहै छै वाण साध गुण गिर वारे ॥
 मुण मुण नर चेतज्यौ गुण गिर वारे ।
 काड काजौ व्रन पचखाण साध गुण गिर वारे ॥८॥

पुष्पिका - इती जादवरास सपुर्ण । पुजजी श्री चोथमलजी तथ सीप
 बुधमलजी । लीखतु सरूपचन्द जोधपुर मधे काती वद १२ सपुरर्ण ११११

७२६ १८८४७ (२८) भगडो - पनघट को

प्रारम्भ - । अथ भगडौ ।

कूप चढी पिणहार, दोन्यु भगड पडी ।
 हरजन सागट नार, वाना वोहोत अडी ॥ टेक ॥

वोली हरजन नार मोहि भर लेणै दे-री ।
लागैगी तेरी छांट जायगी गगरी मेरी ॥
तू पीछै भर लीजे ऐ कहा होत है वारि ।
ए तो जव सुगरी कह्यौ जल उठी दुगरी नारि ॥१॥

चोली सागट नारि वैसन् कव होइ आर्ड ।
अंत हमारी जात काहा तेरै चतुराई ॥
तू पीछै भरि लीजीऐ हे सब दुनीया भरि जाइ ।
जे तू भगत राम की हे तो न्यारो बूप खिणाइ ॥२॥

तू तो सागट नारि धरम की बात न जाणै ।
हिरदै नही हरि नाम आपणी बुधि बखाणै ॥
सगी जीवा जूण की हे चौरासी की देह ।
मोसूँ भगव्या काहा होवै हे तूँ पहली भरि लेह ॥३॥

देखी तोमी नार नवा नित पाखड करती ।
पाणी पीती छाणि न्हाइ-क रोटी करती ॥
चाळी सू बूढी भई हे पाखड कीया नाहि ।
यो कुल अब ही वीगज्यौ न्हाइ न्हाइ रोटी खाइ(हि) ॥४॥

मै पूज्यू राजा राम सकल देवन कौ देवा ।
मनमा वाचा लाइ करु मै हरि की सेवा ॥
मेरे तौ पत व्रत राम को हे मै नही पूज् आन ॥५॥^१

मै धोकूँ देवी देव पावू गोमा को ध्याऊ ।
करु कडाई लाफसी सदा लूँदा गटकाऊ ॥
गगा जाऊ न गोमती हे पोकर कदे न न्हाइ ।
पूज् देवी चंडका हे तन भर खाइ अघाइ ॥६॥

हरि तजि पूजै आन अन्याई उनक् कहीऐ ।
नीचन सू महानीच सग वाकै नही वहीऐ ॥
आन चडावो खान है ऐ जान मडा को अग ।
जा धरि हरि की भगत नही हे तजीऐ वाकौ सग ॥७॥

तेरौ तो मोडीयाँ बुरो नित उठ मूँड मुडावै ।
करि ऊपर जल लेहू बैठ करि तिलक बणावै ॥
मिर पतर मो लीया फिरे हे सब कुल मारचाँ लाज ।
भाई बध कुटव की खोई हे बलती कहूँ मैं आज ॥८॥

कठी माला तिलक प्रभु को उजल बाँनू ।
राम नाम को तेज नहीं कोई जग मैं छाँनू ॥
राव रक सबही निवै हे तिरलोकी को ईस ।
जम भी दावो ना करे हे सिर ऊपर जगदीस ॥९॥

मेरे तो घर को भलो नित कहाँ मेरो मानै ।
राखै मेरा बाल ऊठ कर पाणी आणै ॥
पीसै पोवै करि धरै हे मने खवाइ खाइ ।
गोवर कचरा डार कै हे कहूँ जब बाहिर जाइ ॥१०॥

तू तो नुगरी नार आपक नर कू वस कीयी ।
स्वान ठूकडौ खाइ ध्रक है बाकौ जीयी ॥
कैतो तोनै छाड दे हे कै कहूँ ऊठर जाइ ।
तोसी नुगरी नार को हे दरसण करे बलाइ ॥११॥

ऐक दिना कलीया को बाबो माला ले करि आयी ।
जब ले वदी मुसल चरखनीयी बिखरायी ॥
पाणी जाऊ न पीसणै रे चूलै करू न आगि ।
दई मारचा माला फँक दै रे नही तो पीहर जाऊली भागी ॥१२॥

तू तो सागट नार नाव हरि को नही लीनो ।
साध सगत मै बैठ राम रस कदे न पीनो ॥
मुत हीणी बुध बाहरी हे माहा मूढ अजाण ।
जा घर साध न पूजीया हे सो घर सदा मसाण ॥१३॥

बोली व्याहित नार नुगरी को कीनी भूठी ।
मो बोली सोनार राम राम करि उठी ॥
रीछ भील वानर तिरचा हे राम नाम गुण गाइ ।
तेरा आन देव मूँ कुण तिरचाँ है ऐकही देह बताइ ॥१४॥

जीती हरजन नार नुगरी कू दिण्या दीनी ।
जा जैसी उनिमान आप जैसी करि लीनी ॥
गुरु - सिख भेला भया यो कर ग्यान विचार ।
राम नाम परताप सू रे जीती हरजन नार ॥१६॥

॥ इति संपूरण ॥

८३२ १०६२४ (७) देवादासजी की वाणी

गारम्भ - अथ साध श्री देवादासजी की वाणी अणभै लिख्यते ।

प्रथम स्तुति का - किवत - लिख्यते ।

नमो अखडत राम, नमो सतगुरु सुखदाता ।
नमो अनतही कोटि, राम रस पीइ पिलाता ।
जिनको गही-ज वोट, रहो सिर सदा हमारु ।
अठ पहरची मन मेल, सुरत धर नू रति न टारु ।
देवादास वदन करै, बारु वारज जोइ ।
राम गरु अर सत जन, हिरदै राखूं योइ ॥१॥

इती प्रथम स्तुति को किवत ।

१ देवादासजी की अनुभव-वाणी विभिन्न छन्दो मे अङ्गबद्ध की गई है । यथा - साखी, कुण्डलिया, रेखता, नीसाणी, चन्द्रायणा आदि । इनके अतिरिक्त कुछ कृतियों को ग्रन्थ नाम से भी अभिहित किया गया है, यथा : 'भगति भेद', पत्र सख्या ४८४ से ४८७; 'सार-असार जोगग्रन्थ', ४८७ से ४९० । इसके बाद गाथा का पद शीर्षक से विभिन्न रागो मे निबद्ध १०५ पद हैं । इन रागो के नाम इस प्रकार दिये गये हैं —

राग भैरव, राग ललित, राग विभास, राग देवगधार, राग रामगिरि, राग विलावल, अल्हीया विलावल, राग जैजवन्ती, राग आसा, राग गौड, राग सारंग, राग गौडी, राग वसन्त, राग काफी, राग जैतश्री, राग आसासींधू, राग हींडोल, राग मगल, राग कल्याण, राग कनडी, राग कनडी, राग धूनी, राग बिहगडी, राग टोडी, राग पजाव, राग सोरठि, राग गिरनारी सोरठि, राग सुवासोरठि, राग मलार, तोयग मलार, राग जगली, राग मारु, राग घनाश्री, राग केदारो, राग बधावा, राग जोग-घनाश्री, राग आरती ।

प्रथम गुरुदेव को अंग लिख्यते ॥ ३

स्तुति

राम गरू सब सत कूँ, देवो नावै सीस ।
बार बार परनाम है, मेरी विसवावीस ॥१॥

अंग

गुरुनाम रामचरणजी गुर सही, मेरै सिरि सोधत ।
देवादास सरणै रह्या, दुवध्या सब खोवत ॥१॥

देवा दुवध्या डूरि करि, भेटे तीनू ताप ।
रामचरण पद परसता, नास होइ सब पाप ॥२॥

देवा ग्यान भगति वैराग का, आठ पहर ओदार ।
रामचरणजी बोध दे, बौहीत उतारया पार ॥३॥

रामचरण म्हाराजि दे, गरक ध्यान अर ध्यान ।
लोभ कामना भेटि करि, निरभै कनै निधान ॥४॥

रामचरणजी रचि रह्या, ब्रह्म बिछ कै माहि ।
जै कोई बैठै छांहा तलि, सो डम्रत फल खाहि ॥५॥

सनगुर का दीदार मैं, मिलै पदारथ च्यारि ।
देवादास दिल सुध मू, धारण लेवै धारि ॥६॥

अन्त -

आरती ३

आरति अखड राम की कीजे । राम राम रमनां मू पीजे ॥टेक०॥
प्रथम आरति मन मतवाला । घट मैं दीपग ग्यान उजाला ॥१॥
दूसरी आरति दीरघ देख्यां । निम दिन हिरदै हरि कू पेख्या ॥२॥
तीसरी आरति तिरपति पाया । निरभै गिगनि निमाण वजाया ॥३॥
चवथी आरति चहू दिसि फूल्या । पेध पहोय परि भवरा भूल्या ॥४॥
पचवी आरति पूरण दरस्या । आनम मिलि परमात्म परस्या ॥५॥
जन देवादास ते, गुणं म गावै । सत गुर सरणि बौहीत मुख पावै ॥६॥

आरती ४

आरति उभै निरतरि कीजे । ऐक गर ऐक राम ही पीजे । टेक।

मन डद्री परकति निरवाल्या । आतम देव निरतरि भाल्या ॥१॥

सतगुर सवद अधिक अधिकारा । देवादास ऐ मोखि दवारा ॥२॥

पुष्पिका -

इती राग आरती सपूर्ण ।

राग ३४, पद १०५ । इति गावा का पद सपूर्ण ।

अथ वाणी की सख्या को व्योरो । स्तूति का किवत ३, अमृतुति की साखी ८२, साखी २२२६ । अग २४, चन्द्रायणा १३३ । [अन्तिम पत्र फट जाने के कारण उस पर कागज चिपका दिया गया है अतः पूरा व्योरा पढ़ने में नहीं आता है] अग १४, सवैया आदि ६६ । अग १४, भूलणा ५२ । अग ४२, किवत २०३ । अग ४४, कु डल्या ४८२ । अग १६, रेखता ४७ । नीसाणी २ । ग्रन्थ २ (भगति-भेद, सार असार जोग ग्रन्थ), पद १०५, राग ३४ ।

देवादास दयाल की वाणी

..

सासै जाइ सव हरीराम कहै दास

। इति अस्तुति को किवत ।

हुहा

सकलन-कर्ता हरीराम हरि गुर दया, सत जहू का हेत ।

अग लिखे अ(छी)तरैह, अतर होइ सु चेत ॥१॥

सकलन-स्थान भीलाडै मधि भावसू, सुख सति सगति धाम ।

अग वनाऐ जुगतिकरि, वाणी का विसराम ॥२॥

सकलन-काल सवत् अठारा सै सही, सैतीसा व्रतमान ।

मगिसर सूदि जू दोइज ऐह, वार शनीसर जानि ॥३॥

किवत

देवादास का देस हुढाहड माहि, प्रगनू वाहातरि जानू (नो) ।

परिचय कसवा मधि ऐक गाव, नाम गूटौ सौ मानी ।

ताहा प्रगट भऐ आइ, जन जो देवादासा ।

लीया भ्यान अर भगति, वैराग धरि वीहौत उदासा ॥

जगत डरत है दूरि, निकटि नही आवै कोई ।
 ब्रह्म देस की बात, सबद कहै बाहा बताई ।
 समत अठारा पूरि, ऊपरि हु अठाईस विलाऐ ।
 गिरा उचारी तव, राम जब हिरदै आए ।
 रामचरण गुर देव, जास का सिर परि राजै ।
 रामति देसाज च्यारि, खुसी होइ ताहा बिराजै ॥
 खानाजाद गुलाम है, हरीराम तुम दासजू ।
 भौ बूडत मौहि राखीयौ, सतगुर देवादासजू ॥१॥

इती वाणी सर्व संपूरण । राम राम राम राम॥

१३४१

११५८४

प्रत्युत्तरा (मुकरिया)

प्रारम्भ -छानउ आयउ मन ऊलहस्यउ । राति दिवस मन-माहे वस्यउ ॥
 आठ पुहर राखइ मुहि आगल । किउ प्रभु सयण नही सखि-कागल ॥१॥
 आठ पुहर घण विचि सचरइ । मन रगई तसु आदर करइ ॥
 निस-वासर गल राखइ नारि । किउ सखि सयण नही प्रभु-हार ॥२॥
 एक पलक तिण विण न विरहई । निण दीठइ स्त्री अति गह-गहइ ॥
 वाँह विलूधउ नही छइ कूडउ । किउ प्रभु सयण नही सखि-चूडउ ॥३॥
 देखता सत्र जग मन मोहइ । कस-मस करन धरत तनु सोहइ ॥
 रग रस रहइ मदा अग लागउ । किउ प्रभु सयण नही सखि-वागउ ॥४॥
 माकडी सेरी साम्हउ मिलीयउ । मुझ टालंता किमइ न टलीयउ ॥
 मा-मा करता पाडी माइ । सखि ए मज्जन ना वाई-साइ ॥५॥
 उण मो फाटी मइ ओ फाऊउ । सारी रातइ सेज रमाव्यउ ॥
 पर उपगारी अम्हसु वेवडउ । सखि ए मज्जन ना वाई-कैवडउ ॥६॥
 एक सरस अनइ स-मवादउ । जो वन माहि जोवती लाधउ ॥
 रुप रुठउ नइ मुहडइ मीठउ । सखि ए वालभ ना वाई-साठउ ॥७॥

एक अचुकड न रहइ वारिउ । लाजिउ लोके घगु टपारचउ ॥
जण देखता आवइ निरासउ । सखी ए वालभ ना वार्ड-हासउ ॥५॥
एक पाडोसी मो घरि आवइ । उग्रइ लाभ मो विणज करावइ ॥
लाहइ विणज करतउ जाण्यउ । सखि ए वालभ ना वार्ड-वाणिउ ॥६॥
जिण मो चावी सो मड चाविउ । मुभ चावती भावइ आविउ ॥
सहीज मुन्दर कुकु रोल । सखि ए सज्जन ना वार्ड-तबोळ ॥१०॥
जिण हु मोडी सो मड मोड्यउ । सो मइ रयणी परहउ छोड्यउ ॥
कड विलगउ न करइ चाचू । सखि ए वालभ ना वार्ड-काचू ॥११॥

जिण मोनड पहिरी सो मड पहिरचउ ।

उण पहिरचा मोनड किण ही न वहीरचउ ।

कंठ विलंब्यउ न करइ भार । सखी ए वालभ ना वार्ड-हार ॥१२॥

जिण मोनड चूसी सो मड चूस्यउ । तिह चूस्यड मेरउ कट्टु न मूस्यउ ॥

अति न छोडउ अति न लावउ । सखी ए वालभ ना वार्ड-आवउ ॥१३॥

सरस सकोमल घणु सुहावउ । चतुरग माहे दीसड चावउ ॥

होठ कठ मुभ लागइ मीठउ । का सखि वालभ ना वार्ड-साठउ ॥१४॥

छानड पगि छमकतउ आवइ । निस भरि सूनी मोहि जगावइ ॥

पाड्यउ चटकउ खलव्यउ काकण । का सखि वालभ ना सखि-माकण ॥१५॥

प्रीत विहूणउ मुभ प्रकासड । हसड जवुक विहूणड हासड ॥

अण वतलायउ भखड डलोलउ । कह सखि सज्जन ना वार्ड-भोलउ ॥१६॥

प्रीत नही नइ प्रीतज मडड । लोक सहूना चित्तज खडड ॥

आवड जावइ नित प्रति सवउ । कहउ सखि सज्जन ना सखि-जपउ ॥१७॥

उज्जल धवल अनड-स सनेहउ । तेण पुरप मु लागउ नेहउ ॥

देव जोग थी गमीउ जोती । का सखि वालभ ना सखि-मोती ॥१८॥

अण तेड्यउ केडड हुवउ आवड । मिलवा कारण मन मइ भावड ॥

जण देखता पाडइ आटउ । सखि ए वालभ ना वार्ड-काटउ ॥१९॥

एक मन्त्री मेरड सज्जन आयउ । आवत ही मड अग लगायउ ॥

गत दिवस मेरड उणमु खेल । कहउ सखि सज्जन ना सखि-तेल ॥२०॥

एक सखी मेरड सज्जन आयउ । आवत ही मड मुख लगायउ ॥

मुख लागत ही दिद्वउ मान । कहउ सखि बातभ ना सखि-पान ॥२१॥

पुष्पिका - सवत १७०२ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ श्री उपकेश गच्छे, कुकुदाचार्य सनाने भट्टारक प्रभु श्री कवकसूरिजी विजयराज्ये विनेय मुनि हर्षमुन्दरेण लेखि लावीया मध्ये लिपि कृत ।

१३४३ ११५८२ प्रबोध चन्द्रोदय नाटक *

प्रारम्भ - श्रीरामाय नम । श्रीगणेशाय नम ।

॥ ग्रन्थ चन्द्रोदय लिखित ॥

अभिनद नु परमार्थ कियौ । अरु ह्वै गलित ज्ञान रस पियौ ॥

नाटक नग चिन मै वस्यौ । ताहि देखि तन-मन उलहस्यौ ॥१॥

कृष्णभट कर्ता है तहा । गगा सागर भेटी जहा ॥

अनभे कौ घर जानै सोई । ना सम नही बवेकी कोई ॥२॥

तिन प्रबोधचन्द्रउदै कियौ । जनु घट दीप हाथ कर लियौ ॥

करणी सू रमु पावहि स्वाद । कायर और करहि प्रतिवाद ॥३॥

डूरी उदार पराडण होई । कबहु पै न रीझै है सोई ॥

पच तत्व अव्यक्त मन धर्यौ । तिहि महि नाटक विस्तर्यौ ॥४॥

* इस नाटक में सुमति, विवेक, श्रद्धा एवं शान्ति धारण करने में सुत्तार के मायाजाल में मुक्त होने का मार्ग बतलाया गया है । नाटक में काम, रति, विवेक, मोह, माया, अहंकार, लोभ, तथा सुमति, करुणा, क्षमा, सतोष, श्रद्धा आदि गुणों को पात्रों के रूप में प्रस्तुत कर रक्त बाधा गया है ।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों की संक्षिप्त विवरण, भाग १' में प्रबोधचन्द्रोदय के कोई आठ कर्त्ताओं के नाम दिए गए हैं, किन्तु मल्होत्रा श्रवण नयरादास का उल्लेख नहीं है । प्रस्तुत तथा दृष्ट चर्चित होने के कारण जैन एवं अर्जुन दोनों ही वर्ग के कवियों ने इसे अपनाया है । कवि मल्ह ने दृष्टान्त की दृष्टि से आधार पर ही प्रस्तुत कृति की रचना करने का स्पष्ट उल्लेख प्रारम्भ में ही किया है ।

- अतर नाडी सोखै वाड । अरु आनद समुद्र समाइ ॥
विस्व चक्र महपति तन होई । पंडित नाम कहावै सोई ॥५॥
- गुरुनाम जव वर खेमचन्द्र गुर दियौ । तव आरभ अथ कौ कियौ ॥
वह प्रबोध उपतिष्ठौ आय । अतकार तिनि छात्यौ खाय ॥६॥
- भितर बाहर कहि समुझावै । होइ चतुर तापहि लखि आवै ॥
जो या रस कौ वेता होई । या महि खोजै पावै सोई ॥७॥
- कविनाम मथुरादास नाम निस्तारचौ । देवीदास पिता को धरचौ ॥
अतरवेद कोल मै रह्यौ । तीजो नाम मल्ह कवि कह्यौ ॥८॥
- ताहि सुनत अदभुत रुचि भई । निश्चै मन की दुविधा गई ॥
जितनै पुस्तक प्रियरी आहि । यह श्री कथा सरोवनि ताहि ॥९॥
- यह निज वान जानियौ सही । पञ्चै प्रगट मल्ह कवि कही ॥
पोथी एक पहुँची आनि । ज्यू ह्या त्यू इह्या राखी वानि ॥१०॥
- रचनाकाल सोरसें सवत जव लागा । ताकौ करत बगस एक अर्ध भागा ॥
कार्तिक कृष्ण पछि द्वादसी । ता दिन कथा चित्त महि वसी ॥११॥
- जै हु कृष्ण भगति नित करौ । वासुदेव गुर मन महि धरौ ॥
तौ यह मोपहि ह्वै जो तिसी । कृष्णभट भाखी है जिसी ॥१२॥

दोहा

- मथुरादास विलास यह, जै रमि जानै कोई ॥
इस रस वीधौ मल्ह कहि, वगदनि बहुरि न होई ॥१३॥
- जव ज्यू चन्द्र अवासा होइ । तव त्यू तिमर न देखै कोई ॥
तैसे ज्ञान चन्द्र परकासै । ज्यू अज्ञान अधेरौ नासै ॥१४॥
- परमात्मा प्रकट है जाही । जानो उहै महादेव आही ॥
ज्ञान नेत्र* तीजौ तव होई । मृग त्रिणा देखै जग सोई ॥१५॥

* प्रथम पत्र के उपर्युक्त छंद बाद में नवीन पत्र पर लिख कर पाठ पूरा करने की दृष्टि से जोड़े गये हैं ।

अनभै ध्यान धारना करै । समिता सील माहि मन धरै ॥
इहि विधि रमि जाँ जानै सही । महादेव मन वचन कर्म कही ॥१६॥

कथा सनवध

राय गोपाल चद्र व्रत लीयौ । तिन सब राज सखा कूँ दीयौ ॥
कित कित ब्रह्मह सौ कह्यो । आपु निरारभ ह्वै रह्यौ ॥१७॥
परमात्मा गुपालहि मानि । कित ब्रह्म जिय आत्मा जानि ॥
राजा कित ब्रह्म है जैसी । अब हौ वरनि मुनाऊ तैसी ॥१८॥
नव द्वारा सरवगी देस । तिहु लोक ग्रामी नु नरेस ॥
महा ऋष कछु कह्यौ न जाड । विदि मान नट लीयौ बुला(इ) ॥१९॥
तन आयस भूपाल हि दीयौ । नौ रस नाच सबै तुम कीयौ ॥
साति निरति दिखावैहि जैसै । अनभै ना विखावैहि तैसै ॥२०॥

नट ऊवाच

जो गुन देख्यौ मुनौ न होड । सो रसना चिन सकई कोड ॥
सुनत बात राजा रिस भयी । क्यूँ रे यहु रस पृथ्वी गयौ ॥२१॥
कै तू नाचि दिखावहि ताहि । कै तू दूरि दैस त्याग लै जाहि ॥
तव नट डर्यौ वीनवै ऐव । कछु अवधि हम दीजै देव ॥२२॥
राजा जवहि अवधि दिन दीयौ । नटनि पयानी दक्षण कूँ कीयौ ॥
गगामागर पहुच्यौ जाड । तहा कोऊ रह्यौ समाधि लगाड ॥२३॥

अन्त - तव आकाश भयी जैकाह । अरे बछ मिलि गयौ विकारु ॥
पुरप प्रगट परमेस्वर आही । बछ विवेक जानिये ताही ॥६६॥
अब प्रभ ये मुखि तुम धरीयौ । चद्र प्रबोध उदै तव करीयौ ॥
सुमति विवेक र सरवा साति । कामादिक काट नजु भात ॥६७॥
इनकी क्रिपा पवल मन भयी । जो हौ आदि सोई फिरि ठयौ ॥
विष्ण भगति तै पहुचौ आई । (पक्ति छूट गई है)
तेरै परमादा । कृति कृति भयी मिट्यौ अनवादा ॥६८॥

अवनि हि सग नहीगो एही । हूँ भयी ब्रह्म भूजिहौ देही ॥
विष्ण भगति तू पहुचौ आई । किर्या आनन्दज सदा सहाई ॥६९॥

अरु चिरकाल मनोर्थ पूजे । गए सत्र साल हे दूजे ॥
 जै नर बरति वासना होई । ताते पर और नही कोई ॥७०॥
 अद्वीत राज अभै पद लह्यौ । अच्यत चितवत अच्यत भयौ ॥
 जिम रस ईस्वर सनक सनदा । अरु वासिष्ठ भेद ताहि बदा ॥७१॥
 कृष्णभट सोई रस गाता । मथुरादास कहै सोई वाता ॥
 वदे गुर गोविंद का पाई । मति उनमान कथा सो गाई ॥७२॥
 [४७२]

पुष्पिका .- इति श्री मल्ह कवि विरचिते पठते हरते पाप । श्रुत्वा मोक्षि
 दार्डक जोगारभभवेसिधा आवागमन न वरतते । इति श्री चन्द्रउदय
 प्रबोध पद्यमो अक सपूर्ण समापता ॥४७३॥ सवत् १७१७ मिति
 वैसाख वदि सात्यौ । लिखत खेमदास नागपुर मध्ये । पठनार्थ
 हरिरामदास । सुभ भवत् श्री श्री श्री श्री श्री

१३५३ १०८४८ (८) प्रश्नोत्तरी भाषा

प्रारम्भ - अथ ग्रन्थ प्रश्नोत्तरी लिख्यते ॥ टीका सजुगत ॥

ब्रह्मा

गुरु संत परब्रह्म कू, मम जु करत परनाम ।
 प्रस्न होइ दयौ प्रागि अति, वदत वचन अभिराम ॥१॥

सदगुरु दाइक सरव सुख, विघन हरन सब सत ।
 मंगल कारक ब्रह्म एह, तिहू ऐक भजि कत ॥२॥

आचारज सकर तणू, ग्रन्थ प्रश्नोत्तर नाम ।
 तिनकी भाषा कहैत हू, हरि कवि पूरण काम ॥३॥

राम नाम कलि पत्र है, सपति सरव तम भारि ।
 कविता सिधि निधि मुकति जू, सब भजता की लार ॥४॥

प्रस्न उतर दोन्यू जुगल, सकर वचन रसाल ।
 ममोखी जन उरि धरो, मणि रतना की माल ॥५॥

वदन बालकराम करि, उचरत गिरा ववेक ।
 समोधन अब होत है, सुणौ सकल चित टेक ॥६॥

श्लोक

अपारससारसमुद्रमध्ये समझ(ज)तो मे सरण किमस्ति ।
गुरो कपालो कृपावदत(तवैव) विश्वेस पादावुजदीर्घनीका ॥१॥

टीका

सिखो उक्त - दुहा

अपार समुद्र ससार मै, डूबत नहचै ऐव ।
कूण सरणि हम ऊवरू, को हो कृपाल गुर देव ॥१॥

गुरो उक्ति - अरेल

विस्व ईस ऐक राम ताम पद कवलजू ।
वड नौका एह जानि घ्याड होड त्रिमलजू ॥
या चढि उतरे पार समुद्र ससाररे ।
परिहा सिष्य सरणि एह तोहि सोही उरु धाररे ॥१॥

अन्न -

ग्रन्थो किवत

ग्रन्थ-माहात्म्य प्रस्नौतर एह ग्रन्थ ज्यौ उर धारत वड भाग ।
इनमै सब तत्व वुस्त(वसत) है ग्यान भगति वैराग ॥
ग्यान भगति वैराग और भी सति सति भाखी ।
नीति अनीति विवेक वदत बाधा नही राखी ॥
परम आनद वरतै मही रमै मनो अति लाग ।
प्रस्नौतर एह ग्रथ ज्यौ उरधारत वड भाग ॥२॥

दुहा

सकराचारज भाखीयौ, ग्रथ प्रस्नौतर नाम ।
वडी धरम एह जानीऐ कलि जीवन विसराम ॥१॥
सकराचारज सकर की, भऐ अनभी अवतार ।
पाखड बहड मै लोक मै, कीनौ आड पसार ॥२॥

जिन ए ग्रथ वखानीयौ, मित्र दाम जन काम ।
कछु कछु भापा जास की, करी जू बालकराम ॥३॥

- स्वामीजी श्री सतदास, ताप्रजि कृपाराम ।
जिनके रामचरण सिख, सहू नमम विसरांम ॥४॥
- टीकाकार तिनकी अग्या भाखीयौ, टीका बालकराम ।
सतदाम की सरणि मैं, जपि करि रामो राम ॥५॥
सुणीयौ ग्यानी पिंडना, पुनि जू सवही साध ।
एह भाषा लघु दीरघ जो, लीज्यौ कर समाध ॥६॥
छुदर मेरी बुधि जू, भाख्यौ घटि वधि एह ।
अरघ वचन बालक वदै, मात समझि सव लेह ॥७॥
सकर तुम भाषा तणू, तुमही जाणू भेव ।
जो मोकू तुम भाख्यौ, सो मैं भाख्यौ एव ॥८॥
तुम सकर सरबगि हो, अतरजामी राम ।
ऐही खम्या प्रभु कीजीयौ, घट वदि वचन विराम ॥९॥
ऐह अथ प्रस्नोतरी, सकर भास अगाध ।
टीका बालराम कृत, गुर मीठाराम प्रसाद ॥१०॥
- रचनाकाल एह ग्रंथ चित धारिया, नहचै होड कारज ।
समत अठारासै मही, एक बीस व्रतमानज ॥११॥
फागण वदि एकादसी, बार सनीसर जान ।
(..) ॥१२॥
नग्न भीलाड़ा मधिजू, टीका भऐ प्रकास ।
सुभ मंगल आनंद करि, आत्मराम विलास ॥१३॥

पुष्पिका :- इतीश्री प्रस्नोतरी रत्नमाला अथ सपूरण । सकाचारज
त्रिरचिताई भाषा कृत बालकराम स्वामीजी श्री रामचरणजी की
अग्या सू । वाचै सुनै ज्यानै राम राम ।

१३७० १२०६६ (५) प्रिथीराज चहूआण रासउ रसाल
[बहुचर्चित धारणोज वाली प्रति]

प्रारम्भ - ॥ दै० ॥ श्रीसारायै नम ॥

प्रथम मंगल मूल सुत, वीथ सुतर एकुँ घर धम्म उभ्यो ।
त्रिप्ल दुशामिय त्रिपुर वर्ण पत्त मुखा पत्तो श्रुम्यो ॥

कुसम रंग भारहि सुफल, उकत्ति अलव अमीर ।
रस दरसन पारस्सर मइ, श्री(ई)सअ सम कवि कीर ॥१॥

भुजगी छद

प्रथम भुजगी सुधारि ग्रहण, जिरो नाम एक अनेक कहण ।
दुतिय लभय देव ता जीव तेस, जिरो विश्व राख्यो बल मित्र सेस ॥२॥
त्रिनिय ता(भा)ग्यी व्यास भारत्य भख्यो, जिरो उत्त पारत्य सारत्य सख्यो ।
चवे सु केदेव परिच्छच्छ पाय, जिरो उद्धरे सब कुल वसराय ।
नले रूव पचमति श्रीहप(र्ष) सार, नले राय कठ द नैपद हार ।
कवे कालदास छ भाषा समुद, निय सेतुवधु सु भोज प्रवध ।
सत दड मामाल लालिय कवित्त, जिरो वुत्तरग सुणग सरित्त ।
गिरा शेष वा-(ण) कवी कव्व वध, जिरो शेष उचिष्ट कवि चद छद ॥३॥

अन्त - चद फुरमाण मागिवे कु जाड । गोरी बादिसाहि प्रिथीराज
फुरमाण मागइ । तव हि फुरमाण देवे कु बादिसाहि हजूर हुड ।
तव चाद(चद) राजा सु कह्यो ॥ राजा प्रिथीराज सबदेस्वर मुरताण
सुइ मुख फुरमाण देता हड ।

कवित्त

भयो इक्क फुरमाण डक्क वाण जि गुण मजिड,
सुइ सबद अर वान अग्र सु अविचल करि वजिड ।
भयो वीय फुरमाण खचि रख्यो श्रवण वर,
तीय सबद सुणि निसुणि निमुणि मुण्यो सुलताणो परचो घर ।
लड दसण रसण दस रधि हुड बहु कपाट विधग सघण,
सुलताण परचो खा(न) पुकारचो त दिन चद राजन मरण ॥४१५॥
परत भूमि सुलताण खान मिलि खलक पिट्टि सिर,
मड वरजिड बहु वार साहि दुसमन अ सभवर ।
भोग छडि करि जोग भट्ट आसोजु सवि करि,
वचन विधि हक मय लियो गोरीह नरिद हरि ॥
टुक मभि टु ट टुकरे करहु तव मु साहि गोरहि घरड,
हजि जाण खान डम उच्चरिय अवक चित्त कोई कवि करड ॥४१६॥

दूहा

सार विसि करि पलक ग्विजि, मरणहु चद नगिंद ।

रासेउ रसाल नव रस निवधि, अचरिजड दु फणिंद ॥४१७॥

पुष्पिका :-

इतिश्री कविभट्ट चदवरदाई कृत राजा श्री प्रिथीराज चहूआण
रासउ रसाल सपूर्ण ॥ ग्रथाग्र (थ) १३०० सिलोक छड । श्रेयस्तु ।
लेखक वाचयो । यादृश पुस्तके दृष्ट तादृश लिखितमया । यदि
श्रुद्धमंश्रुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥१॥ श्रीरस्तु ॥ श्रीकल्याण ॥
॥ सवत् १६६७ वर्षे गाके १४३२ प्रवर्त्तमाने आसातु मासे शुक्ल पक्षे
पचमी तिथौ ॥

महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री कल्याणमहलजी तत्पुत्र राज्य
श्री भाणजी तत्पुत्र राज्य श्री भगवानदासजी पठनार्थ । श्रेय
कल्याण । श्री शुभ भवतु ॥

१४४४

१२५०३

भक्तरतन

(महाजनी लिपि मे)

प्रारम्भ -

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

राग-अरज भावन

तुम सायव हु दास मैरै रामजी ।

तुमही करो नीरघार मुणो करतारजी ॥

पानी मु पैदा कीयो मेरा रामजी ।

नख सख सुज वनाय मुणो करतारजी ॥

गरभ माय रच्या करी जठर अगन सु वचाय ।

सुणो करतार जु ॥

जनम त(तै)ही पै पाईया मैरै रामजी ।

दसन कीनै अनपान मुणो कीरतारजी ॥

लगी जगत की बान मैरै रामजी ।

वाहर आके वीसरचा मैरै रामजी ॥

केतानाम

जैदासी जैदास तैहारी । गुर मानदास बलीहारी ।

गुर अवगत सब गत धरै । गुर आप तरै पर तारै ॥

गुरु-महिमा गुर दयावत उपगारी । समज्यावत नर अरु नारी ॥
 गुर राम भगत करवावै । गुर मारण आन चुडावै ॥
 गुरा ग्यान भाण दरसावै । गुर तमर अग्यांन नमावै ॥
 गुर अँ दान कै करता । गुर दुख दालीदर हरता ॥
 गुर पारत्रम परमैसर । गुर सरव माय सरवैसुर ॥
 गुर अधम उधार कहावै । भव जल सु पार लगावै ॥

अरल

सत गुर अँह सुभाव, करै भो पार सु ।
 ग्यान नाव वैठाय, वचावै धार सु ॥
 मैटै करम कलैस, रखै जम मार सु ।
 हरीया अँसै दीन, दयाल मीलावै सार सु ॥२६॥

दुहा

फीता (गीता) मै ईच्या भई, अव्यक्त कैसोय ।
 अव्यक्त अभास मील, मह तत्व छपजाय ॥२७॥
 X X X X ।
 अह तत्व ऊकार है, भयै जु तीर गुण ताये ॥२८॥
 त्रीगुण तै तीर दैव जो, ब्रमा त्रीसन महैस ।
 तीन लोक चवदै भवन, कीनै नाना भैस ॥२९॥
 च्यार खान कै जीव सब, चोरासी लख जात ।
 जनम मरन डोरी लगी, जोन जोन भुगतात ॥३०॥
 ब्रमा जो उत्पत्त करै, वीष्णु करै प्रतपाल ।
 सकर करै सीधारही, येह माया कौ ख्याल ॥३१॥

अन्त -

चोपई

सतगुर मानदास वलीहारी । तुमरी सरन लह्यो सुख सारी ॥
 जै जै सतगुर परम उदार । दरसायो मोही ब्रह्म अपार ॥२२५॥
 कहा लग अमुत्त करु तुमारी । गुन गभीर मेहमा अत भारी ॥
 मै बड मुख कचु न जानु । अत लघु बुध जो कहा बखानु ॥२२६॥

कवी की रीत कचु मै नही जानु । घट बड अछ नाही पीचानु ॥
भक्तरतन की पोथी कीनी । सो सब कृपा तुमारी चीनी ॥२२७॥
जब नुमरै मन भयो हुलासा । मम हिन्दै मै करयो प्रकासा ॥
नीतो कतीयक बुध हमारी । वानी सीक्षा जौ करत उचारी ॥२२८॥

दोहा

कवीजन मु अहे वीनती, करौ पुत्रवत नैह ।
भुल चुक जो है कचु नीज कर मुघ कर लैह ॥२२९॥

छप्पै

ग्रन्थ-माहात्म्य भक्तरतन सुख सार, सवन के सुख की दाता ।
पढै सुनै चीत लाय, सो होय सवन मै ग्याता ॥
उपजै प्रेम प्रकास, रहै नीज आनद राता ।
पावै परम हुलास, कपन कै ध्यान समाता ॥
होय लाल मिल लाल सु, रहै न दूजी आसा ।
फीर नही आवै जगत मै, करै अमरपुर वासा ॥२३०॥
संकट पीडा सब नसै, आवा गवन जो खोय ।
पढै सुनै जो प्रीत सो, धन सपत सुख होय ॥२३१॥

रचनाकाल जैठ महीनो सुकलपछ, मंगलवार सु वार ।
अेकादसी हरी वरत कु, भक्त रतन नीरधार ॥२३२॥
अष्टादस सेतीस को, समत मुघ वीचार ।
सतगुर कै परतापसो, वानी करी उचार ॥२३३॥

पुष्पिका - इती श्री भक्तरतन पोथी जैदास कृत सपुरण । स० १६३२
का मती मा० वद १२ दीतवार नै सपुरन करी । बाचै जीनै राम राम छै ।

१४५६ १०८७२ (२) * भक्तमाल

प्रारम्भ - । श्रीरामजी ॥ अथ श्री श्री पूरणदासजी म्हाराज की भक्तमाल
लिखते । स्तूत (स्तुति)

* इससे पूर्व रामसनेही सम्प्रदाय के सिंहवल खेडोपा पीठ के पट्टधर तथा श्री पूरणदासजी के गुरु श्री दयालदास कृत 'भक्तमाल' है ।

माखी

निमस्कार हरि गुरु जनां, आद अत मध ताम ।
 तिनही कू नित करत है पूरणदास प्रणाम ॥१॥
 प्रणम करूँ कर जोर कै, रामदास गुरु द्याल ।
 सब सता सिर न्वाय हो, परब्रह्म प्रतिपाल ॥२॥
 रिद्धक राम दयाल हो, अवर न जग में कोय ।
 औठभण परमात्मा, सब कर्त्ता सिद्ध होय ॥३॥
 अपनो विरद विचारजो, दया सिंधु माहाराज ।
 कठिन कलू यह काल मैं, मेरी तुमको लाज ॥४॥
 अरथ भेद वांणी वचन, जोड जुगत नहि काय ।
 सिसु वाणी ज्यू त्यूँ कहै, नीकै समझै माहि ॥५॥
 कठिन कली ओछी अवधि, होय विघन नहि पार ।
 पिता घरम प्रति पाल कर, लीजी आप सुधार ॥६॥

चौपई

विष्णु ब्रह्मा सिव आदहु कहियै । पोपण भरण जीव सोइ लहियै ॥
 वेद व्यास वगता सोइ नायक । सुख दे सर्व सिरोमण लायक ॥७॥
 सेसनाग की आद न अता । कुमेर वारद भक्ती पथा ॥
 सिनकादिक च्यारूँ अवतार । आदि श्रृष्टि मे आर न पार ॥८॥
 गुरु- अमीगम पुन रुखिया वाई । और अनत जन सरणै आई ॥
 नारा जन हृन्देव पाट ता बाजै । भोतीराम विमल सुख जाजै ॥९॥
 ता गादी रुधनाथ विराजे । ग्यान ध्यान जव तप सत साजै ॥
 एक जीव मैंहेमा काहा गावै । हरि सतन कौ पार न पावै ॥१०॥
 जन हरिराम परमपद पूगा । रामदास सिख रवि ज्यू ऊगा ॥
 तम अग्यान अघ भागे दूरा । विकसे जल सरोज उद सूरा ॥११॥
 तिन की साखा अति विस्तारू । गुरु दयाल पद सिर पर धारू ॥
 गादी दास दयाल विराजै । अनभव गिरा मेघ ज्यू गाजै ॥१२॥
 मेरा नाम सिरोमण मीई । डूजन तार लियो भव मोई ॥
 पच मात ज्यू है वड भागी । माता सुदर यू अणरागी ॥१३॥

अन्त -

चौपई

पीथारांम सिख कहु भाई । कनीराम दूदा सुखदाई ॥
 कोठारी गलतांन कहीजै । पीथल बहु परभाव लहीजै ॥१०३॥
 परसरांम सिख सेवगरामहि । निरभै परमहस सिध कांमहि ॥
 परिब्रह्म अस प्रगट मुख नूरा । सेवगराम परमहस पूरा ॥१०४॥
 मेघोदास सिख सिवरांमा । त्याग वैराग परमहस नामा ॥
 लालदास पट्टत सिख भारी । ध्यानदास जन धीरज धारी ॥१०५॥
 मनीराम परसाद प्रभावा । ऋपाराम पाद्वाराम सुभावा ॥
 जनसोभा सिख साजूरामहि । कुल अभिमान त्याग सुख धामहि ॥१०६॥
 निरमलदास कहू सिख सोई । वचन राम उर सीतल सोई ॥
 बुधाराम धीरज परतापा । हेमदास गुण अधिक मिलापा ॥१०७॥
 जन कालू सरणै विश्रामा । प्रागदास अरु कासीरामा ॥
 कुशलदास अरु नरसिधदासा । जगत जजाल छोड सब आसा ॥१०८॥
 मनीराम मालवै अस्थाना । उरजन उदैराम सिख जाना ॥
 राघोदास कहू सिख सोई । चैनराम ईम्रत भल जोई ॥१०९॥
 सहजराम के साधूरामा । रूपा विजैराम सू लामा ॥
 हरीदास सिख कहो सुइई । लछीराम कुसला गुरु भाई ॥११०॥
 गाव समदडी प्रेमदास जन । ता सिख लाडूराम जन ॥
 ग्यानदास सिख दास कल्याना । दोलत को सिख धीरम माना ॥१११॥
 दास संग्राम सिख रामहुचद । दयारांम पायो पमनिद ॥
 गोविंद सिख चैन माहारामा । जग जल मज कवल ज्यू धामा ॥११२॥
 वखतराम सिख तुलसीदासा । चतुरा आतमरांम विलासा ॥
 वस्तराम सिख भाखूं तेही । तुरसीदास कल्याण वदेही ॥११३॥
 साखा अनत अनत है भारी । सब वर्णों कहा बुध हमारी ॥
 मोकू दोस न दीजो कोई । वाल विलास कियौ है सोई ॥११४॥
 मेरा सतगुरु कहियै सम्रत । अतग जान पिवायो इम्रत ॥
 कहा अग्रज कहा भाग हमारो । पद रज पनी उठावण हारो ॥११५॥

दोहा

सतगुरु द्याल प्रताप तै, ग्रन्थ उचारन कीन ।
 मेरै मन उपज्यो हरख, मो तुछ बुध मत हीन ॥११६॥
 मै तो कछु समझू नही, देस काल अनुसार ।
 घट वद अक्षर मातरा, कविजन लहो मुधार ॥११७॥

क० (कवित्त)

रामदास गुरु द्याल, सदा उर व्यान हमारै ।
 तीन काल के सत, राम निज मित्र उचारै ॥
 पेमी नेमी सुवद, परमहंस वृकत वदेही ।
 परवृत्ती निर्वृत्त, भजै नित रामसनेई ॥
 के दीर्घ के अनुज लघु, सार सार गुण लीजीयै ।
 पूर्णदास प्रणाम नित, मम उर वास वसीजीयै ॥११८॥

इति भक्तमाल सम्पूर्ण ।

अतिरिक्त

सवैया

ता दिन तै यह देह धरी, दिन ही दिन पाप कमावन हारो ।
 नीच क्रिया बुध हीन मलीन, कुचाल अचार विचारबु हारो ॥
 औगुन कोनहि ओर कहा लग, ऐक भरोसो है आस तुमारो ।
 हो हरिया विनती इतनी, मुख सूं कहौ पूर्णदास हमारो ॥

१४६१ १२०२० भगवद्गीता सभाषा टीका

प्रारम्भ - ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री भगवद्गीता भाषा टीका
 दोहा सहित आनंदराम कृत परमानंद प्रबोधो लिख्यते ॥

दोहा

हरि गोरीश गणेश गुरु, प्रनर्वा सीस निवाई ।
 गीता भाषारथ कर्ग, दोहा सहित बनाय ॥१॥
 सुथिर राज विक्रम नगर, नृपति नृपति अनूप ।
 थिर थाप्यो परधान इह, राज सभा को रूप ॥२॥

कत्तानाम नाजर आनदराम के, इह उपज्यो चित चाउ ।
 गीता की टीका करी, सुनि श्रीधर के भाउ ॥३॥

आनदराम अन्न को, नाजर अति परवीन ।
 सुधर सुधीर विचार कै, जन हित करी नवीन ॥४॥

आपहि आनदराम यह, टीका रची बनाई ।
 निस दिन हरि हिरदे रहै, गिरधर कृष्ण सहाई ॥५॥

गीता ग्यान गभीर लखि, रचि जु आनंदराम ।
 कृष्ण चरन चित लगि रह्यो, मन मै अति आराम ॥६॥

आनद मन उछव भयो, हरि गीता अविरेखि ।
 दोहारथि भाषा लिखि, बानी व्यास विसेखि ॥७॥

जो इह गीता समझि कै, हिरदै धारै सौई ।
 ब्रह्म मगन निस दिन रहै, कर्म लियै नहि कोई ॥८॥

। इति आदि दोहा सपूर्ण ॥ अथ न्यास । . .

अन्त :-

दोहा

जोगेश्वर श्री कृष्णजु, अर्जुन हैं या ठौर ।
 तहा विजय अरु नित है, राज सपदा और ॥९॥

कृष्ण कृपा ते होत हैं, भक्त युक्त की ज्ञान ।
 ताते वंदन ते छुटै, यह गीतारथ जान ॥१॥

इहि अठारमैं ध्याय मैं, कह्यौ मोक्ष संन्यास ।
 अर्जुन सौं श्रीकृष्णजु, जानि जानि अपनी दास ॥२॥

कह्यौ मोक्ष संन्यास जो, कृष्ण कवल दल स्याम ।
 उर मैं धरि गिरधरन कौं, वरन्यौ आनदराम ॥३॥

माहात्म्य

यह गीता अद्वैत परम, श्री मुख कीयौ वखान ।
 बार बार निरधार कि, यह परा भक्त की जान ॥४॥

भक्ति वस्य श्री कृष्ण जु, यहै करी निरधार ।
 भक्ति करै बहु भाति सौं, यहै वेद को सार ॥५॥

भगवद्गीता कोऊ पढै, और सुनै चित लाइ ।
 पावै भक्ति अखडि सौ, श्री हरि सदा सहाइ ॥६॥
 गीता प्रति दिन उच्चरै, सद सुच्छर्यंग माहि ।
 मनसा वाचा कर्मना, तिहि मम कौऊ नाहि ॥७॥
 जो कोऊ चाहत भव निरचौ, कृष्ण चरण कौ पास ।
 और सकल श्रम छाडि कै, गीता करै अभ्यास ॥८॥
 लोक कृतार्थ कै लीये, सब ज्ञान काँ सोधि ।
 आनदराम ही यह करचौ, परमानन्द प्रबोध ॥९॥
 परमानन्द प्रबोध यह, कीनौ आनदराम ।
 पढै गुनै याकौ सुनै, सो पावै प्रभु धाम ॥१०॥
 नारायण निज नाम कौ, घरचौ देख कै आन ।
 अपनी आनदराम कौ, भक्ति दड भगवान ॥११॥
 जब लगि रवि ससि मेरु महि, अगनि उदधि थिर होइ ।
 परमानन्द प्रबोध यह, तब लगि जगि मैं जोइ ॥१२॥
 तब - - - - -

पुष्पिका - (इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे)
 श्री कृष्णार्जुन सवादे भाषा टीकाया (दोहा) आनदराम कृत परमानन्द
 प्रबोधे मोक्ष सन्यास नाम अष्टादशोऽध्याय ॥१८॥ इति श्री भाषा सपूर्ण ॥

सवत् १६०६ रा मिनि भाद्रवा दुतिय क . ७ मि सोम वाशरे,
 लिखित गुसाईजी श्री मानपुरीजी देवपुरी पठनार्थ गुसाईजी श्री
 शाक्षात् आनदपुरी सिष्य चिरजीवो सूर्यपुरीजी जोधपुर श्री चैन-
 पुरीजी मध्ये, श्री राज राजेश्वर महाराजाजी श्री तखतसिध
 प्रताप । दोहा

जब लग मेरु अडग है, जब लग शशि ।
 तब लग या रहज्यो सदा, पोथी गुण भरपूर ॥१॥
 या दृश ता दृश लिखित मया
 यदि श्रुद्धमश्रुद्ध वा मम दोसो न

१४७७. १०६३२ (१) भगवानदासजी की वाणी

प्राग्भ - अथ स्वामीजी श्री भगवानदासजी की वाणी लिख्यते ।
प्रथम स्तुति का किवत लिख्यते ।

ब्रह्मस्तुति

नमो अलपता राम, गुरु गुणवता पूरा ।
नमो सत अर महत, कीऐ जिन तिरगुण चूरा ॥
मेरै मुख अर सीस, हीरदा मै ऐही विराजै ।
इनकौ मोहि प्रताप, विघन सब दूरा भाजै ॥
गुरु सत अर राम कू, तन मन अरपू दोड ।
भगवानदास की वदना, बारुबार ही होइ ॥१॥ *

X X X X

अथ साखी, प्रथम गुरुदेव को अग लिख्यते ।

सतुति (स्तुति)

रमता राम सत गुरु, मो उर सीस निधान ।
ताकू वदन प्रेम जुत, करै दास भगवान ॥१॥

अग

गुरु-नाम सतगुरु मेरा सूरिवा, रामचरण दरवेस ।
भगवानदास परि महारि करि, जिन कीया ग्यान परवेस ॥२॥
भगवानदास कै मिर सही, गुरु रामचरण का हाथ ।
दरसण कीयौ राम को, नर तन भयी सुनाथ ॥३॥
भजन कीयौ भगवानदास, निमल हुई देह ।
गुरु रामचरण प्रताप सू, मिटि गया भरम सनेह ॥४॥
सतगुरु पूरण ब्रह्म है, रामचरण पद लीन ।
भगवानदास से पतित कू, आप उधारे दीन ॥५॥

* ब्रह्मस्तुति के चार कवित्तों के बाद गुरुदेव-स्तुति का एक और कवित्त है ।

अन्त - अथ वाणी की सख्या — स्तूति का किवत ५, साखी १०७४, सोरठा २, चौपई २ । अग ३०, अरेल ११३ । अग १३, सबईया ४३ । भूलणा ११, अग ४ । किवत ५३, अग १४ । कूडल्या ३५, अग १० । मनहर २७०, अग ४० । रेखता १ । पद ३७, राग १६ । दुहा-साखी १०७४, सोरठा ३, चौपई २, अरिल ११३, सबईया ४३ होड । भूलणा ११, किवत ५३ र कू डल्या ३५, मनहर २७०, रेखता १, पद ३७, सोरठा १ ।

ऐह वाणी सब सार है, भाखी गुर भगवान ।
रैनि दिवस मम उरि रहो, सनगुरजी को ध्यान ॥२॥

भाखी वाणी सार ऐह, सनगुरजी भगवान ।
रैनि दिवस मम उरि रही, उनके पद को ध्यान ॥३॥

भाखी वाणी सार ऐह, भगवानदासजी सत ।
सकलन-कर्ता कासीराम कर जोडि कै, उनकी सरणि रहत ॥४॥

घरि उर माहि प्रीति जू, अग बनाया ऐह ।
कासीराम तुम सरणि है, मुख सू भाखूँ केह ॥५॥

स स्थान भीलाडै मधि जाणीऐ, रामदुवारो धाम ।
अग वणाया तास मधि, मुख सू उचरत राम ॥६॥

कासीराम बदन करै, भगवान गरु सिर नाइ ।
सब सावा सू अरज ऐह, भूलि चूक बकसाइ ॥७॥

स काल समत सो ऐ जाणीऐ, अठारा सै अडतीस ।
सावण सुधि चत्रदसी, बार-ज रिव बनीस ॥८॥

सोरठा

वेद तत्व रस चन्द्र जु, सरव ऐ जाणि । (१६५४)
मुणत ही सासो जात जु, भाखे गुर भगवान ।
नमो नमो निति ताज जू - - - ।

पुष्पिका - इती स्वामीजी श्री भगवानदासजी की वाणी सरव सपूरण । *

* गुटके ने इसके बाद रामचरणजी कृत 'गावा का पद' शीर्षक से १७ रागों में निबद्ध ६२ पद हैं । गुटका जोधपुर में महामंदिर नामक स्थान पर सवत् १६२८ में लिखा गया है ।

१४६२. १०६२६(६) भर्तृहरि शतक - त्रय भाषा
(नीतिमंजरी भाषा)

प्रारम्भ :-

॥ अथ नीति मंजरी लिखते ॥

सोरठा

अमल प्रीति उर आनि, दामोदर पद कमल प्रति ।
भावन भर्नाह सु वानि, नीति सतक भाषा सु भलि ॥१॥

सवैया

जिनको हम प्रान प्रिया कही, चितत भिन्न सदा तिनको चिते है ।
जन औरन तै वहे प्रीति करै, जनसो पुनि औरहु तै रत है ॥
अनुरागनता तिय कै तिन सौ, हम को प्रिय जानि चहैबित है ।
विक है तिय को जन को रु मन को, याहि को मोहि को सो नित है ॥२॥

अन्त -

जग सब होत सरोज विन, विधि वस तै केहि काल ।
कुक्कुट जिम कचनि कर, पर महि नहि खनत मराल ॥११५॥
दामोदर सुभ दृष्टि तै, मुख मडल सुख मूल ।
भावन पावन नीति सत, किये निज मनि अनुकूल ॥११६॥

पुष्पिका -

इति श्री भरतरीसत भाषा भावनादासेन विरचिता नीति
मंजरी समाप्ता ।

प्रारम्भ -

॥ श्री अथ सृंगार मंजरी लिख्यते ॥

दोहा

विदुष विराग वढाविनी, रसिकन को रस रूप ।
भावन सत सृ गार की, प्राकृत रचहि अनूप ॥१॥
जेहि वस विधि हरि हर करहि, मृग लोचनि गृह काम ।
वचन अगोचर चरित तेहि, रति पति होहु प्रनाम ॥२॥

कवित्त

स्वेत चारू चूडन सी जिनतै दिपाय मान,
कला कलानाथ की ललाट कमनीय मै ।

जरत पतग काम लीला तै परत तामैं,
 श्रेय सुभ्र वर्तिका सु अग्र रमनीय मै ॥
 करत निकादन सो मोह तम छदन कौ,
 पूरन प्रकास मान अतर स्वकीय मै ।
 बार बार ताकी नित विजय विसेप होहु,
 ग्यान के प्रदीप हर जोगिन के हीय मै ॥३॥

अन्त -

सवैया

अलकै रलकै छवि खान सु आनन, चुवन तै मिसिकार धराही ।
 घन पीन पयोधर कचुकि हीन, उगस्थल मै तिनकी पुलकाही ॥
 उरु कप उपावतु है मु छली, छलहूतै नितव दुकूल छिनाही ।
 त्तिय के गन मै विटहू-से चरित्रन. काकरि सै सिर वायु बहाही ॥१०२॥

इति षट रितु वरनन ।

दोहा

केहि की राग विराग मै, नीति करत कोउ नेह ।
 कौउ रत सत सृ गार मै, रति रुचि भेद करेह ॥१०३॥
 जदपि न रुचि रमनीय तोउ, गहत नही गुनवत ।
 सुखद मुधाकर सव हितेहि, पकज देख दहत ॥१०४॥

पुष्पिका - इति श्री भरतरी सत भाषा भावनादासेन विरचिता सृ गार
 मजरी समाप्त ।

प्रारम्भ -

॥ अथ वैराग्य मजरी लिखते ॥

दोहा

गुरु हरि हर गनपति गिरा, वदि सहित अनुराग ।
 भावन पावन करन हित, बरनू सतक विराग ॥१॥

कवित्त

दिसतै दिसतै अलिप्त देश काल हूतै,
 अमल अनत ईस अज अविकारी है ।

करता सब विस्त्र कौ विभरता हरता पेखियत,
 आप अविनासी माया पासी विसतारी है ॥
 अनुभो पिछान ग्यान खान चिदानन्द जान,
 तेज को निर्घान सात सुष सुखकारी है ।
 सरव सक्तिमान सरव ईस्वर कला निधान,
 भावन भनत ताकौ वदन हमारी है ॥२॥

दोहा

बुद्धिवन मछर असे, घनी असे अभिमान ।
 अपर असे अग्यान तै, हिय जीरन भरा ग्यान ॥३॥

अन्त -

दोहा

ग्यान अनल कौ अरनि सम, मुनि-जन जीवन मूरि ।
 वरनी सतक विराग की, भावन भाषा भूरि ॥१११॥

रचनास्थान

मरुधर नगर मु जोधपुर, वसिवौ सदा बखान ।
 रामसनेही साधु हम, खैरापा गुरु थान ॥११२॥

कवित्त

स्वच्छ रमनीय हिय अछर अनूप जाके,
 नीति राग विमल विराग त्याग तै भरी ।
 जरी गुन मानक तें वानक विसेख वनी,
 सिधु भव भूरि ताके तरिखै कौ है तरी ॥
 रमिक रिभाविनी विवेक की बढाविनी है,
 जेते बुद्धिवत ताके जीवन की है जरी ।

रचनाकाल

अक नैन अंक इंदु मास सुचि राका कवि,

१६२६

भाषा मै बखांनी टीका भावन भरतरी ॥११३॥

पुष्पिका :-

इति श्री भरतरीसत भाषा भावनादासेन विरचिताया
 वैराग मजरी समाप्त ।

गुटके की

सत सीरोमणी हैं सही प्रगट्या कलि माह, प्रगट्या कलि माहि

पुष्पिका :-

प्रगट्या कलिजुग मै सोई, हमसे जीव निसर्ताकै गये उस देस जहाँ

सतन का वासा । राम नाम लयी लाडकै, भये या जग मू
ऊदास । प्रगट राम महाराज तीसै तन त्याग कै मीलै राम कै
माह, ३ कातीग वदी तीज तीसरै पहर तन पग्हरी, तीन के सीख
जान चैनगम महाराज । नास दास पोथी लिखी दयाराम है नाम,
गढ आगरै मध्य ठडी सडक नाई कै मडी समत ३६ (१८३६)

१५१६. १०८४६ (१०) भागवत भाषा पद्यानुवाद

प्रारम्भ - श्री रामजी । श्री गुरुभ्योनम । श्री गणेशायनम ।
अथ द्वितीयोस्कद लिख्यते ।

सोरठा

जै जै जै जदुनाथ, गुन आगर सागर कृपा ।
नटनागर मुद गाथ, कीजै मोहि सनाथ प्रभु ॥१॥

दुहा

जै वानी जै गजवदन, जै हरि गुरु पद कज ।
जै सुक जै श्री व्यास मुनि, जै पितु पद मन रज ॥१॥
विरचहु आनंद अरु निधि, दूजो यह स्कधु ।
विघन रहित पुरन करौ, हे हरि दाया सिधु ॥२॥

सोरठा

सुनि कुरुपति कै वैन, व्यास सुवन शुकदेव मुनि ।
लह्यो परम चित चैन, तेहि सराहि बोले वचन ॥३॥

श्री शुक उवाच चौपाई

नरपति उत्तम प्रण तुम्हागे । लोकन मगल प्रकटन हारो ॥१॥
ज्ञानिन कर सबत सब भाँती । कहत मोरि मति अति अधिकाती ॥२॥
पूछ्यौ जो तुम यह नृप नायक । सुनिवे महँ का सुनवे लायक ॥२॥
जे नहिँ आत्म तत्व को जानै । सदा ग्रहन विषयन सुख सानै ॥४॥
तिनके मुनन जोग दुख कारन । है नरेंद्र जग कथा हजारन ॥५॥
दिन मे धन हित बहु थल धावै । निज कुटव पालन मन लावै ॥६॥

निद्रा रति करि रेन गमावै । यहि विधि सिगरी उमर बितावै ॥७॥
असत देह तिय सुन दल काही । नसत निरखि निरखत सठ नाही ॥८॥

दोहा

तानै भारत जो चहै, यह जग मै कल्यान ।
नाम सुजस वपु कृष्ण के, कहै सुनै धरि ध्यान ॥१॥

अन्त - (पत्राङ्क २६ वां) * चौपई

जव नृप पाप गह्यौ कष्ट वाची । लहत कु-जोनि विबुध वसुधा की ॥१॥
तैमहिं पुन्य रही कष्ट वाची । तव सु-जोनि पावत मुख राची ॥२॥
जेहि विधि होत न पुनि अवतार । सो प्रकार मै प्रथम उचारा ॥३॥
यह ब्रह्मांड माह मति माना । लोके चतुरदस कहै पुराना ॥४॥
थूल रूप नारायण केरो । यह सिगरी मै कियो निवेरो ॥५॥
हरि माया गुन मय यह जानो । प्रथमहि सुक्ष्म रूप बखानौ ॥६॥
पढै सुनै अरु जनन सुनावै । बैठिय कात आपही गावै ॥७॥
सो जडुपति सरूप कह जाने । जाहि उपनिषद करत बखानै ॥८॥
जडुपति चरन होइ जेहि प्रीती । जानहिं सकल भक्ति की रीती ॥९॥

दुहा

हरि वपु सूक्ष्म थूल कहै ध्याइ ।
पुनि सुक्ष्म मे क्रमहि क्रम, निज मन देहि लगाइ ॥१॥

कवित्त

सातहू दीप नौ खड मही, सर सिंधु औसैल हू सात पताला ।
और दिसान के भाग सबै, नरकौ स्वरंगौ औ नखत्रन माला ॥
कर्त्तानाम श्रीरघुराज हरि को अहै, यह थूल सरूप गुनौ महिपाला ।
जीवन धाम सबै वरन्यौ, यहि को पति येक है नद को लाला ॥१॥

* पञ्चम स्कन्ध की पुष्पिका के बाद मे किसी अन्य व्यक्ति द्वारा अगले पत्र पर ७ वां स्कन्ध लिखना प्रारम्भ किया गया है । इस प्रकार से २६ + २५ = ५१ पत्रों मे यह कृति उपलब्ध है ।

दुहा

१० ६ १

रचनाकाल दिसि निधि मसि सवत सुभग, पीप कृष्ण दुधवार ।

१६१० त्रियोदसी तिथि कौ भयौ, ॥

पुष्पिका - इति श्री महाराजाधिराज श्री महाराज वाघवेस विश्व-
नाथसिहात्मज सिधि श्री महाराजा वहादुर श्री कृष्णचन्द्र कृपा-
पात्राधिकार श्री रघुराजसिंहजू देव कृते आनन्दाम्बुनिधो पंचम
स्कंधे पट्विसस्तरग । सरब श्लोक मेध्या २०० घटत वढते
गुनो माफ ।

प्रारम्भ - श्री रामाय नम *

शुकोवाच

नरहरि अरु प्रह्लाद की, सुन कै कथा नरेस ।

सभा मध्य मुनि सो कियो, पुनि कै प्रदन सुवेस ॥१॥

युधिष्ठिर उवाच

चौपाई

हे मुनीस दायक सब सर्मा । सुनत चहौ वरनाश्रम वर्मा ॥१॥

जाहि किये हरि कहै जग जानत । कबहु गर्व नहि निज उर आनन ॥२॥

तुम हो नारद ब्रह्म कुमारे । तप बल सब पुत्रन मे प्यारे ॥३॥

तुम समान जो श्रीपति दासे । मात साधु करनाकर खामे ॥४॥

तिन के दरस पाइ सुख घामा । पूरन होत आमुमन कामा ॥५॥

धर्म भूप के सुनि अस वैना । नारद कहत भये भरि चैना ॥६॥

अन्त -

दोहा

धन्य धन्य हो धन्य तुम, पाचहु पाडु कुमार ।

जिनकै सग विचरत रहै, नित प्रति नद कुमार ॥

चौपाई

कमला कैलासी करनारा । कहि न सकै जैहि रूप अपारा ॥१॥

करिकै भक्ति करै पद वदन । तव प्रसन्न होवै जदुनदन ॥२॥

* भागवत भाषा पद्यानुवाद का छठा स्कन्ध एव ७ वें की दश तरंग अप्राप्त । सातवें स्कन्ध की ११ वीं से १५ वीं तरंग का आद्यन्त यहाँ उद्धृत किया जा रहा है । इसका रचना काल संवत् १६०६ दिया गया है ।

श्री शुक उवाच

सुनि नारद के वचन सुहाये । धर्म भूप अति आनद पाये ॥३॥
 नारद को पूजन नृप कीन्हो । चरन पखार सलिल सिर लीन्हो ॥४॥
 पुनि जदुपति को पूजन करिकै । विहवल भये प्रेम उर भरि कै ॥५॥
 धर्म-भूप सौ पूजन पाई । नारद तिनसो मागि विदाई ॥६॥
 जदुनदन को करि परनामा । मुनि मोदित गमने निज घामा ॥७॥
 परब्रह्म सुनि कृष्ण हि काही । विसमित से भूपति मन माही ॥८॥

दोहा

बस पृथक दाक्षिणी, मै वरन्यौ कुरु राय ।
 देव असुर मनु जाद गन, यहि मे प्रगटत जाय ॥१॥

२ का निधि नभ निधि ससि सवतै, भाद्र मास रविवार ।
 १६०६ सतयो यह स्कंद को, सित छनि भो अवतार ॥२॥

पुष्पिका - इति श्री मदभागवते महापुराण सप्तस्कंधे पंचदसस्तरंग ॥१५॥
 श्री राम ॥ श्री राम ॥ श्री राम ॥

१५२४. १२३५० भारत-भाषा सारचन्द्रिका वचनिका *

प्रारम्भ - श्री गणेशाय नम । अथ भाषा भारत सारचन्द्रिका
 लिख्यते । तहा प्रथम मंगलाचरण
 कवित्त

सनमुख होत जाके विघन विमुख होत,
 नाम ही के लेत सब काम सुधरहत है ।
 रिद्धि सिद्ध दोऊ जाकै रहत सदा है,
 साथि फरसा हथियार हाथ दुख कौ रहत है ॥
 गवरि के नद सदा आनद के कद,
 सुनौ देवन के देव यह अरज करत है ।

* प्रस्तुत प्रति में आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व तथा उद्योग पर्व का प्रथम अध्याय एवं द्वितीय अध्याय का एक पृष्ठ मात्र है । अतः ग्रन्थ का प्रारम्भिक अंश इस प्रति से एव अतः अन्य प्रति से उद्धृत किया जा रहा है ।

दीजिये सुबुधि सुधि लीजिये समुख मेरी,
करुणानिधान ध्यान आपकी घरत है ॥१॥

दोहा

गणपति चरण सरोज की, ध्यान हिये मधि धारि ।
वरनौ भारथ सार की, भाषा मति अनुसारि ॥२॥

अथ वसावली

दोहा

रघुकुल सूरज वस मै, गोगावत विख्यात ।
एक एक तै सब अधिक, सूर वीर सरसान ॥३॥

छपे

कृत्तल भयौ हमीर तासु सुत नाहर जानौ ।
डूगरसी ओ राज तनय ता मानिक मानौ ॥
कुभो पाचौ जानि तासु गोगो बीठल भनि ।
ताकौ केसरिस्यध सुवन जाकौ सुजान गनि ॥
हुव पेमस्यध ताकौ तनय, जिह दिलीपति राव किय ।
रणधीर वीर मभू सुदै, दुजन दान हरि भक्ति लिय ॥४॥

यथा सवैया

सो महि सेस धरै निसि दोस प्रथ्वी मथुनै निज नाम की कीनी ।
सो हरिनाक्षहरी हरि रूप वराह कै मारी नत्तक्षन् छीनी ॥
सो पुनि वावन ह्वै बलि हार पै जाय अधीन ह्वै मागि कै लीनी ।
सो महि राव श्री सभु सुजान गुनी द्रुत दीन दान कै दीनी ॥१॥

यथा कवित्त

दपट पवन पूत भूषट खगैस कै कंसी
चित्त तै चलाकी मैं सरस चलि जात हे ।
फेरत फुहारे की फुही पै थहराइ रहै
खुरीन यैक पै करत सरसात है ॥
गुन गहँ चगु नभ नचत पल चारु
मढे जरवाफन सौ सब सुभ गात है ।

अैसे वाजी देत राव गोगावत राव सभु,
भान मघवान देखि देखि ललचात है ॥५॥

दोहा

चांदस्यध ताको तनय, सूर वीर रणधीर ।
दाता ग्याता है महा, कवि कोविद को भीर ॥

कवित

आये जोम जी मैं लियै दक्षिनी फिरंगी,
जगी सगी सैद मुगल समूह सरसायो है ।
तिन्है देखि केते कूर कायर कचाये रहे,
सूर वीर तेवे महा मोद मन छायो है ॥
जहां हाका हाकी मारि खगान खपाये,
तहा तुपक तमचा तोप तीरौं भर लायौ है ।
ग्य राव सभू के सपूत चादस्यध,
तेरे दान कीरिवान कौं जहान जस गायो है ॥७॥

दोहा

सबहो कौं वर्नन कियै, होत ग्रन्थ विस्तार ।
ताते इनके नाम ही, कहे समति अनुसार ॥८॥
रामायण की वचनिका, करी सभु श्री राव ।
त्यौही भारतसार की, चादस्यध चित चाव ॥९॥
हुकम चैन कवि कौ कियो, अैसी भापा होइ ।
जाके वाचत सुनत ही, समझि जाय सब कीइ ॥१०॥

अथ पर्वारभ । (आदि पर्व-प्रथमोऽध्याय)— कोईक समै के विष
कुण्डल पायन मुनि कौरवन कौ राजा जनमेजय ताके देखिवे कौ हस्तनापुर आवत
भये । जहा जनमेजय हू गगा तीर विराजमान हौ । तहा वेदव्यास महामुनि कौ
आये देखि राजा सन्मुख जाय चरणाविदन मैं सिर धरि प्रणाम करि पाद्याअर्घ
आसन देय पूजन करि विनती करत भयौ । आज मेरो जन्म सफल भयौ । मैं
कृत कृत्य भयौ । मेरी राज्य भी धन्य भयौ । अब आपके पधारिवे कौ कारण
जाणिवे की बाछा है सो आग्रा करियै । तब वेदव्यास राजा की राज-समृद्धि

देखी । तीन जोजन लौ विसाल सभा है । तामें तीन कोटि क्षत्रिय सर्व ही तरुण शूर शस्त्र-अस्त्र विद्या में निपुण । वस्त्र गस्त्र अलंकारन करि मंडित, तिन के बीच रत्न-सिंघासन पर राजा जैसो दीस्यो ज्यो देव सभा मध्य इद्र सोहै । ताकी विभूति देखि कै वेदव्यास बोले । हे राजा जनमेजय तेरी प्रभाव देखि हमारो मन वहाँत प्रसन्न भयौ । या समय में तेरे तुल्य और राजा धर्मात्मा-धीर-वीर-दाता है ही नहीं । ताने प्रजान को पालन करौ । नीति मार्ग में चलौ ज्यो तेरो प्रताप, बढेगी ।

१५२५. २५०७ भारतभाषा सारचन्द्रिका *

अन्त - हे पुत्र या जीव कै ससार कहियै । जामण मरण तामें, मात-पिता हजारो भये हैं, अरु होइ हैं, और आगे हू होयेंगे । अरु तैसे ही स्त्री पुत्र सैकडा भये हैं, होय हैं, आगे होइगे ॥१॥

और दिन दिन प्रति याकौ हर्ष के स्थान हू हजारो है । अरु भय के स्थान हू सैकडा हैं । सो मूढ जीव कौ तो व्याप है । और पंडित को नहीं व्याप है ॥२॥

अरु धर्म को साधन क्यों नहीं करै हैं । जा धर्म सौ अर्थ सिद्धि होय वाक्षित सिद्धि होय है । यह मैं ऊंचे हाथ करि ऊंचे सुर सौ पुकारि कै वही हौ । सो कोऊ हू नहीं सुणत है ॥३॥

और काम सौ भय सौ लोभ सौ कदाचित हू धर्म को त्याग नहीं करै, असै धर्म को त्याग करै जीव जातो हू बचै तोहू धर्म छोडै नहीं । सो यह धर्म तो नित्य है । और सुख दुख्य अनित्य हैं । और यह जीव है सोहू नित्य है । अरु या जीव को कारण माया है सो अनित्य है ॥४॥

ताते हे पुत्र जो नर या भारत सावित्री कौ प्रात काल उठि पढै है, ताको सपूर्ण भारत को फल होय है अरु अत मैं मोक्ष को जाय है ॥

* इसी कृति की अन्य प्रति ग्रन्थाड्ड १२५०७ की है । इस प्रति में भी आश्रमपर्व, मोशल पर्व एवं महाप्रस्थान पर्व ही हैं । अन्तिम पर्व के बाद की पुष्पिका में कृति का रचना काल दिया गया है अत अन्तिमाश एव पुष्पिका ग्रन्थाड्ड १२५०७ की दो जा रही है ।

छप्पै

रचनाकाल सवत सत दस अष्ट वर्ष पञ्चासी ता पर ।
 १८८५ माधव मास सुमास अल्क जिग्रि तीजे उजागर ॥
 लगन महरत जोग सु दिन गुर वार जानि जिय ।
 भारत भाषा सार चन्द्रिका तव प्रकास किय ॥
 सुत संभुराव श्री चाँदसिंघ, गोगावत कुल रवि उदित ।
 ता हुकम पाय कवि चैन यह, करी वचनिका जग विदित ॥१॥

पुष्पिका :- इति श्री गोगावत कुलावतस सभूस्यघात्मज राव चाद-
 स्थघाज्ञया कवि चैनराम कृत भारत सारचन्द्रिका सपूर्ण ।

१५२६. १०८३८ भाषाभारत

प्रारम्भ - ॥ श्री गणेशाय नम ॥ श्री विष्णुभ्यो नम ॥ श्री सारदायै नम ॥
 श्री सद्गुरुभ्यो नम ॥ अथ भाषाभारत सद्गु खेतसी रो कह्यो लिख्यते ॥

गाथा

गवरी पुत्र गणेशो, गज वदनाय अग्र तेतीस ।
 मल सुघ सुतन महेसो, दे सद्विधि चित्र वा कैरव कुल ॥१॥
 जोगणि जगत जनेवो, जग पाल गर विष्ण वाभगा ।
 दीजै उकति सदेवो, वाणि विथारी चित्रवा भारथ ॥२॥
 गीरवरधर गोपालो, जग उधरण अनत अगमागम ।
 दीजै उकति दयालो, चालो कहण तुम्ह चक्राधर ॥३॥
 जग जेता जट धारो, जोगारभ भाण जोगेसुर ।
 मम दे सुमति महेसो, भाखण वाणि पारथ भारथ ॥४॥
 ब्रह्मा बुध विसालो, अविहित अखलि सिष्ट उपराजक ।
 वाणी समपि विचत्रो, कुर पडवा कहण कलि कारण ॥५॥
 रवी करता जग रारो, जगत आधार मेटगर जाहूर ।
 समपि सुबुधि विसालो, चाली कहण कैरव सुघ चित ॥६॥
 गुणदाता गुर देवो, गुर गम देअणहार उत्तम गति ।
 दे सद्वुधी अदोषो, दाखण गति सति दई वाणी ॥७॥

दोहा

कुर दुरधार उधारिवा, मन मा धारि मुरानि ।
 करवायो भारथ कठण, सो कवि कहि अनुमार ॥८॥
 अकर्ण करण विचारीयो, मन चालो निरमोह ।
 कवियण सो बिन धरि कीसन, कहियै वाणि विमोहि ॥९॥
 अवनि भार उतारिवा, चित्त पारभीयो स्पाम ।
 सो कित हित सजुत सकल, कहि लै सुकवि सकाम ॥१०॥

अन्त -

कवित्त (छप्पय)

रत्ननाकाल मतरसै समत वरस नेउवै वसेखण ।
 १७६० कवि मुख रखेकरा कथ भारथ सपुरण ॥
 वैसाख एक दिन तिथ ऐकम अलोकत भोमवार निरवार ।

॥४॥

रामाईण उपरा कवि माधव रासो कीय ।
 फिर नरहर वागट वाणि अवतार चिरत लीय ॥
 भागवत मिर विवगि कीय ईसर हरिरसह ।
 कवि सीह जिम करी वले भापा भारथह ॥
 मति सार विचारि कुल करम, तन परमाद पूत जीयो ।
 नीस दिवस वर पत्रीय चित, त्रिमल जीहकु राजसज जीयो ॥२॥

महाकथ भारथ सुणै सुज खत्रीस मगह ।
 करै सार वापार अजै न लहै भरि जगह ॥
 मुकवि श्रण इह सुणे भागव पट भेद मजाणै ।
 सोतो वकता सकल चढै चाढे निरवाणै ॥
 चत्र वरण वाणि भापा चवे, जीवन मुगत सचित लहि ।
 चत्र वाणि ताणि आश्रम चत्रह, कवि तिह कथ सभरि कहै ॥३॥

इद प्रमन आरभ कीध भारथ मु कथह ।
 फेर राह साराह कवि मनि चहि समथह ॥

जोध थान सामान मास पच हवन कथै ।
 वैराटह प्रव कीयो वागस्याही पारथै ॥
 अहिमुदावाद प्रव अवड तर, वसि मघे धर गुजरी ।
 कवि सीह करत पुरण कीया, सेवा अभा निरदरी ॥४॥

दुहा

भारथ भाषा अखीयो, मति माफक कवि सीह ।
 व्यासह कित अति चित विमल, सुणि श्रवणे निस दीह ॥१॥

वारता

कवैसुर भारथ की भाषा का आरम्भ तो माल विजावत कै भेलप दिली
 बीच कीधा, ता पाछै महीना दोइ नै राठोडा कै राव जोधपुर की गह लीधा ।
 चत्रमास तो मडोवर कै माथ डेर कीहु स राजु कीमु समारग हीज टारयो ।
 काती मुद बीज कै दीह राउका राव पखु के थानक पधारचा । चेत सुध दसमी ताइ
 तो नगसमाद की छात महीलु हीज रह्या । ता पाछै कविसुरु कै भाग सिरविलद
 की सेना कै आभा गुजर धर का गह ग्रह्यो । उभी चत्रमासा ती मागग हीज बीता ।
 आसु नुदि दसमी कै सेरविलद का दल का बल जीता । ता पाछै पोस मुद माराज
 राजेसुर सहर दाखील हुआ । उवरावाकु डेगकु तजबीज बताइ कै जुवा जुवा ।
 तठै कवैसुर हठीसीध सुरसीघोत कै भेलप अतही आराम पाया । मति का पुरुरकर
 रूपक करिवा कु दुगणा ही कथाया । तद बुध माफक भाषा करिकै जथा जोग
 अठारै ही परखेम पुरण कीधा ।*

कवित्त

तर भेलप ।
 पडित भेलप प्रगटि महा विद्या धन पावत ।
 सन पुरपा सग कीया प्रीत हरि हुत लगावत ॥
 महिमा समद जादव छिमल, देखन व्रन आणदीयो ।
 कवि सीह हठी भेलप करे, भाषा दध पारह भयो ॥२॥

दुहो

सेवा आभा नरेम री, भेलप हठी सुरीद ।
 कवि भाषा भारथ कीयो, आग्या आणद कद ॥१॥

* इसके बाद एक कवित्त और है । अक्षर उलझे हुए हैं ।

श्रवणो सहित सुध सुणै, प्रातह पाठ प्रमाण ।
करै जिक निहचै करै, पुहचै पद निरवाण ॥२॥

पुष्पिका - इति श्री माषा भारथ सपूर्ण । सवत् १६०६ वर्षे शाके
१७७१ प्र० दुतीक वैशाख सुदि ५ गुराँ सहर योधपुरे लिखित्वात् ।
परोपगाराय ।

१५६७. ११००४ महादेवजी रो व्यावलो
(शिवराम स्तोत्र भाषा)

प्रारम्भ - श्री गणेशाय नम । अथे महादेवजी रो व्यावलो लीख्यते ।

गणपत नाव उचार, विघवन पावक है (टेर)
सिष्ट करता ब्रह्म उचारचौ, गभु त्रिपुर जय काज ।
बल बाधते विष्णु उचारचौ, जग जीतन रतिराज ॥१॥
धरा धरेता सेप उचारचौ, महिष विजय को अव ।
मन बस कारन रिषन उचारचौ, मगल विपिन कलव ॥२॥
जोई उचारचौ जाके सवही, काज सुधारै भारै ।
सदनमति कौ हेमवती को, नदन आपत टारै ॥३॥
सिव को व्याह भयो गिरिजा सो, जानत त्रिभवन मारै ।
करि प्रनाम गजमुख का वरन्यौ, गजमुख विघन विडारै ॥४॥

दुहा

लता अपर्ना सेईयें, जिनकी सगत पाय ।
थानु पुरानो फलत है, जो मागत मन चाय ॥१॥
माया ब्रह्म वीलास मे, वन्यो अखिल ससार ।
माया हिमगिरि कन्यका, ब्रह्म महेस नीहार ॥२॥
हे असार ससार मे, अँ दोय सार अपार ।
असिव निवारन सिव-सीवा, भज उतरो भव पार ॥३॥
दोनु बीनी अर्थ ज्यौ, मिले एक अरु दोय ।
अरव अग नारी पुरुष, रूप अलौकिक कोय ॥४॥
जिनके गुन अनुवाद मे, सफल गिरा कु जान ।
तज वकवाद विवाद सव, गाओ गुन सप्रमान ॥५॥

गुन को पार नहु जुन को, कौ वरने कवि मुठ ।
थाके वेद सभेद करे, खेद ब्रह्म वैकुण्ठ ॥६॥
जग कथ वानी मलीनता, पूर करन कै हेत ।
उमा-गभु कीरत कथा, गगा परम सकेत ॥७॥
ए विसवास विसेस वर, वरनो व्याह विधान ।
वानी के कट जायगे, ओगुन गनस निदान ॥८॥

अन्त -

कर जोर सवि हवंचर वडे । मोहि ज्यानकीनाथ सुनाथ करौ ॥
हर सां पद पंकज सो मरण । सीव सकर सकट को हरण ॥१॥
तुम नाथ मवी विधि लाईरु हो । गति ओ पत के मुख दाईरु हो ॥
करता सवि पोखन हे भरन । सिव सकर सकट को हरण ॥२॥
तुम नाथ अनाथ मुनाथ हरे । प्रगटे त्रिय मूरत देह धरे ॥
गति ओ पत के तुम हो करण । सिव सकर सकट को हरण ॥३॥
पद अवुज सागर हु जलसा । किऊ आगम पुरन मा मनसा ॥
दर सो पद पंकज सो सरनं । सिव सकर सकट को हरण ॥४॥
जव जक्त र मोहन मोह थरे । वहु ताम वदे सव चूक पडे ॥
सव ही तुम नेम हो करन । सिव सकर सकट को हरण ॥५॥
हम ओगुन के अति आगममे । प्रभु वूडत हू भव सागर मे ॥
गह गख भुजा अपने चरन । सिव सकर सकट को हरण ॥६॥
जव राम दया नद कीन दया । कटि हे जम जाल की मोह मया ॥
नित लोल लोल हु तुमरे चरन । सिव सकर सकट के हरण ॥७॥

पुष्पिका - इति श्री राजा श्री हिमाचल विरचित शिवराम स्तौत्र
सपूर्ण । इती श्री माहादेवजी रो व्यावलो जोसी शिभुराम कृत ।
जोधपुर को वासी, जोसी प्रभुनाल रो पीता, तीको सपूर्ण । स. १६०७
रा मी० भादवा सुद ८ श्रुक्र प्रभात समये लि० हीरविजै, लू णसरा
मध्ये । चि० मगनमल पठन हेतवे ।

* आज दीन वायरो ठडो वाजै छै । ओर मेह मूलक मे थोडा

* तत्कालीन साख-वाडी भाव एव राजनैतिक दशा का उल्लेख भी प्रतिलिपिकर्ता द्वारा अन्त में किया गया है ।

छै। माखा अमाभी छे पीण कठेई तो मेह घणा कठेई में थोडा, येकसार-मो जमानो छे नही।

वाजरी रु० १ गी ३१ ५ (सेर), मोठ ३३, मुग ३२, गोहु २१, जवार ३२, जव ३३, तेल ६॥, घत २३), गुल १३॥, चीणी ५, तीजारो १०, टका भाडमाही २०॥, ढवुसाही १५॥ ईगतीसदारा ४॥ वटारा, आज दीन ओ भाव छ।

ओर भडागीजी श्रीचदजी मोनीचदजी जोभीजी सीवनारायणजी रो हल डेरा छै। भोमडो हली मायै छै। भडारीजी ग्राह गी पांथी मु भर्तंगी सतक, सभासार नाटक, सीवजी रो व्यावलो ओर फुटकर उतारचा छै।

वाग मार हमीरमल वैठौ छै। गाव आधो तो श्री खानसै छै, आधो ठा० सावतसीध न छै। गाव मे हुकम जाटा रो छै। कुणी को वयुही न चाले। माहाराजाधिराज श्री तखतसीधजी राज्ये, राज रा डेरा वा नमद छै।

१५६८ ११०१३ (५०) महाराजा अभैसिंहजी रा कवित्त

प्रारम्भ - ॥ किवत ॥ महाराजा श्री अभैसिंहजी रा गुजरात रे समै रा खडीया वगता रा कह्या।

(छप्पय)

आदि सकत डवरी, मगल कारी चितामण।
कामधेन पोरसो, तु हीज पासा त्रिभामण॥
धण कण साहण सोह, पूत परवार वडाळी।
देवी देस विदेस, राजद्वारै रखवाळी॥
आणद रूप आणद मड, सबही वात सुवारणी।
रीभीउ गुणो राजा अभो, तो प्रताप भव तारणी॥१॥

जग जिननी जोगणी, राय उमया परवेची।
भज दैत चालको, नाम तिण चाळक - रेची॥
भाले थळ उजळो, वले हरीया गहरा तर।
चाळक रो मढ जठै, रचै देवी आधो फर॥

त्रिहु लोक जात आवै तठै, वाज छत्रीस वधावही ।
रौभीउ गुणै राजेस वर, पाउ रूपक पावही ॥२॥

पाय घुघर घम घमै, लगर काळा खरलकै ।
अहि काळो हिडळै, चोहर काळा भरळकै ॥
काळी सिगी करग, चीर काळा पाटवर ।
वाहण कालो विकट, रूप कालो राजेसर ॥
गरीवनिवाज काला गहर, कलू वीच चढती कला ।
आप सु अरज काला डती, आखर दीजै उजला ॥३॥

मेकदत भल लहै, मुडल लव लैस नुरा ।
उदर दराज आणद, सीस भक बोल सिदुरा ॥
गवरनद सुख समद, सदा रता राजेसर ।
च्यार पण वोह जण, है अगवण विसभर ॥
एहा मरूप देव अगल, कहो इलोल उकतरा ।
सुध मन भाव धारै मुकव, पाव वदो गणपतरा ॥४॥

वप उजल वसतर, कन उजला सा कु डल ।
उजल मुख उपरा, नाक उजला निरमल ॥
उजल माला उवर, वेद उजलो विचारै ।
वात्रै यत्र उजलो, राग उजलो उचारै ॥
आवास विराजण उजला, विध उजला हस वाहणी ।
उजल अडोल गाउ अभो, दीजै मुभ वरदायणी ॥५॥

अडा भीड राठोड, हुयो सिर हर माहाराजा ।
गज ससण लख देयण, कीया न मा दधि पाजा ॥
जिण मारे मुगल ण, अनड लीधो जाल घर ।
जिण दिखणी भजीया, थया नेजा लाल वर ॥
जीतो अनेक समहर जिको, भुज लाज दुनीय भिली ।
जोधपुर तखत जोधाहरो, तपीयो जन माहावली ॥६॥

गजन पाट सौहीयो, सकर अवतार नवाडो ।
ओरग सु मडीयो, जिकण पाधरै अखाडो ॥
गज घज मारीयो, जिकण घड चे खग धार ।
जिण खेलू लुटीया, सहित मालू सिणगार ॥

भागा अनेक सोवा भिडे, कमध खाग ग्रहीय कर ।
जीवीयो जितै रहीयो जसो, दावा मुदी दिलेसर ॥७॥

जिसो कमध आथमै, सुन न उगीयो अकारो ।
तेज जोर आगलो, डला भागो अधीयारो ॥
किरण जो सकल कलै, रुक जलहलै प्रगट ।
अरण रूप आखीय, वली करवा दह वट ॥
एको सरूप वद आहुडै, गैण रैण दुजो गजो ।
गालवा असुर पाल गिर, अरक रूप तपीयो अजो ॥८॥

डला थभ अवतार, अडर अण वीह अणकल ।
परम अस सत पुग्गस, अग रूपी विल उजल ॥
उदम दामणो, अनमन मणो सवाडो ।
अनथ नाथणो, उडड डडणो अखाडो ॥
नह फिरै पीठ नाकार नह, गह सरूप थह गलरै ।
होदुव भाग पैदास हुयो, अभो पाट अजमालरै ॥९॥

उवासै उससे, नड भाडै ववाडै ।
करै वल धुकल खल मुगल पछाडै ॥
खव कुभ वलहलै, दल वीटीय अकार ।
हुए सेस दल चल चल, मलेछ खलभलै अपार ॥
पै लगेरे लाज खल हल प्रगट, वल चिहु जस वाहसो ।
आछट करै राजा अभो, सत्र सीस नव साहसो ॥१०॥

फिर नकीव बोलीया, चढो बाहादर ववाल ।
दरक भार भीडजै, धीह धड हडै बवाल ॥
मदमता खोलीया, धतधता पोतारे ।
कोड करै कोतल, साभ सोनै सिणगार ॥
चढीयो अभीह हुलतै चमर, बजावध दल धारीयो ।
इण भत दिली राजा अभो, प्रथमीनाथ पधारीयो ॥११॥

* महाराजा अभयसिंहजी के शौर्य और यशोगान के साथ ही गुजरात के सूवेदार सर-
बुलदखान की बगावत से चिंतित होकर बादशाह द्वारा उसे दवाने का वर्णन २२ वें
छन्द तक किया गया है ।

अन्त :-

वखतसिंघ मेलीया, भडा थाप ले जीयारा ।
वाज सोक कैमरां, अधुवै सावला दुधारां ॥
खगा बुर उडीया, सुर थाभीया तमासै ।
वह कटार डाडरा, पार फुटता प्रकासै ॥
घुर तो वाह करता थको, खेध वेध लागा खिसै ।
वाग सो चोल कीधो वदन, जला बोल झुजो जसौ ॥११४॥

भडा आड वीटीयो, कड ओरी आवखाणै ।
वाड तोप नालीया, चाड मुगलाण उराणै ॥
किता पाड केवीया, सैहत वगतरा वरगा ।
घाड घाड आखीयो, राडता हीर कुरगा ॥
कुंजरा फाड मुरा कवल, हथ वजाड केवी हणा ।
वारणा लीयै जिण वार रा, मारवाड वेढी मणा ॥११५॥

तें सताव मेनीया, बीच जाडा घमसाणा ।
तें आडा ओसरा, वध चाडा कर वाणा ॥
तें चढाय छातीया, वेढ वीजला वजाइ ।
तौ हाथा उत्तरे, साथ सखरा सिपाइ ॥
उडता रीठ कीनी उभै, जद रिण ताल जुहारीयो ।
दीठा नीवाव विरला दुनी, तो सीरखा तरवारीया ॥११६॥

२३ वे छन्द मे बादशाह द्वारा महाराजा को सरबुलदखान को जीतने के आदेश का उल्लेख है । अगले छन्दों मे महाराजा की कीर्तिगाथा वर्णित है ।

३५ वें छन्द मे महाराजा का ससैन्य आमेर आगमन, ४१ वें छन्द मे मेदपाट आगमन, ७६ वे छन्द से अर्बुद और पाल्हणपुर तथा सिद्धपुर आगमन और ८५ वे छन्द मे महाराजा का ससैन्य अहमदाबाद आगमन का वर्णन है । बीच - बीच मे महाराजा के आतिथ्य-सत्कार तथा यशोगान के साथ ही शूरवीरो, सेना, घोड़ों और हाथियों आदि का पारंपरिक वर्णन है ।

८५ वें छन्द के बाद मोर्चाबन्दी और युद्ध का वर्णन प्रारम्भ होता है । गुटके मे केवल ११८ छन्द ही उपलब्ध हैं जो युद्ध-प्रसङ्ग तक का ही परिचय कराते हैं । आगे के छन्द इस गुटके मे अप्राप्त हैं, अतः संभवतः कृति अपूर्ण है ।

बादशाह द्वारा सरबुलदखान (मुबारिजुलमुल्क) से गुजरात छीनकर महाराजा अभयसिंह को देने का समय वि सं. १७८७ आषाढ मास (ई. सन् १७३० का जून मास) 'रेऊजी' ने लिखा है । विशेष विवरण के लिए कृपया विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत 'मारवाड़ राज्य का इतिहास' भाग २, पृ० ३३६ से ३४२ देखें ।

वाज भाट बीजला, बला दोवटा सरुजा ।
 धडा कध बीछले, सहन पायग भाडजा ॥
 विकट हाथ बाहनो, सत्रा ढाहनो मिगालो ।
 तुरी राव गर रहे, मिधुग भरहरे छटानो ॥
 सारा बिहार माभी नहित, धरा वेव धरा थोया ।
 वणीया धिराज जीण वारका, मज कमुवल माथीया ॥११७॥

क्याव राड चाचरा, धटा डेडरा लटकै ।
 कडा फूट फीफरा, पगा आनग अटकै ॥
 परचटा वावरै, किता खजग कटाग ।
 चकावौ माछीयो, चिट्टु कानीया चदाग ॥
 भुड पडै किता केता भुकै, कीता रुक वाजै करा ।
 अमदा खेल मा-तो इमो, मुछाना मडोवरा ॥११८॥

१५६२. १०६५५ (५) मानसिंहजी रा मरसिया

प्रारम्भ - म्हाराज श्री मानसिंहजी रा मरसीदा ।

कवित्त (छप्पय)

मृत्यु-समय समत अठारै साच, वग्म सीको भादरवी ।
 १६०० देव भुलणी दिवस, कठण ममीयो म्हा करवी ॥
 प्होर रात पाछलि, काळ त्रिप मान करावौ ।
 नव-कोटा रो नाथ, साम परलोक सीधायो ॥
 छत्रपती मान छत्र भग हुवौ, धरा पाल प्रथवी धणी ।
 हुणहार वणीयो - हु - तव, वसु बीच माठी वणी ॥१॥

प्रजा भाग पळटीयो, साम परलोक सीधायो ।
 वणी अवेण्ठी वार, प्रीथी रो डीगीयो पायौ ॥
 मोटो राजा मान, धरा सारी रो ढाकण ।
 पर दुख मेटण पीड, जपै प्रथसाद जणो जण ॥
 नवकोट नाथ हुतो नीडर, धरा थभ प्रीथवी धणी ।
 हुणहार वणीयो - हु - तव, वसु बीच माठा वणी ॥२॥

वणी अवेढी वार, प्रीथीपत धाम पघारे ।
 दोढी खवग दीध, सेग मेहला वीच सारै ॥
 म्हाराणी मन मोट, देवडी उठी दाखा ।
 चीत पडदायत च्यार, अक फीर कीना आखा ॥
 लुटाय दरव दीधा लीखा, रैणा जेज न करी रती ।
 वर्डकुठ वास मडोवग, साम पास पुगी सती ॥३॥

अगर चनण आणीया, आण घीत राळ अपारा ।
 वडा रचे अे वास, साम सतीया कज सारा ॥
 होय कोळाहळ हाक, भाण रथ खाचे उभो ।
 माठी कीधी मान, लोक सारो हुय लुभौ ॥
 हय प्रजा दुखी सारो होवै, हठ कारण लागो हीयो ।
 दुनी आण दाग सोह मील दीयो, जरे कमध वास सतपुर कीयौ ॥४॥

सोनारा अे वास, कमध सोह ढीला कीधा ।
 मेळ हुवो छीन माह, लार जस लाखा लीधा ॥
 भजन अेक रै भाव, राज चोडै रजधानी ।
 मेहमत छोडे मोह, कमध वेंगे हेक कानी ॥
 आपरो धरम खोयो अडग, नीरणो करे नीभावीयो ।
 म्हाराज मान रहीयो जी - ते, गुणा नाथ अेक गावीयौ ॥५॥

ओ राजा अवतार, पुरस मोटो पुजाणो ।
 ओ राजा अवतार, कलु मे सीध कहाणो ॥
 ओ राजा अवतार, वडा री रखी वडाई ।
 इण राजा अवतार, भेख री टेक नीभाई ॥
 पुनवत पुरस उजल पणे, जस नामो रखीयो जुगा ।
 कलस गीरनाथ माठी करी, मेहपत न्ही रखीयो पगा ॥६॥

धरतौ थारो ध्यान, मान कमधज म्हाराजा ।
 घणी नाथ जलधरी, लगी न्ही आई लाजा ॥
 वणीयै विखमी वार, जाय छीपीयो कित जोगी ।
 उपर न करी आय, हुणी होनी सो होगी ॥

आगा सु कुण मानेडला, विजा इन्ह वुभमी ।
अधपति काज देउ ओलवो, थने पाव पय कुण पुजमी ॥७॥

ते आगै तारीया, तीकै सोड भुग जोगी ।
गोपीचद भरथरी, भेख मे कुडा भोगी ॥
कानड वीरमजी के, मेही न्ही यात मनीजै ।
सत विनोद गोगम, जिकै ही कुण गीणीजै ॥
अवरकी वार रखतो अडग, इतरा लेखे आणतो ।
अधपती मान करतो अमर, जोगी हु सीध जाणतो ॥८॥

मेही मान जग माह, केई परमाय्य कीधा ।
दान पुन दोवडा, दत वलख हाता दीधा ॥
कि कमठाणा कीध, कीध सामण कव रावा ।
वले अनोखी वात, राखीया सरणै रावा ॥
गरीवानीवाज हुतो घणी, मेहला माया मानती ।
अधपती मान करतो अमर, जोगी हु सिध जाणतो ॥९॥

आस करै आवता, दुवार तिण रै अनदाता ।
देसी कुण आधार, वेद वाणी वीख्याता ॥
कवरावा रीभीत, कुण अव मुगी करसी ।
सुणो सीधैश्वर साम, देस सारा मे दग्सी ॥
सासत्र अभ्यास करता सुकव आद घणा दीन आवसी ।
म्हाराज मान थारा हमै, जाचग कीण गर जावसी ॥१०॥

रगीला रंगरेज, तबोली गाधी त्यारा ।
सो विलखाणा सेंग, पार वणस को अपारा ॥
दरजी हुनरदार, काम कर चौबी करता ।
सारा कीसवी सेंग, तठै सोह पेट भरना ॥
मरजाय गया द्रीग सोच मे, हारे बेठा हीमता ।
म्हाराज मान तो बीन हमे, क्हो करसी वुण कीमता ॥११॥

उर वसीया आगणे, तिकै पातस्या भगतण्या ।
सभा रग साभती, सबद बोलती सुहावणा ॥

गवईया गावता, राग छतीस अपारा ।
 कलावत कौक तासो, रीझ पावता हजार ।
 मलीन मन हुवा अतरा, उमग भाखा पडीया जु-जुवा ।
 म्हाराज मान तो वीन हमे, वै माथा ढकीया हुवा ॥१२॥

वोह जाणा वाजर, पाण सारा लखपती ।
 साहुकार सेठीया, हार बैठा हीमता ॥
 सारा भीभा छोड, छोड व्यौपार स-कोई ।
 हद ग्रह काठा हाथ, हुणी माठी सो होई ॥
 उतपातं म्हां प्रीथमी हुवी, कमध मान डीगीयो करा ।
 सो सुख खाप केओ-सक्यो, वीणज छोड देसावरा ॥१३॥

डोडीदार पडदार, अँस करता अलवेला ।
 छडीदार चोपदार, सामी धरमी अँ वेला ॥
 धणी पास ढालेत, रात दीन प्होरै रहता ।
 दुजा खीजमतदार, लाखा जस लेता ॥
 अवतार मान तो विण अँता, मन माजा कद माणसी ।
 आप वीण सको वीलखा हुवा, जोधाहर कु ण जाणसी ॥१४॥

सोह सारा सीरदार, सग मुतसदी सारा ।
 करी जीका चाकरी, वीखा मे वारमवारा ॥
 वे तीन घेरा वीच, कठण वणीया जग कीधा ।
 म्हाराज आपरा, देख सारा तन दीधा ॥
 धणी आप धणी कु ण जाणसी, न्वा लेखै कु ण आणसी ।
 चाकरा तणी होव चाकरी, जोधाहर कु ण जाणसी ॥१५॥

सारा सग सरूप, जीकै कीण रै घर जाई ।
 पाव आप पूजीया, कु ण राखे ठकराई ॥
 यारी इतरी आप, लगी न्ही अग्या लोपी ।
 गुर जाणो गढ पत, राज मरजादा रोपी ॥
 नवकोट नाथ बुध नीरमली, पु जण गुर प्रथमी पता ।
 अवतार जोध गढ आवजौ, मेहपत राखण मानता ॥१६॥

नव कोटा रे नाथ, दीष्ट भगवती ने दीधी ।
 राजा छोड़ै राज, केण सु मोह न कीधी ॥
 पुन तणे प्रभाव, सवद सासत्र कर साखी ।
 धणी हेक धारण, रखण सत चीत मे राखी ॥
 कमठाण कार मासो कीयो, नेह वावीयो नाथ सु ।
 व्रप मान धर्म रखीयो नीभै, हरचद वालो हात सु ॥१७॥

बावा खोटी वात, वमु मे भली वणाई ।
 त्यारी करतौ टहल, वडा री आही वडाई ॥
 भगती माहे भ्रात, जल ध्रो कासु जमणी ।
 जोखमीयो म्हाराज, अक न्ही लेखँ आणी ॥
 गढ गढा मुलक होसी गली, ग्रधपती न्ह आघारीयी ।
 कहा चुक पळ्यौ इण चाकरी, सु धणी आयौ नही धारीयी ॥१८॥

पुष्पिका - सवत १६०५ रा म्हा सुद अकम वार गुरवार दी० । सि० ।
 कु नणराज रा है ।

१६०७. १०६८० मुनिपति चरित्र

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ श्री सारदाय नम । वस्तु ।

गोयम गणधर गणधर पाय प्रणमेवि
 नामे नव निद्ध सपजे, सयल सिद्ध सेवक कह थापे ।
 एक मना जेऊ लगे, धरे ध्यान तस लबद्धि अपे ॥
 वेकर जोडी वीनवू, द्यो मुझ वाणि वसेष ।
 बोली सराओ मुनिपति, चरी कथा बद्ध सुविसेष ॥१॥

जवु दीठह दीठह भरह मझमि,
 मुनिपति की नगरी भली, करें राज मुनिपति सूरु ।
 कला बहुतरि ते फुसल, लक्षण अग वत्रीस पुरो ॥
 पटराणि प्रथिवी सुणु, रूपवत सु विचार ।
 वेदु बहु गुण आगलु, तस मुणि चद कुमार ॥२॥

चउपई

राजा राज करे चिर बहु । नगर लोक ते सुखीया सहु ॥
 राजा नीति पालें सुविचार । पुत्र तणे सिर सुप्यो भार ॥३॥
 देखी पत्नी थयु वैराग । अथिर ससार नही अम्ह लाग ॥
 श्री दमघोख मुनिवर सुणी । चाल्यो साधु वादवा भणी ॥४॥
 त्रिण पदक्षणा देई राय । करी तत्रासण लागु पाई ॥
 घरी ध्यान वेठो महाराज । फल्यो मनोरथ माहरु आज ॥५॥
 देख्य लाम दीधु उपदेस । सूणी वाणी वूभीउ नरेस ॥
 छाडी राज ऋद्धि परिवार । राजा लीधुं सजम भार ॥६॥

अन्त :-

कुचि कथा सुणि सु विसाल । पारिव्राजिवाइ चढाव्यो आल ॥
 तिणि सू णि वरि परि कीधी जेह । अम्हे हठे परि करि स्यु तेह ॥५६७॥
 श्रावक जाणै द्रव्य ताहरु लीधु । तेता क्षय पाम्यो पापीयो ॥
 इसउ कहता लागी वार । थयो मुनिवर नै कोप अपार ॥५६८॥
 तेजो लेस्या मुकी जास्यै । धु उ नीकल्यो मुख थी तिस्यै ॥
 सेठ पुत्र वे वीहै घणु । तु निधान प्रगट्यो आपणु ॥५६९॥
 म द्यो आल मुनिवर नै तुम्है । कहै पुत्र धन लीधु अम्हे ॥
 दीठो धुउ मुनिवर नै मुखै । अति सतोख्यौ वालै रखै ॥६००॥
 घणु खमावी लागु पाइ । मै दुहव्या खमो ऋषिराइ ॥
 तुम्हे कृपा परसि वुंहु जतु । तु माहतभो हुउ पसात ॥६०१॥
 करै सेठि अति पश्चाताप । दीधु आल हुस्यै मुक्त पाप ॥
 लाज्यो घणु हीया माहे तेह । भव वाधिस्यै नही सदेह ॥६०२॥
 थयो वैराग्य सेठि मनि घणु । करिस्तू काज हवै आपणु ॥
 घणु महोच्छ्व वेटै कीध । ऋषि मुनिपति कर दीक्षा लीध ॥६०३॥
 वेउ मुनीस्वर करै विहार । पालै पच महाव्रत भार ॥
 ध्यान मौनप तप सोभी देह । देवलोक देव थया बेह ॥६०४॥

तेहनु ध्यान हीया माहे आणि । वेहु एकावतारी जाण ॥
मुगति पथ ते जास्यै वही । सुणु कथा सखेपे कही ॥६०५॥

२ का सवत पनरे पचासू जाणि । वदि वैमान्त्र मास मनि आणि ॥
१२५० दिन सप्तमी रच्यौ रविवार । भणै सुणै तेहनै हर्ष अपार ॥६०६॥

पुष्पिका - इति श्री मुनिपति चरित्र संपूर्ण नमाप्ता । सवत् १७६५
वर्षे मति कानि वदि १३ दिने । कृष्णगढ मध्ये लपीकृत्वा ॥
श्री रस्तु । कोसतूरचदरी ने सगाय ।

१६२८ ११०१३ (३३) मेवाड गुण वर्णन

प्रारम्भ -

दूहा

मन धरि माता भारथी, कविया कोतिक काज ।
गुण वर्णन मेवाड का, करिसू कायक आज ॥१॥

छद जाति हाटकी

नही उन्हो खाणो नही दोजाणो, राणा केरे देश ।
जव मकी रोटा छोटा खोटा, खारी खायै हमेस ॥
मद मस आहारी सहु नर नारी, कालो पहिरण वेश ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ॥१॥*

पग पग जिहा माटा काठा भाटा, लागै ठोकर ठेग ।
वालक नै वुढा सहु नर मूढा, भण्या नही लवलेस ॥
अघ नध्या जध्या पहिरण नितका, वतका करै कलेश ।
मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ॥२॥

जिहा नर नै मूढे दाढी मोटी, छोटी मुछा केश ।
बलि राखै पट्टा जट्टा चट्टा, मोटा पेट विसेश ॥
मुहडा पीलरीया नर विल्लरिया, ऊका हीण नरेश ।
मेवाडै देशै भुले चूकै, मति करिजौ परवेश ॥३॥

* प्रस्तुत वर्णन किसी जैन मुनि को मेवाड के ग्रामों में हुए व्यक्तिगत कटु अनुभवों की अभिव्यक्ति मात्र है । इसे मेवाड के सामाजिक जीवन के सदर्भ में प्रमाण-स्वरूप नहीं मानना चाहिए ।

दारचा सेवरीया बलि टेघडीया, एहवा सहिजे बोल ।
 सो वरसे सीधा न हुवै, मेघा हीया फूटा ढोल ॥
 नीपजै भागवला नही ते भल्ला, नही कावल नही खेस ।
 मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ॥४॥

जिहा नर रोगीला बली सोगीला, छिली फीहा पेट ।
 नर वाता करता करै लडाई, धम्मा धम्म धमेश ॥
 पीवै महु कोई भागि तिजारा, अमल तमाखू पेस ।
 मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ॥५॥

नवि चालै गाडा वहिल न चालै रथ, नवि चालै तेम ।
 एक पोछ्या हीडै जो धणी खेडै, पुछ मरोडै तेम ॥
 घर वारी जोगी जगम सगम, सगी बलि दरवेश ।
 मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ॥६॥

जिहा लागै पाणी खोटी खाणी, वाय चोरासी गेह ।
 माकण नै माछर चाचण सुरला, बहुला दीसै तेह ॥
 जिन घरमी थोडा घणा मिथ्या, ती मानै देव हमेश ।
 मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ॥७॥

मार्थ पाघडीया वाघै जांरो, आरीसा को म्यान ।
 मोटी रुदराछा वादी सरिखी, पहिर हलावै कान ॥
 नासै पहिला थी फोजा फीटै, डुगर करै परवेश ।
 मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ॥८॥

जिहा डायण नै सायण गोगा मोगा, भूत प्रेत असख ।
 तसकर पासीगर घणा ठगा राते, बलि खाली खख ॥
 गछ नायक साहिव वगर उदैपुर, मति देज्यौ आदेश ।
 मेवाडै देशै भुलै चूकै, मति करिजौ परवेश ॥९॥

कवि नाम डण विध ए मेवाड को, कवि जिनैद्र कृत छद ।
 पिण एक उदैपुर है भलो, सो रहिजो चिर नद ॥१०॥

इति मेवाड को छंद सपूर्णम् । छ ।

दूहो

प्यारी लागत भाग मै, गशी वदनी मारी ।

राय अगण ऊभी रभा, जाणे केशर गुल क्यारी ॥१॥

जरर जरर वादल जरर, जाडा नीर जरेह ।

जिण रित कामणि मद वहै, प्रीतम आव घरेह ॥२॥

लि० (लिपिकर्ता) सुजाण ।

१६५२.

११००६

ग्रहसयुक्ति

प्रारम्भ -

॥ श्री परमात्मने नम । अथ युक्ति लिख्यते । ॐ ।

एक पुरुष द्रव्य की इच्छा कर्कें घरतें निकला । वन में गया । वन में एक पुरुष बैठा था । वाने इस्ने प्रार्थना करी कि हे प्रभु ऐसी कृपा कर कि मेरे को द्रव्य प्राप्त होवै । उस पुरुष ने उसको एक कुदाला और एक खड्ग दिया और पास एक मन्दर बताया और कहा कि इस मन्दर में जा तुजकू द्रव्य प्राप्त होवैगा । वह पुरुष उसकें अन्दर गया । देखे तो क्या है, कि चार स्त्री उसमें खड़ी है । उनसे पुरुष ने पूछा कि तुम कौन हो, किस्कुल की हो, क्या नाम है । स्त्रिया बोली हम स्त्रिया है, ब्राह्मण के कुल की हैं, जो नाम था, सो बताया । फेर पुरुष ने पूछा कि रहती कहा हो । एक ने कहा मैं अग्निसाला में रहती हूँ, दूसरी ने कहा मैं द्वार में रहती हूँ, तीसरी ने कहा मैं वर्मसाला में रहती हूँ, चौथी ने कहा मैं अन्त पुर में रहती हूँ । यह कह के स्त्रिया गुप्त हो गई, और चार पुरुष निकस आए । फेर उनसे पूछा कि तुम कौन हो, क्या नाम है, किस कुल के हो । उनाने कहा के हम पुरुष हैं, क्षत्री कुल है और अमुके-अमुके नाम है । फेर पूछा कि रहते कहा हो । एक ने कहा मैं अग्निसाला में रहता हूँ । पुरुष ने कहा कि वहा तो अमुकी स्त्री रहती है । उस्ने कहा के मेरी स्त्री है । प्रथम तो उसका काम क्या है, और जो रहती है तो दासी होकें रहे । दूसरे से पूछा कि तू कहा रहता है । उस्ने कहा मैं द्वार में रहता हूँ । पुरुष ने कहा के वहा अमुकी स्त्री रहती है । उस्ने कहा कि मेरी स्त्री है । प्रथम तो उसका काम क्या है, और जो रहे तो दासी होकें रहे । तीसरे तें पूछा कि तू कहा रहै है । उस्ने वहा कि मैं वर्मसाला में रहता हूँ । पुरुष ने कहा कि वहा तो अमुकी स्त्री रहनी

है। उसने कहा कि 'वह मेरी स्त्री है। प्रथम तो उसका काम कहा, और जो रहै तो दासी होकै रहै। चौथे से पूछा कि तू कहा रहना है। उसने कहा कि मैं अन्त पुर मे रहता हूँ। पुरुष ने कहा कि वहा तौ अमुकी स्त्री रहती है। उसने कहा कै मेरी स्त्री है। प्रथम तौ उसका काम कहा है, और जो रहै तौ दासी होकै रहै। तब पुरुष नै सुनकै कहा कि तुमनै बडा अनर्थ किया, क्षत्री हो कर्कै ब्राह्मणीया की घर मे गेरी, तुमकौ दंड देना योग्य है। तब पुरुष नै खड्ग काढि कै पृथक्-पृथक् च्यारो का सिर छेदन किया। तब फेर च्यारो स्त्रिया प्रकट हुई। स्त्रियो नै कहा कै हमारे पुरुष हैं, हम सती होवैगी। तब ये स्त्रिया जलने लगी। तब अन्त पुर मे जो स्त्री रहती थी सो पुरुष नै रख लीनी और कहा कि तू मेरे पास रहा कर। उसके रख कै फेर तीनू स्त्रिया कु, च्यारौ पुरुषा सहित दाह दिया।

अन्त -

‘हरि अह इडेति’ स-हरि की मैं स्तुति करू हूँ, सो कू न हूँ। ‘ससार-ध्वात-विनास’ ससार का कारण जो अज्ञान, तिसका नास कर्ने वाला है। काहे तै विषै तपय कर्के इस आकाक्षा विषै कहै है। ‘योगाष्टांगैरुप्रज्वलितज्ञानमयाग्नौ’ योग कहिये, प्रत्यक् चैतन्य और ब्रह्मचैतन्य, दोनों की एकता, तिसकी प्राप्ति विषै साधन भूत निर्गुण के विषय कर्ने वाले आठो अंग कर्के निर्गुण योग कै आठो अंग, आत्मयोग, ग्रन्थ योग विशेष का तिस त्रिपै कहे हैं। सोई दिखावै है। देह और चक्षु आदिक इन्द्रियो विषै जो विरक्तता, सो यम कहिये। इस योग विषै नियम दिखावै है कि आत्मा तत्व विषै जो प्रीत, सो नियम कहिये। बाह कें विषयो विषै उदासीनता कू ही आसन कहै हैं, और चितादिक सम्पूर्ण भावो विषै, ब्रह्म कर्के भाव कर्ने तै सम्पूर्ण वृत्तियो का जो निरोध, तिसकू प्राणायाम कहिये। अपनी बुद्धि की विषयो तै जो विमुखता, सो प्रत्यहार कहिये। और आत्मा-निष्ठा कू धारणा कहिये, ब्रह्म मैं हूँ, तिसकौ ध्यान कहिये। दृष्टा तै भिन्न कुछ नही, अज्ञान रहित जो फुर्णा, आत्मा मात्र, सो समाधि कहिये। तिनकाष्ट स्थानी आठो अंगो कर्के बलता हुवा जो ज्ञानरूप अग्नि, तिस विषै, और जो मन्द मुमुक्षू हैं, सावर्णो विषै हैं अन्तर जिसके और नही परिपाक हुवा मन जिसका, जिसके प्रति कहै है। पतञ्जलि नै वर्णन किये प्रसिद्ध है, यम नियमादिक आठो अंग हठयोग के। तिन काष्ट-स्थानी आठो अंगो कर्के बलता हुवा जो ज्ञानमय अग्नि, तिस विषै दृष्टान्त ‘लोहयुत हेम यथाग्नौ’ लोह कर्के मिले हुये सुवर्ण कू अग्नि विषै तपाय कर्के

लोहे कू त्याग कर्के सुवर्ण कू जैसे ग्रहण करिये है, तिस्की नाई, चिकानि विपै और अति चिकानि विपै, मध्यम और मन्द मुमुक्षू दोनू, आत्म पद कू प्राप्त होवै है ।

पुष्पिका - इति सिद्ध और चिरकाल विपै ज्ञान होने के निर्णय की युक्ति पूर्ण हुई ॥ ३६ ॥ सवत् १६२५ रा कानी सुदि १ श्रीरस्तु ॥

१६७१ १२३७६ (५) राजनीति की रीति

प्रारम्भ -

॥ अथ राजनित लिखते ॥

दुहा

अच्छर अगम अपार गति, किनहुन पारन पाय ।
सो मोहि दीजै सकत, जय जय जय जुगराय ॥१॥

छपै

वरनी उज्ज्वल वरन, मरन जग असरन मरनी ।
करनि करु ना करन, तरन सब तारन तरनी ॥
मिर पर धरनी छत्र, भरनी सूप सपती भरनी ।
भरनी अमृत कुरन, हरन दुख दालिद्र हरनी ॥
घरनी त्रीसुल खपर भरनि, भव भय हरनी सकल भय ।
जुगदव आदि वरनी जमु जय जगधरनी मात जय ॥२॥

सोरठा

दीजै वृधि अपार, करि प्रनाम प्रारभ करि ।
राजनीति विस्तार, जमु वरनै वानी सुगम ॥३॥
जिन वखतन मे पातसाह, राजत आलमगीर ।
तिनै वखत पैदा कीयो, गुन गनियन गभीर ॥४॥
सोलकी जुगमाल सुत, उदया मीघ अनेक ।
गू न दीनै तातै गुनि, बाध्यो अथ विसेख ॥५॥

र का

समत नाम अठारसै, वरम चउदत माहि ।

१८१४

आसो सुदी नामी सुकर, गुन वरन्यौ चित चाहि ॥६॥

राय जदुकुल जीत सुत, नगर अभेपुर नाम ।
महीर-वारा जित मही, वरन वरन वीसराम ॥७

मनोर्ह (मनोहर)

जाके जमु कचन की सीख वीराजमान,
जाके भुज भारन को पारहु न लहीयै ।
जाके दान गग से प्रवाह वहै आठौ जाम,
जाके नर देव हु की सेव सब चाहिये ॥
जाके रूप अघर उदार पचरूप जेसे,
रायगीरि राय देखी रीझ रीझ रहिये ।
राजनीत की मत नरेसहु कौ जसुराम,
कहीयें तो मेरहु समान कर कहिये ॥८॥

दुहा

दान जुक्त है दोउ जाहा, गुन हे जहा गभीर ।
ऐसे राजत हे अमुज, दीपमिहे के वीर ॥९॥
जेसे वेद विरचि को, अपरम दीये उपाय ।
राजनित राजान को, ऐसे दीये बताय ॥१०॥

छप्पै

प्रथम अग भुपाल, राजरानी अग दुजो ।
तीजे राजकुमार, मत्री चोथै गिन लीजै ॥
पंच मुसाहिब अग, अग षट रावत मानो ।
साप्तमा रयत अग, कवि अठ अग वखानो ॥
जुग रीत जीत जानो जुगति, विवेध विवेक विचार वह ।
जप करत सदा समरत जसु, आठ अग वरने मु यह ॥११॥

याको अघै उदाहरन, प्रगट करत परमान ।
राज नीत गुन चातुरी, सुन सुन लेहु मुजान ॥१२॥

श्रुत -

छप्पै

सवा भार सोवरण करण, दिन पै दत दीनी ।
अजहू पै हरक हाय, कोउन कै है दत दीनी ।

देखू उनपै आय, दाढ काढन कू लागै ।
 उनकी तुप रह गई सुनो, मगन पत आगै ॥
 यो कोउ वृगी न कीजियै, ज्यू त्यू ही जस दीजियै ।
 जुग बीच कोऊ कविता जसू, दाता अत न लीजियै ॥१३॥

दुहा

राज नीत की गीत जसू, प्रथम अग क्रियै आठ ।
 छन्द सख्या छपय दस छानठ कवित, बने दोहरे माठ ॥१४॥
 पुष्पिका - इति श्री राजनीति विस्तार यदुकुल सिंगार कवि अग
 वरणन नाम अष्टम अग समाप्तम् ।

दुहा

लिपिकाल दिग्गज दुज निध महि लखो, जेठ कृष्ण पख जान ।
 १६२८ रामदवारै जोधपुर, विष्णुदास लिखतान ॥१॥
 वाचै जिनकू राम राम २ २ २ २ २ २ २ २ श्री र र ।

१७१६ १२००६ रामचरणजी की वाणी
 (जिंग्यास बोध)

प्रारम्भ -

सिख भिख्यूक दातार गुर, राम नाम दे दान ।
 ले आतरि इक तार सै, भजता होइ कल्याण ॥
 भजता होइ कल्याण, भरम का बधन बिनामै ।
 दया सील सतोष, ग्यान हिरदै परकासै ॥
 रामचरण सु रती कहै, कहै कोई सत सुजान ।
 सिख भिख्यूक दातार गरू, राम नाम दे दान ॥३७॥*

राम नाम बोधदि अमल, दे सतगुर वैद उदार ।
 रोगी रूची ले पचि रहै, तो रहै न रोग बिकार ॥

तो रहै न रोग विकार, ताम मैं ससै नाही ।
कहै वैद अरू पुरान, सत जन साखि भराही ॥
रामचरण सा धीर कहै, ऐ मन मजन कू सार ।
राम नाम वोषदि अमल, दे मतगुर वैद उदार ॥३८॥

ग्रन्त -

ग्रन्थ वीपमा, छन्द पधरी

जग्यास बोध जग तिरन काज, तजि जगत होइ हरि सु समाज ।
ऐह सुध जग्यास बोध, होइ जग्यामी करै सोध ।
तन मन प्रान आनदकार, निस बास नाम करि हैं उचार ।
राम उचारै राम लीन, ऐह सो भजानै प्रवीन ।
म्हाराजि उचरे गिरा ग्यान, मुख सरोज बाडक निधान ।
कहे मवद अणभौ अनूप, निति धरम निरणै सरूप ।
सव रीति रैसि भाखी निधान, भिनि भिनि भेद दिसटात जानि ।
ग्यान भगनि वैराग गीति, सुनै ताहि उपजै प्रतीति ।
कीऐ खडना काम क्रोध, कह्यौ वरनि जग्यास बोध ॥६३॥

कू डल्या

रामचरण म्हागजि का, सवद सुधा मई सार ।
सकलन कर्ता रामजन ताहि सोधि कै, कीन्हौ ग्रन्थ विचार ॥
कीन्हौ ग्रन्थ विचार, जोडि परकरण वणाया ।
न्यारे न्यारे भेद, देस का देस मिलाया ॥
ग्रन्थ नाम जग्यास ऐ, सुध बोध सुख धाम ।
याहि विचारै दाम होइ, सो पावै पद राम ॥६४॥

दुहा

सकलन स्थान सहिपूरै सानदसू, सता सरणि निवास ।
सतगुर किरपा सू वण्यू, ग्रन्थ बोध जग्यास ॥६५॥
सकलन काल अठारा सै मैताल के, समत कातिग मास ।
१८४७ बुदि दोजि सोमार दिन, पुरण ग्रन्थ जग्यास ॥६६॥

ग्रन्थ सख्या कही ऐ है—

छद वेताल दुहा २६ साखी ३६८,

किवत ५५४ पद हैं ६ सवईया ६ ।

छद मनहर २६ कू डल्या १०३७ अर रेखता ८,

फुनि भूतणा ७ जागू खरा ॥

त्रीभगी १४ अरेल ३७ पधगी २,

चौपई ५ झपताल हैं १२ ।

भुजगी १ भलि सोरठा १४,

छद ऐ वेताल हैं ५ ॥

छद सख्या जानि यामै, सपत दस परमाण हैं । १७

अमोध वाइक कहै सतगुरु, सबद अणभै वाण हैं ॥

सबद मख्या जोड मारी, सोला सै अकतीस हैं । १६३१

राम जन गुर सरणि, जोडे ऐ परकरण अकीम हैं ॥६८॥

दुहा

जग्यास बोध उर सोध करि, रामगरु मम सीस ।

जोड वणार्ई रामजन, ऐ परकरण अकीम ॥६९॥

पुष्पिका - इती श्री जग्यास बोध आतम परमोध गुर सतूति ग्रथ सख्या
निरूपण नाम सबद १६३१ ऐकवीसर्मा परकरण । २१ । इती ग्रथ
जग्यास बोध संपूरण । ग्रथ १ । *

१७४१.

१०६०२

रामचरित्र

(प्रति अत्यन्त अगुद्ध लिखी हुई हैं)

प्रारम्भ -

॥ ग्रथ रामचरित लिखते ॥

दुहा (चौपई)

निमो निमो निमेमाकार गुसाई । घट घट व्यापक जल थाल माही ॥

ब्रीमा पुत्र दुजो कोड नही । तेरी काला साकल जुग माही ॥

पार त्रम पूरण पेदागर । नाराईण नरसिग नटनागर ॥

आलख पुरस आभनासी । सकल माझ तेरी पैदासी ॥

सुग तेतीसा गोरख आठ्यासी । प्रक जौगसर सिध चोरासी ॥

हुकमि बदर सब ठाढा । करजोडी करण करैह गाढा ॥

* इसके बाद ग्रन्थ 'निश्वास-बोध' प्रारम्भ किया गया है ।

१ लिपिकर्त्ता ने अधिकांशतः अकारान्त शब्दों को आकारान्त लिखा है ।

ब्रमा वीसन महादेव दाना । सबही रो रहन लगाना ॥
 वडे वडे द्रगगल कहावै । तेरो दीयो सब कोई पावै ॥
 राम सीमर मन मोरा नाई । वारो वार कहू समजाई ॥
 गुर उपदेस सुणो नही काना । राम सुमर मन मुढ दीवाना ॥
 राम सदा साकडै साही । समरथ राम सदा सुखदाई ॥
 राम सब दुख भाजण हारा । राम ही सब सुख के दातारा ॥
 राम ही जीवन राम आधारा । राम ही पीतम राम ही प्यारा ॥
 राम ही निरधार के आधारा । राम ही करनी निसतारा ॥
 राम ही सीध उतारे पारा । राम ही नरग निवारण हारा ॥
 राम ही जीवन साधाती । राम ही सजन राम ही साथी ॥
 राम ही पीता राम ही माई । राम ही बन्धु राम ही भाई ॥

अन्त -

राम चिरत कहै दाहीयारा । जाकी प्रबु वात सुधारा ॥
 राम रस पीवन पावै । सुदरदास राम जस गावै ॥
 राम पुरी म (मे) मेरा वासा । गुर कालु न (ने) सीष सु दरदासा ॥
 ऐते रामचिरत पडते गुणते । सो मोख पावते ॥

रामचिरत सपुण्ण ।

१७७२. १०६७६ रामविनोद-भाषा

प्रारम्भ - ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ रामविनोद ग्रंथ ॥

दोहा

सिधि वृद्धि दायक सकल हिय, गवरी पुत्र गणेश ।
 विघ्न विडारण सुख करण, हरष धरी प्रणमेश ॥१॥
 श्री धनुतर चरण युग, प्रणमु धरि आनद ।
 रोग नशै जस नाम थी, सब जन कू सुख कद ॥२॥
 विविध शास्त्र देखि करि, सुगम करु अधिकार ।
 रामविनोद ग्रन्थ यहु, सकल जीव सुख कार ॥३॥

अथ पुरुष लख्यण

चतुर विचक्षण दक्ष नर, सुन्दर रूप सुजान ।
 वैद्य बुलावण आवही, मिष्ट वचन प्रमान ॥४॥

फल वस्त्रादिक लेह करि, धरै जु वैद्य हज्जरि ।
 रिक्त पाणि नहि जाईये, दलगीरी तजि हूँ ॥१॥
 दोय पुरुष सग वैद्य कै, तव ले जाय तुलाय ।
 एक पुरुष सग होइ चलै, तव वैद्य बुलायो जाय ॥

अथ सुभ मुकन चौपई

कन्या अष्ट वर्ष प्रमान । वृषभ जोड हस्ती परधान ॥
 मीन जुगम दधि पक्का धान । विप्र तिलक मुख बोलई बाणि ॥७॥
 धूम रहित अग्नि राजान । आमिष वैद्या मुहगान ॥
 भर्ग्यौ कुभ पदमणि फुलमाला । पुत्र सहित फुनि आवेहि वाला ॥८॥
 इत्यादिक सकुनै सुभ भलै । वैद्य सनमुख जो आवई मिलै ॥
 तौ वैद्य जाइ तेहने घरवार । रोगी जीवै सहि निरधार ॥९॥

अथ नाडी गरीर चेशा लक्षण दोहा

आदि नसाने देखिये, लक्षण अग निहार ।
 मुख दना लोचन नखा, घ्राण श्रोत्र लघु धार ॥१०॥
 जिह्वा अवर हस्त फुनि, मडित कगे विचार ।
 प्रथम ए लक्षण देखिये, करि पीछे उाचार ॥११॥

अन्त -

दोहा

सदभ्रम अथ

वैद्य अथ जे देखिए, किस ही न पायौ पार ।
 ओषधादि के गुण घणे, प्रगटे इण ससार ॥८८॥
 आत्रे चर्क हारीत हू, जोग चितामणि वृद्ध ।
 वाग्भट्ट श्रुश्रुतात् भृगु, क्षार पाण आनद ॥८९॥
 सन्निपात कलि कातही, राज मार्गड बखान ।
 रस चितामणि मतकहू, इत्यादिक मत आण ॥९०॥
 बिंदुसार मनोरमा, सारग धरि सुजाणि ।
 कह्यौ निदान आतक तै, बहु बिधि रोग निदान ॥९१॥
 इति शास्त्र साखि ।

गुण अनेक इनके अछै, तिसका ले लवलेस ।

प्रगट जु भाषा ए रची, बहु प्रकार सुविसेस ॥९२॥

अदभुत ग्रंथ जु ऐ रच्यौ, रामविनोद ऐ नाम ।

व्याधि निकदन मुख करन, कुसल सदा अभिराम ॥६४॥

अथ फल इसका

पगोष्कार कहा किण हुवै, कहा किण घरम निमति ।

किहा किण फुनि धन मित्र ही, किहा किण सोभा मति ॥६४॥

करमभ्याम किण सही, किहा किण काम सनेह ।

कगै चिकतसा चतुर नर, निफल न हुवै एह ॥६५॥

चौपाई

गच्छ श्री कोटिक गच्छ खरतर प्रधान । श्री जिहिसिंह सूरि राजान ॥

एवम् रजे जिण अकवर साहि सलेम । करामाति दिखलाई जेम ॥६६॥

गुरु

नाम तामु सीस बहु गुण मणि धार । पद्मकीरनि जस सयल ससार ॥

तमु पद पंकज विद्या पूर । प्रतियो जा लागि धू ससि सूर ॥६७॥

पडित पद्मरग सु जगीस । नरनारी प्रणमै निस दीस ॥

कवि तामु शिष्य भाषा करि कही । रामचद्र मुनि जाणौ मही ॥६८॥

नाम

सवत दोहा

रचनाकाल गगन पाणि फुनि दीप ससि, हिमऋतु मगसिर मास ।

१७२० सुकल पक्षि तेरस दीने, बुधवार दिन जास ॥६९॥

मरदानौ अरु महावली, अवरगसाहि नरिद ।

ताम राज-मैं हरप सु, रच्यौ शास्त्र आनंद ॥७०॥

सूरि गुणो साचौ सदा, जगत गुरु जिनचंद ।

प्रवल पडूरै परगटौ, दीपै ज्यू रवि चद ॥७१॥

रचना-स्थान उत्तर दिसि खुरसाण मैं, वरनू दिसि प्रधान ।

सजल भूम है सरवदा, सकी सहर सुभ थान ॥७२॥

परदुख भजण कै लिए, कीयौ ग्रंथ सुख कद ।

चिर लागि रह्यौ सदा, जा लागि मेरु दिणद ॥७३॥

पुष्पिका -

इति श्री पडित पद्मरग शिष्य रामचद्र विरचते श्री रामविनोदे मदन
मोदक १, कामेस्वर गुटिका २, कामकतूहल गुटिका ३, पुस्तपुरी थभन गुटिका ४,

बघेज बलवीर नाम गुटिका ५, सिंहवाहनी गुटिका ६, धातुखीण उपाय ७, नामदं उपाय ८, गतवीरज सवीरज कू गुटिका ९, हस्तकर्म उपाय १०, वीर्ज बघेज लेप ११, मद्यभ लेप १२, लिंग दृढ कर्ण लेप १३ योनि दुरगध १४, लिंग स्थूल कर्ण उपाय १५, लिंग पीड कू लेप १६, भग सकोचन उपाय १७, योनि पाणी करै तिसका उपाय १८, योनि दुरगध उपाय १९, योनि सूल उपाय २०, कुच कठिन प्रफूलित उपाय २१, कछ बिलाई थगोटहा उपाय २२, स्त्री पुष्प आवण का उपाय २३, ऋतु गमावण उपाय २४, स्त्री गरभ धरै छोडि बृध उपाय २५, मृत-वच्छा उपाय २६, नालि परावर उपाय २७, सतान उपाय २८, पुन शास्त्र साखि-धिकार नाम सप्तम समुदेस । सर्व गाथा ३०३ ।

प्रथम समुदेस गाथा २४६

द्वितीय समुदेस गाथा १४२ तृतीय समुदेस गाथा २३३

चतुर्थ " " ३११ पंचम " " ३७६

षष्ठम " " ३१० सप्तम " " ३०३

श्री रामविनोद समाप्त । समन् १८६५ का मीती भाद्रवा सुदि १२ । लिपीकृत साधू गगाराम जिला०

१७७३ १२३६४ राम विवर-विजय गीत

प्रारम्भ -

॥ श्रीमते रामानुजाय नम ॥

श्लोक

सजलजलदगात्र पंकजाकारनेत्र । शिरसि बबल-छत्र जानकी वै कलत्र ॥

सुरपतिकृन्मित्र भूतले चैक पात्र । दशरथनृपपुत्र नौमि राम पवित्र ॥१॥

विवर-विजय गीत रामचारित्रपुण्य । रघुपति कृतमुग्र पारमेष्ठ्य पुनीत ॥

प्रकृति-परम-रम्य भाषया भाषयिष्ये । जनितजयमनन्य राघवेज पणम्य ॥२॥

भुवनविमलकीर्ति प्राणिनामाश्रय च । असितासतस्वरूपमूर्विजाराममीश ॥

सुमति-मति-प्रताप अतरंगे निधाय । विवर-विजय गीत गीयते गाथयाद्य ॥३॥

प्रणम्यप्लवता नाथ पावन पावनात्मज ।

शिव मौख्यप्रद वक्ष्ये महिगवणमर्दन ॥४॥

उत्तम्य मिथो सलिल सलील जनकात्मजाया कृत शोक वल्लिम् ।

आदय तेनैव ददाह लका, नमोमित प्राजलिमाजेनेयं ॥५॥

सोरठा

गुरु पद पद्म पराग सन, निज मन मजन कीन्ह ।
मम उर विमल विवेक जिय, हरपि कृपा करि दीन्ह ॥१॥
विवर कथा पावन परम, उमहि कहि वृषकेतु ।
सावधान हरि जान मुन, राम सुजस कर हेतु ॥२॥

चो० (चौपाई)

श्री रघुवीर उदधि तट आयुड । रावन समाचार मुनि पायड ॥
सुकसारन अस कहा वहोरी । सग अनीक नाहि कछु थोरी ॥
तिनहि गोप्य अस पुछन लागा । वरनहु सेनप सहित विभागा ॥
सत्य कहहु चरपति सुभ वानी । चहौ सेन सख्या पहिचानी ॥
मृपा मोहि जिनि कहसि वडाई । भाल कीम प्रभुता अधिकाई ॥
तिन महि कौन मुख्य बलवाना । का प्रभुता कहो प्रगट प्रमाना ॥
इहि विधि कहेउ दसानन जवहि । सुकसारन हसि बोलेउ तवही ॥
नाथ दीख जस कपि समुदाई । भाव भेद तस कहो सुनाई ॥

दो० (दोहा)

सुनहु तमीचरपति प्रबल, तुमहि कहत मद भाइ ।
सकर सपथ प्रमानि पन, वरनन करत बनाइ ॥२॥

चोपई

हम जव गये विभीषन साथ । देखेउ सेन महिन रघुनाथा ॥
मुख्य जूथपति जे हम देखे । बल प्रमान निज हृदय विमेखे ॥
पुनि कछु सुना सेन मह जाई । कहव सत्य कछु नाहि वडाई ॥
प्रथमहि दीख राम रघुनाथा । अनुज सहित कस वरनहि गाथा ॥
राज विभीषन कहु तिन सारा । पुरव तुम्ह सन कहे उदाग ॥
अनुपम बल अतुलित प्रभुताई । नाथ सुनेउ अस कपि कटकाई ॥
भानु विव डव राजन नीके । देखत लघु प्रताप अति-हीके ॥
तापस वेस जुगल बलवीरा ! धन्वी गुन समुद्र अति धीरा ॥

अन्त -

दोहा

मारे इह मारुति सुवन, दुख दायक सब मोधि ।
 तुन निरभय विवरहु अवनि, बहहु न कछु प्रतिबोधि ॥१॥
 मकुञ्ज न करिय उदार मति, होनहार सोई होय ।
 पत्नी कृत मु प्रपच वस, तखहि सुलछिनि (लोय) ॥२॥*

ग्रन्थाङ्क ३०२६४, पत्र सख्या ४५-४६ वें

अन्तिमाश -

चौपाई

[कथा माहात्म्य एवम् कथा श्रोन]

भूतल सप्त द्वीप तव खडा । भण्ड प्रगट प्रभु सुजस प्रचडा ॥
 तिहि अनुसार बहुत कवि गाँवहिँ । तदपि अपार थाह नहिँ पावहिँ ॥१॥
 सकल मुनिहिँ मारुति घरि भावा । लीन्ह जाचि रघुवर मन पावा ॥
 जहँ जहँ राम कथा कलि गाँवहि । म-पदि पवनसुत तहँ चलि आँवहिँ ॥२॥
 मुनिहि राम जस दिन अरु रानी । कवहु न अवटन असुर अराती ॥
 विवर विजय श्रीगति जो कीन्ही । वाँटत इद्र सुगन्ध कहूँ दीन्ही ॥३॥
 अमरापुर इह कथा अत्पा । गई तिनहिँ गाँवहिँ सुर भूपा ॥
 तारपान कविवर डरु भण्ड । इद्र तुष्ट मख तिहिँ निरमण्ड ॥४॥

दोहा

कीन्हे प्रगन मुरेम तिन्ह, तवते तहँ चलि आय ।
 कहा लेहु डछित वरहि, समय मोक बहाय ॥१॥
 तारपान कर जोरि तव, कहा इद्र सन एहु ।
 जान पाव भूतल भुवन मोहि कृपा करि देहु ॥२॥

* अन्तिम पत्र प्रकाश होने से इसी कृति की अन्य प्रति, जो प्रतिष्ठान से रामचरित-मानस के साथ उधार ली, ने ग्रन्थ का अन्तिमाश तथा पुष्पिका उद्धृत की जा रही है ।
 ग्रन्थाङ्क ३०२६४, मात्र ४२५२० में भी

चौपाई

इंद्र कहत सुनि कविवर भाई । भूनल सगल वस्तु भल छाई ॥
 विवर विजय रघुपति गुन गाहा । अहड न अपर सकल चित चाहा ॥१॥
 अस कहि सकल कथा हरि गाई । सुनि मुभ वॉनी लिखेउ तिनि साई ॥
 तवत प्रगट भएउ भुव मांही । गाँवहि ताल प्रवध लखाही ॥२॥
 ना वरनी कविवर कवि तुलसी । राम प्रसाद सुमति हिय हुलसी ॥
 मजन सुनहि गम गुन गाहा । करहिँ न अचरिज लगि उतसाहा ॥३॥
 राम कृत अनत कहाँनी । कलपाँनर जस अनि सुख दानी ॥
 जिहि विधि जिहि कवि जो सुनि पाएउ । तिहिँ विधि तस तिन वरनि सुनाएउ ॥४॥

छंद

वर्ग्योँ सुजस तिहुँ लोक पावन म्याँम-घन श्रीराम को ।
 कलि कलुष हारक जलधि तारक मरनप्रद मुख धाँमको ॥
 प्रभु जानि आपुन दास मो कहैं भक्ति अविचल भाँवनी ।
 श्री रमन देहु दयाल स्वाँमिन सदा अविचल पाँवनी ॥१॥

दोहा

सुन्दर श्रीपति सृजस मुभ, गाँवहि नर अरु नारि ।
 विजय विभूत विवेक बड, तिनहिँ देहि त्रिपुरारि ॥१॥
 जिय चाहत जुग सपनिहि, तो श्री रघुवर गाय ।
 आँन भरोस विहाय भजि, दायक सुख समुदाय ॥२॥
 कोटि काँम अभिराम छवि, राम लखन मिय साँनि ।
 कविनाम मगलीक मारुत सुवन, भजि तुलसी सुख साँनि ॥३॥
 सत कृपा रघुवीर पद, लगहि सु-मन ललचाय ।
 तिहिँ ते सत सगति सकल, करहु न आँन उपाय ॥४॥
 राम कृपा हनुमत कृपा, कहेउँ सुजस अतिसार ।
 तुलसी जे अनुदिन रटहि, बढइ विवेक विचार ॥५॥
 क्षेपकस्थल सुन्दरकाड अनतरै, जुद्ध करन की आदि ।
 विवरविजय गाँवहि सुनहिँ, ते सुख लहहिँ अपादि ॥६॥

जिनकै हरि गुन सो न हित, नहि मतसग विचार ।
तुलसी ते निज ग्रवकर, जोवन हरन कुठार ॥७॥

पुष्पिका - इति श्री रामचरित्र मानसे सकल कल्मष विध्वसने विवर-
विजय सपादनो नाम पंचमो सोपान समाप्ता । मिति आश्विन मुक्ता
नोवम्या ६ वार वृति बुधवारस्य श्री नृसिंहालय ग्रंथ समाप्तौ ॥
लिखि जगन्नाथ श्री रामानुजदासोह, स्व पठनार्थ ।
श्रीरस्तु । लेखक मगलाना च पाठकाना च मगल । मगल सर्वभूताना
भूपति भूपति मगल । १। श्रीरस्तु ।

१७७८. १०६७० राम-सीता चरित्र

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ ओ३म् नम ॥

इहा

सुखदायक सासण धणी, तारिक अरिहत देव ।
कर जोडी तेहनै करु, नमस्कार नित मेव ॥१॥
निज गुर चरण कमल नमु, तीन तत्व दातार ।
कीडी थी कुजर कोयी, ए मुझने उपगार ॥२॥
दान सील तप भावना, सीवपुर माग्य च्यार ।
सरिखा छै तो पिण ईहा, सील नणो इधकार ॥३॥
पाप अठारे जीण कह्या, कगे मति भव जीव ।
कीया थी दुख पाडुवा, नरका खावै रीव ॥४॥
हिंसा भूट चोगी अवन्त, ममता घणी विसेष ।
क्रोध मान माया लोभ, वले राग ने द्वेष ॥५॥
कलौ वारमी जाणीयै, तेरमै देवै आल ।
तिण थी कर्म वधै घणा, ए मोटो चडाल ॥६॥
कलक न दीजै केहनै वलि सावनै विसेख ।
पाप करम सह परिहरो, दुख सीता नौ देव ॥७॥
सील रत्न पालीं सह, जिम पामी जसवास ।
सीतानी परै सुख लही, पामो लील विलास ॥८॥

सीताराम रावण तणी, लछमण वले सवंध ।

सावधान थइ साभली, सीत विना सहू घघ ॥६॥

अन्त -

सवध सीता राम नी, चतुर हुवै ते सुण-ज्यौ रे ।

सुण ने हिया मे धारजो, नित उत मारा नाव धुण-ज्यौ रे ।

भावधरी सुण-ज्यौ सहू, सीता चरित थी मे कह्यौ ए सगलौ विसतारो रे ।

ते सात्री करनै सरद-ज्यौ, पछे ग्यांनी वदे ते सारो रे ॥६॥ भा०

सीता ७ पाठ सूत्र तणी, अर्थ मे घणो समासी रे ।

लोक कह्या थी जाण-ज्यो, पूंछ ज्यो पिढत पासो रे ॥१०॥भा०

अविल नीवो एकासणी, सुणउ वास करो छठ तेलो रे ।

सगत माफग थे धारजो, पाप करम नै पैलो रे ॥११॥भा०

के इ साधने आवक तणा, व्रत हिग मे धर-ज्यौ रे ।

ज्युं सुख पामे जीव रा, पर भव सेनी डर-ज्यौ रे ॥१२॥भा०

क्यू ही दीठो क्यू इक वाचीयो, क्यू सुणीयो वले सोड रे ।

इण मै उछौ डव कौ हूवै, तो मिछामि दुक्कड मोइ रे ॥१३॥भा०

विरुध हूवै ते टाल-ज्यौ, राम चरित्र वले जोड रे ।

कविनाम रिप चौथमलजी ईमरी कहे, सव सुणिज्यौ सहू कोइ रे ॥१४॥भा०

रामायण मोटी घणी, जाणै समुड अगादो रे ।

रस्थान जोडी जोधानै जुगत नु देव गुरा प्रसादो रे ॥१५॥भा०

रकाल सवत् १८६२ सिद्ध, जाग आयौ सारा रे ।

काती वद आठम दिनै, मगल मगलीक वारो रे ॥१६॥भा०

पुष्पिका - इति श्री रामसीता चरित्र संपूरण । सवत् अठारै वरस

६७ रा चैत वद चोत लिखतु गुरा मधै माना ।

१७८४. १०६६० रामाश्वमेध भाषा

प्रारम्भ - श्री रामाय नम । श्री गणेशाय नम ।

दुहा

वंदि प्रथम गुरपद मु-रज, निज सिर धरि मुख पाय ।

त्रिविधि ताप तम दलन कहि, दिनकर सरिस सुभाय ॥१॥

निज देसिक गुर कञ्ज-पद, बदहु करहु स-प्रीति ।
 विनु प्रियास जिनकी कृपा, माहा मोह दल जीति ॥२॥

प्रनवि सकल गुर पद कमल पुनि जिति राज कृपाल ।
 जिनके पद बदन करत, मिटत सकल भव जाल ॥३॥

वादि पाराक सचरन जुग, मुर तरु सरिस सुभाइ ।
 सुमरिहु जामुन पद कमल, सरनागत सुखदाय ॥४॥

राम मिश्र पद प्रनवि करि, कमल नयन पद-कञ्ज ।
 नाथ मुनीम-हि बदि पुनि, सठ गजन भव भज ॥५॥

अस रघुपति पद कञ्ज-गुन, परिहरि आन उपाय ।
 करहु ढिठाई ऐक अव, छिमहु सन्त समुदाइ ॥

चौपई

जिहि विधि जग्य कीन्ह रघुनाथा । बरनन करन चहौं सोई गाथा ॥
 ममक चाहि जिमि नभ परकाग । मोर मनोरथ तिम ससारा ॥
 जन विचार रघुवस विभूषन । निज दिसि निरख प्रनत रूप पूषन ॥
 करिहै पूग्न आस निदाना । भजन करि मम दूखन नाना ॥
 कवि प्रथम बुझाई कहौ निज नामा । सबन देस ग्याति पुनि ग्रामा ॥
 परिचय मधु-अग्निदास नाम यह मोरा । माथुरि वम जनम मति थोरा ॥
 भानुसुता मुरसिरिति मभारा । पावन देस विदित ससारा ॥
 नगर इष्टिका पुरी सुहावनि । निकट कलिंद सुता बह पावनि ॥

दोहा

रचनाकाल सवत वसु दस सत गुन हूँ, पुनि नवतीस मिलाइ ।
 १८३६ विसद मास आपाढ रितु, पावस सुखद वनाइ ॥

चौपाई

सुक्ल पक्ष तिथि द्वैज सुहाई । जीव चार मगल सुखदाई ॥
 हृष्य जोग पुनर्वसु रक्षया । प्रकटी हरि जम वरनन इक्ष्या ॥
 श्री रामानुज कुटम मभारी । कीन्ह कथा आरम्भ विचारी ॥
 जिहि विधि व्यास सूत सन गावा । श्री अनन्त मुनिवर-हि सुनावा ॥
 निमि मे निज मति के अनुसार । वरनहु रघुपति चरित उदारा ॥

कवित विचार न जानहू ऐकू । भेद पगु गु गादि अनेकू ॥
पावन जीह करन हिन भाई । वरनहु प्रभु कीरति सुखदाई ॥
ससि सुरसरि मराल पय फेनू । अमल अनन्त गुनी छवि देनू ॥

दोहा

सूत परासर तनयकर, जिहि विधि भा सवाद ।
प्रथमहि वरनहू सो कथा, सीताराम प्रसाद ॥४॥

अन्त. -

चौपई

तुव प्राद मैं अहिकुल केतू । सुनी कथा विस्तार समेतू ॥
कगहु विनय प्रभु कवन प्रकारा । सकल भाति मैं दास तुम्हारा ॥
दुर्लभ राम चरित मुहि दीन्हा । सकल प्रकार कितारथ कीन्हा ॥
इहि विधि करि बहु विनय मुनीसा । प्रेम प्रीति जुत नाऐउ सीसा ॥
सुनहु सूत यह चरित अनूपा । तुमही कहा मैं मति अनुरूपा ॥
श्री अनन्त मुनीवर सवादा । अति पावन पुनि समन विषादा ॥
अव तुम कहवूहहु हरखाई । तात कहौ सोई सकल बुझाई ॥
यह सुनि सूत चरन सिरु नावा । परमानन्द हृदय मह छावा ॥

छन्द

उर-छाव परमानन्द पुनि कर जोरि पुनि विनती करी ।
प्रभु कीन्ह कृपा अपार मो-पर राम कीरति बिस्तरी ॥
अव प्रनत पाल उदार करुना सिन्धु मोहि जन जानिये ।
मैं भयो धन्य वनाइ सकल प्रकार मन अनुमानिये ॥

दोहा

पुलकि गात इहि भाति बदि, कीन्हौ चरन प्रनाम ।
हरखे व्यास उदार तब, पर्म कृपा के धाम ॥
मैं जड मनुज मलाय तन, सतत कुमति निधान ।
वरन्यौ राम प्रसाद यह, ग्रन्य सुमति अनुमान ॥१६॥

सोरठा

छिमहु सन्त समुदाइ, किन्हु ढिठाई विपुल मैं ।
कीजौ कृपा वनाइ, अबुध जानि निजु दिसि निरखि ॥१७॥

पुष्पिका - इती श्री पद्मपुराणे पातालखण्डे सेस वात्सायन सवादे
मधुसूदनदास कृते श्री रामा अश्वमेधायी नाम अष्टपष्ठितमोध्याय ॥६६॥
॥ इति श्री रामा अश्वमेध संपूरण ॥

१७६७ १२८४२ (१६) रूपग दवावैत सहाराजा अजीतसिंहजी री
(महाजनी लिपि मे)

प्रारम्भ - अथ रूपग दवावैत सहाराजा अजीतसिंहजी री द्वारकादासजी
री कही ।

दुहा (दोहा)

मन बुध मील कीधो मतो, सीमरा आद गरौस ।
ज्यु राजा अजमाल नै, सबदा-डवर कहेम ॥१॥
देवा अग वाणी जीतु, सेवा तो सु डाल ।
दवावैत अगीया दीयी, वीछा वयण वीसाल ॥२॥
प्रथम ही गणपत गुण नीधान, पगल नै ध्याया ।
चोरासी वध रूपग जात जात का कहण जणाया ॥३॥

असा श्री गरौस सी-बुध का राजा ।

उकत का अवार, मुकत का अवार, मुकत का दरवाजा ।

तेनीस कोड देवना का अगवाणी ।

रुद्र-सा पीता, माता भी रुद्राणी ।

मेक ही-सादत हसती का-सा आनन ।

सीदुर-सा टीका, मुसा-सा वाहन ।

भवर-सी नाभी, दरीयाव-सा उद्र ।

रुद्र ही-सा रसाय आर मारुद्र ।

असा श्री गणेश कु प्रथम नमसकार कीजै ।

सहाराजा अजमाल कु दवावैत कहीजै ।

दुसरा नीमसकार सुरमुती कु करणा ।

सुमत की दाता, कुमत की हरणा ।

हम गमनी हम वाहनी देवी ।

सुर नर नाग गण गध्रव नै मेवी ।

सुकल अवर, सुकल भी वाणी ।

दयान दर ध्यायीयै अनी अणीयाणी ।

जगन की जणणी, जगत की माता ।
 अनीद्या की खडणी, सुवीद्या की दाता ।
 जीन की कृपा कटाखि अवलोकण होवे ।
 तो सायत्र पुरान व्याकुरण कु जोवै ।
 आगै भी वेदव्यास वालमीक जैदेव-सा चीनी ।
 तीसकी कृपातै रामायण भारन भागवत अष्टपदी सेसा कायब कीनी ॥*

अथ महाराजा वरनन

ये तो म्हाराजान के राजा, म्हाराज अजमाल ।
 खुगसाण कु खाग, हीदुसथान की ढाल ॥
 मात लोक कायद, पचीसमा अवतार ।
 मैसार सीरोमण, मैसार साधार ।
 जीसका प्रवाडु का पार कुण कव पावै ।
 अैसा कुण है सो अगम कु सुगम कह वतावै ।
 तीसका दीसटत दरीयाव की लहर, गीगन के तारे ।
 रेण के दाणे, गीगन के फुहारे ।
 उतर चहो पथ यीस्वर की माया ।
 खगेस का वेग, वाराह की काया ।
 गीना का अरथ नारद का न्वाला ।
 अजमाल का प्रवाडा, कुण कहणे भी वाळा ।
 पै जैसा जाणीयै, तैसा वखाणीयो ।
 ओर कवेसुर की उक्त देख ओर तान आणीयो ।

अन्त -

दुहो

मेरै मेरा सायीया, अजमल तु आधार ।
 जीउ ज्या जपसु सुजस, हो समार सधार ॥
 बाधा घर-घर वारणै, मैगल मारु राव ।
 कीसन सदामा ज्यु कीया, सेवग जसा सुजाव ॥
 जीना-धीन कमायीया, जीना धणी अजीत ।
 सोहड सुपाल स-भागीया, चारु वरण नचीत ॥

* इसके आगे और म्नुति-परक अंश है, जिसे छोड़कर आगे का अंश उद्धृत किया गया है ।

जुना सासण पाळीया, दीधा नवा अपार ।
 अजमल सु जोड नै-को, हीदु ही दुकार ॥
 कर सीर ढोयी लकडी, साभा आग सजोय ।
 तप अजमल भेला तपे, जीके हजुगी जोय ॥
 सवही कीधी बदगी, अपनी पोहच प्रमाण ।
 पायी जा डोढी अप, लजे यघ के राजाण ॥
 अजमल गजमल अभनोम, नीजर वीव्योक नीराट ।
 जोया सामो जोवर्ज, अण जोया ओचाट ॥
 म्हाराजा अजमाल, मुख दीठा रोजी मीलै ।
 पग परस्सा अछपाल, जीड-जा जसवतसीगउत ॥
 खमा-खमा आखै पलक, देव खमा दाखत ।
 तवौ खमा हीदु तुरक, जतन अजीत जपत ॥
 ली अजमेर दुम्हाल, साभर कीधी खालसै ।
 अ-वाना अजमाल, जायड जसवतसीघउत ॥
 छतीसै ठकुरायीया, अजमल परै न वाय ।
 मैगल हदा खोज मै, सव ही खोज समाय ॥
 दवावैतडा दम दुहा तीन कवत दोय गाहा ।
 रचनाकाल सतरसै समत वहोतरै, कव द्वारै बहीण देवैत ॥

रचनाकाल

१७७२

पुष्पिका .-

सपुरण । समन १८१०० (१९००) रा वसाख वद ४
 वार मगल लीखत खीडया हरमुख । वाचै जीणा सु राम राम ।

१८३०.

१०१७५

चाक्य-चल्लरी

प्रारम्भ -

चाक विलरी लिख्यते । *

अकटक=निर्भय, वेखटक । अखारा=कुसती-जगह । अखिल=संपूर्ण, त्रिकुल । अखड=पूरण, एकरस । अग=स्थावर, अचल । अगम=कठिन । अगवान=आगे लेने वाला । अगाध=गभीर, गहरा । अघ=पाप । अघात=

चोट, धक्का । अचरी=मसकरी । अचभा=अचरज । अछत=वरनमान रहते ।
 अज=ब्रह्मा, बकरा, अजन्मा । अजा=माया । अजिर=अगन (आगन) । अजिन=
 मृग चरम । अटपट=कठिन । अटारी=कोटा, छत । अनिमासिध=आठ प्रकार की ।
 अत(र)का=जो जानने योग नहीं । अतिथि=अभ्यागत, पाहुनो । अतोवा=वेसुमरा ।
 अथाईसभा=मजुलिश । अद्भुत=जो कभी हुवा नहीं । अदिन=बुरो दिन ।
 अधम=पापी, नीच, चडाल । अधरवोट=नीचे, अतरिक्ष । अधर वृद्ध=अल्प
 बुद्धि, ओठम बुद्धि । अनुव=बुगई, द्वैस, वैर । अनिट=अनवट, थल, अचल ।
 अनयास=सहज से, वे-मेहनत । अनल=आग । अनवद्य=निर्दोस, निरुपाय ।
 अनामय=निरपुण्य, आरोग । अनिल=वायु, हवा । अनीकसना=भूठ । अनीह=
 कर्मरहित, निचेष्ट । अनुचर=सेवक, दास । अनुज=छोटा भाई । अनुदिन=दिन-
 दिन, रोज-रोज । अनुराग=प्रीति, सनेह, मुवहत (मुहवत) । अनुसासन=सिक्षा,
 उद्देश । अनुसार=पागलायक ? । अनुहार=अनुरूप, मुआफिक । अनुप=उत्तिम,
 उपमारहित । अनेस=नकारा, बुरा । अन्यथा=भूठ, उलटा । अन्हाना=स्नान,
 गुलस (गुसल) । अपगति=दुर्गति, अपनी गति । अपडर=कुमारग, अपना डर ।
 अपवर्ग=मुक्ति, मोक्ष । अपवाद=निंदा, (च)ववाव, दोस । अपर=दूसरा, अन्य ।
 अपार=वेसुमार, अगम, अपलोक । अपयस=निंदा ।

अन्त -

सीमसूनी=सुप्रन, पवित्र वेडा । सुअर=रसोईदार । सुकठ=
 मुश्रीवदार । सुकेतु-सुता=नाडका । सुगाना=सुवया करना । सुखमा=सोभा ।
 सुठ=अनि । सुनासीर=इद्र । सुगम=सुविहित । सुभग=सुदर । सुसेन=
 चूल । सुर=देवता । सुरतरु=कलपवृक्ष । सुरमरि=गगाजी । सुरगुरु=वृहस्पति ।
 सुग्रीथि=न(म)हल मारग । सुकरखेट=वाराह क्षेत्र । सूतना=सोवना । सूरप=
 सूप । सूप-सासत्र=रसोई की विद्या । सूत्रपरकठ=पुतली नचाने वाला । मेतु=
 पुल । सेल=साग । सैन=इसाग, सनकारना । मोपान=न्सिनी, सिढी ।
 सोहर=मुदर । सोहागनि=अहिवाती । सोमित्रि=लक्ष्मण । सोरभ=गव,
 आज(अ) वृक्ष । सोह=सगय, कसम । स्यदन=रथ । सजोड=सामग्री । सदोह=
 समूह । सपुट=डव्य । सपेला=साँप का बच्चा, मदारी । सम्रति=मसार ।
 साँधा=लगावो । साँडदोधो=खानदोही । हतना=मार डालना । हते थे=रहे,
 मारे गये । हर=पहादेव । हरहाइ=हर हठ गो ? । हरास=लादगी । हरि=
 विष्णु, सूर्य वानर, सिंह । हरग्रा=हलका । हाट=बजार । हाव(ट)क=सोना ।

हिम=पाला । हिमकर=चन्द्र । हिमाउपला=वनोरी? । हिय=हृदय । हीन=नीच । हुतर्वाद=तरफ से । हुनना=हाल करना । हुनकना=उछलना । हुलमी=हरखी, तुलसीदासजी की माता । हू हू हू हू=सवद । हेतु=कारण । हेठ=नीचे । हेरना=देखना, ढोढना । हेला=अनाज(द)र । होन=होनी, होनहार । क्षत=घाव । क्षमा=पृथिवी । क्षार=खारा, खाक । क्षुद्र=छोटा, नीचा । क्षेम=कल्याण । क्षोप(भ)=मोह । सपूर्ण ।

१८५४

१२३५२

विनय-पत्रिका-सटीक

प्रारम्भ - ॥ श्री मद्रामचरणाय नम । श्री गणेशाय नम ।

अथ विनय-पत्रिका सटीक लिख्यते ।

कवित्त

तुलसी प्रमाद हिय हुलसी श्री राम कृपा,
 सोई भव सागर के पुल-सी ह्वै लसी है ।
 जाकी कविताई अनरथ तरु-टगा सम,
 गगा की-सी धार भक्तजन मन धसी है ॥
 परम धरम मारतड उर व्योम उछ्यौ,
 काम क्रोध लोभ मौह तम निसि नसी है ।
 वाही कै प्रकाश जम-गन मुह मसि लाई,
 अति सुख पाई जिय मेरै आइ वसी है ॥१॥

दोहा

नाम द्वै तुलसी को गहि रहो, जो चाहत विश्राम ।
 माहात्म्य बाहर भीतर सहज ही, होत अधिक अभिराम ॥१॥
 तुलसी माल धारन किए, बाहिर होत मुखेख ।
 तुलसी कृत के गहत ही, अचल भक्ति की रेख ॥२॥
 कलि जीव कल्याण हित, भापा ललित ललाम ।
 किये प्रवन्ध बनाय जेहि, तेहि कौ कह प्रनाम ॥३॥

टीका (प्राक्कथन)

प्रथम श्री मद्रामायण ग्रन्थ को सन्दर्भ सत्सग विलास नाम कियौ,
 तथा श्री गोस्वामी तुलसीदास जू के अनुग्रह-हुते उनके किये ग्रन्थन को अर्थ

यथा बुधि यत्किञ्चिद् वृष्णि परचौ । श्री विनय पत्रका श्री गोस्वामी को अन्त-ग्रन्थ है । सर्व सिद्धान्त को निरूपण, यह ग्रन्थ के विचारे ते प्रतीत होत है तथा यद्यपि ग्रन्थ अत्यन्त बठिन है, तथापि श्री गोस्वामी के कृपा को अवलव करि यथा मात कछु अर्थ लिखे है ।

मूल—

चौपई

गाइये गणपति जगवन्दन । शकर सुअन भवानी नन्दन ॥
सिद्धि सदन गजवदन विनायक । कृपा सिन्धु सुन्दर सब लायक ॥
मोदक प्रिय मुद मगल दाता । विद्या वारिधि बुधि विधाता ॥
मागन तुलसीदास कर जोरे । वसहि राम सिय मानस मोरे ॥१॥

टीका—‘गणपति’ शब्द तै ऐश्वरय सूचित किये, ‘जग वदन’ पद करि जगत पूज्यत्व जनाए, ‘सुअन ओ नन्दन’ दौनो पद पुत्र वाचक है, तथा अर्थ की पुनरुक्ति देवे को आशय ऐसो है, कि कोऊ को माता श्रेष्ठ होई है, कोऊ को पिता, इहा माता-पिता दोऊ की श्रेष्ठता जनायवे के निमत, पुनरुक्ति पद दिये । यदा, ‘शिवजी के पुत्र, भवानी के नन्दन’ नाम आनन्द करता यह हेतुते, कि श्री गणेशजी को गर्भ ते आविर्भाव नही है । ‘सर्व सिद्धिन्ह को गृह’ अर्थात् श्रीगणपति कृपा-वितरेक काहू को कोऊ सिद्धि की प्राप्ति नही होती । ‘गजवदन’ पद, ध्यान के अर्थ जानना । ‘विनायक’ नाम, विघनन्ह के स्वामी, जो कोऊ जीव व्यान पूजन वितरेक कार्य आरम्भ करे है, ताका विघन के हरता, एह भाव है । ‘कृपा के समुद्र’ अर्थात् शीघ्र दयालु होवे को सुभाव जाको, पूर्व ‘गजवदन’ पद दिये, ताते भयानक, कोऊ वृझे, यह निमित्त, सुन्दर कहे, ‘सब लाइक’ पद को एह भाव है कि केवल इह लोक को सुख ऐश्वर्यादि ही के दाता नही किन्तु योगीन को, परलोक सम्बन्धी मुख के भी दाता, एह भाव है । लङ्ङु है प्रिय जाको अर्थात् थोड़े पूजा मो प्रसन्न होवे को स्वभाव जाको । मुद नाम अन्तरंग आनन्द, मगलम् नाम बाह्य उत्सव विवाहादि के दाता । अत(अर्थात्) लेना थोरा, देना अनन्त । सुख विद्या के समुद्र, अर्थात् जो काहू को विद्या होइ है सो इन ही की कृपा कटाक्ष ते, ‘बुद्धि के विधाता’ नाम ब्रह्मा अर्थात् जाके अनुग्रह वितरेक बुद्धि को प्रकाश नही होत, ऐसे जो श्री गणपति तेहने तुलसीदास अति नम्र होकरि जाचे है, कि श्री जानकी रघुनाथ जी मेरे अन्त कर्ण मो वसे, याको यह भाव भयो कि भगवत् .. को भगवत् वितरेक मोक्ष पर्यन्त वासना नही होति, यह भाव है ॥१॥

अन्त -

मारुति मन रुचि भरत की लगि लगन कही है ।

कलिकाल हूँ नाथ नाम सौ प्रतीति प्रीति एक करन की निवही है ॥

सकल सभा सुनि लै उठी जानि रीति रही है ।

कृपा गरीब निवाज को देखि गरीब को साहस वा गही है ॥

बिहसि सम कह्यो सत्य है सुधि मैं हू नही है ।

मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की परी रघुनाथ सही है ॥२७६॥

टीका

गोमाईं ही यह प्रतिज्ञा रही है कि यावन स्त्रीद्वार मो-मो न करेगें नावन विनय न छोड़ूंगो, यह निश्चय को जानि, महावीर तू कृपा करि रघुनाथ के दरवार की बात गोसाईं ते कहत हैं, कि मारुति जो मैं, अरु श्री भरत जू कि रुचि लखि, नाम देखि, श्री लक्ष्मण जू ने कही है कि हे स्वामी, कलिकाल कु ऐसे काल सो, आपके नाम सौ प्रीति-प्रतीति एक कोऊ आप के दान की निवहि गई है । श्री लक्ष्मण जू के कहवे सो यह हेतु है कि जो अति निकट रहत हूँ, सो विशेष तै मुह लगा होत है, तहाँ श्री भरतादि सभा के अधिकारी है, अरु श्री लक्ष्मण जू महल अति एकान्त स्थान भी जुदा नही रहते, तेहते स्वामी सो ढीठ है । सब की रुचि अरु अपनी भी प्रसन्नता बूझि कहे, सकल, जो अयोध्या की सभा, सो श्री लक्ष्मण जू को वचन सुनि लै उठी, नाम बोलि उठी, कि जानी रीति रही है । नाम हम सब नी जानत हैं । अर्थात् श्री भरतादि मुख्य स्वामी के अंग, ताकी रुचि, अरु श्री लक्ष्मण जू महेश प्राणप्रिय, सिपारस करने वाले, तेहि बात की, को प्रमाण न करे, तेहि समीचीन सबके वचन को सुनि, तब श्री भरत जू बोले कि तुम सब सम्यक् नही बूझे वह दीन जीव क्या निवाहेगो, गरीबनिवाज जो स्वामी, ताकी कृपा ने, हम सबके देखते, तेहि गरीब को, साहस नाम हठते बाह पकड़ी हैं । अर्थात् स्वामी की कृपा तें, नाम-विषे वाकी निष्ठा कौ निवाही है । सब की सुनि, तब स्वामी हसि करि कह्यो कि यह सत्य है, मैं हू ने सुधि पाई है । तहा केहते सुधि पाई है, यह नही कह्यो । अरु हँसि बोले, याको यह अभिप्राय है कि पहले तो श्री जनक नन्दिनी महारानी को विनय करि गुसाईं प्रसन्न किये है । समय पाइकें बाहि महारानी ने सई की है, तेहि हेतु तै नाम नही कहे, यह सब समाचार सभा की अरु स्वामी की प्रसन्नता, श्री महावीर कहि करि, गोसाईं ते कहत है कि हे तुलसी की अनाथ, जो तू, ताकी रघुनाथ के दरवार मो सही परी, नाम गुलामन्द

मो लिख्यौ गयी, अथ आनन्द हो कनि माथ नावत नाम-प्रणाम करत रहू । विनय करवे को बहुत प्रयोजन नही बनो, नाम सब प्रकार तें तेरी बनी । यह रीति ते गोमाई कृतार्थ भये ॥२७॥

इती श्री तुलसीदास कृता विनय पत्रिका समाप्ता ।

दोहा

टाकाकार भोज बस अवतम कहि, जै प्रकाश महाराज ।
रजधानी डुमराव मै, है तिन सुभग समाज ॥१॥

तिनके लघु भाई सुहृद, शिवप्रकाश जिहि नाम ।
तिन ने यह टीका करी, सकल शास्त्र को धाम ॥२॥

रचनाकाल समत उगणीस पैतीस का, भाप्रव विधी प्रमानि ।
१६३५ तिथि नमी गुरु वार कूँ, ग्रन्थ सम्पूरण जानि ॥३॥

१८६३. १२०६७ (२) वेदान्त अद्वैत-अद्भुत नाटक

प्रारम्भ .- ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री अथ वेदात अद्वैता-अद्भुत नाटक, दरजी देवकृष्ण कृत लिख्यते ।

सोरठा

श्री गनपत को नाम, विघन विपन दाहक अनल ।
सब देवन सुख धाम, जगत नाप नासक प्रभो ॥१॥

दुहा

जा अग्यान सु भान ह्वै, यह मिथ्या ससार ।
नस्यो सु ताकै वोवर्ते, सोह सुध अपार ॥२॥

सुख सरूप निज आत्मा, चेतन स्वय प्रकास ।
जा वृत्ति मै भान ह्वै, जाग्रत कहिये जास ॥३॥

अन्य वृत्ति निद्रा मई, जामै जगत प्रतीत ।
तामै सुख दुख स्वप्न सो, यह अग्यान की रीत ॥४॥

ता अग्यान के नास हित, कहू वेदात विचार ।
सुनै वचन जागै पुरुष, निद्रा स्वप्न निवार ॥५॥

अन्त -

सता ओहोहागी ले कह्यो, प्रतीभाम को भान ।
 देवा अद्भुत ग्रथ मैं, परमाग्र्य पहिचान ॥१३१॥
 ताते अद्भुत नाम दिय, है अर्द्धतानद ।
 भाषा सुगम विचार किय, पढ़ै सुनै सुखकद ॥१३२॥
 छिनरु काली व्यापी मुप्न, ह्वै अनाद को भाव ।
 तेसे ही जग को जनम आतम माहि लग्वाव ॥१३३॥
 सो आत्म के ज्ञान हित, कह्यो अर्थ मछेप ।
 भूल चक मति को धर्म, लखो सुज्ञान अन्धेप ॥१३४॥
 चतुर भात के पुग्व जग, पावर विषई जान ।
 जज्ञासु अरु मुक्त पुन, मो ये कह्या बखान ॥१३५॥
 पावर भोगा शक्त मैं, विषई भोग-रु दान ।
 जज्ञासु समझ्यो चहे, मुक्त अकृत निधान ॥१३६॥
 जीव ब्रह्म ह्वै वसन सो, वाक्य सुधा गो जान ।
 लक्ष अर्थ कर एकसी, दरजी देव प्रमान ॥१३७॥
 पढ़ै पढावै एकचित, सुनै सुनावै ज्ञान ।
 ब्रह्म लौक सुख भोगवै, अतर मुक्ति निदान ॥१३८॥

कविनाम

सोरठा

हर्दराम महाराज, ता सिख मोतीरामजी ।
 सो गुर सग समाज, वाल बुद्ध सुव बुद्ध किय ॥१३९॥
 अखेपुरी अखैराज, दियो अखै वित ज्ञान सो ।
 जा मुख सग समाज, गह्यो सुदृढ सिद्धात मत ॥१४०॥
 गिखी चद पुन पेख, निधि धरा संवत सबै ।
 आसु मुकल पख पेख, बीज सोम पूरण जबै ॥१४१॥

र. काल

१८१७

पुष्पिका -

इति सकल सिद्धात-सार परमहंस मत दरजी देवकृष्ण कृत
 भाषा अर्द्धत-अद्भुत नाटक ग्रन्थ समाप्त । सवत् १८२६ ग वर्षे
 मिनि पोष सुद ७, मत्तमी अर्क वामरे । लिख्यत वोगा चदलान
 श्री गौधनधरे । श्रीरस्तु । शुभ भूयान् ।

२००८ १०६२४ (१) मंतदासजी की वाणी

प्रारम्भ - अथ स्वामीजी श्री सतदामजी की वाणी लिख्यते ।

अथ माखी गुरुदेव को अग लिख्यते । सत्त ।

अणभै पद परकास को, दायक मत गुर राम ।

अनत कोट जिन नाहि की, ताहि कर परनाम ॥१॥

अग [गुरुदेव को अग]

मत गुर का ऐको सबद मन कोई लेवै मान ।

तो महज होत है मतदाम, मुसकल सू आमान ॥१॥

मतगुर कीन्ही मतदाम, मुसकल सू आमान ।

गम गम की होइ रही रोम रोम रज ध्यान ॥२॥

सतदाम हमकू कीण सतगुर बड ईसान ।

देह छूटा छूटे नहीं, पारब्रह्म सू ध्यान ॥३॥

सतदास तिहू लोक मैं, गह सिरौमणि सत ।

पूरव जनम का वीछन्था, भो ही मिलाया कत ॥४॥

मतगुर मेल मिलाईया, मुगत सबद का सग ।

अब छूटत नाही मतदाम, लगा करागी रग ॥५॥

सतगुर बड परमास्थी, अंसी देह वणाय ।

वगीया मुलक छुडाय कर, अघर मुलक ले जाइ ॥६॥

चोगसी वगीया मुलक, जामै सुर नर गहे समाइ ।

अघर मुलक है गम नाम, जाहा जन गहूच्या जाइ ॥७॥

तीन लोक सू अलख मुख, लावत नाही कोइ ।

मतगुर लाधा मतदाम, मुख सू मिलीया गोइ ॥८॥*

अन्त -

अथ आरती लिख्यते

अंसी आरती करौ मेरे मना, राम न विमरु एक छिना ॥टेक॥

देही देवल मुख दरवाजा, वणीया अगम ब्रुकटी बाजा ॥१॥

मतगुरजी की मैं बलि जाई, निस दिन जिम्हा अखड ल्या लाई ॥२॥

* 'अगों' के बाद 'ब्रह्म-ध्यान', 'भरमतोड' जोषक से दो ग्रन्थ और लिखे गये हैं । बाद में आमा गग के तीन पद हैं, अन्त में आरती है ।

दुनीए ध्यान हिन्दे भया वामा, प्रम-मुख जाहा होइ परकासा ॥३॥
 तृतीये ध्यान नाभि मधि जाही, सुनमुखि भया नेवग जाहा माई ॥४॥
 अब जाड पहुता चौथी धामा, सब साधन वा मरीया कामा ॥५॥
 अनहद नाद भालर भुणकारा, प्रम-जोती जाहा होइ उजीयारा ॥६॥
 कोई कोई मन्त जुगति एह जाणी, जन मतदास मुकति भए प्राणी ॥७॥

पृष्णिका - इति आरती संपूर्ण । अथ वाणी का मध्य की व्योरो ।
 स्तुति की साखी ५०, साखी १३७८, अग ५५, रेखता ४, ग्रन्थ २,
 पद ३, आरती १, मरव-सवद १३८८ संपूर्ण ।

अथ स्वामीजी श्री सतदासजी धाम-प्रापति हुवा जी ममें को कु डल्यो

१८०६ अठारा सै षट ब्रप मै, सत भए निरकार ।
 बुदि फागुण तिथ सपतमी, वार सनीसर वार ॥
 वार सनीसर वार डारि, कै अन्यत मरीग ।
 प्रथ मही मिलि रहे जसै घट धरीयो नीरा ॥
 पग परै पद लीन था, भिनि दिष्ट रूप आकार ।
 अठारा सै षट ब्रप मै, सन्त भए निरकार ॥१॥

दुहा

सकलन-कर्ता दया सत माराराज करि, मम उरि धरचौ हुलास ।
 सतगुर अग्या पाईयी, अग जोडि प्रकास ॥१॥
नवलराम वदन करै, सत चरन सिर नाइ ।
 भूलि चूकि सब वकसीयी, मै तुम्हरी सरणाइ ॥२॥
 स स्थान साहिपुरै सतसग मै, गुर अग्या उरि धारि ।
 नवलराम अग वाधीया, वाणी सोधि विचारि ॥३॥
 स काल अठारा सै ब्रप तीस कै, बैसाख सुकल पख होइ ।
 १८३० तिथ तेरमि बुधवार कू, अग भया संपूरण सोय ॥४॥

इति स्वामीजी श्री सतदासजी की वाणी अणभै संपूरण ।

स्वामीजी श्री कृपारामजी धाम प्रापति हुआ जी समै कौ किवत

१८३२ अठारा सै वतीस ब्रप भादू सुदि होय ।
 छठ सुक्र दिन पहर डोढ उदोत जसोई ॥

करत कूच क्रियाल दरम सब ही क् दीन्है ।
 झूठी झूगी डारि परम पद वास जु कीन्हा ॥
 सरणै सन्न दयाल कै नगर दातडै धाम ।
 साध सिर्ष सबग मिलै कहत राम ही राम ॥१॥

राम । राम । राम । राम । राम । राम । राम ।

२०३५ १२३६४ सत्यार्थ भास्कर वेद

प्रारम्भ - ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सत्यार्थ भास्कर वेद ॥

सत्यासी दयानन्द सरस्वतीजी के वेद से धी-मती का खडन ।

सत्यासी दयानन्द सरस्वती जी के बनाए सत्यार्थप्रकाशादि ग्रंथ पढ़-
 कर प्रसन्न होकर महाराज की वार-वार प्रमसा करता है । इन ग्रंथों से जाना
 जाता है कि महाराज की द्रष्टि स्वदेशोन्नति पर विशेष थी, और सारे धर्म कर्म
 भी आपके यही तक थे । भूल, देशोपकार ऐसा उद्योग करना क्या साधारण
 मनुष्य का काम है । देखीए, स्वामीजी महाराज का लेख, पूर्ण प्रकाश करता है ।
 किम प्रकार आर्य देश वासी पुरुष देश वासियों की समता करें और आनन्द भोगें ।
 वास्तव में इस वैभव के प्राप्त कराने वाले की अल्पायु मृत्यु हीना उक्त श्रेयाभि-
 लाखियों की प्राग्बुद्ध का खोट है, और अत्यन्त सूचनीय हैं । इस वान को सभी
 विद्वान जानते हैं कि कारण ही से कार्य होता है । बिना कारण के कभी कोई
 कार्य नहीं होता । जैसा कारणभावात्कार्यभाव वै० अ० ४, आ० १, सू० ३ ।
 कारण के होने से कार्य होता है । इससे जाना जाता है कि मन्वादि महर्षियों से
 आरोपित सत्य सनातन वैदिक धर्म के भेदों की अपनी धागा धीमी करने में
 सत्यासी दयानन्द सरस्वतीजी का कारण निम्नलिखित कारणों में भी एक कोई
 निम्न होगा ।

अन्त -

प्रति ग्रह्य तु मे आस गात्रस्त्रैलोक्यमातर ।

इससे अनन्तर द्वार पर आए हुवे अतिथियों को चादर सत्कार से भोजन
 करावै, यह आर्य ग्रहस्थियों का सत्य सनातन धर्म है । वैदिक नित्य कर्म मंत्रों
 में लिखे हैं सो अब भी सब धार्मिकों को यथावक्त अवश्य ही नित्य-प्रति करि के
 पूर्ण कल्याण को होना चाहिये ।

पुष्पिका - इति श्री सत्यार्थ भास्कर वेद समाप्त, उवाच । इदं लिखितं
वैष्णव गोवर्द्धनदास आयुर्वेदी निरजनी, नागोर मध्ये, कार्तिक
कृष्णा दसम्या दिने, सवत् १९८७ । स्वयं पठनार्थम् इदं पुस्तकम् ।

२०३६ १०७०२ (१) सदेवच्छ सावर्लिगा री कथा
(सचित्र)

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ अथ सदेवच्छ सावर्लिगा री कथा लिख्यते ।
प्रथम पुरव भव कहे छे ।

हूहा

नाय सुतारा नीर वहण, सुगणा करि सलाम ।

सावर्लिगा सु दर सरस, तेण भवर इण नाम ॥१॥

इलीक

लिखित्वा चित्रगुप्तेन ललाटेक्षर-मालिका ।

न सामार्जियतु शक्या पडितान्निदेशेऽपि ॥१॥

[न सम्मार्जयितु शक्या पडितैस्त्रिदशैरपि]

दुहो

लिखन लेख मु दर लिख्या, सावर्लिगा सु प्रसात ।

व्याह तणो जे अवर वार, वणि अचभव वात ॥२॥

वारता

पहिले भव, सुगण मातमा रो नाम, सुजाणसिंह पचोली सिकदार
हुतो । सदेवच्छ रो नाम, मनोहर सुत्रधारवी हुतो । सावर्लिगा रो नाम, रुपमती
अस्त्री हुती, मनोहर सुत्रधारवी ने परणार्ड हुती । एकदा प्रस्तावे मनोहर सुत्रवी
परदेश हालीयो । घणा दिवस हुवा । तीवारे रुपमती-ये मुपन लाधी, तीवारे
जाण्यो, मारो भर्त्तार कूसले नही, हु तो नवी घर करिस्यु । ति-वरी माधव इसे
नाम, उणहीज नगर मे सुत्रधारवी रहे छे । तिण सु (त्र) धारे चारी(चँवरी) सजाई
कीवी । तीण समे सुत्रधारवी मनोहर नामे परदेश थी आयो । रुपमती मनोहर रा
घर-मा-मु तयार होय ने जावे छे । ती-वारे मनोहर रुपमती नु देख ने, माधव ने
कह्यो, आ तो स्त्री मारी छे, तु का लेजावे छे । ड्यू करता माहो-माहे कलेस
उपनो । भगडो करता वेहु जणा रुपमती स्त्री सहित जहा मुजाणसिंह हदफर
हुतो, तहा गया ने कह्यो इण वात रो न्याव करो । ती वारे मुजाणसिंह वोल्हो,
ए तो रुपमती मनोहर री छे । माधव ने कह्यो तु वड-वेडो ले ने घरे जा । इसो

न्याव कीयो ने वले कह्यो जे हमती ने मनोहर गमन करसी तो बीजे भव मनोहर
रो नाम सदेवछ कु वर होमी, ने हमती रो नाम शार्वलिगा कुवरी हुसी । ऐ वेहु
सुख भोगवसी । तीवारे माधव बडवेलो ले ने घरे गयो । इसो न्याव कीयो ।
ती वारे माधव ने वेराग उनो । तापस हुवो । कासी करवत ले ने कह्यो, हमती
मारी स्त्री हुजो । इसो नाम ले ने मरण पाम्यो । पूरव भव रो लेख इण भव
मीलसी ।

अन्त -

वात

सदेवछ अमरावती नगरी आयने डैरा कीया । पछे माहे जाय राजाजी
रे पगे लागा । राजाजी बहुत खुसी हुवा । शार्वलिगा, राजा री कुवरी ने सासु रे
पगे लागी । पछे तीनु ही रांणीया सु सोख भोगवता चार वेटा हुवा । तीनु ही
स्त्रीया मु सुख भोगवे छे । इम अनेक प्रस्तावि सदेवछ ने वेराग उपनो । ससार
असार जाण पुत्र ने राज्य दे ने आप अतीत व्रत आदरचो । पछे भली गते गयो ।
शार्वलिगा पीण शील पाल ने भली गत गई ।

दुहा

सारद प्रसादि करी, शील तणे अवीकार ।
भरणे साभले तेह नर सुख पामे ससार ॥१॥
वे-वे घक जे वाचे सुणे, वछित पुजे हाम ।
जिम शार्वलिगा सुख लह्यो, सदेवछ सुख ठाम ॥
मीठा मन का भावता, कीया सग्स बखाण ।
अण-जाण्या मुख हसे, रीजे चतुर सुजाण ॥२॥
रचनाकाल सवत १६ छाल्छे, विजया दशमी रविवार ।
१६६६ चतुर चाह चोपी रची, मुनि केसव सु वोचार ॥४॥

इति श्री सदेवछ री वात सपूर्ण ।

सचित्र पत्रो का विवरण —

क्रमाङ्क	पत्राङ्क	क्रमाङ्क	पत्राङ्क	क्रमाङ्क	पत्राङ्क
१	१ बी	५	४ ए	९	६ बी
२	२ बी	६	४ बी	१०	७ बी
३	३ ए	७	५ बी	११	८ ए
४	३ बी	८	६ ए	१२	८ बी

क्रमाङ्क	पत्राङ्क	क्रमाङ्क	पत्राङ्क	क्रमाङ्क	पत्राङ्क
१३	६ ए	१६	१३ बी	२५	२३ ए
१४	६ बी	२०	१७ बी	२६	२४ ए
१५	१० ए	२१	१८ बी	२७	२५ ए
१६	१० बी	२२	२० ए	२८	२६ बी
१७	१२ ए	२३	२१ ए	२९	२७ बी
१८	१२ बी	२४	२२ ए	३०	२८ बी

२२२४. १०८४२ (२) स्फुट-कवित्त-संग्रह
(राठोडा रा)

छाडो राव जालण तणो, जालण कान सुतन ।

अै घर अतरी भोगवै, वेखा न पुगं मन ॥१॥

सेना पग गज वरदायीसेन सेतराम सीहा,

आसथान राव घुहड सुजान है ।

छातराय पाल कन जालण नरेस छाडा,

वीर तीडा राव सलख वीरम वखान है ॥

चुडा रीणमा जोध मुजा वाघ गग चावा,

मालदे उदैसी सुरमा जीमा अमान है ।

जमवत अजीत वखतेस पाट वीजैसीग,

जोधपुर राजें भुप जाहर जीहान है ॥२॥

२२२५. १०८४२ (१३) स्फुट-कवित्त-संग्रह

(छप्पय)

अखौ लखौ अडवील, जगड गोयद वैरागर ।

मडलो काधल मयक, मक जक्त न भाखर सायर ॥

परवत डूगर पतो, वाग उदौ हाफौ नर ।

रूपौ चापौ जोध, साड वलु औ राजैसर ॥

चौबीस अभग चूडाहरा, खाग त्याग ग्रहीया खरा ।

राठोड नाम राखण रिधू, रेण रूप रिडमल रा ॥१॥

रिडमल राया राव, सती हरचद मत अगल ।

गवत गुण रिणवीर, भीम भाराध भुजाँ वल ॥

कानी अरडक माल, पहम पुजौ अरजण ।
सह समल वल विजौ, लाख दल लू भी भजण ॥
सिवराम राम गोपे घरा, वाचीजै जस च्यार वला ।
चवदै राव चूडै तणा, अक अक सू आगला ॥२॥

दुहा

मलीनाथ वीरम मुदै, जैतमाल सोभत ।
सलखै रा च्यार सीरे, पथमी सीरै प्रभत ॥१॥
सलखो राव तीडा तणो, दुजो कानड देव ।
दोनु तीडै रा दुफल, अ-समर खाग अजेय ॥२॥
तीडो खोखर सीहमल, वानर हसतो वेख ।
छत्रधारी छाडा तणा, पान्हु बवव पेख ॥३॥

२२२६. १०८४२ (१५) स्फुट-कवित्त-संग्रह
(जीवराज सोलकी लारे सती हुई तिरारो) *

प्रारम्भ .- अथ कवत, जीवराज मोलीन्वी(सोलकी)रं लारं सती हुयी जिण रा ।

छप्पय

सुद वारस भादवी, देह छाडी राव चाळक ।
उण समीयै आयनै, येक बोली ग्रह पाळक ॥
वीद्री जात कुल बीना, वात कुलवत उचारी ।
सुखरी सी रणरुत्रीया, बैठ रही सोक वीचारी ॥
पल घडी पोहर छेती पडे, सोच घणा दीन खाळसी ।
घण दोय धीरे जीण रो घणी, होंय अकेलो हालसी ॥१॥

घरीया पद पत धीया, खरै मन मते सु साली ।
साथे चलवा साम, वात हाथा तीण भानी ॥

* रूपनगर के राजा जीवराज सोलकी के साथ राणी एलन के सती होने का प्रथुस्ति-परक वर्णन है ।

दासी नै दोय जाव, दीयान घगी मत धारे ।
 जनम पत्री सुण जाव, ग्ही आगम पग्वारे ॥
 कहा जाण वेंण सैणी वही, खरी मती ह्वै खवर कै ।
 येकला कदै न गया अगै, नैकु त जामी अवरकै ॥२॥

येकला जाय अतीत, जती काय येकल जासी ।
 घणवी वनी रो घणी, गरढ जासी ग्रह वासी ॥
 त्रीय वीण जासी तुरक, नकु कायी रहसी नाजर ।
 लुटण वीधना लेख, वाग्निह जाय वीनावर ॥
 पोसाख हीण मोसा खीमण, जीतव ध्रम वे काजवी ।
 येकलो नोज जावै अली, रुपनगर रो राजवी ॥३॥

जीण नीजरां देखीया, पाय नुपर भूमकता ।
 बाजुवध री लुव, सहत चुरै चमकता ॥
 रग सुरगा कपड, हाथ महदी रग-रता ।
 चख अजन कोरीया, मजन केसर का गता ॥
 घण सुख वीलास चालक घरे, सोच अभावा भावसी ।
 जीण नीजर साग राभा पणे, दयीव नोज देखावसी ॥४॥

मजन अजन करै, करै पोसाख सुरगी ।
 मेळा छेहा करै, दुनी मन करै दुरंगी ॥
 भुखण धारण करै, करै त्यागन घरे आगण ।
 करै अतर भर कपड अमरपुर करै उमगण ॥
 धका छान लारै चलण, आवपुरी जीम आबली ।
 जती रीत हुयी परणी जदी, अतरी हुई उतावली ॥५॥

हथलेवा रै हाथ, भळै नारैल हसती ।
 सुलज सदा मन समी, बलम घर तणी वसती ॥
 हथलेवा रै हाथ, कवो भोजन ले छोर्डे ।
 काया होमण काज, कथ मीलवा मन कोडे ॥
जीवराज तणी कामण ज्युही, सरग उमाहो साथनै ।
 वर भला दीयो चवरी (वि)चै, हथलेवो जीण हाथनै ॥६॥

तोरण आया तेम, पाळ सरवर दीस जावन ।
 वनडा व्याव तणा हा, लवण कु ण आज सुणावत ॥
 त्रय कुण चढ लीलेह, कवण सीणगार करती ।
 कुण भलती नारेल, घणी सीर हरख धरती ॥
 प(र)णी न हुनी तोनै प्रीया, जीयो अकेलो जावतो ।
 तो वीगर काठ चढ्या तणा, गीत कवण गवावतो ॥७॥

हीडा जाणो सहज, सावण तीजा सीवरती ।
 वागा जाणो सहल, छोल उपजै त्रय छती ॥
 सेक्का जाणो सहल, महल प्रीतम रग माणै ।
 पीहर जाणो सहल, यवक भुगम कर आणै ॥
 साम सु' रस जाणो महल, माण धरे उर मझरी ।
 भगल भल कठण धरणो मतो, राणी धीन जीवराज री ॥८॥

ब्रह्मा आवण वीस्न, यीस मन सहती उमाजी ।
 कलु रजु पण कीयी, वीसव अत कीयो वीरजी ॥
 कीयो प्रजा हकार, सैण मन हुवा उदासी ।
 राणावत सत कीयो, वलम प्रीतम सुख वासी ॥
 धर घणी मीलण कीय मागध, कीया अगन भल सपडा ।
 जीवराज मरण कीधा जदी, कीरत भगवा कपडा ॥९॥

क्रीत सुणो तुरकान, सुणो कीरती सता रै ।
 कव व्रत जाणी क्रीत, पाण पोतरै पता ॥
 चोवीस साख चवाण, जाण जादम जाडेचा ।
 कैलपुरा कुरमा, खाग जाणी खेडेचा ॥
 पुजती क्रीत जाणी प्रथी, चेतन वीध-वीध चुपसु ।
 रस जीयो जीतै कीरत रही, सारद जोसा सरूप सु ॥१०॥

जग मै जीया जीसा, रया थोडा छत्र वारी ।
 सा-धरम सु-दतार, तीख भारथ तरवारी ॥
 अभ मन जेती याव, सु-जसवी लीध ससारा ।
 तोसु मीलीया तीका, वीया न होय वीसारा ॥

वीर वर मृतन चालक वीमल, नह नरवाण नोखमीयो ।

अैराक पोट हीण अमल, जीवराज जोखमीयो ॥११॥*

२२२७ १०८४२ (११) स्फुट-कवित्त-सग्रह

(सरणै राखिया रा)

कवत

सरण रहो बुधसीग, पाट बूदी वैसेरे ।

सरण रहो गोपाल, धणो गमपुर धारे ॥

सरण रहो जैसाह, आय राजा आवेरो ।

रावल सरणै रहो, अखौ पीण जेसलमेरो ॥

सरणै रहीया सैद, कैद असपत नै कीधो ।

जट चुडामीण जीसा, आय जद सरणो लीधो ॥

हेक हेक वार हीदु तुरक, सरण रहता जग साखीयो ।

म्हाराज अजण मडोवरे, कुण कुण सरण न राखीयो ॥१॥

२२२८. १०६५५ (४) स्फुट-कवित्त-सग्रह

(महाराजा मानसिंहजी के प्रशस्तिपरक)

कविन

कोप्यो आन सुरपत परलै समाज साभ,

होतो नाह ब्रिजेस गिर हात कोन धरतौ ।

करन जो न होतो नीत कचन को दान देत,

विक्रम जो न होतो पर पीर कोन हरतौ ॥

आपस की फूट परी मारु सभा के बीच,

नाथ जो न होतो तौ सहाय कोन करतौ ।

तोसो जो न होतो मान भुप हीदवान भान,

एते गुन वान आन काको जस करतौ ॥१॥

० इसके आगे आढा पाहुडखान कृत रीया ठाकुर शेरसिंहजी परक गीत है । कृपया जितानु पाठक सूचीपत्र के क्रमांक १६७४ पर शेरसिंहजी के स्थान पर शेरसिंहजी पढने का अनुग्रह करें । इस गुटके मे और भी अनेक ऐतिहासिक गीत एव स्फुट छव हैं ।

डिगेंगे गयः दल मीलेंगे गीरद,
खलभलेंगे समद बल चढ हैं जीहान के ।

दुर है दीनेस घर घर है फुनेस फेन,
गीर हे उसेस सुर सहत वीवान के ॥

कवि- केहत सीवनाथ नीबतो रहत,

नाम तरज गज मानीये अरज-मान नद गुमान के ।

घुजेंगी घराह घुख जेहेगी राह जीत,
पेंनीये मनाह पतसाह हिदवान के ॥२॥

चाकर चकोते ह्वं चढे मद-मते जगी,
आए कलकते मेती घर केता पानकी ।

हानाहल ज्वाला छल भाला की तयार जानी,
जानी अक भाला बीच ज्वाला अजान की ॥

नाथ के प्रताप सदा जाप आप ही को अक,
गई ताप रही टेक कीरत जवान की ।

मयुख तेज भान की उदोत हे भी पान की,
सु-मान भूप राखी तेंनें मुख हीदवान की ॥३॥

आइ हे लीखावट ईउ अकवर लाहोर बीच,
सब ही मीलाय सला मवे राजस्थान की ।

चाचत ही बोल उठे कहींयो हमारी असे,
राठवड कलम हुते ये मुख जवान की ॥

सीख रणजीत कहे राज राव रानन मे,
मान भूप राखी तेनें मुख हिदवान की ॥४॥

तिरत है गहर निर फीरत हे उजारन्मे,
वरत पर निरत करत नट वैं नटानी हे ।

अवखे अरीले बाज हीडत हीडोरे माझ,
चढते भेभीत धान चढती जवानी हे ॥

सवलन सो भेरभाव डाव वीन बाहे घाव,
गहत सरप ताप सो तो कवहुक ठगानी हैं ।

राज नसा खास खेल करत अमेल मेल,

ऐती ठोर गाफल रहे मोत की नीसानी हे ॥५॥*

गीत पहला

प्रारम्भ - चमकै वीजल पळापळ चहु दिस,
नीस सारी जीवन घन सोर ।
चात्रक सोर पीव पीव चहकत,
गहकत मोर घटा घन घोर ॥१॥

अन्त - दीना वचन साच लोह दाखा,
लाखा वाता वसत लहा ।
हरगज न्ह चुका होली पर,
कुस आखर वदनाम कहा ॥६॥

ईतरा वचन साच ह्वै अबके,
आगा सु करजो इतबार ।
जसरा वचन हुवै सो हो भुठा,
नेह-ना वचन मान जो नार ॥१०॥

गीत दूसरा

प्रारम्भ - उठे सेहर घटा घण उमडी,
सरसी लुव रही वरसात ।
दामण दीस च्याह हद चमकै,
दादर मोर दहु दुख दात ॥१॥

घन गरजै लरजै अत गोरी,
पपीयो पीव पीव वाण पढै ।
ती-जातीया पीया वीन तरसै,
चित उतरै चीत फेर चढै ॥२॥

* उपर्युक्त पाच छन्दो के बाद कुछ शृङ्गारिक गीत लिपिबद्ध किये गये हैं । गीतो की बानगी स्वरूप उनके आद्यन्त भी आगे दिए जा रहे हैं ।

अन्त :- दादा पर लुण पपीया देखै,
कोयल केछै नाह कठै ।
अरजी मोय मानसी अवकै,
के मुइज सुणसी महल उठै ॥१२॥

गीत पांचवां

प्रारम्भ :- भर मोत्या थाल अर कळस वदासा,
गासा वोहो लग गीत घणा ।
उछव अनेक ओपसी आया,
तीण मद वेरी छोल तणा ॥१॥

कमरा वाच चढे केकाणा,
मन सोनो कीघो मजवूत ।
तुररा गरट कीलग्या तीखी,
सीर पेचा फावे हद सूत ॥२॥

अन्त - रग री रात सोहनीम वीती,
धण मद वौहद धापा ।
उमग उछाह दीन उगा ओपे,
उगा अमला आया ॥६॥

धण यु वचन कह छै घुररा,
आछी ओलग आणी ।
कागद च्यार दीया कुरसी बद,
तीखी पीव हद ताणी ॥१०॥

नाहजी वचन भली नीरवायी,
अव ओलभीया आखुं ।
रग री रात कहण जु नाही,
भल - हल उगा भाखु ॥११॥

पुष्पिका - सवत् १६०५ रा मृ० वद १ गुरवार दीन । (द०) कु नगराज रा ।

१३५८. ७८६० अलकार कलानिधि

प्रारम्भ - श्री गणेशाय नम । श्री राधावल्लभो जयति ।
अथ अलकार कलानिधि भट्ट श्रीकृष्ण कृत लिख्यते ।

सवैया

कु डल मडि कपोल उमड भुसड लियै अलि मडल मडन ।
मडत तडव सु ड प्रचडहि तु ड महा मद कु ड उमडन ॥
कु डली कौ उपवीत अखड सुधाकर खड धरै तम खडन ।
ध्यावौ वितड अखडल घोर मडिर रहे अघ भु ड विहडन ॥

कविन

वाजत सदा ने विप्र गाजत सवद घोख,
साजत सकल जन मगल विसाल कौ ।
गावत गुनी जे उमगावत उछाह त्यों,
जगावत महल भाइ भनक रसाल कौ ॥
आरती उतारियत हीरा मोती वारियत,
दलि मलि डारियत दारिद के जाल कौ ।
राजा रामचद राज पाट अभिपेक,
सिंघासन बैठे सुभ देहु कवि लाल कौ ॥२॥
वानी के रसिक गनपति के प्रसन्न भयें,
मूक हू कै मुख मुलकति सुख भारती ।
फुरत तुरत छद ग्यान मय भान रुचि,
मूढता अपार अधकार तें उधारती ॥
सरसति सुधाकर सुधा सिंधु हू तें,
वर वरन धरनि खल दूखन विदारती ।
मान कवि राज कै समाज सिर ताज,
ताहि कीरत कलानि कै उतारियत आरती ॥३॥
सकल कलानि कै निधान जयसिंह भूप,
धरै प्रभूताई मघवान मद छीनो है ।
कविता के रस पर रीझन रसज वर,
मव कवि लोकनि प्रमोदि जिन दीनो है ॥

तिन कवि लाल कलानिधि मौ सनेह करि,

क्रियो जव कछुक हुकम रस भीनो है ।

तव तिन भाषा मैं असेष काविगीति आन,

अलकार कलानिधि नाम ग्रन्थ कीनो है ॥४॥

दुहा

सुभ वसत की पचमी, करत अनेक विहार ।

हुकम पाय नृप को तहा, भयो अथ अवतार ॥५॥

ग्रन्त -

दुहा

अलकार के दोष एतै, सब दिए दिखाय ।

मम्मट मति अनुसार सो, भाषा मे निचाय ॥३४॥

यह विधि यह सब काव्य को, लच्छन कह्यो बनाय ।

सब्द अरथ रस गुनि, ध्वनि रु अलकार दरसाय ॥३५॥

कवित्त आसीर्वाद को

मेघ वृष सूरज प्रकाश चद्र माल सुर,

मिथुन करक हर मंगल बुधि-नि घर ।

लोक गुर गावैं कवि कठ सनि नील बाण,

सिंघ कटि सैल कन्या अग हेम तुला घर ॥

राहु माली मेटै भव वृश्चिक पिनाक धनु,

जारत मकर केतु वरन को कुभ कर ।

नैन मीन सुधा सिंधु देहु सुभ नद लाल,

सभू तूमैं नवग्रह बारहउ रास खर ॥३७॥

पुष्पिका :-

इती श्रीमन्महाराजाधिराज श्री रामचन्द्रदेव विप्र वृत्त

श्री भट्ट कवि-कलानिधि कृतौ अलकार कलानिधौ तृयोदसी
कला ॥१३॥ शुभ भवतु । श्री ।

आसीर्वादात्मक

जीतत चपक कोयल मालहि, सुन्दर कचन बेल तमालहि ।

हेम जरी मनि नील लरी, कहि बीजुरी जोति जलधर जालहि ।

पूरन प्रेम स्वभाव रहे रचि है, निधि माधुरी रूप रसालहि ।

नायका राधिक नायक कान्ह, करो सुभ सप कलानिधि लालहि ॥१॥

दुहा

पहले रस सिंगार जो, कह्यो सकल रस राज ।
तिहि आलवन नायका, अरु नायक ब्रजराज ॥२॥

नायक लखन कु डलिया
रागी धनक कुलीन वर, त्यागी जीवन वत ।
अरु सकृति मुन्दर चतुर, सुवर तेज निध कत ॥२॥*

प्रारम्भ -

अथ प्रवधाध्याय लिख्यते ।

(दोहा)

गीत कहै द्वै भात के, प्रथम निववनि जानि ।
दूजै कहि अनिवध को, मन में मोद न मान ॥१॥
वागेपक कवि न कह्यो, लक्षण ग्रथ विचार ।
वध गीत तासो कहैं, सु कवि सुमति निरधार ॥२॥
आ न अनिवध हैं, पहिलै कह्यो सुनाय ।
कहि प्रवध के अग को, घात सु वेद सुभाय ॥३॥
प्रथम भेद उदग्राह है, मैलापक पुनि होय ।
ध्रुव तीजो आभोग है, चोथो जानत लोय ॥४॥
मध्य जु ध्रुव आभोग को, अतर कहत विचार ।
सवै गुनी जन के मतै, यह जानो निरधार ॥५॥
सालग सू उ स्वरूप है अतर मिलै जु आय ।
ओर ठोर रहै न कहु, मैं यह कह्यो बनाय ॥६॥
तीन भात सु प्रवध है, कहन गुनी जन लोय ।
चतुर्वति त्रिधातु अरु, द्वि धातु सु बहु सो होय ॥७॥
होत नाहि कहु दोय में, आलापक आभोग ।
भेद दोय में है कहै, च्यार धातु सजोग ॥८॥

* गाये लिपिना बनास कर दिया गया है ।

अलकाङ्ग-कलानिधि से पूर्व प्रारम्भ मे गीत प्रवधाध्याय नामक कृति के आठ पत्र हैं ।
उ ॐ कृति का आद्यन्त भी यहा दिया जा रहा है ।

अन्त -

दोहा

गज लीला वहुरचो कही, चक्रताल पुन होय ।
वहै कोत्र पद कहत हैं, गस ताल मै सोय ॥७३॥
कहैं वहुर घुनि क्रुदनी, आर्या गाथा नाम ।
द्रुपद सकल हस कहि, पुन तोटक र र धाम ॥७८॥
षट रु वृत्य कहि मातृका, राग केदवक मीत ।
कहन पंच ताले मुग्हि, ताल समुद पुन गीत ॥७९॥
आलि नाम लै मननि को, कहै सकल ।

२३५६ १०६८५ अलकार रत्नाकर

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ अलकार रत्नाकर लिख्यते ॥

दोहा

नव तसु ए सुर मुकट महि, प्रतिबिंबत अलि माल ।
किये रत्न सब नील मनि, सो गनेस रछपाल ॥१॥

अथ देशाधिप वर्णन

दोहा

उदियापुर सुर पुर मनो, सुग्पत श्री जगतेम ।
जिनका छाया छत्र वसि, कीनो ग्रन्थ असेस ॥२॥

कवित्त

सकल महिपन कै राजै सिरताज राज,
पर उपगारी तारी भारी दुख दद के ।
देव जगतेस धीर गुस्ता गभीर धरै,
भजन विपद्य पछ दछ फोज फद कै ॥
प्रभुता प्रकास अति रूप को निवास सोहै,
प्रगट प्रताप ताप मेटे जन वृन्द के ।
मेघ से समुदर से पारस पुरदर सै,
रति पत सुन्दर समान सूर चद के ॥३॥

दोहा

जदपि नार सुन्दर सुघर, दिपति न भूखन हीन ।
 त्यौ न अलकृति नुनु लसै, कविता सरस प्रवीन ॥३॥
 कीनो रसमय रसक कवि, सरस बढाय विवेक ।
 छाया लहि गिरवोन की, भापा ग्रन्थ अनेक ॥४॥
 तदपि अलकृत ग्रन्थ को, काहू कवि नहि कीन ।
 भापा भूपन है जउ, कहूँ-डक लछन हीन ॥५॥
 भापा भूपन है जउ, सो जसवत नृप कीन ।
 वसीधर अव करतु है, अछौ ग्रन्थ नवीन ॥६॥
 यातै ताहि सुधारि कै, देखि कुवलियानद ।
 अलकार रत्नाकर सु, किय कवि आनद कद ॥७॥
 कहू कहू पलि धरै, उदाहरन सरसाइ ।
 कहू नये करिके धरे, लछन लछ जिनाई ॥८॥
 अरथ कुवलियानद को, वाध्यो दलपति राय ।
 वसीधर कवि पै लै धरे, कहू कवित वनवाय ॥९॥
 मेदपाट श्रीमाल कुल, विप्र महाजन काय ।
 वासी ऐमदावाद के, वसी दलपतिराय ॥१०॥
 कवि गुलावराय हि यहै, सोध्यो सुबुधी अपार ।
वामुदेव पडित पढ्यौ, लहि अति मति विसतार ॥११॥
 कर कविन सो वीनती, कविता जदपि अनूप ।
 जऊ त्रिविक्रम हरि तउ, धरयो सुठावन रूप ॥१२॥
 याहि सुधारहु बुधि बल, दोस हमै जिन देहु ।
 धरै सुकवि जन कै कवित, तिनही को गुन लेहु ॥१३॥
 कहू सिंगार कहू हास रस, कहू वीर कहू भीत ।
 कहू साति करुना कहू, वीर सु अदभुत नीत ॥१४॥
 इन्है आद(रे) रस सकल, वरनै कविता अग ।
 कहू कहू क्रम विनु धरै, सो सो पाय प्रसग ॥१५॥

कवि
 परिचय

अलंकार रत्नाकर सु, दियो नाम यह हेत ।

च्यार तरंग नीको रचै, अलंकार सकेत ॥१६॥

प्रथम पीठका दूसरै, अलंकार सत जान ।

रस प्रमान नीके धरे, चोथे सकर मान ॥१७॥

जेसे नग की जोत मिल, कुन्दन तैं अधिकाइ ।

अलंकार कहि कवित की, व्यौ छवि दई बढाइ ॥१८॥

जेसे रीझ जवाहरी, लेत जवाहर पेखि ।

व्यौ कवि कोविदी रीझ है, अति अद्भुत स्रम देखि ॥१९॥

गरभ लोभ जस कोन किय, नहि विचार उपगार ।

अपनै चित विनोद कौं, कीनो इहै प्रकार ॥२०॥

रचनाकाल सतरह सै अठानवा, महापछ सिस सार ।

१७६८ सुभ वसत पाचै भयो, यहै ग्रन्थ अवतार ॥२१॥

मन्त -

सवया

केतकी धूर धरे सिर पूरन गु जत मजु सु कू जन मे ।

वान जरे मद नीर समीर जजीर सु आवत हे छिन मे ॥

वानयत छुरधौ नव पक जथान ते दर्थ अखड धरे मन मे ।

तोः कै मोरभ शृखल कौ यह भ्रग पतिंग फिरे वन मे ॥

यहा लाटानुप्रास अरु रूपक सौ शकर हे जहा शब्दकरालकार अरु
प्रथालकार जुदे-जुदे होय तहाँ ससृष्टि अरु जहाँ एक पद मे दोय होय, ताहाँ एक
वाचकानुप्रे(वे)श ।

सपूर्ण . .

इति अलंकार रत्नाकर सपूर्ण । *

पत्र स ५६— ॥ दं० ॥ श्री गरेशाय नम ॥ अथ भाषा भूषण ग्रन्थ प्रारम्भ ।

प्रारम्भ - निज प्रभु को सुमरन किये, कहत पाप की रास ।

तिनके पद चित धर कहूँ, अलंकार परकास ॥१॥

* इस कृति के बाद भाषा-भूषण नाम से पत्र सख्या ५६ से ६६ पर अलंकारों के सङ्ग्रह तथा उदाहरण दिए गए हैं । उक्त कृति का आद्यन्त भी यहाँ दिया जा रहा है ।

जाकी उपमा दीजिये, ताहि कहै उपमान ।
 जाको वर्णन कीजिये, सो उपमैई बखान ॥२॥
 उपमेय र उपमान कौ, सो हे धरम समान ।
 उपमा वाचक पद मिले, उपमा हौहि प्रमान ॥३॥

(उदाहरन)

कविनाम

भोहे कुटल कवान सी, गर से पेने नेन ।
 वेधत ब्रज-वाला तनहि, बसीधर दिन रेन ॥३॥

अथ लुप्तोपमा

वाचक धरम र वर्णनिय, अरु चौथे उपमान ।
 इक विनु ह्वै विनु तीन विनु, लुप्तोपमा प्रमान ॥४॥

उदाहरन

गज गामनि मुख चद सम, कज नयनि इक नार ।
 छवि सो रति अजवति भयो, तरल एकत निहार ॥५॥
 वाकौ मिलन इकत कौ, रति सुख लाभ अपार ।
 भयी काकताली यहै, विनु ही नेक विचार ॥६॥

अन्त -

अथ निरुक्ति अलकार

सो निरुक्ति जब जोग सी, अर्थ कल्पना आन ।
 उधव कुवज्या वस भयी, निर्गुन बहे निधान ॥१६३॥

अथ प्रतिपेदालकार

सो प्रतिखेद निखेद सी, अर्थ निखेद्यो जाय ।
 तिछन वान विनोद है, नही सुचौ परचाय ॥१६४॥

अथ विधि अलकार

अलकार विधि सिधि जी, अर्थ साधिये फेर ।
 कोय कहे कोयल जवे, रितु मे करि हे डेर ॥१६५॥

अथ हेतु अलकार - द्वविध

हेतु अलकृति दोय हे, कारज कारन सग ।
 कारज कारन ए जवे, वस्तु अेक ही अग ॥१६६॥

उदाहरण

उदित भयौ समि माननी, मान मिटावन मानि ।

मेरे सिधि समृधि यह, तेरी दीठ वखानि ॥[१६७]

पुष्पिका - इति श्री अलङ्कार रत्नाकर मूल लक्षण सपूर्ण ॥

२३६६. ८२३६ इतिहाससार समुच्चय भाषा

प्रारम्भ - ॥ श्री प्रमानम ने नम ॥ अथ इतिहास भाषा कृत्य लिखत ॥

नारायण नमस्कृत्य नर चैव नरोत्तमम् ।

देवी सरस्वती चैव ततो जयमुदीर्येत ॥१॥

जयति पराशरसूनु सत्यप्रतीहृदयनदनो व्यास ।

यस्यास्यकमलगलित वाङ्मयमृत जगत्पिबति ॥२॥

दोहा

वारवार लवोदराय, अति नैन विशाल ।

फलस पानि सरव गुन भुवल् ॥३॥

चौ० (चौपई)

गौरी नद गनेस सिर नाऊ । निर्भै कथा कहत मुख पाऊ ॥

नारद ब्रह्मा वीन कर लयी । आसन प्रगट हस पर कीयी ॥४॥

चारुर्घो वेद अरथ ता अग । अष्टादस पुराण सब सग ॥

शिव त्रिरच गुरु करी प्रनाम । पाऊ विमल बुधि विश्राम ॥५॥

तुम ही सकल बुधि वर दाता । सबै रूप सब के पित माना ॥

रकाल सबत सोला सै तेताला । राज अकबर साहि भूवाला ॥६॥

१६४३ भई कृष्ण पक्षि अति वैशाखा । सातै बुधिवार मुभ जाता ॥

तह कथा कृत मडल भयी । प्रात जन्म कृष्ण सो लयी ॥७॥

अन्त - जो इतिहास कथा फल जास । सुनत होइ सब करम कौ नाम ॥

सब भगतन की कृपा मनाऊ । वार वार गुरु कौ मिर नाऊ ॥३२॥

कवि- लालादास कहै कर जोरि । सुनि कवि गुनी देहु जिनि खोरि ॥

परिचय अस्यल नगर आगरो गाव । उधोदास पिता कौ नाव ॥३३॥

जात वांनियो लालादास । भाषा करि बरन्यो इतिहास ॥

दोहा

लाला सरस इतिहास कौ, व्याम वचन धरि सीस ।

धर्म बढै अरु ग्यान जसु, सुनि ते कथा बतीम ॥३४॥

चौ०

माहात्म्य जो फल सुनै अठारह पुरान । जो फल गोदावरी गंगा स्नान ॥

जो फल होइ केदार पर सत । सो फल इतिहास कथा मुनत ॥

अश्वमेध जग्य सकल तीर्थ स्नान । सो फल सुनत इतिहास पुरान ॥३५॥

पुष्पिका - इति श्री महाभारथे इतिहाससार समुच्चय त्रयत्रिंशो-
ध्याय ॥३३॥ इति श्री महाभारथ के इतिहास, कथा बतीम मपूर्ण
समाप्त । सवत १८५५ वरषे, भाद्रपद मासे कृष्ण पक्षे तिथि नवमी
भोमवारें । श्री मन्नागपुरे बखत तडाक-तीरे पश्चिम दिसे । श्री
महाद्वपथि उत्तरावा वावाजी श्री ठाकुरदासजी तिन सिष्य नामजी-
दास तिन पुस्तक लिख्यौ, सु पठनारथ । हरि भक्ति रसनु ।

२३६६ ६२६० (१) १२ कवित्त *

(जैस्यध जी को)

सतजुग हरिचंद त्रेता भयै रामचंद,

दु(द्वि)आपर प्रिछत मोह हराय हागेहु ।

अवकै समै भयो कुरम कलपतर,

वैरै मेरो चलौनै उपाड करी चारुहु ॥

कलजुग करत फीगदि कर जुग जोरी,

मुनि हौ बोरची तेरो सरन वीचारोहु ।

माहाराज्य जैस्यध जीग कु ड तोपै रोपी,

आवध के गोलन सो अनाथ करी मारोहु ॥[१]

लिखे थे अभागि ते मभागी करे दे दे दान,

दुरद दुजन दुवार गिलम सूधारि है ।

जल करे थल थल जल करे दलन सौ,
 घरा घरी धुरी घरा खुरनै वीदारि है ॥
नीने कवि कहत विरची सुनि सीताराम,
 राम चरण सरण छत्र घारी है ।
 माहाराज्य जैस्यघ जिगन कीजो मनसौ,
 ओर ही कि ओर मेरी सिसिटी करि डारि है ॥[२]

२४०१. ६२६० (१) १५ कवित्त
 (सूरजमल जी जाट को)

कवित्त (सवैया)

जा दीन तै दल साजि चढो त्रीप आगै वढौ मग पीछै धरोना ।
 मेर है सेर मडौ किरवान लै एक तै दुसीरो अक करोना ॥
 कवि केसो श्री वदनेस के नदन तो-सम ओर वरग वरोना ।
 घने हाथी टरे अर साथी टरो भान टरे पै सुजान टरोना ॥[१]

कवित्त

इत छपो भान उत भान सो सुजानस्यघ
 ऐक वार मडल तमाम तम छै गयो ।
 भादो भयो देखिन को चाहो सुर लोकहु मै
 आयो इद्र आसन विमान धरि लै गयो ॥
 केसो कवि आप जीव साचो सुर किरति चलै गयो ।
 नरन को नाहा फेरि होइगो उदोत कोउ,
 सीनसीनी साह तिलक चढै गयो ॥[२]

लाखन लराइ विचराइ फोजन वैरीन की,
 परि सुरज कै पाछै सात्रेसार है समाहरैगो ।
 जाहा रोपी हृद सरहृद श्री सुजानस्यघ,
 दपट दिली के दल तेगन सो भारैगो ॥
 केसो कवि भाइ ब्रीजमडल सवाइ पै जे पारैगो ।
 दरघ की करद करेजा वाही गयो वली,

कीने हे मुकाम घनी लाखन चढहि फोज,
 मागी कै नजीबखा दिलि पै दावा घरता ।
 मान तोनै कैसहि जाहान पै सवायो जस,
 दोखी दर्फ होते मुख सोखिन के भरतो ॥
 केसो कवि सोख दरस दिखाइवे कौ,
 दत्तन तिनुका नेकै पहल पाइ परतौ ।
 ब्रिज के महीप मनमुवान मै सोवि देखो,
 नीकी हो मिलाप तो मुजान क्यों न करतो ॥[४]

देखाइत दीरग दतारे मतवारे भुप,
 भारे भारे घोरन पै चवर ढरकाये है ।
 घरहीते सेलन की अनि ममगड ली,
 जग मै जुरे न भुठे पाय मटकाये है ॥
 केसो कवि ओरै कि मती काहा लो कर
 सुरज कि लाज परि काज नहि आये है ।
 वडे वडे मोती भोरि दीरै करन पेचन मै,
 हाथन के करे खोली काछन दुराये है ॥[५]

कैयेक मुसाइव करोरी मग मुवेदार,
 रहे सब चाहत अथाहास्यघ थाइ गयो ।
 करि गयो अनि कै अचानक अचभो ऐक,
 घरि गयो ओरै घाक विर रस छाये गयो ॥
 केसो कवि जग मै जवाहर मो जोती धारि,
 भान की किरनि मानु छल सो छीपाइ गयो ।
 साचो सुर लोक कौ सीपाइ काहु भुपति कौ,
 नग्न के नाहा पै हजारन मै बाही गयो ॥[६]

२४०२. ६२६० (१) १६ कवित्त
 (वरसाना कौ राडी कौ)

जीतै है तो नुजम प्रकाम देम देसन मै,
 मरे तै मुकति ब्रीजमडल मुवामना ।

जग जुगि मुरे तैम जे जम जवति घटि,
 मवहि कै रटि या जग मै कुवासना ॥
केसो कवि वग्मानो रज धानि प्रानि,
 चुकी गये दाव पै करौरि करो आसना ।
 काहा राजा काहा गव सा सीध उमराव,
 काहु मै नै निकसी उपासना सा वासना ॥[७]

२४१६. ६२६० (१) १७ कवित्त
 (सीखां की लडाइ फले करी, नवलस्यंघ जी जाट)
 कोन से मुलक मनमुवे मै भरम भुले,
 काहेकु रै सीख ब्रोज भोम पर भटके ।
 याहा रखवारो ब्रोज दुलह मुकट वारो,
 मुग असुरन के अनेक दल हटके ॥
केसो कवि ओर की मति काहा लो कर,
 काठ से कठौर कोस आठ लग पटके ।
 चढी नवलेस माहि सुरज को माहावलि,
 ऐकहि चटक मै अटक लो न अटके ॥[१]
 बदल से उमडि अह दलह कारे वीर,
 धिर न धरत उर उमगे अमाने के ।
 केहरि से किलकि किरवान बाहै,
 काल के जजाल येहनि बाह बिद वाना के ॥
 केसो कवि ब्रिज की प्रतग्य पर पुरि रही,
 तिर तरवार न उडत सिर नावा के ।
 मुसे म दति विरचे ते किरचे कीये है सीख
 जैसे करगर वै नवाव खान-खाना के ॥[२]
 गरव गोपालस्यध लाज सवराज की सी,
 गाजी धरि करि जग अग उमदेस की ।
 केसो कवि कान सघरे गुमरि भुले,
 खोड गये आपनि सिकल गरु भेख की ॥

बीज के महीपन को दीपन भयो है जस,

लोन की पनाहा राखी राजा नवलेस की ॥ [६]

(सर्वथा)

कान मुनि कहू भाग्य की कथा कै सुनो गमजी राम नरेखे ।

कै नो मुनी प्रीथीराज के राने मे जग करि सुलतान समेखे ॥

कवि केसो कौपी चढी जटुवस तव विर वाहादर आखीन देखे ।

मुरजी के नवलेस वली तैन उदल आल प्रमाल विसेखे ॥ [४]

मैमत माते मतग चढे निरप जग जुरै रन सुर सुरजे ।

छुटत वान किरवान करा करि हुटन मु ड मु मु ड लुरजे ॥

कवि केमव घुमत घाड घने ऐक लेत कुलाटन हुल उगजे ।

ऐक परे घर वथ सो वथन ऐक परे गज मु ड लुरजे ॥ [६]

जग जुरे पर रग रहे परी रचक वान हुड मनि वोरि ।

फेरत नेक अर बेकी चाहि न काटर सुर मत्रै लगि डोरि ॥

कवि केसो होनि टरै न टरि जब दुरजन की महमा चढि दोरि ।

गगाप्रसाद की लाज रही अनेकन की रही पाघ पछौगी ॥ [६]

२४२३ १००५६ (४) कलिजुग पञ्चीसी

प्रारम्भ - ॥ अथ नंदराम कृत कलिजुग पञ्चीमी लिखत ॥

दोहा

गनपति कूज मनाय कै, रिधि मिधि कै हेत ।

वाक वदनी मात तू, सुभ अखिर बहु देत ॥

कडू करचौ हौं चहत हू, तुम्हारे पुन्य प्रताप ।

ताहि सुन्या सुख उपजै, दया करो अब आप ॥२॥

कीयो इह उपगार अब, ईको हुकमज पाय ।

कलि व्योहार कह्यौ अबै, सुनो चतुर चित लाय ॥३॥

गाथा

नीति गज की असी हौती दौलित को सुख लीज्ये ।

गज सिका अर तोल मोल की बढ़ती दिन दिन कीज्ये ॥

अब पैसे की कमी भई है रुपया है नव मासा ।
नदराम कछू दुनियां माही देख्या अजब तमासा ॥४॥

पट दरसन की पूजा करते दुखी देखि दुख हगते ।
 विप्र गऊ कौं देखि साकड़ भूप वडे यू लडते ॥
 अब घेरै गऊ विप्र कौ लूटै परतिय भोग विलासा ।
 नदराम कछू दुनियां माही देख्या अजब तमासा ॥५॥

फोजदार उमराव आगिले स्वामि काम कू लरते ।
 मैवासी को मार तोरते सुख वासी सुख करते ॥
 अब जोर तलव सू जोर न पूजै लूटै रैन खलासा ।
 नदराम कछू दुनिया माही देख्या अजब तमासा ॥६॥

मुनसवदार मुलाजम होई ताकी बोलग जोवै ।
 मानस ताके खरे विरगे वै मुहीम मै रोवै ॥
 जमीदार जागीर भोगवै खेलै वहरी वासा ।
 नदराम कछू दुनिया माही देख्या अजब तमासा ॥७॥

ताम हलाली कै मुख लाली खाल खाल मै दीसै ।
 निमक हरामी कै दरवाजै हाथी घोडा हीसै ॥
 दानतदार धका बहु पावै चौर जरकसी तासा ।
 नदराम कछू दुनिया माही देख्या अजब तमासा ॥८॥

सैद सेख पठाण तुरमा छौडि चाकरी बैठै ।
 जुलहा धुनिया वा धिक मरि कू फिरै चोहटे अंठे ॥
 जग दुन्या सू पीठि दिखावै हात धनी का हासा ।
 नदराम कछू दुनिया माही देख्या अजब तमासा ॥९॥

साची जाय चौत्रै भगडे साखि बुलावै साची ।
 लिख्यो पढ्यो मुह आगै म्हेलै खरी खुब करि वाची ॥
 भूठा कीस वरसौति पहुँचै साचै देहि वकासा ।
 नदराम कछू दुनिया माही देख्या अजब तमासा ॥१०॥

रामसनेही तो चलि आवै ताकू थोडे ध्यावै ।
 रामजनी कू खरची भेजै आदर सू वतलावै ॥

घर नारी कु मारै गाली गनिका तै घर वासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥११॥

मात पूत कु आगै हो करि नखरे सूज नचावै ।
वोली ठील और खिलकटी छैलन कुज रीझावै ॥
ताका भरवा गिरवा हाँकै वने फिर दुलहा-सा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥१२॥

पडित भीतरि जान न पावै भाड वौलि कै लीज्ये ।
दीन दुखी कु चीन्हत नाही डुम कनावत दीज्ये ॥
घरम नेम की बात मुनै नही खौटे चीत हुलासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥१३॥

तरनी देखि छिनालि कुहावै दिना वडी कु डायन ।
साध अग की पधडी खोमै पडै ढीठ कै पायन ॥
परमानी कु स्वाच न दीज्ये परपच जू पचासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥१४॥

चरनोदिक अर तुलछी दल कौ लेत हेत मू थोडा ।
मदरा आमिष खान पान कु खरचत है धन जोगा ॥
करि मितराई नारि ताकवै दे करि बाह विसासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥१५॥

विप्र भागि कु रुचि करि जीवै पीवै तिलक तमाखू ।
च्यारि नीतिया चौदा आवै साथि लीये करमाकु ॥
सझ्या तरपन कु है थोडा विषता कु विकतासा ।
नंदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥१६॥

गऊ कुराह चलन अब लागी अविला कडको डारचौ ।
दौडि धीग के घर मै पैसे पति परने कु मारचौ ॥
निरधन देखि सगाई तौडे धन सू करत नतासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥१७॥

निरधन दीसै साद जगत मै भेष माहि व्योपारी ।
जोगी नाव धराय जगत मै घरमै चचल नारी ॥

सेली मुदरा छार लगावै घरै जूडवर वासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥१८॥

खाय लुडखडी खत लिखावै अपनू जाम मडावै ।
कगज काढि वौहरा सेती गाढी सीगन खावै ॥
दाम लेत है ताही दिन सू ले रहने की आसा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥१९॥

दातार छीन तन अति ही दीसै कपन पेट वधावै ।
वहन भानिजी कु जो कवहु निति छिनालि पहरावै ॥
पतिवरता तन नागी दीसै वस्यो पहरै खासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥२०॥

जानी गुनी भुख अति खोचै मुख कै धन दीसै ।
वहु पालिकै मुख सु सोवै सास वापरी पीसै ॥
तापरि वाकु भगरी खान कु पतनी पान पनासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥२१॥

नाटिक चेटक जामै दीसै ताकी करै जू मेवा ।
भूत खेल कु ख्याल दिखावै ताकु मानै देवा ॥
अतरजामी नाही भजियाँ भजीयो धुलि-धमामा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥२२॥

भाई वध पाहनै आवै घर की कलह जु भाडै ।
फोडै वासन तौडै सासन भावै जू पति माडै ॥
जरयो वद्यो सो उन्है खुवावै निज भाई सुखदासा ।
नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥२३॥

कवि नदराम खडेलवाल है अवावति को वामी ।
परिचय सुत वलराम गोत है रावत मत है किसन उपासी ॥
र काल सवत सतरासै चौवारा कातिक चद प्रकासा ।
१७४४ नदराम कछू दुनीया माही देख्या अजब तमासा ॥२४॥

कलि व्योहार पचीसी वरनी यथा जोग मति मेरी ।
कलिजुग की जवानी गाई ही है और रासि बहुतेरी ॥

राखो राम माम या कलि मै नद नद सुख रासा ।

नदराम तुम सरणै आयै गायौ अजब तमासा ॥२५॥

पुष्पिका.- ॥ इति सपुरण ॥ मिती आसाढ वदि ८ सवत १८११ का
दसकत वखतराम गोधा* चाटसू-का लिखी बुपौई मध्ये । देहरेजी ।

२४४२. ६५६४ (६) गङ्गा-शतक

प्रारम्भ :- अथ गङ्गा शतक लिख्यते ।

दोहा

जात^० जग जन्मादि जो, जगपति यह वपु वारि ।
वदो^० अघ मल हर अमल, गंगा जग हितकारि ॥१॥
तुरत हरत त्रय ताप ज्वर, ऋण अणु परसत अग ।
ज्वर हरिवो नहिँ कठिन, सुमरत गग तरग ॥२॥
अड कटाह कटाह गवि, अनल अनिल नभ पूरि ।
ब्रह्म द्रव गंगा भयो, भुवि भव भेखज भूरि ॥३॥
जरे जिवाये तै^० जननि, सगरज साठि हजार ।
जरत हृदय गिर उदवि हर, लिय भट तव आधार ॥४॥
गग रग हरि रस अवसि, परत करत इक सग ।
भुव-चर नभ-चर तरुन के, सुभग चतुर्भुज अग ॥५॥
तव जल तन तजि शिव वनत, तुरत उचित यह चाल ।
ताही के विप दोष गल, ताप अनल लगि भाल ॥६॥
किते गग परिहरि वनत, यह अचरिज सी बात ।
सलिल सुधा सम सित लगे^०, असित होत सब गात ॥७॥
पातक जन्म अनेक के, तू घातक जग मात ।
अनकपुग ऊजर करत, हरि हर नगर वसात ॥८॥
हरि-पद विधि-कर गभु-गिर, वसिवो सो मिम हेतु ।
ब्रह्म रूप तू तीन मै^०, प्रकट दिखाई देत ॥९॥

* लिपिकर्ता स्वयम् भी अच्छे विद्वान थे । इनका लिखा हुआ ग्रन्थ 'बुद्धिविलास' प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला में ग्रन्थाङ्क ७३ पर प्रद शित किया जा चुका है ।

कलुष जटिल जट दहत पट्ट, रहत जटिल जट जाल ।
कुटिलन के काटत कुहक, गग कुटिल चलि चाल ॥१०॥
मधुर अमल सीतल मलिल, कलित कमल मकरद ।
प्रवल अनल लोँ गग तउ, दहत अचल अघ वृद ॥११॥

अन्त :-

दोहा

रु ड माल हर गिर अमित, हरि पद बहु मन भृ ग ।
तिन तारन तू वसत नित, हे करुणानिधि गग ॥६१॥
श्रुभ्र स्वच्छ सीतल सुखद, सुन्दर सिंधु समान ।
उदर धपेँ मन नहिँ धपत, करन गग जल पान ॥६२॥
धपे अनधपे ही रहत, सुर तटिनी तट पाय ।
मधुर सुधा तैँ गग जल, पियत न तृषा वृष्णाय ॥६३॥
पाप ताप तैँ तपि हृदय, लगी गग जल प्यास ।
पियत पियत दूनी बढत, कहाँ तृप्ति की आस ॥६४॥
मधुर सुधा तैँ गग जल, मोहि प्यास दुख देतु ।
भलैँ रहो तप ताप को, ह्वैँ जल पोवन हेतु ॥६५॥
कारे तैँ उजरे भये, वपु परसत जल गग ।
तिन्ह फिरि कारे करन ते, होहि न उजरे अग ॥६६॥
सुरसुरि तव पय पान करि, अक तिहारैँ सोय ।
फिरि तिनकौँ जननी जठर, परि पय पिवन न होय ॥६७॥
पिता मुख्य सब बधु तैँ, तातैँ अधिकी मात ।
पै ह्वैँ सुरसुरि जल पियत, अमित मात की घात ॥६८॥
जह्लू पिता पति गतनोँ, भीष्म पुत्र रनजेतु ।
ह्वैँ कुड विनी गग क्योँ, अघ कुड व हरि लेतु ॥६९॥
चुवकी लै कडि कैँ लख्यो, भो अति हरखो अग ।
साथी पाप देव के, तैँ कित काढे गग ॥१००॥
मैँ गायो गगा शतक, गावहि सुनि है कोय ।
तन्मन स्व ह्वैँ तो तुरत, गग न्हान फल होय ॥१०१॥
नागर जीवनलाल द्विज, बुन्दीधीश प्रधान ।
निज तिय तन ज्वर हरनहि, किय गगा स्तुति गान ॥१०२॥

कवि-

परिचय

रचनाकाल नभ चख वर्ष मयक मित, विक्रम सम गय बीत ।

१६२० मधु सित नवमी भानु दिन, गायो गगा गीत ॥१०३॥*

पृष्पिका - इति गगा शतक सपूर्णम् ।

२४८८ ६२७० छद सुधाधर

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ श्री गरेशाय नम । अथ छद सुधाधर लिख्यते ।

दोहा

अखिल अनादि अनत अज, अलख सकल सुखदाय ।

अनघ अजित अद्वैत प्रभु, प्रनवौ पकज पाय ॥१॥

वारन वर भावर वदन, वदन विदु मुवेस ।

वाक नाथ विधु भाल भवि, विघन विहा विनुधेस ॥२॥

सकर सकर श्रुभ तन, गैल गैल जाईस ।

सुर सरि घर ससि सुल घर, मुखद सरन जगदीस ॥३॥

विघन विनाशनि विदु वदनि, विनुध विजय विस्तार ।

वीस भुजी त्रिस्वभरी, त्रिस्व उपावन हार ॥४॥

X X X X X X X

वर वानी वोधव्य वृत, वानी वृत वखानि ।

हुयगे हुयहै है अवे, आश्रयता तिन आनि ॥१२॥

वरनौ छद सुधाधरहि, आभग्नौ कवि चद ।

मन हरनौ महि पाल मनि, लहि सरनौ रघुनद ॥१३॥

नृप लछिमन बस वर्नेन

महि पति मनि महि जम महा, कुल तिन कहौ वखानि ।

गावत गुन गनपति गीरा, पारान केही प्रमानि ॥१४॥

* प्रस्तुत गुटके मे वूँदी के महाराजा रामसिंहजी के मंत्री जीवनलाल नागर तथा उनके पुत्र शम्भुराम की कृतियों का संग्रह है । सवत् १६१४-१६१५ 'अवतार माला नी गरवी' तथा 'रासपञ्चाध्यायी' का रचनाकाल दिया गया है । लिपि भी २० वीं शताब्दी की ही है अतः गुटके मे सकारलत कृतियों का अपना विशेष महत्व है ।

मो मति के अनुमान तै, वरनौ वस विसेस ।
 सुनि रीझे सज्जन सरस, सादर समुभी कवेस ॥१५॥
 आदि पुरुष व्यापक अलख, आदि वस प्रभु आनि ।
 तिनतै प्रगट पिता महै, रचना जगत रचानि ॥१६॥
 अज मुन मुनि मारीच, अखि वक्ता वेद प्रवीन ।
 हरि भक्ता रक्ता रहसि, कर्ता कूल कृत कीन ॥१७॥
 कस्यप जिन नदन कही, सृष्टि सजन के मूल ।
 सुर अमुर नर नाग खग, उड्डव उन अनकूल ॥१८॥
 परम प्रकास प्रकास कर, आकर कर करतार ।
 तम हर हिम हर गौर हर, हर रचना भय हार ॥१९॥
सविता कस्यप कौ तनय, फविता छविता तेज ।
 कविता तिन कृन की कथी, तद विताइ वन मे जेज ॥२०॥
भान वम के भूप भय, डक तै डक अघिकाय ।
 तिन बल प्राक्रम जम, कथित पार कीन कवि पाय ॥२१॥
 रघु डख्याकु हरिचंद नल माधाना महिपाल ।
 प्रथु भागीरथ आदि दै, डक तै एक विसाल ॥२२॥
 तिन कुल मं त्रयलोक पति, रामचंद्र अवतार ।
 सुजस वखानत सेस श्रुन, भूमि उतारचौ भार ॥२३॥
 अवनीपति आदित्य कुल, अगनित अजित अभंग ।
 इक इक जम नहि कहि सकहि, सहस सेस ह्वै सग ॥२४॥
प्रथीराज अवतार प्रथु, रवि कुल कौ रवि जानि ।
 अरि गजन रजन सुजन, तिन जस कही वखानि ॥२५॥

छप्पय

प्रथु सरूप प्रथीराज थप्प मरजाद हिंदु थिर ।
 दलि दिलीस दल दीह भजि मुगलान जोम भरि ॥
 पैमलिय पुहुमि पठान मेटि सैयद सु सेख मद ।
 दण्डियन करि इह वाट हेम नग सिंधु पारि हद ॥
 विचलाय मात पति साह बल, जिन समान नहि नृप वियो ।
 द्वागिकाधीश जगदीस प्रभु, निज पुर तिन दरसाय दियो ॥२६॥

दोहा

प्रथु नृपाल सुत भाल, वड गजन अरि गोपाल ।
 सूमसाल कविपाल, करटाल चवट्टह चाल ॥२७॥
 गोपालहि नर नाथ कै, हिदुनाथ नृपा नाथ ।
 किते अनाथ सनाथ करि, सजस गाथ निधि पाथ ॥२८॥

कवित

पुहुमि दरे पय निध मै पगरे होत,
 सक लक वारे जे वुलद वाहु वर के ।
 डारे डर साह सतनू का दत धारे,
 अरि कारे मनवारे गज ल्यावत निजर के ॥२९॥

दोहा

नाथ नरेसुर को सुवन, महिप मनोहरमीह ।
 खाढा खल खगाकरण, अटाहरण अवीह ॥३०॥
 सुवन भूप करणस को सुखमिध समर निसंक ।
रजधानी चौमू रची, वैठि दूरग वड वक ॥३२॥

कवित

चौमू च्यार पैठोर कौ दूरग अति राच्यो,
 दी है रैनी की रहनता गहनता महादुरी ।
 खाई जल पूरीति किलोलै हस सारिसन,
 विकट सघन वन डाल डाल तै जुरी ॥
 देखि अरि सक मानै जानै जग अजइजो,
 असरन सरन सु आनै अति आतुरी ।
 पेखि सुखसिध की सुवेस रजधानि,
 जगमै नवी लखानी तापै वारी अलकापुरी ॥३३॥

दोहा

सुखसिध नद सुकद, सुख पुहुमि इद्रकुल चद ।
 रघुनाथ प रघुनाथ ज्यौ, सोभा सील समद ॥३४॥

श्री रघुनाथ नरेस सुत, मोहनसिंघ महिंद्र ।
नीति रीति राजस निरखि, समता लहै न इद्र ॥३६॥ •
जोधसिंह मोहन तनय, जोध महा जुव जीत ।
पारण मीत अभीत उर, धारण घरम सुनीत ॥३८॥
कुरम कुलयय निधि प्रसिध, रतन रतन सम जानि ।
मडन माधव भूप को, हर तम ग्ररि असुरान ॥४०॥
रतनसिंघ मुन नीति रन, श्रीपति हृदय प्रतिति ।
कीरति वटवण कूरिमा, रणजीतण रणजीत ॥४२॥
किसनसिंघ रणजीत सुत, किमन रूप नरनाह ।
ढावण देस टुढाहडा, आटण कुल कछवाह ॥४४॥
कस्यप घर दिनकर कहै, वसुवर जेम ब्रजेस ।
दसरथ घर रघुनद वस मनि, किमन धरा सु लछेस ॥४७॥
सोभित सभा लछेम की, बहु कोविद कवि चद ।
श्रुति पुरान इतिहास कथ, चरचा छद प्रवध ॥४८॥
आश्रयदाता कृपा सहित कवि चद कही, लछमनसिंह नरेस ।
छद प्रवद विचित्र गात, भाषा रचित सुवेस ॥६६॥
लहित लछमन नर नाह को, हुकम चद चित धारि ।
वानी नरवानी विमल, वृत्ति प्रवद विस्तारि ॥६७॥
रचनाकाल सवत वसु निधि वसु समि, माघ मुकल शसि लीन ।
१८६८ छद सुधावर वार बुध, प्रगट पहुमी कवि कीन ॥६८॥

कवि वस वर्नन

कूरम कुल के सुजस कर, जातिज सोधी जान ।
वी भाण जयसाह दिय, पदवी राव प्रमाण ॥६९॥
जयसिंधुर जयपुर निकट, वाट उदिक मुजह दीन ।
वीरभान जयसाह की, सदा सेव मैं लीन ॥७०॥

व्यागम तिनके सुवन, माधव मन रिझवार ।
 वर बानी कविता विमल, पुहमी सुजस विसतार ॥७१॥
 माधव नृप करिकै महारि, उदिक हिंगालो कीन ।
 सहस एक तनखा समाप, सनमुख बैठोक दीन ॥७२॥
 तिनके सुत जयदेव कवि, कविता समुक्त विमेष ।
अलवर पति मडन मही, सेवे वखत नरेम ॥७३॥
 महाराव वखतेस नै, कीनी कृपा अपार ।
भायापुर दीनी उदिक, सुख सपति को सार ॥७४॥
 बहु आदर बहु प्यार करि, रारये निकट वसाय ।
 मोदिन कवि जयदेव तै, वखतावर गुन गाय ॥७५॥
 तिनको नद सु चंद कवि, भाषा काव्य प्रवध ।
 जापै अधिक कृपा करि, बैंगीमाल महिद्र ॥७६॥
 गाँव दियो पहुलादपुर, उदिक अधिक अह्लाद ।
 राग्यो निकट सु चंद को, मतमहि नूनन नमाद ॥७७॥
 तिनतै अधिक नुहेत नरि, लछमनमिध नरेम ।
 भूष धन बहुमोल पट, दीनै चंद कवेस ॥७८॥
 लखी चंद करिकै अना, निरदन मुप कविराज ।
 हुकम दियो बरनी विमल, भाषा छंद समाज ॥७९॥
 लख बनमागी बृज रमनि, नागर नदकिनोर ।
 पनुसनि वृषभानजा, नरो अना मन धोर ॥८०॥

ऐनि श्री कृष्ण जिहारि चरन गनन श्री नृपति लछमनमिध देवाजाया
 छः सुधाधर देवस्तुति, नृपदम, कविवर, ग्रन्थारम्भ, अवि चंद विरचिते नाम
 प्रथमो नृप ।

अथ :-

नविन

एत गनराग निरगन निरगन मध्व,

गोनि सिन्धु रंग धर गिरा गुन गाय गाय ।

श्रुत सेस नारद सनत नद सुक छद,
 श्रीपनि श्री सिद्धि जुत सदा मुख सरसाय ॥
 सूर ससि दिगाज दिसाधिप मरितपनि,
 जल थल पवन सुत तत तता बटाय ।
 पुहुमि सुरिद किसनेस नद लछ भूप,
 रावरो सुजस जग ती लौ रहौ अधिकाय ॥३६॥

दोहा

छद मुधाधर ग्रथ किय, लछमनसिध सुहेत ।
 छद प्रबधय वचन को, ममजो सुद्ध मकेत ॥४०॥
 श्री ब्रजनाज उदार दिल, दीन बधु मुख दाय ।
 देहु मया कर मोहि वर, मन तुम चरन सहाय ॥४१॥

पुष्पिका - इति श्री नृपति लछमनसिध देवाना कवि चद विरचिते छद
 सुधाधर उप छद, वृत्ते वरण गीत छद, उप छद वरण नाम पौडसो
 मयूख । मिति वैशाख शुदी २, समत १६११ । लिखित ब्राह्मण
 दाहिमा भुथालाल, लिखायतु, रावजी श्रीचंदजी श्री

२४६०. १०१८५ जगत विनोद

प्रारम्भ - ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जगत विनोद लिख्यते ॥

दुहा

सिधि सदन सुन्दर वदन, नद नद सुद मूल ।
 रसिक सिरोमनि सामरे, सदा रहू अनुकूल ॥१॥
 जय ज(य) सकति सिलामयी, जय जय गढ ग्रामेर ।
 जय जयपुर सुरपुर सइस, जो जाहिर चहु फेर ॥२॥

आश्रयदाता जय जग जाहिर जगतयति, जगतसिंह नर नाह ।
 श्री प्रताप नदन बली, रवि बसी कछवाह ॥३॥
 जगतसिध नर नाथ की, समुक्ति सवन की इस ।
 कवि पदमाकर देत है, कवित बध आसिस ॥४॥

कवित्त

छत्रिन के छत्र छत्र धारिन के छत्रपति,
 छज्जत छटानि छिति छेम के छत्रैया हो ।
 कहै पदमाकर प्रभा के प्रभाकर,
 दया दरीयाउ हिंदु हृद के रखैया हो ॥
 जागते जगतसिंघ साहिव सवाई,
 श्री प्रताप नृनद कुल चद रघुरैया हो ।
 आछै रहौ राज राज-राजन के माहाराज,
 कछ कुल कलस हमारे तो कन्हैया हो ॥१॥

आप जगदीसर ह्वै जग मै विराजमान,
 हाँ हू तो कविसुर ह्वै राजतै रहत हौं ।
 कहै पदमाकर ज्यौ जोरत सु जसु,
 आपु हौ हूतो तिहारो जस जोरि उमहत हौ ॥
 श्री जगतसिंघ माहाराज मानसिंहावत,
 वात यह साची कछु काची ना कहत हौं ।
 आपु ज्यौ चहत मेरी कविताद राज त्यों मे,
 उमरदराज राज राऊरी चहत हौं ॥२॥

दोहा

जगतसिंघ नृप जगत हित, हर्खि हियै नधि लेहू ।
 कवि पदमाकर सौ कछ्यौ सुरस ग्रन्थ रचि देहू ॥५॥
 जगतसिंघ नृप हुकम तै, पाइ माहा मन मोद ।
 पदमाकर जाहर करत, जग हित जनत विनोद ॥६॥
 नव रस मैं जु सिंगार रस, सिरे कहत सब कोइ ।
 सरस नायका नायकहि, आलवत(न) हु होइ ॥७॥
 तातै प्रथमहि नायका, नायक कहत वनाय ।
 जुगति यथा मति आपनी, मु कविन की सिर नाय ॥८॥

अथ नायका लक्षण

रस सिंगार को भाव उर, उपजन जाहि निहार ।
 ताहि को कवि नायका, वरनत विवध विचार ॥९॥

अथ नायका कौ उदाहरन
 सुदर सुरग नैन सोभित अनग रग,
 अग अग फेलत तरंग परिमल के ।
 वारन के भार सु कुमारि कौ लचत लक,
 राजै परजक पर भीत महल के ॥
 कहै पदमाकर विलोकि जन रीझै जाही,
 अवर अमल के सकल जल थल के ।
 कोमल कमल के गुलावन के दल के,
 सु जात गडिया इन विछौंन मुखमल के ॥३॥

अन्त -

दोहा

घन वरसत नख पर धरचौ, गिरि गिरधर निसक ।
 अजब गोप सुत चरीत लखि, सुरपति भयउ ससक ॥१६॥

अथ सात रस

सु रस सात निरवेद है, जाकौ थाइ भाव ।
 सत सगति गुरु तपोवन, मृतक समान विभाव ॥१७॥
 प्रम रुमचादिक तहा, भाखत कवि अनुभाव ।
 धृति हरपादिक कहै, सभु संचारी भाव ॥१८॥
 सुद्ध सुकल रग देवता, नारायन है जान ।
 ताकौ कहत उदाहरन, स(सु)नहु समति दे कान ॥१९॥

सात रस कौ उदाहरन

बेठो सदा सतसग ही मैं विख मान विखे रस कीति सदाही ।
 त्यों पदमाक(र)भूठि जितौ जग जानि सुज्ञान ही कै अवगाही ॥
 नाक की नौक मै डीवि देयै नित चाहै न चीज कहू चित चाहि ।
 सतत सत सिरोमनि हैं घन है घन वै जन वेपरवाही ॥२०॥

दोहा

नभ वितान रवि ससि दिया, फल भख सलिल प्रवाह ।
 अवनि सेज पखा पवन, अवन कवू परवाह ॥२१॥

अविहित तै विरकत रहत, कद्यु न दोस कै त्राम ।
विहित करत मुन हिन समुझी, सिसुवत जे हरि दास ॥२२॥
इति (अ) नरम निरूपन ।

दोहा

जगतसिंघ नृप हुकम तै, पदमाकर नहि मोद ।
रसिकन कै वस करन कौ, कीन्ही जगन विनोद ॥२३॥

पुष्पिका - सिद्धि श्री कूर्मवसावतम श्रीमन्माहाराजाधिराजगजेन्द्र श्री
सवाई जगतसिंहाजया मथुरास्थ मोहनलालमदात्मज कवि पदमाकर
विरचित जगन्विनोद नाम काव्य सपूर्ण । श्रुभ समत् १९०६
प्रवर्त्तमान्ये मासोत्तमे मासे मार्गसिरमासे शुक्लपक्षे तिथौ १२
भौमवासरे लिखित रत्नावतीमव्ये, नागर भट कुवेर हस्ताक्षर ।
श्रुभ भवतु । कल्याणमस्तु । श्रीरस्तु । श्री । श्री ।

२४९६ ८७३६ जलवय गहनशाह इश्क *

प्रारम्भ - ॥ श्री नृत्य गोपालो जयति ॥ अथ जलवय गहनशाह इस्क
लिख्यते ।

राग सारंग दोहा

मगलाचरन

हुवा हैं अमल इस्क का, दिल याग की जुदाई ।
हैरत हैं मुझको ए जयान, यह क्या कहर हैं खुदाई ॥

* कृष्णगढ नरेश महाराजा र्तवर्त्तसिंह जिन्होंने राज-पाट त्याग कर वैष्णव-भक्ति को
अपनाया था, उन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिसमें 'इश्क चमन रा दोहा' भी
प्रसिद्ध है । महाराजा के ही वंशजों में कोई १००-१२५ साल बाद महाराजा जवानसिंह
द्वारा 'जलवय गहनशाह इश्क' नामक लघु कृति की रचना की गई । इस कृति में
भी कवि ने नागरीदास को 'इश्क-राजा' के भाट की उपमा दी है । ऐसा कर वस्तुतः
भगवत्प्रेम में व्याकुल नागरीदास को बहुत ही उचित एवम् सुन्दर उपमा से अलंकृत
किया गया है ।

इश्क हकीकी और इश्क मजाजी, दोनों ही अर्थों में इश्क की अभिव्यक्ति
की जाती है । प्रस्तुत कृति में भी 'इश्क को खुदाई रूप' मान कर उसका शहशाह के

इकताल सोरठा सोरठा

ब्रज जन जीवन प्रान, हैं अधीन जिनके सदा ।
कृष्ण करै जिहि ध्यान, हैं डलाइ महबुव नित ॥

दोहा

हरि राधा हित रीत मैं, विप्र योग रस सार ।
तहा प्रीत सोड प्रेम हैं, सोई इस्क निर्धार ॥१॥

इस्क परमानन्द वर्नन

यामैं भेद न जानियै, इस्क खुदाई रूप ।
विप्र योग मैं प्रगट हैं, परमानन्द स्वरूप ॥२॥
ताही की शिर नाथ कै, ताही को जस गाउ ।
ताही की रजधानि के, वरनन हित वर पाउ ॥३॥

इस्क गहनशाह वर्नन

इस्क कौं राजा कहन हैं, या विन फीकी बात ।
लौकिक लोक अलौकिकी, याही सौ छवि पात ॥४॥

रानी वर्नन

लगन मु गनी इस्क की, या विन प्रीत न होय ।
या विन प्रेम जु होय तो, अग हीन जग जोय ॥५॥

मन्त्री वर्नन

इस्क कि कौन सला कहैं, कहैं सु जानै भेद ।
भजनू मन्त्री इस्क का, जहा न पहुचे वेद ॥६॥

नगर वर्नन

चृन्दावन यह नगर हैं, जहा इस्क को राज ।
घर घर डौडी फिर रही, नागर प्रीत सु काज ॥७॥

सम्पूर्ण सरजामो के साथ रुपक बाँधा गया है । लिपिकर्ता का नाम 'जयकवि' लिखा है, सम्भवतः यह जवानसिंह का ही लघु नाम हो, यदि ऐसा है तो कृति स्वलिखित होने से और भी अधिक महत्व की है । प्रारम्भ में एक दोहा और सोरठा हाशिए में ऊपर तथा बाँयी ओर लिखा गया है । सम्भवतः उक्त छन्दों को कवि द्वारा ही मूल पाठ में बाद में जोड़ा गया है । ग्रन्थाङ्क २२८६ पर इसी रचना की स्वोपज्ञ टीका की पाण्डु-लिपि भी प्रतिष्ठान में उपलब्ध है ।

गढ वर्नन

आशिक का दिल दुर्ग हैं, इस्क पनाह कि ठोर ।
ढक्के धावा देत हैं, दिलदारी की ओर ॥८॥

सिंहासन ओ अदालत, ओ अदालत का अध्यक्ष का वर्नन
आशिक शिर के तखन प, बैठ इस्क सरताज ।
जुल्म अदालत का दिया, महवूवी कौ राज ॥९॥

जल्लाद वर्नन

कहर नजर महवूव की, लिये तेग जल्लाद ।
इस्क राह चलते जिल्ह, मारै करि आल्लाद ॥१०॥

छत्र वर्नन

रस सिगार सो छत्र है, इस्क नृपति के सीस ।
ताकी छाह सु जगत पर, सबको सुखद वरीस ॥११॥

चवर वर्नन

चवर हास्य रस सीं हुवै, इस्क राज को वोध ।
प्रीत रंग उज्जल लसें, चित सात्विक कौ शोध ॥१२॥

अगर धूम वर्नन

आशिक स्वास उसास यह, मनहु अगर की धूम ।
रस्क राजदरबार में, खूब रगमगी धूम ॥१३॥

घनुष वान वर्नन

भौंह घनुष महवूव की, वरुनी नावक तीर ।
इस्क हाथ सीं चलत है, ह्वै आशिक चित पीर ॥१४॥

ध्वजा वर्नन

अलक ध्वजा महवूव की, इस्क द्वार फहरान ।
मानों आशिक जीत हित, वैरख खुली निसान ॥१५॥

सदियाने वर्नन

निंदा सदियाने घुरत, इस्क नृपति के द्वार ।
कितेक जन डर भजत हैं, सुनि धूम रिकवार ॥१६॥

मुसद्दी वर्नन

इस्क दिली हैं दिलखा, हैं जु मुसद्दी मेंन ।
यार जुदाई भेटता, सदा सुघर सुख देन ॥१७॥

कोतवाल वर्नन

दिल की जकड के बस किया, महबूबों के वैन ।
यह कुतवाली कर रहे, इस्क सैन के अैन ॥१८॥

दूत वर्नन

चितवन टेढी बक हैं, यह कुतवाली दूत ।
आशिक मन की गहत हैं, हुक्मरवा मजबूत ॥१९॥

भाट वर्नन

भाट नागरीदास नृप, इस्क शानशा हेत ।
सब जग मय जाहिर किया, इस्क निमन रस केत ॥२०॥

हस्ती वर्नन

इस्क मदान्त मत्तता, सोई मत्त गयद ।
लाज अगड सी नहि रुकै, तौडै सकुल फद । २१॥

अश्व वर्नन

मन तुरग हैं इस्क को, पहुचै जाय तुरत ।
महबूबों के नगर में, फिर-फिर जात फिरत ॥२२॥

रथ वर्नन

करै मनोरथ मिलन का, सोई आशिक रत्थ ।
शिर के पावौ सीं चलै, जब वे पावै पत्थ ॥२३॥

हरोल वर्नन

करै हरोली इस्क की, नैन सैन मधि खूब ।
तीखी चितवनि भाकि कै, फते करै महबूब ॥२४॥

सेना वर्नन

राग रागिणी इस्क की, चतुरगिनि सैनाह ।
घायल सुन मन होत हैं, कर सायल बेनाह ॥२५॥

नकीव वर्नन

आशिक तटफ के दोल यह, मानीं कौन नकीव ।
अहतमाम करि अनख मी, इस्क अदव तरकीव ॥२६॥

कोश वर्नन

आशिक का सर्वस्व हैं, महतुवौ के चित्त ।
तन-मन की पोखें सदा, यह ही याके वित्त ॥२७॥

मेघ वर्नन

इस्कराज के राज मैं, अमुवनि जल को मेह ।
वासो सब वन हरित हैं, या सौ सूकत देह ॥२८॥

पवन वर्नन

वेपरवाई पवन हैं, आशिक दिल भकभोर ।
कहर खुदाई का चला, अजब हवाईतोर ॥२९॥

वाग वर्नन

हुस्न वगीचा इस्क का, छवि पर भवर लुभाय ।
वही तजल्ली ज्यान की, मेरे जिय अति भाय ॥३०॥

कैदी वर्नन

आशिक कैदी इस्क का, पडी जुल्फ जजीर ।
सूता मिजगा तीर पर, ल्याता चित नहि पीर ॥३१॥

खेमा वर्नन

महवूवौ की कीरति, खेमा तने उत्तग ।
इस्कराज के रहन के, रगे रग सुरग ॥३२॥

फल स्तुति वर्नन

इस्क गहनशा को जु यह, जलवा कियो बनाय ।
चहत मरातव इस्क सौं, तो पढइहि चित लाय ॥३३॥

कवि मन-भाव वर्नन

नग घर लखि चित अटक के, परचो गिरचो मधि फद ।
ज्यौ वालक लड वावरो, चहत खिलाना चद ॥३४॥

र काल पैताली उगनीस सै, प्रथम चैत्र कुजवार ।
१६८५ ऋतु वमत पून्यौ सु तिथि, कीनों ग्रन्थ उचार ॥३५॥

पुष्पिका - इति श्री महाराज जवानसिंहजी कृत जलवय शहनशाह इस्क
सपूर्ण । सवत १६४५, द्वितीय चैत्र शुक्ल ३, शनौ । लि० कवि जयेन,
कृष्णगढ मध्ये । श्रीरस्तु । शुभ भूयात् । श्रीरस्तु ।

२५२४. ७६६८ तिल-शतक
(गाल और चिबुक पर ललित तिल के विषय मे विविध मनोरम कल्पनाएं)

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ अथ तिल सत लिख्यते । श्री जुगतराइ कृत ।

(दोहा)

गोरे मुख परि तिल लसै, ताहि करू परनांम ।
जानी चद विछाय कै, वैठी सालिगराम ॥१॥
छत्र तरौना लट चमर, गाल सिंहासन साज ।
सोहत तिल महाराज ज्यौं, अग सुदेस रसराम ॥२॥
व(वो)यौ बीज सिंगार तिल, तिल कपोल छवि खेत ।
लचि रुमाच अकुर उठे, पिय तन मैं किह हेत ॥३॥
मद हसन दुति दसन की, तिय कपोल छवि लेत ।
मुख बाटै तिल चावरी, नैन वधाई देत ॥४॥
पानिप भरचो कपोल विधि, तह तिल घरचो बनाइ ।
मुख लावन नहि पावई, मन चैटी मडराइ ॥५॥
क्यो न होइ प्रभु जगत के, सपति सुखनि निधान ।
या मुख सै द्विजराज को, कीनौ है तिल दान ॥६॥
तेरे तिल कौं तनक लखि, पैठि गयी मन अघ ।
डारत वार सिवार करि, परचौ नेह कै सिंधु ॥७॥
देखि रहत आधीन ह्वै, पलक न करत सलाम ।
कारे तिल कौं चाख कै, लोचन भये गुलाम ॥८॥
बरुनी तरकस दुह दसा, भुव धनु लोचन भाल ।
अलक सैल अति लसत है, तिल कपोल परि टाल ॥९॥

और जुवेभी राखिए, वान गडत है जाइ ।
 तिल वैभी उलटो गडे, नैन वान में आइ ॥१०॥
 सुमन वसावत तिलन की, यह जानन सब कोइ ।
 तिल जु वसावत सुमन की, नेह नवेला होइ ॥११॥
 तिल चारौ पानिप सलिल, अलप फंद पग्जार ।
 मन पखी गहि गहि किते, डारै श्रवन मिडार ॥१२॥
 चिवुक डिठोना विवि कीयी, डीठि लागि जिन जाइ ।
 वह तिल जग मोहन भयी, डीठिनि लेत लगाय ॥१३॥
 कर्ना सकुचत हं सुन्दरी, घू घट सौ मुख काडि ।
 शशि सम तेरी मुख तुल्यी, भयी एक तिल वाडि ॥१४॥
 तिय कपोल पगि तिल लसै, यह जानी मति कोइ ।
 सोम अरु मै शीत निशि, रही सकुचि कै सोइ ॥१५॥
 ज्यौ निसि दिन शिव कै सदा, शिवा रहत है सग ।
 त्याही मुह परि तिल जु है, गगि कै निगि अरधग ॥१६॥
 मुख बनाइ विवि देनि कै, रीझि नु भयी अचेत ।
 केस लिखत लेखनी छुटी, छोट चिवुक इह हेत ॥१७॥
 द्विग देखत अगि चादनी, गयी जगत अधियार ।
 या तिल के उदये सुनत, भयी सकल उजियार ॥१८॥
 काम जारि क्रिय भगम शिव, बिन्ही मानत नाहि ।
 जानत है जीवत रह्यौ, नुख तिल कबैला माहि ॥१९॥
 पून्यौ मुख गगि चादनी तम निशि अरु कहा जाइ ।
 सिमटि सकुचि तिल ना मिलै, सरन रह्यौ है प्राइ ॥२०॥
 अलक खुली लै काम कीं, भई खेल की चाइ ।
 टारै टारै न गैद तिल, परी चिवुक की गाइ ॥२१॥
 तिय कपोल कचन तुला, एक पला तिल डारि ।
 तोलन कौनहि पाईयै, रह्यौ बिरचि विचारि ॥२२॥
 रूप सिधु में वहत है, मत कोऊ तहा जाइ ।
 या तिल जलाद पथ रहै, गाल कहुर दरियाव ॥२३॥

रमना रस अधरन परस, द्विगन रूप मन गाति ।
 सवन देत है सब कछू, तिल चितामनि काति ॥२४॥
 नित्य कपोल परि निल लसै, चमकत वदन अनूप ।
 मानों दामनि मैं लसै, महादेव की रूप ॥२५॥
 इद्र धनुषि सोड आड है, हसनि दामिनी देह ।
 लट धुरवा तिल गाल परि, मन मोरन की मेह ॥२६॥
 मन लोगी आरन कीयौ, चिबुक गुफा में जाड ।
 रह्यो समाधि लगाड कै, तिल सिल द्वारे लाइ ॥२७॥
 मुग्न चदहि निज जानि कै, तिल सिंगार रह्यौ आनि ।
 हमनि आपु ही हाम रस, वस्त्री निकट हित जानि ॥२८॥
 वेनरि मोती भीत मन, कपै दयौ लटकाइ ।
 तिल वसो लट तावनी, गह्यौ अनत क्यों जाइ ॥२९॥
 सोभिन तिल जु कपोल परि, मोपै कछ्यो न जाइ ।
 जानत हीं मुख कमल परि, भवर रह्यौ ठहगड ॥३०॥
 अन्य तिलक के खडन कीयै, होड चीकनी देह ।
 अंसो तिल जु कपोल परि, देखे लगे सनेह ॥३१॥
 चिबुक कूप रसरी अनिक, तिल सुचि रस दग वेलि ।
 वारी वार सिंगार की, सीचै मनमथ बैल ॥३२॥
 अलग डाम तिल गाल परि, आमुन की परवाह ।
 नीदहि देत तिलाजुरी, नैना तुम्ह दिन नाह ॥३३॥
 नित तिल सालिगराम को, असुवन न्हावत नैन ।
 मागत पलक प्रनाम करि, पै पिय देखन चैन ॥३४॥
 मुख शशि धू घट मै दुरै, यो क्यों मुहि अभिलाखु ।
 तिल जु गाठि सिंगार की, चोरि ले रह्यौ काख ॥३५॥
 तिल कपोल परि सोहियै, यौ मति जानै जीय ।
 तिय हिय लोचन तारिका, देखनि निकसी पीय ॥३६॥
 पानिप भरचौ जु चिबुक यह, मुर सिरज्यौ जगदीस ।
 तिल नहि तामै देखीयै, बूडे मन को सीस ॥३७॥

तेरे मुख को देखि कै, कवल परचौ जुल जाइ ।
 और जु तिल ही हाँस करि, अलि राख्यौ बैठाइ ॥३८॥
 तेरे मुख तिल होड गगि, कालिम लई लगाइ ।
 नाम कलकी ह्वै गयौ, वढे घटे पछिताइ ॥३९॥
 अलक डोरि वन सीस तिल, छवि जल चिबुक सु ताल ।
 रूप चटोरा मीन दृग, आइ फसै ततकाल ॥४०॥
 काजर दृग रजक भरे, अलिक फिरंग वढूक ।
 तिल गोली मन लच्छि कौं, मारै मदन अचूक ॥४१॥
 तिल वैदी लट ए करी, विधि कीनी यह रीति ।
 गाल पटा मैं लिखि दई, मुख कौं दस दिसि जीति ॥४२॥
 मन मैं मन चितई जवै, करौ दसन खत गाल ।
 तिल न होइ इह स्याम जू, नील परचौ तिह काल ॥४३॥
 वैनी तिरवेनी वनी, तिह मनमथ अन्हवाइ ।
 इक तिल के आहार सौं, सब दिन रैन बिहाइ ॥४४॥
 तिलनहि मुहर बनाइकै, मुखहि दई विधि आप ।
 तासौ सबके दृगन परि, करी तारिका छाप ॥४५॥
 इह असौ वचनन करत, मुहि लाग्यौ वकवाद ।
 तिल तरुनी के चिबुक मैं, कवि रसना रस स्वाद ॥४६॥
 मृग मदनाहिन मगन मैं, दूढत है दिन राति ।
 तिल तरुनी के चिबुक मैं, सोई मृगमद जाति ॥४७॥
 मुख तिल लख्यो बनाइ विधि, ताहि न जानै कोड ।
 एकै अक्षर प्रेम को, पढै सु पडित होइ ॥४८॥
 काजर कजरोटिनि मैं, लीजै दृगनि लगाइ ।
 इह तिल काजर चिबुक मैं, तह दृग लागै जाइ ॥४९॥
 छई रोग मनमैं भयौ, करि देखी सब पूरि ।
 मोती जरचौ मृगांकु तिल, तासौ ह्वै है दूरि ॥५०॥
 होगी खेनै मीन नित, अघर गुलाल सु धारि ।
 तिल चोवा को चह वचा, देखत मन दयो डारि ॥५१॥

सनमुख नैना कवि सबै, लागन कौं ललचाहि ।
 जित कित तै अग लोह ज्यू, तिल चुंदक तन जाहि ॥५२॥
 तिल तारौ चिबुकहि जड्यौ, को नर सकै उधारि ।
 मन की तानी जो लगै, तौ खुलै रूप भडार ॥५३॥
 मुख शशि कौं गोभा करै, उड मोतिन कहू जोति ।
 अग दुति दामनि मेघ तुल, ज्योति परमपर होत ॥५४॥
 तिल तरुनी के चिबुक मै, सो आरसी अनूप ।
 मन मुख देखै आपनौ, रुकै कांम सरूप ॥५५॥
 रती स्याम तिल पाडकै, तुली कनक सम जाइ ।
 देखौ रती कपोल की, अतुल भई तिल पाइ ॥५६॥
 विधि कपोल टिकिया करी, तिहि तिल धर्यौ वनाइ ।
 तौ मन छुवित फकीर ज्यौं, दिकी रह्यौ है लाइ ॥५७॥
 और कसोटी परि लगै, कचन रेखा जागि ।
 तिलक कसोटी रीझि कै, कनक चिबुकि रही लागि ॥५८॥
 अग ललाट नामिक तिलग, करनाटक कहू आन ।
 सहित देस मुख दुरत है, देखति हिम्मति खान ॥५९॥
 और अग सब छाडि कै, कान कुठारी ताइ ।
 तिलक लक परचौ चिबुक मै, लखे गात विधि लाइ ॥६०॥
 और अंग सब छाडि कै, तिल ही सौं करि प्यार ।
 साधि कियो विधि चिबुक मै, ममता की अनुस्वार ॥६१॥
 तिल गुटिका तिय चिबुक मै, जित जानै तित जाय ।
 नैन पैठि तिय पैठि कै, मन मै पैठै आइ ॥६२॥
 तिल सुनु कु जन तिलक पर, जिन अँखियन मै जाय ।
 ते अखीया तहई वसै, कोऊ न सकै बताइ ॥६३॥
 तेरौ तिल तिरलोत्तमा, तिल तोले स मिलाय ।
 उह उठि कै सरगहि गया, उह भुवि रह्यौ थिराइ ॥६४॥
 सिद्धि पीठ मुख शशि कीयौ, ओड्यौ तिल जगि जाम ।
 काम जपै जप कामना, शिव सौं करै संग्राम ॥६५॥

तिय कौ मुख सुदर वन्यी, विधि फेरची पन्गार ।
 तिल जु बीचि कोविद लहै, गाल गीलइ कठार ॥६६॥
 तेरे मुख परि तिल लसै, सु मेटत है दुख हृद ।
 जानौ बेटा भान कौ, गोद ले रह्यो चद ॥६७॥
 जिय जु हुती सो तिल भगी, निल सु ह्वै गयो जीउ ।
 पीय कौ तिल तिल जीय कौ, तोही लागै पीव ॥६८॥
 वैनी नदी सिंगार की, लट विरहा दुहू ऊर ।
 चिबुक खेत तिल बीजवे, सीचं काम किसोर ॥६९॥
 जग मोहन कीजै सु तिल, दयी विधाता तोहि ।
 जब जब आखिन मै परे, मोहि लेत है मोहि ॥७०॥
 चावर हैं गोहू रहै, कवहू उरद ह्वै आइ ।
 कवहू मो द्विग चिबुक निल, सगसो देइ फुआइ ॥७१॥
 या मिसि पीय कपोल को, कहै आगुरी लाइ ।
 अधर मिठाई लेन को, चैटी लागी आइ ॥७२॥
 तिलक डरी द्विग पात है, नासा तिल की फूल ।
 तिलक चिबुक सोई तिल फल्यौ, इहै नेह कौ मूल ॥७३॥
 चिबुक सरूप समुद्र मे, मन जान्यो तिल नाव ।
 तरन गयो बूझ्यौ तहा, नेह कहर दरीयाव ॥७४॥
 नाकु हैकुरी डोल तिल, अलिक ले जकरि मैंन ।
 चिबुक रूप की गाड परि, पावत पयी नैन ॥७५॥
 तिल तरुनी के चिबुक पर, का पै बरन्यौ जाइ ।
 वचन सुननि को निकट मनो, कोइल वैठी आइ ॥७६॥
 तन कचन हीरा दसन, विद्रम अधर वनाय ।
 तिल मनि स्याम जरी तहा, विधि जरीयाउ जराइ ॥७७॥
 वदन चद मगल अधर, बुधवानी गुरु अग ।
 श्रुक दसन शनि तिल लुकै, अवर पिय रवि सग ॥७८॥
 च्छाडि च्छाडि कै लेत है, चैटी तिल मुख माहि ।
 मुख तिल मन चैटी गही, क्यौहू छडै नाहि ॥७९॥

नैना उधरत देखीयै, मुख तिल नैकु विथार ।
 मूदेउ है तिल पूर के, होत सकल अवीयार ॥८०॥
 मो मन सरजी या भयी, छिनकु दुबी छिनु चैन ।
 मारति विस तिल चिबुक कौ, ज्यावत अमृत वैन ॥८१॥
 विधि तिल कीनीं चिबुक पर, रमन दिठौना दीन ।
 देखत तिल ज्यौं टरत नहि, सब कौं टोना कीन ॥८२॥
 रोमावलि कीनीं झुकुटि, अलिक सीम छवि राशि ।
 तव तै तिल मीरी भयी, चिबुक गाड वदि पासि ॥८३॥
 सैन वैन विभचार है, मुख है धाई भाव ।
 तिल आपन सिंगार रस, सकल रसनि कौ राव ॥८४॥
 चैनी रज नैनी तुरग, लट वैरख फहगाइ ।
 पोति छरा नैना लीयै, तिल सिंगार रस राइ ॥८५॥
 धवद एहैं छोडि कै, मुकट दये लटकाइ ।
 तिल कलियुग के राज इह, दई अनीति चलाइ ॥८६॥
 टटीया अगूर निषीरि भूव, लट छैं छगीया काम ।
 तिल जु चिबुक पगि लसत है, सो सिंगार रस धाम ॥८७॥
 हाम सेत दुति पीत मुख, अधर लाल तिल स्याम ।
 रग परस्पर छवि बडै, राशि तै मुख अभिराम ॥८८॥
 हास सतोगुन रज अधर, तिल तम दुति चित रूप ।
 मेरे हग जोगी भए, लाइ समाधि अनूप ॥८९॥
 मद हसन दुति दामिनी, मेघ तिलक तिल नित्त ।
 ज्यौं गरजै वरसै नही, तसै चानक चित्त ॥९०॥
 अधर विव दारिम दसन, तिल जामनि सरसाइ ।
 रूप लावणि मा सग कछू, स्वाद न वरन्यौं जाइ ॥९१॥
 वदन सरोवर रूप की, तिल मन तहा तगाइ ।
 चिबुक गाड के भवर मैं, परचौं न निकस्यौं जाइ ॥९२॥
 मोहन काज हकीम कौ, काम दयौ तिल तोहि ।
 एके तिल के देखतैं, मोहि लेत है मोहि ॥९३॥

तिल निरख्यौ तिय वदन परि, इम लाग्यौ जिम सैल ।
 अब औपध कौ चाहीए, वाही तिल कौ तेल ॥६४॥
 मेरे तिल कौ ध्यान धरि, गयौ गौर महियार ।
 पूरिव है तिल त्वै गयौ, जग्यौ आप अधार ॥६५॥
 वरनी तरकस भुव धनुष, तीछन वान सु नैन ।
 अलक सैल ढाल ले, शिव सनमुख भयौ मैन ॥६६॥
 कुकम पोरस इद्र धनु, हसति दामिनी देह ।
 लट धुरवा तिल गाल पर, मनो मोरन कौ मेह ॥६७॥
 छवि पानिप सो मुख भरचौ, मगसि रज्यौ जगदीस ।
 तिल नहि तामै देखियै, बूडे मन को सीस ॥६८॥
 मुख तरुनी कै तिल लमै, मै देख्यौ इहि भाय ।
 मनो लुबध छवि वाम सो, कमल भौर विरमाइ ॥६९॥
 तिलहि देखि बूडत कमल, तिल सो बहुत रिमाइ ।
 जो ते मुख से हम करे, तिल काहे न वसाइ ॥१००॥
 करनाटी लागी रहै, नासिक री भी मित्त ।
 सबको छाडि तिलग मै, करी छावनी चित्त ॥१०१॥
 चिबुक सीप समुद्र में, मन जानै तिल थाह ।
 गयौ आसरी नैन कौ, लागि गयो उहा ग्राह ॥१०२॥
 तिल सुनाल सो चित्तु है, सोभा यह अभिराम ।
 चिबुक गाड मै बैठि कै, बन्यौ जुलाहे काम ॥१०३॥
 चिबुक गाड गड हाकियौ, तिलह धनी ठहराइ ।
 मन कुजर को गाहते, इह विधि मनमथ राइ ॥१०४॥
 चिबुक गाड मै रूपनिधि, काम क्रिपन रह्यौ धारि ।
 तिल तह वच्चा व्याल को, रह्यौ कौंडरी मारि ॥१०५॥
 चिबुक देश मै काम ठग, चख तिल लाइ खारि ।
 हासी फासी मेलि कै, देत गाड मै डारि ॥१०६॥

२७७२. ६३३३ माधवानल कामकंदला कथा चौपई

प्रारम्भ - श्री गणेशाय नम । अथ माधवानल की कथा वार्ता लिख्यते ।

चौपई

प्रथम पारब्रह्म कु परण । पुनि कछु जगत रीति रस वरन ॥
पारब्रह्म पर पूरण स्वामी । घट घट रहै सु अंतरजामी ॥
घट घट रहै लखै नहि कोई । जल थल माहि सर्व मै सोही ॥
जाकौ आदि अत नहि ग्यानी । पडित कथा ग्यान सौं मानी ॥
ग्यानी होय-स गुर मुख धावै । खोजी होय-स खोज बतावै ॥

दोहा

मन वच सोवत चलत क्रम, जगत चीतवत नीत ।
सग तग्यी डोलत फिरत, सो कत धरै जु चित्त ॥१॥

X X X X X X

चौपई

र का सनै नवसै ईकानवा आहि । कर कथा अव बोल ताही ॥
६६१ येही बात सुनै सब लोगा । कर कथा शृ गार वियोगा ॥
(हिजगी) कछु अग्ने कछु पग्के चौरै । जया सकति करि अक्षर जोरे ॥
कछु करु विरह की रीति । माधौ कामकदला प्रीति ॥

दोहा

माधोनल सब विधि चतुर, कामकदला जोग ।
कर्त्ता कर कथा आलम सुकवि, उतपति विरह सजोग ॥४॥

अन्त -

चौपई

कथा चौपई आलम कीनी । पहिले कथा श्रवन सुनि लीनी ॥
कहु कहु बीच दोहरा पारे । कहु कहु यानि सोरठा घरे ॥
सुनत कथा यह सबै सुहाई । अति रसाल पडित मन भाई ॥
प्रीतिवत सुनै जो कोई । बढै प्रीति हियरे सुख होई ॥
कामी रसिक पुरुष जो सुनै । ते यह कथा रैन दिन गुनै ॥

दोहा

पडिन बुधिवता गुनी, कविजन अछिर टेक ।

नाम निमत गुन उच्चरै, कहि कहि कथा अनेक ॥६२॥

पुष्पिका :-

इति माधोनल की कथा सपूर्ण । लिखित मिथ्र पीहीकर,
रोसी मध्ये । श्रुत पठनार्थ । मामानामासोत्तममास पोषमामे वृष्ण-
पञ्चे, तिथी ५, रविवासरे । घटि वडि होय तो सोवियो । सवत्
१८८१ । श्री । श्री । श्री ।

२७८७.

८०८२

रस प्रबोध

प्रारम्भ :-

अथ मध्या धीराधीर लछन *

मध्या धीरा धीर वह, वचन कहै कटु गेय ।

मान करै को पीय सो, गए सजल द्रग होय ॥१६॥

अथ प्रोढा धीरा लछन

रति उदास प्रगटे न रिस, प्रोढा धीरा जान ।

मान जनावत है यहै, मुख रुखी मुमकान ॥२०॥

अथ प्रोढा अधीरा लछन

डर दीखाय वर्जित करै, प्रोढ अधीरा धीर ।

सखी सुखदाई पीपती है, देन मुमन की मार ॥२१॥

अन्त -

स्थाई सचारी सु औ, विभावदि सब गीत ।

वरनै नहि विस्तार सो, अथ वदन के भीत ॥२११॥

आधारग्रन्थ

कियो भानु रसमजरी, रसतरंगिनी लेख ।

यह प्रबन्ध भाषा कीयो, ताही को मत देख ॥२१२॥

कवि-वश

कवि कुल मडन वृन्द जिहि, प्रपितामह अभिराम ।

वर्णन

सुपितामह वल्लभ मु कवि, पीता सनेहीराम ॥२१३॥

* ग्रन्थ का प्रारम्भिक अंश अप्राप्त है । अक्षरों पर स्याही फिर गई है, अतः प्रारम्भ के प्रारम्भ पत्र की लिपि सुवाच्य नहीं है ।

तिहि सुत कवि दोलत कीयौ, लछन लछ समेत ।

रस प्रबोध दीपनाम, कवि सोध लेहु कर हेत ॥२१४॥

६ ६ ८ १

रचनाकाल सवत षठ रसि दिसि (स)सि^१, गुरु असाढ ऊचार ।

१८६६ वद दसमी भो ग्रथ यह, कृष्णदुर्ग अवतार ॥१२५॥

पुष्पिका - इतिश्री कवि दोलत विरचित रस प्रबोधाख्यीय प्रबध ।
श्री श्री । सवत १८६६ का जेठ सुद १२, सोमवार, लीखी कीसनगढ
मे म्होणोत सोभागसीधजी परत सु । द० कीलाणदास कु भट । श्री
सुभ भवतुमस्तु ।

२८०५. ६४३१ (३) रासक-रत्नावली

प्रारम्भ - श्री ब्रजमोहन जयति । अथ महाराजकवार श्री सावतसिधजी
कृत रसिक-रत्नावली लिख्यते ।

दोहा

श्री मोहन गुरु प्रेम वपु, बदीं पकज पाय ।

मोपे पूरन करि कृपा, दीने सत बताय ॥१॥

तेई हरिजन इष्ट मम, तिनही कीं सिग नाऊ ।

तिनही के जु प्रसाद ते, तिनही कौ जस गाऊ ॥२॥

अथ वैश्णव सहज-स्वरूप वर्णन

कवित्त (सर्वैया)

माल गरै तुलसी की लखै हिय ते मुक्तावलि जाल विसारी ।

गूदर पै केई कचन के पट टटी को पीन पै काहि उचारौ ॥

जीरन जूती घिसी फिरै पायनि तापै सिंघासन फेरि कै डारौ ।

और वखानौ कहा मू ड माधुरी स्वांमी की चादि पै चदा कौ वारौ ॥३॥

१ यहाँ दिशा का अर्थ ८ लिया गया है । लिपिकर्ता से 'ससि' का एक 'स' लिखने में छूट गया है ।

अथ अनुराग सहित स्वरूप वर्णन
कवित्त

लोचन सजल लाल धूमत त्रिसाल छके,
चलनि मराल की-सी ठाड़े गोम तन में ।
उज्ज्वल रस भीने ताकें दीने गर वाही,
रहै प्यारी पीउ दोउ हीये मु दर सदन में ॥
पुलकित गात गिरा गदगद रहन,
नित धारै छाप कठ श्री तिलकनि जपन में ।
कहा भयो कीने जप तप व्रत दान न्हान,
जो पै रूप माधुरी बसी न श्रेयी मन में ॥४॥

अन्त -

दोहा

रसिक दसा बरनी इहै, अद्भुत प्रेम उमग ।
सबनि दुहाई इष्ट की, मुनि कीज्यो मतसग ॥१७॥
जो वाचै श्रवनि सुनै, रीझि होय अनुरक्त ।
ते मोकी कहियै इन्हें, उषजो अति हरि भक्त ॥१८॥
कही रसिक रतनावली, पूरन प्रेम प्रकास ।
सुरत हिये ब्रज वास की, धारि नागविदात ॥१९॥

रचनाकाल सतरै सै वझासीयै, भादों सुदि भृगु वार ।
१७८२ तिथि परिवा कीनी इन्हें, लीज्यो सन सुधारि ॥२०॥

कवित्त

केऊ करी विष्णु सेव केऊ पूजै देवी देव,
केऊ चाहै मुक्ति केऊ उदर नि वासना ।
आठी सिद्ध नव निध चाहत अनत जन,
केऊ चाहै पुत्र केऊ निज घर नारना ॥
मेरे दईव तन उज्ज्वल तिलक कीने,
भीने रस उज्ज्वल श्री जुगल उपासना ।
ताकी पद रज सौं निहोरि कर जोरि मार्गौ,
देह प्रेम भक्ति श्री छुडाय विषै वासना ॥२१॥

पुष्पिका -

इति श्री रसिक-रतनावली संपूर्ण ।

२६२२. ७८५६ संग्रामसार

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ श्री गणेशाय नम ॥ श्री ' ' ' नम ॥

अथ ग्रंथ संग्रामसार लिख्यते ।

छप्पय छद

दुरद वदन जय सदन विघन वर ठडन खडन ।

शु डा दड प्रचड दनुज हर सिव कुल मडन ॥

अरुन वरन भय भीत हरन सुमिरन तुव जिज्य ।

भाग्य भाषा करन विवधि वर भारति दिज्य ॥

उदांम रोति पद वर्न गुन, वध छद रचनां सुघट ।

हे रव हुकम किज्जे कहीं, जुद्ध कुद्ध सैनां सुभट ॥१॥

X X X X X X

शब्द योग नय शेष न्याय गौतम कणादि मुनि ।

सांख्य कपिल र व्यास ब्रह्म पथ कर्म नु जैमुनि ॥

वेद अग जुत पढे सील तप रिषि वसिष्ठ सम ।

अलकार रस रूप अष्ट भाषा कवित्त छम ॥

तैलग वेड नाटीय द्विज, जगनाथ तिरशूल वर ।

साहिजिहान दिल्लीस किय, पडितराय प्रसिद्ध घर ॥४॥

दोहा

उनके पग कौ ध्यान घरि, इष्टदेव सम जानि ।

ऊकति जुकति बहु भेद भरि, ग्रंथहि कहौ वखानि ॥५॥

अथ राज प्रससा

छप्पय

पुहमि मध्य ब्रह्मर्षि देस विच मत्स्य देम तहें ।

अमरावति आवेरि वसे रवि वस भूप जहें ॥

धर्म सकुचि कलि काल रह्यो उहि ठौर विगति भय ।

जस प्रताप घन अधिक वसे सब वरन हरख मय ॥

जप जग्य दान तप भोग बहु, जथा जोग सबही करत ।

भय पाप असूया ईरपा, मद चिंता भुक्ति न सकत ॥६॥

तहाँ भूप प्रथीराज भयउ कूरम कुल मडन ।
 भक्ति जोर हरि रूप खग दुज्जन दल खडन ॥
 ताकौ सुत पञ्चड भूप भागमल भय घर ।
 जित्ति पुहमि सब पाय नाँम किय मिर टुँडाहर ॥
 तिहि पुत्र भूप भगवत जिन, करि वरवर गुजरात लिय ।
नृप माँन जित्ति सतसठि समर, उदै अस्न लग तेज किय ॥७॥

ताकौ सुन जगतेस भयउ दूजौ आखडल ।
 हनि पठाँन दल प्रवल कित्ति किन्नी महि मडल ॥
 ताकौ सुन महासिध जोर जित्ते ति दुग गढ ।
 सुरपुर सम अरि नगर ढाहि किन्ने ति तुरत मट ॥
 राधाधिराज जयमिध भूप, तास पुत्र अवा नगर ।
 जिन खग जोर दिह्योस घर, मेरु मलय किन्ने वगर ॥८॥

अपि च .

जे मित मोरी पाँन वटनु बाजीगर फेरय ।
 इमि साहिन जयनाहि थपै उथ्यपै जु हेरय ॥
 जिहिँ सेवा की धाक कपु सागर गिरवर घर ।
 वावन गढ कौ ईस गह्यौ जिन सग बाहु वर ॥
सुजहि भजाय दारहि पकरि, किय अवरँग दिह्योस जिन ।
 जयसिध सिध परचड भय, टुँडाहर पति बस इन ॥९॥

तासु तनय अव रामसिध नृप सब भूप नु मनि ।
 उत्तर पूरव जीति लई काविल पठाँन हनि ॥
 तजति गम्भिनिय गम्भ सुनत जिहि हथ्य खग जुत ।
 सिवा सराणि रखि तहाँ जगत किन्नड अति अद्भुत ॥
 तिहिँ तेज पु ज पर जरत पर, विनु पर इक पर गति सगत ।
 राजाधिराज कूरम कलस, टुँडाहर घर जग मगत ॥१०॥

मत्त दुरद वर बाजि साजि कविराजनु दिज्जहिँ ।
 नहिँ अदेय जग वस्तु कछुक अक्षर रस भिज्जहिँ ॥
 अलकार सगीत कावि नाटिक रु व्याकरण ।
 पड दरसन नय धर्म कला चवसठि वचिषण ॥

निज कुल मुभाइ इण अधिक रुचि, राँमसिंघ नृप कै सुचित ।
भारथ्य जुद्ध भाषा करन, हुकम कियउ उन लोक हित ॥११॥

दोहा

हुते तहाँ पडित बहुत, भाषा कव्यो अनेक ।
 दुहु ठीर परवीन नृप, देख्यो कुलपति एक ॥१२॥
 तब नृप कुलपति मिश्र की, कियौ बहुत सनमाँन ।
 कह्यौ जुद्ध भाषा करौ, दोण परब परमाँन ॥१३॥
 राँम हुकम लहि सुधि किये, गुरु पडित अवतस ।
 ग्रन्थ रीति प्राचीन लखि, कवि निज वरनत बस ॥१४॥

अथ कवि-वस वर्नन

छप्पै

माथुर वस प्रसिद्ध मिश्र कुल अभैराज भय ।
 सब विद्या परवीन वेद अध्येन तपोमय ॥
तारापति तिहि पुत्र विप्र कुल जिमि तारापति ।
 तास तनय भय लाल ब्रह्म विद्या विचित्र गति ॥
हरिकृष्ण कृष्ण भजि कृष्ण भय तामु तनय भागवत मग ।
 भय परसराम ताकौ तनय सुर गुरु सम भजि राँम पग ॥१५॥
 परसराम को पुत्र प्रगट कवि पडित कुलपति ,
 अध्यापक व्याकरण न्याय पथ ब्रह्म कर्म तति ॥
 रुचि भारत भागवत कर्त आचरण सु मृत मत ।
 सुखमय लगि साहित्य मुख्य किन्नउ बहु समत ॥
 नर नाग देव बहु देस की भाषा करि काँपना कुसल ।
 सग्रामसार तिन ग्रन्थ किय राँमसिंघ नृप हुकम बल ॥१६॥

दोहा

कवि कुलपति को आगरे, गुन आगरे निवास ।
 जहँ दोलति दिल्लीस की, बिहरति चित्त हुलास ॥१७॥

अथ ग्रन्थ प्रस्ता

छप्प

द्रोण परव की वात रचिय निज जुगति उकति भरि ।
 पिंगल मत के छंद नऊ रस अलकार धरि ॥
 धरम अरथ अरु काँम मोख साधन पोथी यह ।
 कृष्ण कथा सब ठीर बहुत विवि क्षत्र धरम जह ॥
 जिहिँ पढत मुनत पातक नसै, कातरता आवै न चित ।
 संग्रामसार तिनि अथ किय, कवि कुलपति नृप वस हित ॥१८॥

दोहा

रचनाकाल सत्रह सै तेतीस सम, गुण जुत फागुण मास ।
 १७३३ कृष्ण पक्ष तिथि सप्तमी, कियो ग्रन्थ परकास ॥१९॥

छप्पे

जय जय देवकी तनय जयति ब्रज मंडल मडन ।
 जय गोवर्द्धन धरन जयति आखडल खडन ॥
 जय काली अहि दवन जयति केसी हि पछारन ।
 जय अघ अजगर हरन जयति विधि गर्व विदारन ॥
 महि दुष्ट भूप दौनव ति सब, मारि दूरि किय भार भुव ।
 निज भगति देहु कुलपति कहतु, जय जय जय हरि सरण तुव ॥१३५॥

अन्त -

दोहा

वाद अस्त्र विवि पन्हिरन, द्रौणि जुद्ध सत रुद्र ।
 परिछेद अतिम कह्यौ, कुलपति ग्यान समुद्र ॥१३६॥

पुष्पिका -

इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजा राँमसिंघ देवाज्ञया
 कुलपति-मिश्रेण विरचिते द्रोणपरव भाषा संग्रामसार ग्रन्थ नाम
 षोडसौ परिच्छेद ॥१६॥ ग्रन्थ संपूरण समाप्त ।

पोथी लिखी सुभ स्थान श्री सवाई जैपुर । महाराजाधिराज
 श्री सवाई जैसिंघजी के पुस्तकखाने । लिखत कवि पूरण, जाति
 मागध । मिति जेठ मासे शुक्ल पक्षे ११, रविवासरे, सवत १७६४
 का । शुभ भवेत् कल्याण ।

श्लोक

जादस पुस्तक दृष्ट्वा तादस लिखित मया ।
यदि सुद्धमश्रुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥१॥
कल्याणमस्तु । श्री । श्री । श्री । श्री । श्री ।

२६२४. ६८८६ (१) संभरि जुद्ध

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ श्री गणेशाय नम । अथ संभरि जुद्ध लिख्यते ।

दोहा

गुरु गुर्विद गनपति गिरा, गवरि गिरीस मनाय ।
गावत गुन जयसाह कौ, सुकवि कलानिधिराय ॥१॥
हुकम वहादुरसाहि कौ, आयौ सैद हुसैन ।
हुते भूप जयसाह जह, संभरि सर सजि सैन ॥२॥
उन अग्नि सैद हुसैन अरु, इतै भूप जयसाहि ।
मच्यौ दुहुनि संग्राम जह, आयै अमर उमाहि ॥३॥

छंद त्रिभगी

सैदनि दल हके समरनि वके दुदभि डके जोर दियै ।
धर होत धमके सुरगन सके परम अतके लोक हिय ॥
हय टापन दुट्टे गिरि तट फुट्टे फनपति कुट्टे सहस फना ।
धूली भर जुट्टे अवर घुट्टे पावस छुट्टे मनहु घना ॥
जयसाहि सवाई पर दल घाई अरनि अवाई देखि परे ।
चड्डे दल साजै सगर काजै रवि ज्यों राजै तेज धरै ॥
संभरि सर तीरनि के सरि नीरमनि रगे नीरनि चारु ठये ।
दै दुदुभि धीरनि वके वीरनि कूरम भीरनि होत भये ॥
सेखावत सच्चे पन के रच्चे समर विरच्चे रोस लियै ।
वाकावत वाके दल बल हाके जिरह भनाना के जोर किये ॥
कल्याण पचायन के बहु भाइन कै चित चाइन भट आयै ।
रन अहरन हीरा सैमुख नीरा धरत हमीरावत धाये ॥

सिव ब्रह्म ननै के भट अमन के साथ घनै के दूल हसे ।
 को हे कु भानी मन अभिमानी लहि प्रभु वानी रन वहसे ॥
 वहु सिपहसिलारनि के सिरदारनि मजि कर वारनि रेर करी ।
 पावस घन तूले दल अन कूले मवही पूले निरखि अरी ॥
 नाथावत रुरे 'सगर सूर पन के पूरे उमगि चढे ।
 नर वीर नरुके नैकु न चूके रोम भभूके लेत वढे ॥
 खगरावन खगे खरे उमगे चढि हय चगे खमसि चले ।
 कु भावत कररे तछित अररे दल दल दररे देत भले ॥
 रजपूत अनेरे ओग घनेरे नृप वर नेरे ह्वे उमडे ।
कूरम कुल जाये मुख्य गनाये घन ज्यो आये ते घुमडे ॥

नवकोटि नाइक तहा सहायक भी पर घायक अजित बली ।
 राठोर समाजा ले रन ताजा किय महाराजा भीर भली ॥
 उत घोग्न डारै जोरन धारै मोरन पारै धुकि धाये ।
 सैयद मुख नीके अली अलीकै सदन जीकै विलि आये ॥
 भारी तिहि वेला भी मुख मेला दुहु दल ठेला ठेन मची ।
 कीने भट सेला सेलन खेला भेलक भेला रागि रची ॥
 तह तुररी वज्जे दुदभि गज्जै जगनि मज्जें ढोल दये ।
 सिंधू सुर छाये मारु गाये वोरनि भाये राग भये ॥
 वदी जन कित्तें कहत कवित्तें मुनि भय वित्तें धीर वढे ।
 भट अतर मोदै करत विनोदै त्यो चहु कोदै उकि कढे ॥
 तह तोपे रढ्ढे गोला कढ्ढे धु धरि वढ्ढे नभ मढ्ढे ।
 हय हाथी फुट्टे पस्वर तुट्टे वीरन फुट्टे रन चढ्ढे ॥
 पावक भर जगै वान उमगै आइ विलगै तन दगै ।
 इक प्राननि मुक्कै इक्कै कुक्कै इक्क जुभुक्कै रिस पगै ॥
 इक लै लै वागे घावत आगै लागै लागै बैन कहैं ।
 धगि मसकत पागै खोलत खागै खेलत फागै मन उमहै ॥

इक हृथ्य वरछी वाहन अछी धार तिरछी जोर जई ।
 सो पर उर गछी लखियन चछी ज्यौ जल मछी गरक भई ॥
 तह खग्गा खग्गी केलि उमग्गी अग्गा अग्गी वाह भई ।
 रिस ज्वाला लग्गी जाहर जग्गी मन हुद वग्गी वननि छई ॥
 हुव कट्टा ऋट्टी भट्टा भट्टी मुडनि पट्टी पुहमि डटी ।
 रुडावलि उठी डिठिय रुठी अन्तर दुठ्ठी अति ही नटी ॥
 छूटै घुर चड्डी ज्वाला वड्डी फौजे डट्टी गोलन सौ ।
 गरजै हथनालै अतिहि उतालै झपति भालै भोलन सौ ॥
 तकि लवे पल्लै तुपवकै चल्लै तडपति भल्लै तडित मनौ ।
 वारुद पसारी चहु दिसि भागे भुकति अघ्यारी धूम धनौ ॥
 भट पेलि अरावनि तुरी सितावनी दाबि रकावनि वाग लये ।
 कीने बगमेला कं निहि बेला भेलक भेला आइ भये ॥
 कर खगनि पारै मुडनि भारै समर अखारै खेल करै ।
 वड डील विदारै करत दुवारै मनु घन आरै चीरि धरै ॥
 वके कछवहे परम उछाहे इत चित चाहै काम करै ।
 उत भैद हुमैना की बहु सेना राते नैना जोर लरै ॥
 तह सुभटनि साजी तीरनदाजी मनमुख वाजी पेलि खरै ।
 भालन सौ फोरै वखतर कोरै घनु गुन घोरै सरनि भरै ॥
 पिलि इक हकारै करि ललकारै तेगनि डारै तकि पर कै ।
 इक होत उतारै खजर डारै वजर फारै दरवर कै ॥
 इक गुप्ती वाहै अत्रनि गाहै डीलनि ढाहै धोगन सो ।
 इक सगर कोहै जमघर पोहै प्रान विपोहै जोरन सो ॥
 इक लेत दपट्टै आनि लपट्टै करत भपट्टै पट्टन सो ।
 लै सागि रपट्टै इक अरि डट्टै इक सिमट्टै ठट्टन सो ॥
 इक अत गरट्टै होतन हट्टै घरत मरट्टै मूछन मै ।
 इक घाइ पलट्टै घतत अट्टै दू छन मै ॥

इक तागत गौकै वुगदनि भौकै वकी नौकै इक खुरसे ।
 फरसा भर भोके इकध नौकै मनु द्रुम दौकै मधि भुरसे ॥
 बाहै इक गाढे गहि जम डाढे सो ठिक ठाढे तन पैठी ।
 इक सुभट सम्यानी कोतह खानी कर गहि तानी धर पैठी ॥
 यो हथ्या हथ्यी वथ्या वथ्यी सथ्या सथ्यी सुभट भिरै ।
 तह गजवर चढ्यौ सैयद वढ्यौ फिर तल वढ्यौ रोस निरै ॥
 तिहि तकि किहू दग्यौ तेजनि जग्यौ गोला लग्यौ इक खरै ।
 तछिन खल धुक्किय हाहा कुक्किय प्रानन मुक्किय खेत परै ॥
 तब सब कछवाहनि समर सिपाहनि किय अवगाहनि खेत खरी ।
 हत अत्रनि लेतै सैयद केते लाज समेते सहज अरी ॥
 सभरि सर माहि किते डुवाही कितअ गिराही खाय हहा ।
 जयसाहि सवाई जगमुख दाई इहि विधि पाई जित्ति महा ॥
 तिहि भुव अगि मु डनि औ बहु रु डनि सु ड भुसडनि ढेर परै ।
 तै छिपहिन उडनि श्रोनिन कु डनि कु जर डु डनि रग भरै ॥
 बिकराल कपालनि नाच मच्यौ ।
 अत्रनि जालनि गृह नव मालनि सकर ख्यालनि जोर रच्यौ ॥

छप्पै

तह नचत ख्याल लगो विसाल पलचरनि जाल सग ।
 रचत माल गल चद्र भाल रगि रुहिर ताल अग ॥
 पर कपाल बिकराल ताल दिय अति उताल गनि ।
 लसति लाल पट धरै हाल जुगिनि निहाल मति ॥
 पिय महाकाल की बाल निजि, काली परम खुस्याल तर ।
 विसनेस लाल भुवपाल जह, फते लहिय कर बाल कर ॥१॥

पुष्पिका.-

इति श्री कवि कलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित सभरि जुद्ध
वर्णन सपूर्णम् ।

२६३४. ६७२० (६) सभाभूषण भाषा

प्रारम्भ - ॥ ॐ नम श्री गणेशाय नम ॥ अथ सभाभूषण लिख्यते ।

छप्पय छंद

चंद विराजत भाल गिखा निर्मल प्रकास घर ।
 श्रेय दशा तिहि अग्र भाग सफुगय मान वर ॥
 सहजहि मदन पतग अमित चचल तिहि जारन ।
 अतहकरन अपार मोह तम भार निवारन ॥
 योगेश्वर चित भुवन में, विजयवत आभास घर ।
 गगाधर वदत चरन, जय जय ग्यान प्रदाय हर ॥१॥

दोहा

श्री गिव वदन करि प्रथम, चित प्रसन्न धरि ध्यान ।
 ग्रन्थ सभाभूषण करौ, सुनि सज्जन सग्यान ॥१॥

अन्त .-

कवित्त

चतुर गुनी प्रवीन ज्ञान रस लीन मित,
 विनै करि कह्यो सभाभूषण वनाइये ।
 नाटक सगीत की रहसि अति कठिन है,
 समुझी न परे तातै अरथ पाइये ॥

कर्त्ता

तातै गगाराम कवि कोमल कवित्त वध,
 भापा राग रूप इह सब कौ सुहाइये ।
 पढत सुनत अति चौप चित चाव होत,
 सीखियत सुघर सुबुधि हि वढाइये ॥५६॥

दोहा

कवित्त वध भाषा करि, श्री सगीत मत देखि ।
 नाम सभाभूषण इहै, वधि बल लीनो लेखि ॥६०॥

सवैया

नाटक सगीत नानाय मत रागिनी,
 रुचि सौ सुनत निति मुधा रस णीजिये ।
 हेतु चित चौप सौप सुनत निति सुधा रस खीजिये ।

हैत चित चौप सौं कवित्त वध भाषा करी,
 नाम सभाभूषन गरथ कहि लीजिये ॥
 यामैं राग रागिनी की जाति मय रूप हेत,
 तान ताल ग्राम मुर गुना मुनि रीझिये ।
 गगाराम विनय करत कविजन सुनि,
 वरनत भूले तो मुधारि सुध कीजिये ॥६१॥

दोहा (कवित्त)

र काल सत्रहसत सवत सरव सत्रतुर अविक्त चालीस,
 १७४० कातिग मुदि तिथि अष्टमी वार ग(श)नि प्रजरात है ॥
 हिंदोल की अलाप तैं हिंदोला आय जो ढाले,
 तदी यग के गाय गुनी दीपग जुपात है ॥
 श्री मै इह गुन गुनी प्रगट वचनत है,
 सूको रुख हरयो होत फेरि उलहात है ।
 गगाराम कहै मेघराग को प्रभाव इहै मेघ वरखान,
 घनमाला मजु रस रस रजनीस ॥६२॥

दोहा

सागानयरि सु नग्र मै, राममिह नृप राज ।
 तह कवि जन सव चयन मै, राजति सभा समाज ॥६३॥
गगाराम तह सरस कवि, कीनो बुद्धि प्रकास ।
 श्री भगवत प्रसाद तैं, इह सुभ सभा विलास ॥६४॥

पुष्पिका :- इति श्री गगाराम कृत सभाभूषन रागमाला समाप्त ।

२६३६. १०११६ सभाविनोद (रागमाला-भाषा) -
 (मुखपृष्ठ — पुस्तकमिद भटजी श्री कुसालीरामजीकृत)

प्रारम्भ :- ॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ सभाविनोद रागमाला पायदावेग
 कृत भाषा लिख्यते ।

दोहा

गावत नाचत आपु, हीडौरु मै सव अग ।
 नमो नाथ पैदा कहै, सीस गग अरधग ॥१॥

दृष्टि न आवै अगम अति, मनसा की गम नाहि ।
निपट निकट सगही रहै, वोलेँ घट घट माहि ॥२॥

चौपई

माहिजहा माहिन मन साह । आदिल दाता दीन पनाह ।
दारिद्र जातु लेतही नाउ । धनि सु जनम जे परसै पाउ ॥
गाइ-स्यघ इक घाटे पियै । देखि चरन जन सिगरे जियै ॥३॥

दोहा

साहिजिहा जू अदल बल, परजा करी निहाल ।
दुख भजन गजन अरिनु, मूरति महा रसाल ॥४॥

अथ कवि जाति नाम

मोदक छंद

जाति बस कवि की सुनि लेहु ।
कौन भूमि किहिँ उपज्यौ गेहु ॥
स्वाजा खिजरी जाति बखानि ।
अहमदखेल सु गोतहि जानि ॥
मेरवेग को सगीवेग ।
अकवर साह बधाई तेग ॥
ताकी सुत कवि पैदा भयो ।
जनम अकवरावाँद जु लयो ॥
तिन यह पोथी करी रसाल ।
सब रागनी की गूथी माल ॥५॥

सोरठा छंद

सभाविनोदहि नाम, या पोथी की जानियो ।
पैदा सुख की घाम, जग मोहन दुख हरन यह ॥७॥

दोहा

राग ध्याय मैं कहत हों, सहसकृत तैं लीन ।
कीनी भाषा जोरिकै, समुझै नर परवीन ॥८॥

सुर विद्या बहु कठिन है, तामें भेद अनेग ।
 हनुमत मत सगीत मथि, कहतु पायदावेग ॥६॥
 राग हिंदवी पारसी, पैदा इकठे कीन ।
 जो जो तामें मिलत है, ते सब काढे वीन ॥१०॥
 कहीं मिलापी पुत्र जे, कीन्यौ मनहिं विचार ।
 नाद रूप सवतै कठनि, अतिहि अगम अपार ॥११॥

अन्त -

अथ पाचौ रागिनी कौ सोरठा
 रामकलि दै साखि, ललित विगवर जानियो ।
 पढ मजरी सु भाखि, ए हिंडोल की रागिनी ॥३॥
 देस कमोद विचारी, नट केदारो कान्हारौ ।
 पाचु दीपक नारि, पैदा कही सगीत मथ ॥४॥
 मालसीरी सुनाव, मारू और घनासरी ।
 बसत आसावरी गाव, सीरी राग के सग हैं ॥५॥
 टककु वोर मलार, गुजरी भुपाली कही ।
 पच विदेस जुकार, रास रागिनी मेघ की ॥६॥

पुष्पिका -

इति छउ राग को सोरठा संपूरण समाप्ता । श्री श्री श्री
 श्री श्री श्री श्रीरस्तु ।

२६३७.

८३६३

समासार नाटक

प्रारम्भ :-

॥ दं० ॥ श्री गणेश (गाय नम)

(श्रीमान्) सु ड प्रचड रूप) रुचिरो मदगध गल्लस्थल ।
 श्रुअ सोभित शोभि एक दशन चद्र ललाटे (धर) ॥
 (सिन्दुरै) परिपूर कु भ सुभगो ऋद्धि सु सिद्धी घर ।
 सोय पातु गणेश इ(ई)सतनयो वानीवरदायक ॥१॥

छद मालवी (मालिनी)

कविवर वरदाता माद्रि से नित्य वाता ।
 षट वदन सु आत्रा सर्व कार्या विधाता ॥
 सकल गण सुरेण भगलाना महेश ।
 विघन तम दिनेश श्री गणेश नमामि ॥२॥

छप्पे

जय गग सह चद जटित नग मुकुट सु भारीय ।
 वाघवर अवर नुगेति मु ड मू तीय सगधारीय ॥
 हलाहल ह कठ ललित भृगु हरि ऊर सोहत ।
 दहु मु एक त्व रहत देखि मुनिजन मन मोहत ॥
 करपूर गौर धनस्रॉम तन, सकल भुवन वदित चरण ।
 जो रसानाथ ऊमयावति, श्री हरि हर मगल करन ॥३॥

X X X X X

दोहरा

दिसि पञ्चिम गुजर सवर, सहर अहमदाबाद ।
 भू पर के सब नगन सिर, ऊपर मडित वाद ॥७॥

रचना-स्थान ता मधि सारंगपुर मुभग, मुख दायक सब धाम ।
 नागर विप्र सुमग मति, कवि पद रघु रज राम ॥८॥

चोपी (चौपई)

सकल सभा पहिले सिर नाउ । कर दीनती कर जोरि सुनाउ ॥
 मात पिता यु बालक बानी । ऐसी विघ सुनि हे सुख मानि ॥
 छमि हे मम ओगन मव माधु । जिन के मति अति भरे अगाधू ॥
 जिन ही सुहाय नही यह वांणी । सो पुनि छमि हे सेवग जानी ॥९॥

दोहरा

कवि वासी ग्रह कूप को, सभा अपार समद ।
 तेसोहि कछु कहत हो, मति हे जेसी मद ॥१०॥

जानित हु हसि हे जगत, सुनि कविता को सूल ।
 अपने मुख ते आपनी, हासी करत कबूल ॥११॥

भले बुरे सब प्रणमि के, बोहरि कहु परि पाय ।
 नीको बूरो निवाहीये, सो सेवग चहत सहाय ॥१२॥

रचनाकाल सनरे से सतावने, चैत्र तीज गुरु वार ।
 १७५७ पक्षि ऊजल ऊजल सुमति, कवि किय ग्रन्थ विचार ॥१३॥

अन्त -

छप्पै

यह नाटिक जो गुने ताहि हीय फाटिक गुने ।

यह नाटिक जो गुने वृद्धि बल कमल प्रदले ॥

यह नाटिक जो गुने ग्यान पुरन मन आवे ।

यह नाटिक जो गुने ताहि मन बछित पावे ॥३२८॥

विग्यान जान निरवाण के, जोग्य ध्यान धर घन लहै ।

पावत परम पुरुष गति, मति प्रमाण कवि रघु कहै ॥३२९॥

पुष्पिका .- इति श्री नाटिक सभासार कवि गुरुराम विरचित सपूर्णम्,
संवत् १८४३, माह सुद ५ दिने, प० छजमल लिपी कृत ।

२६४५ १०८६४ समै सु-प्यार सतनई

प्रारम्भ .- ॥ द० ॥ श्री गणेशाय नमः । अथ समै सु-प्यार सतनई वसनराय
कृत लिख्यते ।

दूहा

श्री गनपत अमृत चर्न, कठ भूमि परवार ।

बुध को वर-के बीज ज्यौ, होत बहुत विस्तार ॥१॥

मुमुख विनायक गज करन, भाल चद्र इक दत ।

हरन विघन सुख करन है, जुग जुग आद अनत ॥२॥

लवोदर हिये ध्यान घर, होत [बुद्धि] परकास ।

जैसे जग मिट जाय तम, दिनकर करत उजास ॥३॥

रचै वृध भूपत मिलन, करिये गमन विदेस ।

पढीये प्रगटे ग्रन्थ तव, भजीये आद गनेस ॥४॥

यह प्रास्ताविक दूहरा, कीना कवि विचार ।

समये पर पढ है सुघर, सब कू लगे सु-प्यार ॥५॥

नीत जथाग्रथ ग्यान रस, भुक्त जुक्त चित धार ।

सुगम अरथ कविता करी, कवि मत के अनुमार ॥६॥

निबुध पढे बुध वधत है, मूरख सुथरा होय ।

निस मदर हु रहै तिमर, रखीये दीपक जोय ॥७॥

कीया सातसो दूहरा, उक्त जुक्त दृष्टत ।
 कहु मासनर मन उक्त, भाषा करी वसंत ॥८॥
 चलै कहु प्रस्ताव पर, कहीयै दुहो विचार ।
 सब ही कुँ नीकी लगै, याते समै सु-प्यार ॥९॥

अन्त -

दोहा

मुरधर मभ मुर मेदनी, कासीपुर सम जान ।
 घर [घर कोविद] पढत है, गीता वेद पुरान ॥६९४॥
 तहाँ चतुरभुज राय को, [दरसन] अदभुत जोय ।
 मन सुध कर भेटे चरन, नरक न जैहै कोय ॥६९५॥
 [नर] रिध धारी नगर में, पडत बहु बुधवत ।
 सतवादी हरि भक्त रत, सिध जोगेसुर सत ॥६९६॥
 निकट तिहा पुस्कर भरयो, वहै सरस्वती नीर ।
 नाग पहार जोगी जती, हरै दीन की पीर ॥६९७॥
 विप्र ग्यात तिन नगर में, पुसकरणा रिपमत ।
 प्रोहि[त कुल] नरसिध के, कीनो ग्रन्थ वसत ॥६९८॥
 कवि कोविद मों जोड कर, इतनी अरज करत ।
 चूक छिमा करीयो हमै, सब सौ कहत वसत ॥६९९॥
 पढ्यो नही कछु ससकत, भाषा मत्र न जाप ।
 कछुक कविता करत हू, गनपत के परताप ॥७००॥

र काल आ[द चन्द वसु राम] गुण, कृष्ण जनम पक्ष मास ।
 १८३३ गनपति तिथि हनुमान दिन, निपज्यो गन्य विलास ॥७०१॥

पुष्पिका - इति श्री समै मु-प्यार सतसई सपूरणम् । सवत् १८४१ रा
 शाके १७००६, चैत्र दुतीक . पक्षे ६ नौम्या तिथौ रविवारे ।
 लिपीकृत वैष्णव जुग [नगर] जोधपुर मध्ये लिखित्वा ।
 श्री कल्याणमस्तु ।

* इसकी एक प्रति 'राजस्थानी शोध-संस्थान' चौपालनी, जोधपुर से भी ग्रन्थाङ्क ४८७१ पर उपलब्ध है । उक्त प्रति का लिपि समय संवत् १९३५ है । कोष्ठक से दीमकग्रस्त स्थल का पाठ उक्त प्रति से दिया गया है ।

२६७७. ६२५२ (३) सुन्दर-शृङ्गार

प्रारम्भ - ॥ दं० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः । श्री गणेशाय नमः । लिखत
पोथी सुन्दर-शृङ्गार की ।

दोहरा

देवी पूजौ सरसती, पूजौ हर कै पाय ।
नमसकार कर जोर कैं, कहै माहाकविराय ॥१॥

आश्रयदाता नगर आगरी वसत है, जमुना लट सुभ थान ।
वर्णन तथा पातमाहो करै, बैठौ साहिजिहान ॥२॥
(शाहजहा) साह बडौ कवि मुख तनक, क्यु गुन वण्णे जाय ।
ज्युं तारै सब गगन के, मूठी मै न समाय ॥३॥
जिन पुरुषन कै ठम मे, उपज्यौ साहिजिहान ।
ताह साहन के नाम कौ, अब कवि करे बखान ॥४॥

छप्पय

नृप-वश प्रथम मीर तिमूर लीयो साह किरान पद ।
वर्णन ताकाँ मोगसाह बहुरि सुलतान महम्मद ॥
अबुसैद फुनि उमरसेख बवर जु हमाउ ।
साह अकबर जान साह जिहागीर गिनाउ ॥
तिहा बस अस कविराज, भनि साहिजीहा बढिम बखत ।
घरि छत्र बैठौ अटल भुवि, पातस्याह दिली तखत ॥५॥

छंद तृभगी

नृप- जव लगि भवानी मित्र सेनानी रवी समाणी पथन मे ।
प्रशस्ति जव लग सुरगै नग गन उडगन राजि वरन अरू गुन ग्रथन मे ॥
जव लग पुरदर हिम गिर मंदिर सुन्दर वानिन भनै सुखदा ।
तव लगि रहौ चिर भू ध्रुव ज्यु साहिजिहा शिर छत्र सदा ॥६॥

दोहा

इक छिन कै गुनह के, वरनै सकल ससार ।
जीभ थकैं वीनै वरप, तौड नावै पार ॥७॥

- तीन पेहर लो रवि चलै, जाकै देसनि माहि ।
जीत लई जगती इत्ती, साहिजिहा नरनाहि ॥८॥
- कुल दरीया ग्या ऐ कीयो, कोट तीर कौ ठाम ।
आठो दिग यो वसि करी य्यो कीज्ये इक गाम ॥९॥
- साहिजिहा सब गुनिन कू, दीन्है अगनित दान ।
कवि-परिचय तिन मे सुन्दर सुकवि कौ, कीयी बहुन सनमान ॥१०॥
- नग भूषन मनि सब दए, हय हाथी सिरपाउ ।
प्रथम दीयी कविराय पद, बहुरि महा कविराउ ॥११॥
- तब कवि कौ मन यौ बढ्यौ, जब यह कीयी विचार ।
वरनी नायक नायका, कीयी ग्रन्थ विस्तार ॥१२॥
- विप्र ग्वालिनर नगर कौ, वासी है कवि राज ।
तामौ माह मया करै, मदा गरीब निवाज ॥१३॥
- ग्रन्थ- सुन्दर कृत शृ गार है, सकल रसन कौ सार ।
माहात्म्य नाम घरची या ग्रन्थ कौ, यह सुन्दर शृ गार ॥१४॥
- ज्यौ सुन्दर शृ गार की, पढै गुनै रस ग्यान ।
मानो तिन ससार मे, कीयी सुवा रस पान ॥१४॥
- र कान सबत सोग्ह सैं वरम, बीते अछ्यासीति ।
१६८८ कानी सुदि पण्टी गुरु, रच्यो ग्रन्थ कवि प्रीति ॥१६॥
- विषयारम्भ नौ रस मे सीगार रस, मवतें नीको आहि ।
तामे नीकी नायका, वरणत है कवि ताहि ॥१७॥
- सो फुनि सुन्दर कवि कहै, तीन भाति की नार ।
स्वकीया परकीया अवर, मामान्या सु विचार ॥१८॥

अन्त .-

पुन सवैया २३

रूपे की भोम के पागै परची,
सिगरो जग चदन सो लपटानी ।
यो कहि तोन्ह महा कविराय,
कहै उपमा इक याहि तैं आनी ॥

चद की असुनि को करि मून,
 बुन्यौ बिधुना मित अवर जानौ ।
 उजल कै फुनि व्योत बनाय,
 दशो दिश ए मढि राखी है मानी ॥४७॥

दोहरा

सुरवानी यातें करी, नरवानी मे लाय ।
 जैसे मग रसु रीत कौ, सब पे समझ्यो जाय ॥४८॥
 यह सुन्दर सींगार की, पोथी रची विचारि ।
 चूक्यो होइ कह्यौ कछू, लीज्यौ सुकवि सुधारि ॥४९॥ [३४९]

पुष्पिका - इति चकत्ता चक्रवर्त्ति पातिसाह साहिजिहा आदेशान् महा-
 कविराज कृत सुन्दर-शृङ्गार भाषामयौ ग्रन्थ संपूरणम् । सन्वत्
 १७७४ वर्षे, शाके १६४० प्रवर्त्तमाने, माह फाल्गुन विदि ११, भृगु-
 वासरे । लिखित राणा संग्रामसीह विजैगज्ये ।

३०१७. ६४३२ (१) हमीर-रासो*

प्रारम्भ - ॥ श्री गणेशाय नम ॥ श्री सरस्वती नम ॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥
 अथ हमीर-रासो लिखते ।

दोहा

श्री गनेस गुरु सरस्वती, बुधि बानी के दानि ।
 कवि महेम बरनन करत, हठ हमीर को जानि ॥१॥
 पहिलै साहि(ब) मुमरियै, सब को सिरजनहार ।
 आदि भवानी अबिका, बरदै सुरसति म्हार ॥२॥
 सरनाई भयो सिवर त्रप, दयो मास तन ताहि ।
 कै अब राव हमीर हूव, सरन राखि महिमाहि ॥३॥

* इस कृति की प्रतिष्ठान मे और भी प्रतियाँ हैं । कुछ प्रतियों के प्रारम्भ मे 'चौहान वश-
 वर्णन' दिया गया है, जो इस प्रति मे कुछ छन्दो के बाद उपलब्ध है । प्रारम्भ मे वश-
 वर्णन वाली प्रतियाँ पाठालोचन की दृष्टि से अन्य परम्परा की द्योतक हैं ।

कित अलावदी कित हुगन, कित महिमा जु पठान ।
 कित मीर बहु गाभरु कित हमीर चौवान ॥४॥
 रासे के पासे परे, होनहार आरभ ।
 माखो राव हमीर को, बाको गढ रनथभ ॥५॥

छंद

अमरपुरी ब्रह्मलोक वचन सा पुरम कराये ।
 रिषि सू छत्री भये सोम के बस कहाये ॥
 जननि उदरन ओतर सकट परे न च्यारि ।
 अनल कुड उत्पन भये च्यार भुजा पर च्यार ॥६॥

दोहा

च्यारि भूजा अयु सीरि, तेज पुज परचड ।
 सूर हग्वि कपे अमुर, ईते हुवे नवखड ॥७॥

छंद

मारि असुर सुरन के मान बढ़ाये ।
 राक्षस कटक दुष्ट अवनि पै रहन नि पाये ॥
 मंडलीक चार ईरु चक्रवै इतै हूये चहुवान ।
 सूरन प्रति उद्योत लौ फिरै चहु दिस ग्रान ॥८॥
 रथ भारन को चले जहा लौ चक्र चलाये ।
 कर रावन प लीये जग्ग तिनि केमु कराये ॥
 जिते धरति नवखड के लगे पाय कर जोरि ।
 राज जोग दोऊ करै अजपोल अजमेर ॥९॥
 बीसल बीस करोरि जोरि जल माझ धराये ।
 आना तीस करोर बिलस खगचे अरु खाये ॥
 को को नयेन मंडली आय आपनी ठोर ।
 आना बीसल दे भये मंडलीक सिर मोर ॥१०॥

दोहा

जिती धरा सिर सेस के, खग बल लई पै जाये ।
 छुटी मानिक राव को, सकति सम्हरा माय ॥११॥

श्रुत -

छंद

मिले राव रनधीर खानु वालनसी भाई ।
 महमामाहि हमीर मिले हजरति सिर नाई ॥
 पाछा मिले हमीर का अलादीन पतिसाहि ।
 हजरत राव हमीर के गहे कदम दोउ जाई ॥३६१॥

घनि हमीर चोहानु आदि ए चलि आई ।
 यह साहिब की राह राव हम तुम सौं पाई ॥
 भगतखण्ड चहु देस मै देखो सब जग जो(य) ।
 तुम वन राव हमीर सिख मिलाव कोई ॥३६२॥

दोहा

बदा खुदा काल जुग, सयै जहा न कोई ।
 पहुचे राव हमीर जहा, वहरि न आना होई ॥३६३॥

आसा देवल ओर सब, महमामाहि हमीर ।
 मिले सबै सुर लोक मै हजरत हुरम समीर ॥३६४॥

छंद

मिल्लै राव पतिसाहि छीर ज्यौ नीर बहाये ।
 जो पारस कौ मिलत लोहो कचन हो आये ॥
 अलादीन हमीर से हूये न अब कोई होय ।
कवि महेस ईम ऊचरे वे वसे सुरग सब कोय ॥३६५॥

दोहा

कवि महेस वरनैन कीयो, रासो राव हमीर ।
 भूल चूक ज्यौ होय तो माफ करो तकसीर ॥३६६॥

पृष्पिका :-

इती श्री राव हमीर को रासो सपूर्ण । लीखीत नाजर
 नैणसुख, न(नै) वाच(चै) व(वि)च्चार(रै) ज्या सु राम राम
 वंचज्यो जी ॥ श्री ॥



परिशिष्ट २

ग्रन्थ-कर्त्तृ-क्रमणिका

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	
(अ)		अमृतराम राय	३७७ - ३७८, ३६०, ४००, ४२०, ४२२, ४२७, ४४३, ४६६- ४६८, ४७१, ४८६, ४६४	
अगद (जन)	१४२, १४७	अमोलकराम	१६६	
अकवर (शाह)	३८६	अहमद	३८४	
अखैमल	१५५-१५६	(आ)		
अखैराम	१२८, २७८	आखाडसिध	४४	
अग्रदास	१, १००, १२६-१२७, १३१, १३६ - १३८, १४३, १८७, २५८	आणद मुनि	६६, १६६, ४०१, ४२४	
अजितदेव सूरि	११०	आनन्द कवि	३८, ३६४, ४५७	
अजितसागर	४१६	आनमराम	११४, १३१, ३६१	
अनन्तदास	२६, ६०-६१, १०३, ११२ - ११३, १८२, २६८, ३३६ - ३३७, ३८४	आत्माराम	११-१२, ६२, १२७, योगिन्द्र	१५०, १७२, ४६५
अनन्तहस	५२	आनन्दघन	१४, ७३, १४२, १५१, १५३, १५८, ३४२, ३५७, ३६१, ४२७, ४३०	
अनाथदास	२७३ - २७५, ४४५, ४६६	आनन्दरत्न	४२३	
अनारि	१८१	आनन्दराम	४५, २०५ - २०६, नाजर	३६५
अनुपमचन्द	४२४	आनन्दवर्द्धन	१०६	
अभयदेव सूरि	७८	आनन्दविजय	७२	
अभयराम	१५४	आशा वारहू	२०	
अभयसोम	२२८			
अमरदास	१५२			

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
आसकरन	१६०, १६२ - १६३, १७२, ४२६ - ४३१, ४३६, ४३६, ४७६	(ऋ)	
आमाराम	१२६	ऋद्धि हर्ष	११६-१२०
आसियो बुधौ	४४	ऋपभ	६०
आसो	२२३	ऋपभसागर	३०३
आलम (शेख)	४५३	ऋपिकेष	१६२
(इ)		(क)	
इच्छाराम	३६७	कणेरी पाव	२५, १६५
इन्द्रजीत	११७, २८७	कनककीर्ति	७६, २२७, ४७०
(ई)		कनकविजय	३२०
ईसरदास	४८, १६६, ३५१,	कनकविमल	६०
बारहठ	३७०, ४६३	कनकसोम	१६
(उ)		कनीलाल	४३७
उत्तमजी(ऋषि)	१०८	कपूरविजय	४७६
उदयगणि	१८५	कवीरदास	१५, २५-२८, ३४, ६१, ६७, ८३-८४, १००, १२५, १२७- १३२, १३४, १३७- १४१, १४३ - १४७, १४६ - १५५, १५७, १६१, १६६, १७१, १७२, २३३, २५८, २६२, २७६, ३१८, ३२३, ३५३, ३५८, ३६०, ३६३ - ३६४, ३७७, ३८४ - ३८५, ४०७, ४२१ - ४२२, ४२५ - ४२६, ४२८, ४४६
उदयनन्दन	१०६	कमलकलश सूरि	१६२, ४४४
उदयप्रभु	४२३		
उदयरत्न	३०४ - ३०५, ३३६, ३४३		
उदयराम	४४, १०२, २८५,		
(उदैगज)	४३८, ४६३		
उदयराम	३५२		
उदयमिह	२७१, ३२१		
उदयहर्ष	६०		
उदयम	३६०		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
कमाल (दास)	२६, ४२५	कवि पद्माकर	४०३
कल्याण	३२-३३, १५७, १६२,	कवि ब्रह्म	३५२
(कल्याणदास)	१६४ ४३६	कवि मछ	२३६
कल्याणप्रसाद	२७२	(मनसाराम)	
कल्याणराय	०३३	कवि मण्डन	४०३
कल्याणमागर सूरि	४२०	कवि मल्ह	१८५
कवि आनन्द	३८, ३६४, ४५७	(मथुरादास)	
कवि कानो	६०	कवि मुगार	४३
कवि का.ह	६६, ११८, १४२,	कवियण	६७, ३५५, ४७४
	१४६, ३५८	कवि राजो	४०२
कवि कीतो	१२८	कवि राम	४६३
कवि केसो	३८७, ३६१	कवि लाल	३४६
कवि खेतल	६८	कवि व्यास	३१, ३५२
कवि गग	३२, १२८, १४५,	कवि शम्भु	३४८
	१५४, ३४६, ३४६,	कवि सार	३५२, ४६१
	३६२, ३६३, ३८६	कवि सिद्ध	३४६
कवि गद	११५, १३७, ३५०,	कवि हरिचन्द	४१६
	३५२, ३८६, ४६३	कवि हेम	४१, २६१
कवि गोकुल	३८८	कानड कन्नोजिया	५४
कवि ग्यान	३८७	कानडदास	१४०, १४१, १४३-
कवि धेल	१२३		१४४, १४८, १५४,
कवि चन्द	३८८, ४०३		३६४, ४०२
(जवाहरचन्द)		काजीमहमद	१२५, १२७, १३२,
कवि चन्दवरदाई	१८६, ४४१, ४६४		१३४, १३८, १४०,
कवि जनक	३५२		१४२, १४४ - १४५,
कवि जिनेन्द्र	२३५		१५३ १६८
कवि दास	१५४-१५५	काह्लजी कवि	११८, १४२, १४६,
कवि नोने	३८६		३५८
		काह्लडदास	१२८, १३५

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
कान्हा	१४६	कुवम्पाल एव	३२५
कालू	७६, १४०, १४४, ३६३	वनान्सीदास	
कालुराम वोहरा	२०७	कुलपनि मिश्र	४७६
काशीनाथ	२	कुशललाभ	८६-९०, १८४, ३४०
कासीराम	१७२, ३४८, ३५७, ३८८, ३९०, ४३८, ४६१	वाचक	
किशनगुलाव	४२२	कुशलसिंह	६६, ६४, ११६, २२५, २८६
किशोरसिंह	१७३	कुशलहर्ष	१०५
किशोरीदास	४३८	कुशलहेम	८९
किसनदास	१६, ३६, ५७, १३७, १४८, १५७, ३५६, ३६२	कुशालराय	३४१, ३८५
वाचक		कुसालचन्द	५, ६६
किसना	४६३	कृपाराम	८२, ३६०, ४०७
किसोर-अलि	११५, १४०, १४६, ३२४, ३२५, ४२५	कृपासखी	१४८, १५६
किमोरजन	१३६, १४१	(कृपासखी)	
कीनो कवि	१२८	कृष्णदाम	६, १७, ५२, ८४-८६, १४६, १५७ - १६०, १६३ - १६४, १६६, १७० - १७२, २६६, ३६०, ४११ - ४१२, ४२४, ४२६ - ४३४, ४३६-४३७
कीर्तिवर्द्धन	३३, ३५, ६०, ७२, ८१, १०५, ११०, ११६, २२५, २७१, २८०, २६०	कृष्णदास पयहारी	६५
कीर्तिसागर	३४२, ४२२-४२३	कृष्णभट्ट	४८०
(कीरतसागर)		(कविकलानिधि)	
कुभनदास	१०, १७, ५८, ८८, ६५, ६८, १४६, १५८- १५९, १६१ - १६४, १७० - १७१, ४१२, ४२६-४३६	कृष्णसिंह	३३०
		कविराज	
		केवलदास	८२, १४६
		केवलराम	१४४, ४३३
		केशरीचन्द	३४२, ४२३, ४२४

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
*केशव	३५१, ३५७	*खेम	१२८, १३६, १३८, १३९, १४१, १४६, १४८, २६७ - २६८, ३४२
केशवदास	३६१, ४१६, ४५८- ४६०	*खेमदास	३६, २६८, २६०, ४७८
केशवदाम मुनि	२१६-२२०, ३१२	खेम मुनि	७१, १२०, २३३
केशवदास वैष्णव	४६०	ख्यालीराम	३५५
केसरीसिंह	६६	(ग)	
केसो कवि	३८७, ३९०	गग कवि	३२, १२८, १४५, १५४, ३४६, ३४९, ३६२, ३६३, ३८६
*केमोदास	५२, ५३, १३८, १४५, १५३, ३५२, ३६२- ३६३, ३८८	गगादास	१३६, १५१, १७२, १६७
केमोदास गाडण	२७१	गगाधर	१३६
केसोगड	१०२	गगाराम	१२९, ४८१
केहरि	३७, ३८६, ३८७	गजाधर	४३३-४३४
(क्ष)		गद कवि	११५, १३७, ३५०, ३५२, ३८८, ४६३
क्षमाकल्याण	२१, ४१, ६६, २२०, ४२३	गदाधर	१५८ - १६०, ४३०- ४३२, ४३४ - ४३५, ४३८
क्षमानीर्थ	७१	गरीबदाम	११७ - ११८, १२६, १४५, १४७, २३९
(ख)		गिरधर	१३८, ३५२, ३८६,
खिडियो जगो	२४०	कविगाय	३६२, ४७७, ४६३
खीमडा	३८	गुणरत्न शिष्य	३०४
खीमो	४००	गुणविजय	१
खीवा	१४५, १४७		
खुसालचन्द	११६		
खेतल कवि	६८		
खेतसी	३२६		

* नामसाम्य वाले चिह्नित कवि अभिन्न भी हो सकते हैं ।

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
गुणसागर सूरि	६, १०६, १८०-१८१, २७७, २६२, ३७१, ३८१ - ३८३, ४५१, ४७७, ४७६	गोविन्दप्रभु	१०, ५३, १४६, १८०, १६२ - १६३, १६६, १७० - १७१, ४२४, ४२७, ४३० - ४३१, ४३४-४३७
गुप्ताराम	१५५, १६७	गोविन्दविप्र	७६
गुमान	४६३	गोविन्दस्वामी	५२, ६४-६५, १०४, १६०, १६४, २३८, ४२६, ४२६, ४३२- ४३३
गुरुगोविन्द	५६	ग्यान कवि	३८७
गुलावचन्द	१६२	ग्यानउदोत	३३, ३२७
गुलावजन	१३६	ग्यानतिलक	१४३
गैवीराम	१३८, १४२, १५३, ३५१	(घ)	
गोकुल कवि	३८८	घडसी	१२८, १४६
गोकुलकवीश्वर	४१८, ४६७	घनश्याम पुरोहित	१०८
गोकुलचन्द	४३४-४३५	घनानन्द	३६०
गोकुलनाथ	४६८	घाटमदास मीणा	१५०
गोपालदास	१०, ५४, १३७, १५६, (गोपाल) १६३, २७२, ३५६, ४२८, ४३०, ४३४- ४३५	घेल कवि	१२३
गोपीचन्द	५६	(च)	
गोपीदास	४३४	चतुरकुशल	३४२
गोरखनाथ	५, ६, ५७, ५८, ८३, ६३, ३१४, ३१६, ३३६	चतुरदास	२३, २१२-२१५, ३६०, ३६३, ४४६
गोविन्द	१७, १४८	चतुरविहारी	४३३
गोविन्ददास	१४७, १५८ - १५९, ३५७	चतुर्भुजदास	५२, ५६, १६७, २२१- २२३, ३६७, ४५४

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
*चत्रभुजदास (चत्रदास)	६, १५, १७, ४१, ५३, ५६, ६४, ६८, १०४, १२६ - १३०, १३७, १४२, १५७ - १६२, १६५ - १६६, १७०, २६२, ४२६ - ४२७, ४२६-४३७	चैना	१७७
चन्द (कवि)	१३७	चोथमल ऋषि	३५, ६५, ७५, ७६, ८८, ११८, १२०, २३४, २६२ - २६३, २७०, ३५२
चन्द कुशाल	३४१	चौरगीनाथ	३१४
चन्दलाल सखी	४२५	(छ)	
चन्दवरदाई	१८६, ४४१, ४६४	छाजू	१४२
चन्द्रलाल गोस्वामी	२१७	छीतमदास	१२६, १४२, १४६, १७२, १६७
चन्द्रसखी	१२६, १४१, १५२- १५३, १७१, ४२७	छीतस्वामी	४१, ५२, ५८, १४६, १५६ - १६०, १६३, ४२६-४३७
चम्पालाल दीवान	३२१	छीहल कवि	७५, ४२१
चरणदास स्वामी	८६, १२१	(ज)	
(चरनदास)	१३१, १४६, १५२,	जगी	१४२
(रनजीत)	१६८, २०५, २१०, ३६५, ३६१, ४०५, ४०८, ४११, ४१८, ४२४, ४५३, ४६५	जगजीवनदास	७६, १२८, १३८, १४४, १४६, १५३, १६८, ३५५, ३५६, ३६३, ४३०, ४३६
चरपटनाथ	६५	जगन्नाथ	३३, ७०, १३७, १४७, १५८, २३६ - २४७, ३५१ - ३५२, ३५६- ३६०, ४३५, ४३८, ४५४
चारुचन्द्र	१८	जगन्नाथ गुसाई	४६५
चारुदत्त वाचक	३०६, ४१५	जगदीश	३२
चिमनी	१२६, १३६	जगदीश स्वामी	१६०
चेतनदास	६६, १५५, १५२		
चैन कवि	५२४		
चैनविजय	३४२, ४२४		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
जगमोहन	४८०	जन भगवान	५३, १२५, १३३- १३४, १४१, १६०, १६३, २०३, २०८, ३६०, ४२७, ४२९, ४३१, ४३६
जगरूप	६०, १७६	जन भावन	१५७, ३५५
जटमल नाहर	५८	जन मंगल	१५२
जन अगद	१४२, १४७	जन माणक	१४७
जन किसोर	१३६, १४१	जन माधो (माधोदास)	७७, ७९, १०४, ११५, १२६, १२८, १३६- १४०, १४२, १४४, १४६, १४८, १५४, १५७-१५९, १६८, १७१-१७२, २६६, २७०, ३४१, ३५२, ३६४, ३७०, ४२३, ४२५, ४३२-४३६
जन गोपाल	७६, ७७, ९६-९७, १०५-१०८, १४३, १४५, १४८, १८६- १८८, २३७, ४४५, ४४०, ४४२	जन मुरली	१२६, १३३, १३५, १५३, १५५-१५६, २३२, ३२२, ४५३
जनतुरसी	४०, ५१, ५३, ६१, ८७, ९०, १००, १२५, १२७-१०८, १३०-१३१, १३३, १३५, १३७, १३९, १४०-१४१, १४३- १४६, १४८-१४९, १५१-१५३, १५७, १६१, १६८, ३१८, ३४३, ३५१-३५३, ३५७, ३५९-३६०, ३६३, ४०९	जन मोहन	२१९, ४४६, ४६१
जन भीजो	३६०	जन रामा	१३१, १५७, १७२, ३५९, ३६१
जन दारिया	९३, १४६, १७२	जन रूपदास	३६४
जन घनजी	१५०	जन शंभुराम	५१, २८८
जन पदम	१३३, १३६, १७१, २६६, ४२६	जन हरिदास	५९, ८२, १००, ११४, ,, (हरिया) १२६-१२८, १३०- ,, (हरिरामदास) १३१, १३५, १३८, १४१, १४३-१४५, १४७, १५१, १५३-
जन वट्टीग्रनि	३८९, ४४३		
जन वालमीक	१४७		
जन भगता	१४७		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
	१५७, १६०, १६८- १६९, १७१ - १७२, १८६, १९०, १९८- १९९, २२३, २६७, ३१६, ३०१, ३५१, ३५३, ३५५ - ३५६, ३५९, ३६१, ३६४, ३६९ - ३७१, ४१२, ४३०-४३६, ८८८	जाचिंग जीवण १८४ जादुराय ३४२ जिनचन्द्र सूरि ६६, ७५, ११९, १८०, ३०५, ४२२, ४२६, ४३९, ४७९, ४८५ जिनदास ४२२-४२३ जिनपद्मसूरि १७८ जिनभक्तिसूरि १७८ जिनरगसूरि ६५, १९०, ३२८, ३५७ जिनराजसूरि २, ४, २२, ४०, ५९, ७२-७३, १०४, १७७, २७७, २९४, ३०८, ३४३ - ३४४, ४२४, ४७७ जिनलखिवसूरि २३, ८८, ३१६, ३२३ जिनलाभसूरि ६६, ८०, १५८, २६५, २८० जिनवल्लभसूरि १२१ जिनहर्षसूरि ५, ६, ३३, ४७, ७९, ११० - १११, १२०, १७६ - १७७, १८३, १९०, २२०, २७३, २९७, २९९ - ३००, ३८३, ४२३, ४४०, ४७१, ४७९ जिनोदयसूरि ३६६ जीतविजय २४४ जीवनदास ६७, १००, १३८	
जमाल	१०२, ४९३		
जयकृष्णदास	२६७, ४६७		
भोजग			
जयदेव	४२		
जयन्तीदास	४११		
जयमल मुनि	८९, ३७३		
जयरग जैतसी	२९		
जयविजय	३०९		
जयसागर	७२		
जयमोम	१९३, ३४०		
जवानसिंह महाराजा	४०५		
जवाहरचन्द (चन्द)	३८८, ४०३		
जसराज	२४१, ३९०		
जसवन्तसिंह महाराजा	४, ४६, २१८, ४५०		
जमविजय	२, १३, २१, ७३, २८०, ३४३, ४१६		
जसवर्द्धन	७३, १७६		
जसुदास	४३७, ४४५		
जसुराम	२४२, ४५९		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
जीवनलाल नागर	३७६, ३६४, ४२६, ४३२	टोडर	१२०
जुगताराम	३५५	(ठ)	
जुगतराय	४०६	ठाकुर	४३८
जुगतानन्द गुसाई	३८१, ३८८, ३६६, ४०१, ४४४, ४४७, ४६६, ४७७, ४८०	(ड)	
जूणादास	१५७	डू गरसी	१२४, १४२
जैतराम	१२६, १३६, १५६	(त)	
जैदास	२०२	ताजखान	४३४
जैमल ऋषि	५, ३६	तानसेन	१३६, ४२७, ४३८
जैमलदास	१३१, १४४, १४६, १५०, १५६, १६७, १६६-१७०	तिलोक	१५७
जोगीदास	३६३	तुरसोदास	देखे—जनतुरसी
जोजार	६६	तुलछीदास	१४० - १४१, १४३, १५३ - १५४, ४६१
(उपनाम)		तुलसीदास	३५३, ४०५, ४१३, ४६२ - ४६५, ४७०
जोरा पुत्र हुकमराय	४७५	गोस्वामी	३२, ३४, ३६, ४४, ५१, ७६, १०५, १२५, १२८, १३०, १३५, १३६, १४१, १४७, १४६, १५३, १५६, १६४, १६६, १७१, २५१ - २५५, २६२ - २६३, २७६, २६६, ३२१, ३३६, ३५१, ३५४, ३५७, ३६४, ३६५, ३६६, ४२३, ४२५, ४२७, ४३७ - ४३८, ४६० - ४६१, ४८१, ४६३
(ज)		तेजसिंह वारहठ	४५२
ज्ञानउदोत	१६		
ज्ञानविमल	१४, ११०		
ज्ञानसमुद्र	८१		
ज्ञानसागर	३०२		
ज्ञानोदय	१८०, २३४, ३००, ३२१		
(ढ)			
टीकम मुनि	१४६		
टीला	१४६		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ मत्त्रा	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सङ्ख्या
(द)		दीन फकीर	१२७
दत्तलाल	४१०	दीनानाथ	३५१
दत्तात्रेय	८२	दीप ऋषि	४७
दयालदास	३०, ७७, ६३, ११७, १३०, १६७, ३१३, ३२१ - ३२२, ३४७	दीप सागर	२६३
दयामखी	४२५	दुर्गादास	८६
दयासागर	४१०	दुलहराम (दुल्हेराम)	१५, ६६, १३३, १३५, १४०, १५१
दरियादास	देखे—जन दरिया	देव	३४१
दलपति	३६५	देवकृष्ण दरजी	२८३
दलपतिराय	३८०	देवचन्द्र मुनि	६, १०, २१, ७३, ६५, ६६, ३२३, ३४५, ३८०, ३६७, ४२३
एव वशीधर		देवमुनि	२३४
दाहूदयाल	३४, ६६ - ६८, १००, ११५, १२६, १३१, १३३, १३५, १३८, १४०, १४४ - १४५, १४७ - १४८, १५४- १५६, १६१, ३६४, ४११	देवलनाथ	६६
दानविनय	१८०	देवादास	१५२, ४२७
दामनुदास	४३६	देवीचन्द्र	१२३, ४०५, ४५२, ४८३
दामो	२२०	देवीदास	१८६, २४२, ३४८, ३५१ - ३५२, ३५४, ३६०, ३८७ - ३८८, ३९०, ४६३
दामोदर	२३०, ३७०	दौलत कवि	१५८, ४२३, ४५६
दास कवि	५६, १४३	द्यालबाल	६, ५०, ५२, १२७- १२८, १३२, १५४- १५५, १६८ - १६९, १७२ - १७३, १६६, २०४, ३३६, ३६१
दासकरन	४६१	द्वारकादास	२६६, ४६१
दिवाकर	१४३	द्वारिकेश	१०३, १६५, २३३, ३६६, ४२६, ४५४
दीनदयाल	१६१		
दीन दरवेग	६८, १२७, १५४, ३६८		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
	(घ)		
घन्ना (घन्तो)	१४२, १४७, ३४२	नन्ददाम	४, ६४, ११४, १२६, १३६, १४०, १४२, १४६ - १५०, १५८- १६०, १६३ - १६४, १६६, १७०, २२६, ३६५, ३७७ - ३७८, ४२७, ४२९ - ४३२, ४३४ - ४३५, ४३७, ४५६, ४६६, ४६९
धर्मचन्द	४२२	नन्दराम	३६१
धर्मदास	६, १२६-१३०, १५४,	नन्दराम पचोली	६५
(धरमदास)	१५६	नन्दमूरि	३२७
धर्मपाल	३४२	नयन	३८६
धर्मभगत	३४२	नयनमुख	२८४-२८५, ४७३
धर्ममदिर मुनि	२३२	नयविमल	४२३
धर्मवर्द्धन	६४, ३३५	नरवद चारण	२४४, २६५, ४०२
धर्मविजय	३४४	नरसिंह(नृसिंह)	१००, १३८, १५२
धर्मसार	२३४	नरसी(मेहता)	१२५, १२८, १३२, १३५, १३८ - १३९, १४१, १४८, १५०, १५४, १५६ - १५७, १६८
धर्ममुन्दर गणि	१३	नरहर	६
धर्मसी	१४२, ३३०, ३४६,	नरहरिदास	७, ११८, २१६, २६३, ३७६, ३६३, ४६५
(धरमसी)	४३६	नरिया	४१, १४२
धर्मेन्द्रसूरि	४४०	(नारायण)	
धीर	१४८	नर्वदाचार्य	३८
धीरजराम	६६	नवलदास	४२३
धीरमदास	५१		
धोवी	१७०, ४३४		
धू धळ	१०८		
ध्रुवदास	४४३, ४५७, ४७२		
ध्यानचन्द	१०६		
ध्यानदास	१३, २२, ४८, ३६७- ३६८		
	(न)		
नकुल	४७८		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
नवलराम	१३७, ३१६-३१७	नीलकण्ठ पचोली	४१३
नागरदाम	२२, १००	नेमिचन्द्र भण्डारी	३०४
नागजीदास	१२६, १३३, १३६, १५२, १५४ - १५७ ४१३, ४२१, ४३०, ४५६	नैणसी (मुहता)	२६, १४२
नाथ कवि	३६०	नैनोदास	१४२, १४४, १४६, १५३
नानगदास	१३८, १४७	न्यामत	२३५
नानिक	१४२, १४७	(प)	
नानूदास	१२६, १३५, १३६- १४०	पदम	देखे—जन पदम
नापा	१३८, १४२, १४५- १४६, १५१, १५३, ३५८	पदमइयो	१६१, २६५-२६६ (पदमा तेली)
*नाभादास	१३६ - १४०, १४७, १६६-२०२, ४४७	पद्मचन्द्र सूरि	३६६
नामदेव	१४, १५, ११३, १२७- १२८, १३०, १३५, १३७, १३६ - १४०, १४३ - १४४, १५६, १६८, ३२०, ३५६	पद्मतिलक	४०६
नारायण	१५, ३५०, ३६०, ४३४	पद्मपंकज	४५१
*नारायणदास	१६६	पद्मविजय	७२, २७२
नारायण शास्त्री	३११	पद्मसागर	१८०
नित्यनाथ पार्वतीपुत्र	२४१	पद्माकर	३४७, ३४६, ३५५, ३८६, ४०३
नित्यानन्द	१२६, १३६, १४०, १५२, १७२	पद्महीदास	१४७
निरभैराम	१३६	पद्मलाल जोशी	४१३
निश्चलदास	२७५ - २७६, ४७०	परमानन्द	१७, २०, ५४, ५६, ८८, ६४ - ६५, ६८, ११८, १२६, १३३, १३५, १४३ - १४६, १४६, १५१, १५३, १५७ - १६७, २२४, ३५७ - ३५८, ४१५, ४२४, ४२७, ४२६- ४३७

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
परसराम	६, ५१, १२७, १३१- १३२, १४७, १४८- १५०, १५३, १५५- १५७, १६६, १६६- १७०, १७४ - १७५, १८४ - १८५, २७७, ३३६, ३५१	१६६, २०४, ३०८, ३५४	
परसोतम	५०, १२६ - १३०, १७०	पृथ्वीनाथ १८३, ३२२ पृथ्वीराज राठौड ३७, ३८२-३८३ *पेम १३३, १३५, १५७ *पेमदयाल ६४, १५० *पेमदास १२६ पेमभगत ४१६ (प्रेमानन्द) पोहकर १३६, १३६ - १४१, (पोहीकर) १५८ प्रतापसिंह महाराजा २१०, २८६, (व्रजनिधि) ३४५, ४२७ प्रधानसागर ३४२ प्रपन्न गैसानन्द २०४, ४४७ प्रमोद ४३६ प्रीतिविमल ३६७ प्रीतिसखि १०२ *प्रेमदयाल ११७ *प्रेमदास १६६, १७२, २८० प्रेमभगत ४१६ (प्रेमानन्द) प्रेमराज ३१८ प्रेमविजय २६० प्रेमसखि १३० प्रेमसुख २२१ प्रेमसागर ८०, ३५८,	
पहाडखा आढा	२६८, ३६५		
पायदावेग	४८१		
*पार्श्वचन्द	१२, ६६, १७६,		
(पासचन्द)	२६३, ३२२		
*पार्श्वचन्द मुनि	४८४		
पार्श्वचन्द सूरि	३७७, ४७७, ४८६- ४६०		
पिंगल	३६५		
पीताम्बरदास	२११		
पीपल चारण	५७		
पीपा	१२८, १४३, १४६, १४८, १५०, १६८, १८२		
पुण्यसागर	३२३, ३३४		
उपाध्याय			
पुण्डर्ह	२७८		
पुन्यरत्न मुनि	२३८		
पूरणचन्द	१६१		
पूरणदास	३०, ४६, ५०, १२७, १३६, १४२, १५६,		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सङ्ख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सङ्ख्या
(फ)			२३०, २८३, ३१५-
फकीरदास	१५२		३१६, ३२५, ३४१,
फतेचन्द	१५८		३५१, ३५८ - ३५९,
फरीद	१६, १६०		३६२ - ३६३, ३८५-
(व)			३८६, ४०७, ४८२,
वशीधर एव	३८०		४८३
दलपतिराय		बलभद्र	३३०, ४१५ - ४१६,
वखतभारती	१२७, १५६		४८५
*वखतावर	१००, १२५, १२६, १३१, १३३, १३५ १४०	बलवन्त	१२६
वखतो साह	३५, ३६	बस्नीराम	३४२
वखना	१२६, १२८, १३१,	बाँकीदास	६८, २८४, ३०८
(वखनो)	१३३, १३५, १३८, १४० - १४१, १४४, १४६, १४८, १५१, १५३ - १५४, १६८, ३५८	*बालकदास	१३१, १५०, १६३, १६६
वगतराम	१३२, १५५	*बालकराम	१४५, १८६, २२७, ३६०
(वगतराम)		बालकृष्ण	१४६
वगता खिडिया	२२५	बालचन्द	१८, ४४४
*वगतावर	१४८, १५०, १५४, १५७	बालमीक	१४२
वद्रीग्रलि	देखें—जन वद्रीग्रलि	बालसखी	१२६, १३६
वनवारी	१४७	बालह	४२४
वनारसीदास	३० - ३१, ८३, ९२, १०६, १२८, १४२, १५३, १५७, १७८,	बिहारीदास	१६६ - १६७, ३५५,
		(बिहारीलाल)	३६२, ३६०, ४४५- ४४६
		वीरवल	३३०
		बुद्धसेन	४४२
		*बुधराय	४६३
		*बुधराव	३८८
		*बुधसिंहराव	२, ३४८

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
बुधानन्द	१२७, १५१, १५३, १५६	भानुदत्त	८५६
बोहथदास	१४२	*भावन जन	१४२, १४६, १५७, १५७, २५५
ब्रह्म कवि	३५२	भावनानाम	२११, २६८, २८६
ब्रह्मदास	१४७, १६४	वैष्णव	
ब्रह्मानन्द	३५६	भार्वात्रजय	३४२
ब्रिजानन्द	१००, १३५, १३८, १५२	भावसागर	४०
(भ)		*भीखजन	१५५, २१८, ३६१
भक्तसेन	३७३	*भीखनदास	२१८, ३६१
भक्तिलाभ	४८६	भीखमचन्द	४०४
भगतराम पचोली	१५२, ४०४	*भीखमदास	१५५
भगवतदास	४४	भीमजी ग्राह्या	४०८, ४५४
भगवतरसिक	४१६	भुवनकीर्ति	२४, ६०, ८८, १२०, ३४०
भगवतीदास	४००	भूतनाथ	१५४
भगवन्त	४७२	भूधरदास	३५५, ३५८, ४२३
भगवानदास	देखे—जन भगवान	भूपाल नरिंद	२१६
भगवानदास	५, ७, १८, ३४, २०६, निरजनी	भूषण	३८८, ३९०
भगोतीदास	४१६	भोलानाथ कवि	३८२ - ३८३, ३८८, ३८२ - ३८३, ४१६- ४१८, ४२०, ४४७, ४४६, ४५२, ४५५, ४६८, ४८६, ४९०
भरथरी	१२६, १४६, १६५	(म)	
भर्तृहरि	११७, ४१६, ४७३	मछ कवि	१४८, २३६
भद्रगुलाव	४२४	(मनसाराम सेवक)	
भद्रसेन	३६६	मडन कवि	१३७, ४०३
भवानीदास पाठक	२०७	मगनीराम सेवक	४१३
भवानीदास	१२६, २१६, २४३ व्यास		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
मछिन्द्रनाथ	१४२, १५०	*माणकचन्द	४३३, ४३७
मतसुन्दर	१४३	माधोदास	देखे—जन माघो
मतिकुशल	६४	माधोदास गुसाई	४१८
मतिभद्र	२३२	माधोदास गिण्य	३, २२०
मतिराम	२४१, ४५७	दामोदर	
मतिविशाल	६३, १७६	माधोदास दधवाडिया	२४६, २५६
मतिशेखर वाचक	१४	माधोराम	३०
मतिसार	२६४	मान कवि	११८ २७३, ४८०
(जिनराज सूरि)		मानचन्द	१२०
मधुसूदनदास माथुर	२६४	मानतु गसूरि	२०३
मनराम	३६३	मानदास	१४१
मनसुखदास	१२५, १३३, १३५, १४०	मान मुनि	३०६
मनहरराय	६८	मानसागर	१४, ३३, २८६
मनोहरदास जैन	४१४	मानसिंह महाराजा	३२७
मनोहरदास	८४, ८५, ३०३, ३१३	*मानिकचन्द	११, ५२, १०४, १५६- १६०, ४२६, ४३२
निरजनी		मानिकदास	२५६
मनोहर मुनि	१८०	मालमदास	१३७, ३५१
मलियादास	४३	मालिदास	४६१
मल्लूकदास	३०, ४३, ७४, १४२, १४६, १५४	मीडकीपाव	२३१
मल्लिदास	२८६, ४८६	मीराबाई	१४, ५८, १००-१०१, १२५, १२७-१३०, १३२-१३४, १३८- १४१, १४४, १४६, १४८, १५०-१५५, १५७, १६१, १६७- १६८, १७१, ३५६- ३५८, ३६४, ४१६, ४२३, ४२५
मल्ह कवि	१८५		
महमद	४०६		
महादेव	४८५		
महीपत	५५		
महेश कवि	४६५		
*माणक	१४७ - १४८, ३४१, ३५१		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
*मुक्ताराम	१३२	मोहनविजय	६३, २२८, ३६२,
*मुक्ताराम	२३१		४००
मुकनचन्द	३४२	(य)	
*मुकन्द	१५१, १५३, ३५६,	यशोविजय वाचक	१०३, ११०
३६२		योगेन्द्रदेव सूरि	१७४
मुकन्ददास निरजनी	१६	(र)	
*मुकन्दभारती	१४२	रगकलश	१२२
मुकुन्द राजयोगी	२७६	रगविजय	१२०
मुनिमाल	४५२	रगहीर	२५
मुरली जन	१४० तथा देखे—जन	रघुनाथ कवि	४१८
मुरली		रघुनाथदास	४३२
मुरली कवि	४०६	रघुपति पाठक	४८
मुरलीदास	२७६, ३८६, ४४४	रघुराम कवि	४८२
मुरार कवि	४३	रघुराजसिंह	२१६
मुरारि	१४२, १५६	रघुराय	३८८
मुरारिदास	१३७, ४३२, ४३५-	रघुवीर	४३५
	४३६	रज्जवा	१३१, १३६ - १३७,
मुगारि मिश्र	२३६		१४४, १४८ - १४९,
मेघराज	४८०		१५७, १६६, २४०,
मेरुनन्दन उपाध्याय	२		३१८, ३५६ - ३६०,
मोतीराम	३, १३०, २३५		३६३-३६४
मोतीलाल	४३०	रतनचन्द	२५
मोहनदास कायस्थ	१७५	रतनसखी	१५७
मोहनदास	४८, ३४५, ४३५,	रतना खाती	१०६
मोहनदास वैष्णव	३८६ एव देखे—	रतीराम ऋषि	६
(जन मोहन)	जन मोहन	रतनचन्द मुनि	८८, १०५, १७६,
मोहन प्रभु	१७१		३५६
मोहनलाल	३६०		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
रत्नतिलक सेवक ३४		राम कवि	४६३
रत्नराज १८०		रामकृष्ण	३२
रत्नसागर ४५६		रामगिरि	१४१
रत्नहर्ष १७६		रामचन्द्र	२६१, ४२३, ४६६
रमजानि शिष्य २१६		रामचरण	१५, ४६, ५०, ६७, ७४, ६६, १०५, ११३-११४, १२५, १३१-१३३, १३६-१४०, १४४, १४७-१४८, १५०-१५२, १५५, १५७, २२४, २४६-२५१, ३१३, ३१८, ३३६, ३६१, ३६६-४००, ४२६, ४५२, ४६१, ४८१, ४८४
रसरज ४२२			
रसराशि ३८२, ४०३, ४४३, ४५८		रामजन	१५, ६६, १३२, १३४, १३८, १४१, १४८, १५१-१५२, २५६
रसिकदास १०, ६४, १११, १५६-१६०, १६२-१६४, १६६, १७०-१७१, ४२६-४३१, ४३४, ४३६		रामदत्त	३४७
रसिकनाथ १०१, १२६, १३८, १४१, १४६		रामदास	५, ६, ४१, ४६, ५१, ६७, ८८, ६४, १२७-१२८, १३१-१३२, १४६-१४७, १५४-१५७, १६२-१६३, १६६-१७०, १७२, १८५, २००, २१५, २२६, २३३, २५७, २५८, ३४७, ३५५, ३५६, ३६१, ४२३, ४२६-४३१, ४३५, ४३६, ४५५
रसिकविहारी ४४			
रसिकराम १५६			
रमिकराय १६३, ३४६			
रहीमदास ३५३			
*राघवदास १२८, १६८			
*राघोदास १४७, २०२, ३५१, ३५६			
राचो २४२			
राजसमुद्र ३०, ६६, २८६, ३६१ (जिनराज सूरि)			
राजाराम ३४२			
राधावलाल ४६२			
रानावाई १५६			

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
रामनारायण	२७०	रूपदास	८८-८९, १३३, १३५, १४०, १४८, १५१, १५६ - १५७, २७०, ३५३
रामरतन	२५८	रूपमती	१३०
रामरस	१५२	रूपरसिक	४०५, ४१९, ४२१, ४२८, ४४७, ४५३, ४७२
रामवल्लभ	६७, १३१, १४४, २६०, ३५१	रूपराम	३६१
रामविजय	६८	रूपविजय	६
रामलाल जोशी	३८९, ४१३	रूपविमल	३४१
रामलोचन	२६९	रूपा	१३६, १६१
रामसखी	१२६, १२८, १३३, १३६, १३८ - १४१, १५०, १५५ - १५६	रैदास	४९, १३६, १३८, १४० - १४१, १४३, १४५ - १४६, १५०, २६८, ३५४, ३५६, ४२५
रामसरण	१३६	(ल)	
रामानन्द	५२, ८४-८५, १२८, १४३, १६७, २०३, २२९ - २३०, २५८- २६०, २६३, ४५५	लक्ष्मण सेवक	२२६, ४५२
रायचन्द्र ऋषि	१६, २१, ६१, ६८, ७८, ८१, ११७, २२६, २३३, २६७, २८१, ३४२, ३५८	लक्ष्मीवल्लभ गणि	३४, २०९
राव वृषा	२, ३४८, ३३८	लक्ष्मीविजय	६
रिखवदास	३४२, ३५६	लखमीचन्द	३५
रिणछोड	१२७	लघु गोपाल	१६१, ४३३, ४३५
रिदलाल सेवग	२७०	लघु दामो	१४५
रिपिकेश	४३६	लछ्मणदास	४२८
रुघदास	१४३	लछ्मीराम	८२, १५८ - १५९, (लच्छीराम) २७९, ३४८, ४१०, ४२७, ४३३, ४३५
रुघनाथ	१४९, १६५		
रूपचन्द	१५८, ३४१, ३४३, ३५४, ३५८, ४२३		

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
लघमल	४८	वल्लभ	१०, १६०, १६५-
लघराज	१७६, २२४, ४३६	(वल्लभाचार्य)	१६७, २३८, ३२७, ४२४, ४३१, ४३३- ४३७, ४८३
लविग्ररुचि	३२७	वाजीद	७, ४०, ४७, ६४, ७६, १३७, १४१, १४४- १४५, १४६ - १५०, १६८, १६२, २७२, ३०३, ३४८
लविग्रविजय	१७, १०३, १६७, ३८२	विचित्रविहारी	४२३
लव्वोदय	४०६	विजयदेवसूरि	८८, १२०, १३०, ४१०
ललनासखी	१४८	विजयभद्र	३७२
ललितसखी	१५४, १५६-१५७	विजयलक्ष्मीसूरि	२८१
लवलीनराम	१६२, २६४, ४६८	विजैराम	१५५
लाखो	१३६	विट्ठल	६, १०, ५६, १४६, (विट्ठलेश्वर) १५८, १६०, १६२- (विट्ठलप्रभु) १६६, १७० - १७१, (विट्ठलदास) ४२४, ४३० - ४३१, ४३४-४३६
लाभवर्द्धन	२७३	विद्यादास	१४७
लाल कवि	३४६, ३६३, ३६०	विद्याधर	१४३
लालचन्द्र	११६, ३२६, ३४२, ३५२, ४०५, ४२३- ४२४, ४३६	विद्यापति	४३०, ४३४
लालदास	१६, ५८, १४७, २०४, २०६, २६४, ३८१	विनयचन्द्र	११८
लालविजय	६३, ४१०	विनयप्रभ उपाध्याय	६१, ३६८
लावण्यसमय	६०, १२१, ३४३,	विनयविजय	३०१-३०२
मुनि	३६७ - ३६८, ४२०	विनयविमल	४७०
लिखमीदास	३५२	विनीतविमल	२१
लिछमणदास	१३६-१४०	विप्रमान	३६५
लिछमनगिरि	४६, २७८		
* लुकमान हकीम	१११, ४६८		
(व)			
वगताराम	१३२		

वर्त्तमान	पृष्ठ संख्या	वर्त्तमान	पृष्ठ संख्या
विष्णुगिरि	३३६	शातिकुञ्जल	४८३
विष्णुदाम	११, ३६, ११६, ११८,	शातिहर्ष गणि	६
(विसनदास)	१३७, १४५, १५१,	शातिहर्ष गणि शिष्य	१८३
	१६०, १६४, १७०,	बाहू हुसैन	१४४
	१८६, २६५ - २६६,	शिव कवि	१०१
	३४५, ३६०, ४२४,	शिवचन्द	४२४
	४२८, ४३५, ४३७	शिवदत्त	१५१
विष्णुपुरि	२०८	शिवदाम	४२३
विष्णु वर्मा	४२१	शिवनिधान गणि	२६३
वीरविजय	८०, २२६, ३४४	शिवमुन्दर	८५६
वीरभद्र	६४	शुभमागर	३६५
दृजनाथ	४६४	शेख	१४५
वृद्धिकुशल	१७८	शेख फरीद	१६, १५२, १६०
वृन्द कवि	२८२, ३३५, ३६५,	शेख वहाबदी	१४३, ३६४
	४७२, ४८३	शेखसिंह कँवर	१७३
वेणीदास	१४३ - १४५, १४७,	शेखसिंह	२६८
	३५५, ४४६	शोभा राम	३८६, ४२७, ६३७-
वैरागी	१२७	तिवाडी	४३८
व्यास कवि	३१, ३५२, ४३१	श्यामदास	१४५
व्यास भगत	१४२	श्यामसखी	१३३, १३५, ४७८
व्रजानन्द	१२७	श्रीकर्ण	२६०
(श)		श्रीदेव	१०४
शकराचार्य	६३, १८६, २०६	श्रीधर	३४२
शभु कवि	३४८	श्रीभट्ट	१५६, १६६, ४२७,
शभुदत्त जोशी	२२४-२२५		४३२
शभुदत्त	३३६	श्रीरग	१४६
शभुराम	देखे—जन शभुराम	श्रीसार मुनि	११, १८, ८१, ६४,
शभुराम	४४६, ४६६		२६७
		श्रीमुन्दर	८० -

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
	(स)		३६८, ४०६, ४११,
सग्राम	३५५		४२१, ४२४, ४३६,
सग्रामसिंह	३५		४४४, ४५२, ४५६,
संतदा ।	२, १५, २२, ५४, १२८, १४४, १४७, १५१, १६१, १६८, २१६, २५८, २७२, ३०५ - ३०७, ३१८, ३३०, ४७६	समरचन्द सूरि	३८३
सतीकदास	१५०	सवाई प्रतापसिंह	२१०, २८६, ३४५, ३७७-३७९, ४२७
सगुनदास	४८	सहजराय	१४८
सज्जन	१०२ ८२२	सहजसागर	४७७
सती	१४६	सहजसुन्दर	१३, २६५, ४७८, ४८७
सदादास	४१२	साईदाम	१५६
सदानन्द पाठक	१७८	साईदान	३५१
सदाराम	२५, १४८	सादू खेतसी	२१७
सनेही गम	१३७	सायाजी भूला	११२, ४१७
समन (जन)	४८, १०२, ३६४, ४८२	सावला	४१२, ४७८
समयनुन्दर वाचक	४, १३-१४, ३६, ६१, ६५ - ६६, ६८, ८०, ८३, ८१, ८६, १०४, १०८, १११, १७३, १८५, १८६, २२६- २२७, २३५, २४५, २८० - २८१, २८०- २८१, २८७, ३२०, ३२८, ३३०, ३३८, ३४३ - ३४४, ३६४,	सागर	११६
		माधुकीति	३०६-३१०, ४८०
		सावुगम गाडण	२३१
		सारग	७६
		सिंहकुल	२३१
		सिद्धसूरि	६५, २६२
		मिद्धिविजय	६६, ३४४
		सिधो	१०४
		सिवरी	१३६
		सीतलपुरी	१३६-१४०
		सीतलमुखी	१५५-१५६
		नीवी सेवक	४१४

कर्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
सीहाजी	१४३		४८७ - ४८८, ४९६
सुखदेव	१२७ - १२८, १३१, १५०, १५२, १५४, २४	सुन्दरदास	३३३ - ३३४, ४८८-
सुखदेव मिश्र	३	कविराज	४८९
सुखमणदास	१५५	सुन्दरदास	१३८, १४५, १४८,
सुखराम	१२७, १२८, १३७, १४४, १५४ - १५५, १६१, १७२	(विग्रह)	१५१, १६९, ३५७
सुखविलास	४२४	सुमतिरग	४११
सुखसागर	१८	सुमतिहस	२५, ६३, १२३, २८३
सुखसारण	२९, १६२, २३१, २४५, ३२८	सुमतिहर्ष	३३
सुखानन्द	१४२	सुगतराम	१३२, १५४
सुखिया	१४८	सूरज	४२७
सुदामा	२५	सूरजकँवर	१३०, १३६, १६१
सुन्दरदास	२, १२, ४०, ४९, ५१, ५३, ६१, ६६, ८२- ८३, ८५ - ८६, ९०, १०६, १२१ - १२२, १२६, १२८ - १२९, १३५, १५०, १५२, १५७, १६८ - १६९, २०३, २५५, २७८- २७९, ३१६, ३३१- ३३३, ३५१, ३५९- ३६०, ३६४, ३६७, ३७०, ३८२, ३८६, ३९० - ३९१, ४०७- ४०९, ४४४, ४७१,	सूरजप्रभु	११८
		सूरजमल	३९०
		सूरतिमिश्र	७४, ३४९, ४०२
		(सूरत)	
		सूरदास	३, १७, ५९, ६९, ८३, ९४, ९८, १०४, ११२, ११८, १२५, १२७- १३१, १३३, १३५, १३८ - १४२, १४५- १४६, १४८ - १५४, १५६ - १६०, १६२- १६६, १६८, १७०- १७२, २३६, २४४, ३०३, ३१८, ३६६, ४२२ - ४२६, ४२९- ४३८, ४९०
		सूरविजय	२४०
		सेखवहावदी	१४३, ३६४

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ संख्या
सेजगम	१५६	हरखचन्द	७३, ३४२
*मेवक	११०, १२७, ४६६,	हरखराम	६७, २१०
(सेवकगम)	४६०	हरदास	१५, १४३, १४५, १४७
सेवक सीधो	४१४	हररूप	२२८
*सेवगराम	१४, ५०, ६७, १५५,	हरलाल	३८७
(सेवग)	१६७, १६६, ३३७, ३५०, ४२३-४२४	हंसहाय	४५५
८ सेवादास	१२७, १३७, १३६- १४०, १४३, १५४, १५७, १८१, २७०, ३३७ - ३३८, ३५३, ३५६, ३६३ - ३६४, ४६१	हरिचन्द कवि	४१६
सेवाराम	१३६, २६६, ४२३	हरिचरणदास	३, ४६६
सेमदाम	२८७	हरिदास	देखे—जन हरिदास
सैना	१४२	हरिदेव	१८५, ३५०
सोभा	१०२	हरिनाथ	३६२
सोमजी	१४३	हरिरामदास	७४, ११३, ४०२
सोमरत्न	२०३	निरजनी	
सोममुन्दरसूरि	१२१	हरिराय	२६५, ४७८
सौभाग्यसुन्दर	३४४	हरिवल्लभ	२०६ - २०७, ३८६, ४३४, ४४८
स्यामदास	६४, ४३२, ४३४- ४३५, ४३७	हरिसिंह	३
स्यामसखी	१२६	हर्षउदय	७
(ह)		हर्ष ऋषि	६०, १२०
हकीम फरासी सुत	१७	हर्षकीर्ति सूरि	६३, १२२, २४५
हणवन्त	१४६, १६५	हर्षकुशल	१२, ३३, ६५, ७५, ७६, १२२, १७६, २६५, ३१०, ३१३, ३१५, ३२६, ३६५
		हर्षचन्द	१३, ११८, ४२०, ४२३
		हर्षधर्म	२६२-२६३

कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या	कर्त्ता-नाम	पृष्ठ सख्या
हर्षमगल मूरि	८८	हीरहर्ष	१८०
*हमतराम	१२६, १२६, १३२,	हीराचन्द कानजी	२०
हस्तीमल	३४१	हीरानन्द मूरि	१२२, ३८५
*हस्तीराम	१३५, १४४, १५२,	हुमैन फकीर	१२६, १२६, १३५
	१५४	*हेम कवि	४१, २६१
हालीपाव	१४६, १६५, ३७२	*हेनदास	८६, १३१, ३७४
हित हरिवश	१५४, ४०१, ४३४,	हेमराज	२६, २०३, ४४७
	४३६		

राजस्थान-सरकार

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

हिन्दी-राजस्थानी ग्रन्थों की प्रकाशन-सूची

क्रमांक	ग्रन्थ-नाम	सम्पादक	मूल्य
१	कान्हडदे प्रबन्ध	कान्तिलाल बलदेवराम व्यास	१२ २५
२	क्यामखा रासा	डॉ० दशरथ गर्मा, अग्ररचन्द भँवरलाल नाहटा	४ ७५
३	वाकीदास गी स्यात	नरोत्तमदाम स्वामी	५ ५०
४	राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १	नरोत्तमदास स्वामी	२ २५
५	” ” भाग २	पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	२ ७५
६	” ” भाग ३	लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	५ ५०
७	राजस्थान में संस्कृत-साहित्य की वृद्धि	प० ब्रह्मदत्त त्रिवेदी	३ ००
८	जुगलविलास	रानी लक्ष्मीकुमारी चूँडावत	१ ७५
९	दीनवाण	”	४ ५०
१०	गोरा-बादल-पद्मिणी चउपई	डॉ० उदयसिंह भटनागर	५ ००
११	गोरा-बादल-चरित्र	मुनि जिनविजय	४ ००
१२	हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १	गोपालनारायण बहुरा	७ ५०
१३	” ” भाग २	”	१२ ००
१४	राजस्थानी-हिन्दी ह लि ग्रन्थ-सूची, भाग १	पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	४ ५०
१५	” ” भाग २	”	२ ७५
१६	विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह-सूची (जोधपुर शाखा)	गोपालनारायण बहुरा एवं लक्ष्मीनारायण गोस्वामी	६.२५
१७	भगतमाल	उदयरज उज्जवल	१.७५
१८	भक्तमाल	अग्ररचन्द नाहटा	६ ७५
१९	मुहता नैणसी री स्यात, भाग १	बद्रीप्रसाद साकरिया	८ ५०
२०	” ” भाग २	”	६.५०
२१	” ” भाग ३	”	८ ००
२२	” ” भाग ४	”	८ ७५

क्रमाङ्क	ग्रन्थ-नाम	रम्पादक	मूल्य
२३	रघुवरजस प्रकाश	सीताराम लालस	८ २५
२४	सूरजप्रकाश, भाग १	सीताराम लालस	८ ००
२५	सूरजप्रकाश, भाग २	"	६ १०
२६	सूरजप्रकाश, भाग ३	"	६ ७५
२७	नेहनरग	रामप्रसाद दाधीच	४ ००
२८	मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन	डॉ० मोतीलाल गुप्त	७ ००
२९	समदर्शी आचार्य हरिभद्र	अनु गान्धिलाल जैन	३ ००
३०	बुद्धिविकास	पद्मधर पाठक	३ ७५
३१	रुक्मणीहरण	डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	३ ५०
३२	प्रतापरासो	डॉ० मोतीलाल गुप्त	६ ७५
३३	सत कवि रज्जव	डॉ० वज्रलाल वर्मा	७ २५
३४	पश्चिमी भारत की यात्रा	अनु० गोपालनाथगण बहुरा	२१.००
३५	विन्हैरासो	सीभाग्यसिंह शेखावत	६ ७५
३६	सोढायण	गक्तिदान कविया	७ ००
३७	राठौडों की वशावली एवं राठौड-वंश की विगत	डॉ० फतहसिंह	२ १५
३८	सींग वृद्धदावली, प्रथम भाग	हरिनाथगण पुनोहित	७ ५०
३९	स्पूलिभद्रकाकादि	डॉ० आत्माराम जाजोदिया	१ ७५
४०.	राजस्थानी वीर-गीत-मग्रह, भाग १	सीभाग्यसिंह शेखावत	६ ५०
४१	" " भाग २	"	६ २५
४२	" " भाग ३	"	६ २५
४३	गजगुण-रूपक दन्ध	सीताराम लालस	६ ००
४४	वैताल-पच्चीसो	डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया	३ ५०
४५	भारवाड रा परगना की विगत, भाग १	डॉ० नारायणसिंह भाटी	१५.५०
४६	" " भाग २	"	१२ ५०
४७	देवीचरित, प्रथम भाग	हुकमचन्द चतुर्वेदी	१३ २५
४८	" द्वितीय भाग	"	२१ ००
४९	राजनीति रा कवित्त	डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली	५ ००
५०.	नरसीजी रो मायरो	प्रो० जेठलाल नारायण त्रिवेदी	१० २५
५१	मधुमालती सचित्र कथा	डॉ० फतहसिंह	१८ ७५

